₹ 30/-

साहित्य अमृत

RNI No. 62112/95

जनवरी 2025 • साहित्य एवं संस्कृति का संवाहक • मासिक • पृष्ठ 128 • ISSN 2455-1171

साहित्य अमृत

पौष-माघ, संवत्-२०८१ ❖ जनवरी २०२५ मासिक

वर्ष-३० ❖ अंक-०६ ❖ पृष्ठ ८८ यू.जी.सी.-केयर लिस्ट में उल्लिखित RNI No. 62112/95 ISSN 2455-1171

संस्थापक संपादक

पं. विद्यानिवास मिश्र

निवर्तमान संपादक

डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

संस्थापक संपादक (प्रबंध)

श्री श्यामसुंदर

प्रबंध संपादक

पीयूष कुमार

संपादक

लक्ष्मी शंकर वाजपेयी

संयुक्त संपादक

डॉ. हेमंत कुकरेती

उप संपादक

उर्वशी अग्रवाल 'उर्वी'

कार्यालय

४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-०२

फोन : ०११-२३२८९७७७

०८४४८६१२२६९

इ-मेल : sahityaamrit@gmail.com

शुल्क

एक अंक—₹ ३०

वार्षिक (व्यक्तियों के लिए)—₹ ३००

वार्षिक (संस्थाओं/पुस्तकालयों के लिए)—₹ ४००

विदेश में

एक अंक—चार यू.एस. डॉलर (US$4)

वार्षिक—पैंतालीस यू.एस. डॉलर (US$45)

साहित्य अमृत के बैंक खाते का विवरण

बैंक ऑफ इंडिया

खाता सं. : **600120110001052**

IFSC : **BKID0006001**

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी पीयूष कुमार द्वारा ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित एवं न्यू प्रिंट इंडिया प्रा.लि., ८/४-बी, साहिबाबाद इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-IV, गाजियाबाद-२०१०१० द्वारा मुद्रित।

इस अंक में

✍ **संपादकीय**

गौरवशाली यात्रा के ७५ वर्ष ४

✍ **प्रतिस्मृति**

सा विद्या या विमुक्तये/ *पं. विद्यानिवास मिश्र* ६

✍ **आलेख**

महाकुंभ : एकता का महायज्ञ/ *नरेंद्र मोदी* ९

सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः/ *योगी आदित्यनाथ* १४

प्रेमचंद की खेल, पशु-पक्षी एवं बाल-जीवन की कहानियाँ / *कमल किशोर गोयनका* २०

कृत्रिम बुद्धि की निगरानी में महाकुंभ मेला/ *प्रमोद भार्गव* ३०

कुंभ—वैचारिक लोकतंत्र का शाश्वत पर्व/ *एन.पी. सिंह* ४०

विवेकानंद और भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद/ *सत्यलोक कौशिक* ४८

हिंदी भाषा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस/ *नितीन कुंभार* ५४

नागरिक सम्मान से नरसेवा तक/ *दर्शनी प्रिया* ७०

✍ **कहानी**

अनामंत्रित/ *रामनगीना मौर्य* ११

रखियो टेक हमारी/ *विद्या विंदु सिंह* १८

क्षमादान/ *सुषमा मुनींद्र* ३६

अनकहा त्याग/ *रिंकल शर्मा* ६०

मोहभंग/ *राजेंद्र परदेसी* ७२

✍ **लघुकथा**

दरार/*देवेंद्र कुमार मिश्रा* १७

प्रायश्चित्त/*देवेंद्र कुमार मिश्रा* ५१

गलत फैसलों की जिम्मेवारी ?/ *मुकेश शर्मा* ७१

अवरोह/*कमल चोपड़ा* ७४

✍ **कविता**

चार गजलें/ *राकेश भ्रमर* २९

आई शीतलहर/*मनमोहन गुप्ता* ३५

प्रकृति-प्रेम के दोहे/ *संजय पंकज* ४७

दिशा संकेत/ *प्रीति कच्छल* ५९

बढ़ जाती है उम्र/ *योगेंद्र पांडेय* ७५

✍ **राम झरोखे बैठ के**

कुछ न करने का सुख/ *गोपाल चतुर्वेदी* २६

✍ **व्यंग्य**

श्राद्ध और कवि-सम्मेलन/ *सूर्य प्रकाश मिश्र* ३८

✍ **साहित्य का भारतीय परिपार्श्व**

इन ए सेकंड/ *के.वी. तिरुमलेश* ५२

✍ **यात्रा-संस्मरण**

तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर/ *श्याम किशोर पांडेय* ६४

✍ **साहित्य का विश्व परिपार्श्व**

केवल झाग, बस वही/ *हर्नांडो टेलेज* ६७

✍ **बाल-सांसार**

सावधानी हटी, दुर्घटना घटी/ *घमंडीलाल अग्रवाल* ७६

✍ **लोक-साहित्य**

उत्तर प्रदेश के लोकगीत : संस्कृति के संवाहक/ *उपमा शर्मा* ७८

✍ वर्ग-पहेली ८१

✍ पाठकों की प्रतिक्रियाएँ ८२

✍ साहित्यिक गतिविधियाँ ८३

साहित्य अमृत में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

गौरवशाली यात्रा के ७५ वर्ष

यों तो पूरे देश के लिए स्वाधीनता दिवस तथा गणतंत्र दिवस गर्व और हर्ष के दिन हैं। किसी भी अन्य त्योहार के समान खुशियाँ मनाने के दिन, किंतु २०२५ का गणतंत्र दिवस निश्चय ही अत्यंत गौरवशाली दिन है। भारतीय गणराज्य के ७५ वर्ष पूरे होने का ऐतिहासिक दिन।

वर्षों की पराधीनता से मुक्त होने के बाद विश्वपटल पर एक सर्वप्रभुता संपन्न गणतंत्र के उदय होने का दिन, जिसने १५ अगस्त, १९४७ को मिली स्वाधीनता को सुदृढ़ एवं सार्थक रूप दिया। अपने देश के लिए गहन विचार-विमर्श के पश्चात् हमने एक मूल्यवान संविधान अंगीकृत किया, जिसमें सर्वोच्च शक्ति भारत की जनता को सौंपी गई—'हम भारत के लोग···!' संविधान में एक लोककल्याणकारी राज्य की कल्पना की गई, जहाँ जनता अपनी इच्छा से अपनी सरकार चुनेगी, जिसका हर कार्य जनता के हित के लिए ही होगा। संविधान ने हर नागरिक को समान माना, चाहे वह अमीर हो या गरीब, स्त्री हो अथवा पुरुष, चाहे उसका धर्म कुछ हो, जाति कुछ हो, पहनावा कुछ हो, रीति-रिवाज, खान-पान कुछ हो! भारत जैसे देश में जहाँ लंबे समय तक अलग-अलग राजाओं का शासन रहा हो, सामंतशाही का बोलबाला रहा हो, छुआछूत तथा ऊँच-नीच की समस्या रही हो, हर नागरिक को समान मानकर मताधिकार देना एक क्रांतिकारी कदम ही माना जाएगा।

इसी प्रकार जिस देश में सदियों तक महिलाएँ परदे में रही हों, घर की चारदीवारी तक सीमित रही हों, उन्हें म ताधिकार देने के साथ-साथ उनके सशक्तीकरण के लिए अनेकानेक कानूनी प्रावधान करना भी क्रांतिकारी कदम था। विश्व के अनेक देशों में जहाँ लोकतंत्र था, वहाँ महिलाओं को मताधिकार तथा अन्य अधिकारों के लिए वर्षों संघर्ष करना पड़ा। अमेरिका जैसा देश, जो अपने पुराने लोकतंत्र होने पर गर्व करता है, अपने देश को एक महिला राष्ट्रपति नहीं दे सका, जबकि भारत में दो महिला राष्ट्रपति भारतीय संविधान की अनमोल देन को रेखांकित करती हैं। महिला शिक्षा के क्षेत्र में भी भारत ने अनूठी उपलब्धियाँ हासिल की हैं, जो भारतीय संविधान के कारण ही संभव हो सका।

भारत एक विशाल देश है, एक उपमहाद्वीप जैसा, जहाँ असीमित विविधताओं के दर्शन होते हैं। एक ओर यदि भौगोलिक दृष्टि से देखें तो भारत में विशाल पर्वत-श्रृंखलाएँ हैं, विशाल समुद्रतट हैं, रेगिस्तान हैं तो विश्व की सबसे उपजाऊ जमीन है, विशाल वन हैं, अनेकानेक मौसम हैं, अनेक नदियाँ हैं, प्रकृति की अनुपम सौगातें हैं। दूसरी ओर अनेक धर्मों को मानने वाले लोग हैं, अनेक भाषाएँ हैं, बोलियाँ हैं, अनेक संस्कृतियाँ हैं, जनजातीय बहुल क्षेत्र है, जिनकी अपनी अनूठी परंपराएँ हैं, रीति-रिवाज हैं, अपने विश्वास हैं। हमारे विराट् भारत में जहाँ उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान जैसे हिंदीभाषी प्रांत हैं, वहीं गोवा है, मिजोरम, नागालैंड हैं, कश्मीर, लद्दाख भी हैं, सिक्किम भी है। यह विविधता एक वरदान है—

'यूनान मिस्र रोमा, सब मिट गए जहां से,
लेकिन अभी है बाकी नामोनिशां हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।'

यह 'कुछ बात है' हमारे देश की मिट्टी की, वह जादू भरी आत्मीयता है, जो सबको अपना बना लेती है। हमारे राष्ट्र-निर्माताओं ने भारत की विशालता एवं विविधता के परिप्रेक्ष्य में ही संविधान में 'संघीय ढाँचा' (फेडरल स्ट्रक्चर) का प्रावधान किया, ताकि भिन्न-भिन्न प्रांतों में भिन्न-भिन्न प्रकार के जन-समूहों को शासन में भागीदारी प्राप्त हो सके। किसी एक दल का अथवा किसी एक व्यक्ति का या किसी एक शक्तिशाली समूह का वर्चस्व न हो सके। संविधान में विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका को अलग करना तथा उनकी शक्तियों एवं कार्यक्षेत्र को स्पष्ट

रूप से रेखांकित करना भी एक अनूठा कदम था। इन तीनों में संतुलन का सिद्धांत लोकतंत्र को स्वस्थ स्वरूप प्रदान करता है।

संविधान में मौलिक अधिकारों के प्रावधान ने हर नागरिक को शक्ति प्रदान की। स्वतंत्रता का अधिकार, समानता का अधिकार, अभिव्यक्ति का अधिकार, अपने धर्म के पालन का अधिकार आदि। आगे चलकर संविधान संशोधनों के माध्यम से शिक्षा का अधिकार, सूचना का अधिकार, भोजन पाने का अधिकार आदि जुड़ने से लोकतांत्रिक व्यवस्था और सुदृढ़ हुई। सूचना के अधिकार के माध्यम से कोई भी नागरिक सरकार से उसके कामकाज की जानकारी प्राप्त कर सकता है, जिससे पारदर्शिता स्थापित होती है तथा सरकारी अधिकारी मनमानी या अनुचित कार्य करने से डरते हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि सूचना का अधिकार बहुत आसान बनाया गया है तथा कोई भी नागरिक बिना किसी जटिल प्रक्रिया के सरकार से सूचनाएँ माँग सकता है।

एक और विषय की ओर हमारा ध्यान अवश्य जाना चाहिए। भारत के ही साथ एशिया तथा अन्य महाद्वीपों के अनेक देश स्वाधीन हुए। उन्होंने भी लोकतंत्र को अपनाया, किंतु वे लोकतंत्र को सुरक्षित नहीं रख सके। वहाँ सैनिक सत्ताएँ स्थापित हो गईं अथवा तानाशाही आ गई अथवा कहने भर को तो लोकतंत्र रहा, चुनाव रहे, किंतु सही अर्थों में लोकतंत्र कभी नहीं आ सका। भारत ने पूरे विश्व को यह संदेश दिया कि इतने विराट् देश में, इतनी विविधताओं के साथ लोकतंत्र को कैसे सुदृढ़ रखा जा सकता है। ७५ वर्षों की निर्बाध यात्रा पर गर्व किया जाना चाहिए। यह ठीक है कि अनेकानेक चुनौतियाँ आईं, बाधाएँ आईं, दुविधाएँ आईं, संकटों से सामना हुआ, देश ने युद्धों का मुकाबला किया, किंतु लोकतंत्र अक्षुण्ण रहा। यह भी उल्लेखनीय है कि संकट के समय पूरा देश एक ही स्वर में बोला; देश तथा लोकतंत्र और भी मजबूत हुआ, जैसे सोना तपकर कुंदन बन जाता है।

भारत में राष्ट्रपति को तीनों सेनाओं का सर्वोच्च कमांडर बनाए जाने का प्रावधान भी इस संदर्भ में विशेष रूप से प्रशंसनीय है। कितने ही देशों में सेनाएँ उस देश की राजनीति में दखलंदाजी करती हैं। हमारा एक पड़ोसी देश इसका ज्वलंत उदाहरण है, किंतु भारत में सेनाओं का राजनीति से पूरी तरह निरपेक्ष रहना हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था का एक स्वर्णिम पहलू है।

भारत में जिस प्रकार सरकारें बदली हैं, वह भी दुनिया के लिए सुखद आश्चर्य की अनुभूति का कारण बनता है। भारत में चुनावों का जो विराट् आयोजन होता है, वह भी पूरे विश्व के लिए एक विस्मयकारी अनुभव होता है। सुदूर आदिवासी क्षेत्र हों, द्वीप हों, पहाड़ी इलाके हों, चुनाव आयोग एक-एक मत का मान करता है तथा अधिकारियों का दल अनेकानेक बाधाएँ पार करके मतदान की व्यवस्था संपन्न करता है। हमारे मतदाताओं की सूझ-बूझ एवं परिपक्वता को भी बड़े-बड़े विद्वान् या राजनीतिक विश्लेषक नहीं भाँप पाते हैं। कोई कितने भी ऊँचे पद पर रहा हो, मंत्री रहा हो अथवा उच्च अधिकारी या उद्योगपति या कुछ और, मतदाताओं के सामने मात्र एक 'प्रत्याशी' बनकर रह जाता है।

यह भी अत्यंत सुखद है कि जब कभी सत्ताएँ ताकत के नशे में डूबीं, लोकतंत्र की राह से विचलित हुईं, जनता ने उन्हें सीधी राह दिखा दी तथा सत्ता का नशा दूर कर दिया। भारत के युवा शायद ही जानते हों कि पहले आम चुनाव में 'स्वतंत्र पार्टी' दूसरे स्थान पर रही थी, इसी प्रकार 'संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी', 'प्रजा सोशलिस्ट पार्टी', 'भारतीय क्रांतिदल' तथा ऐसे ही अनेक दल अब मौजूद नहीं हैं। राजनीतिक दल बनते-बिगड़ते रहते हैं, सरकारें बनती-बिगड़ती रहती हैं, लेकिन लोकतंत्र का कारवाँ आगे बढ़ता जाता है।

थोड़ा सा पीछे मुड़कर देखें तो जब भारत स्वाधीन होने की दिशा में बढ़ रहा था, तब ब्रिटिश संसद् में वहाँ के नेताओं ने तथा वहाँ के अखबारों, पत्रिकाओं में वहाँ के विद्वानों, बुद्धिजीवियों ने भारत के भविष्य को लेकर कैसी-कैसी भविष्यवाणियाँ की थीं। सबका कहना था कि भारत में इतनी अशिक्षा है, गरीबी है, इतने बँटवारे हैं, विषमताएँ हैं, अंधविश्वास हैं, जाति-धर्म के झगड़े हैं कि यह देश आजादी को सँभाल नहीं पाएगा।

वे सब कितने गलत साबित हुए, भारत स्वाधीन हुआ। भारत में लोकतंत्र की स्थापना हुई। भारत ने वैज्ञानिक प्रगति में विश्व के शीर्षस्थ देशों में अपना स्थान बनाया। भारत ने अपनी एकता-अखंडता को सुरक्षित रखा। अनेकानेक महामारियों, घातक बीमारियों से मुक्ति पाई। भारत के नागरिक की औसत आयु दोगुनी से अधिक हो गई।

चुनौतियाँ आज भी हैं, समस्याएँ आज भी हैं, शहीदों के स्वप्न अभी भी अधूरे हैं, लेकिन भारत लोकतंत्र के रास्ते पर बढ़ता जाएगा। वह विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र तो है ही और विश्व का सबसे प्राचीन लोकतंत्र भी, वह अपनी अनेक समस्याएँ सुलझाकर विश्व के लिए एक आदर्श लोकतंत्र भी बनेगा तथा विश्व के करोड़ों लोगों को इस बात का भरोसा देगा कि लोकतंत्र ही सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था है।

(लक्ष्मी शंकर वाजपेयी)

सा विद्या या विमुक्तये

● पं. विद्यानिवास मिश्र

१४ जनवरी, १९२६ को जनमे लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान् पं. विद्यानिवास मिश्रजी ने पाणिनीय व्याकरण के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन पर पी-एच.डी. पूरी की। वे संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में आचार्य-अध्यक्ष, भाषा विज्ञान तथा आधुनिक भाषा विभाग; निदेशक, क.मा. मुंशी हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, आगरा; कुलपति, काशी विद्यापीठ; कुलपति, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय; अतिथि प्राध्यापक, काशी हिंदू विश्वविद्यालय; कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले तथा वाशिंगटन विश्वविद्यालय, सिएटल। राष्ट्रीय दैनिक 'नवभारत टाइम्स' के प्रधान संपादक, कुलाधिपति, हिंदी विद्यापीठ देवघर (झारखंड) हिंदी मासिक साहित्यिक पत्रिका 'साहित्य अमृत' के संस्थापक संपादक। सन् २००३ में राज्यसभा के सांसद मनोनीत। उन्होंने व्यक्तिव्यंजक निबंध, संस्मरण, यात्रावृत्त, कविता, रेडियोरूपक, साहित्यालोचन एवं अनुवाद के अतिरिक्त भाषा विज्ञान, भारतीय चिंतन एवं संस्कृति, धर्म और सामाजिक विषयों पर मौलिक लेखन तथा अंतरानुशासनिक विषयों पर ग्रंथों का संपादन के साथ विपुल लेखन किया। मूर्तिदेवी पुरस्कार, शंकर सम्मान, विश्व भारती, भारत भारती, अनंत गोपाल शेवड़े सम्मान, डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा पुरस्कार, मंगला प्रसाद पारितोषिक, साहित्य अकादेवी की महत्तर सदस्यता, उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी की रत्न सदस्यता, पद्मश्री तथा पद्मभूषण। जन्म शताब्दी वर्ष के प्रारंभ पर विशेष।

कर्म के मार्ग के बारे में चर्चा करते समय यह बात स्पष्ट कर दी गई थी कि कर्म न ज्ञान का विरोधी है और न ही ज्ञान कर्म का। दोनों एक-दूसरे के सहायक हैं। कर्म की शुद्धता के बिना ज्ञान की शुद्धता सुनिश्चित नहीं होती, न ज्ञान की शुद्धता के बिना कर्म की शुद्धता संभव होती है। ज्ञान का भारतीय परंपरा में अर्थ जानना मात्र नहीं है, विद धातु से कई शब्द बनते हैं, वेद प्रकाशमय ज्ञान की राशि, विद्या, विद्यमान (=वर्तमान), वित्त (=धन, प्राप्ति)। इसका अर्थ यह हुआ कि ज्ञान या ज्ञान की प्रक्रिया या शाखा विद्या बहुत व्यापक अर्थ रखते हैं। आचार्य पतंजलि ने विद्या की तब तक उपयोगिता नहीं मानी है, जब तक वह चार प्रक्रियाओं से सम्पुष्ट न हुई हो। ये चार प्रक्रियाएँ हैं, अध्ययन, मनन, प्रवचन और प्रयोग। अध्ययन का अर्थ है जिज्ञासु होकर कहीं उचित गुरु के पास जाना, विनयपूर्वक उनसे शिक्षा ग्रहण करना। शिक्षा केवल अक्षर की ही नहीं होती, हर एक कौशल की, हर एक कला की होती है और सिखाने वाले केवल साक्षर व्यक्ति ही नहीं होते, गाड़ी हाँकने वाले रैक्व जैसे गँवार भी राजा को शिक्षा दे सकते हैं, काशी का चांडाल श्री शंकराचार्य को शिक्षा दे सकता है, सच्चकिरिया (सत्यक्रिया) की प्रक्रिया बुद्धवचन के ही अनुसार उनके अलावा एक वेश्या उस समय थी दे सकती थी, अध्ययन का अर्थ सीखने के लिए अच्छे सिखाने वालों के पास जाना है और उनके साथ रहकर सीखना है। भारतीय शिक्षा प्रणाली गुरु को ही संस्था मानती रही है।

अध्ययन के बाद है मनन। जो कुछ भी सीखें, उस पर मनन करें, मनन करने की प्रक्रिया में दो बातें आती हैं, एक अपने से पूछना, अपने से उत्तर पाना, दूसरी बात है संगति बिठलाना-समस्त प्राप्त ज्ञान के बीच और ज्ञान तथा आस-पास के जीवन के बीच। उपनिषद् की प्रसिद्ध कथा है, देव, मनुष्य और असुर तीनों ने तप किया, ब्रह्मा प्रसन्न हुए और तीनों को शिक्षा दी—द द द। प्रत्येक से पूछा क्या समझे? प्रत्येक ने पहले उत्तर दिया, हम नहीं समझ पाए। बाद में प्रत्येक ने अपने आप मनन करके अपने लिए अलग-अलग संदेश पाया। देवता ने सोचा—हमसे कहा है—दाम्यत, दमन करो, भोग पर नियंत्रण करो, क्योंकि हमारा स्वभाव बहुत भोगात्मक हो गया है। मनुष्य ने सोचा कि हम बड़े लोभी और परिग्रह के प्रति आसक्त हैं, हमसे कहा है—दत्त, दो, वस्तुओं के प्रति अपनी ममता छोड़ो, वस्तु दो। असुरों ने सोचा कि हमसे कहा गया है कि **दयध्वम्** दया सीखो, हम बहुत क्रूर हो जाते हैं। इस प्रकार मनन से तीनों ने अपने लिए अलग-अलग शिक्षा ग्रहण की। इस कहानी पर हम मनन करेंगे, तो हमें लगेगा कि कि तीनों शिक्षाएँ मनुष्य के लिए हैं, क्योंकि उसमें देव, मनुष्य और असुर तीनों निवास करते हैं, (ये तीन गुणों, सत्त्व, राजस, तमस के ही वाचक है), इन तीनों की कुछ सहज प्रवृत्तियाँ होती हैं, उनके ऊपर काबू पाना चाहिए।

मनन के बाद है प्रवचन। जो सीखा, जिस पर मनन किया, उसकी परख सिखाने से होती है, क्योंकि सिखाते समय जो प्रश्न सीखने वालों

के द्वारा उभारे जाते हैं, वे सीखी हुई विद्या का विस्तार करते हैं, प्रश्नों से ही अधिगत ज्ञान में गति आती है। हमारी ज्ञान-परंपरा बराबर प्रश्नों के समाधानों के रूप में आगे बढ़ी है। उपनिषद् प्रश्नोत्तर है, गीता प्रश्नोत्तर है, बुद्ध के वचन भी प्रश्नों के अधिकतर समाधान ही हैं।

आचार्य पतंजलि ने चिंतन की शैली ही ऐसी बनाई, जिसमें विस्तृत व्याख्या करते समय शंका अपने आप उठाई जाती है, एक समाधान दिया जाता है, वह उतना संतोषजनक नहीं होता, अंत में सबसे सटीक समाधान दिया जाता है। यही पद्धति समस्त शास्त्रों की पद्धति हुई। पहले एक स्थापना दी जाती है, फिर पूर्वपक्ष उठाया जाता है, इस स्थापना में ये दोष हैं। दोषों का परिहार प्रस्तुत किया जाता है। उस परिहार में भी दोष निकाले जाते हैं। स्थापना प्रत्येक समाधान में परिष्कृत होती चलती है। अंत में शास्त्रकार सबसे उचित समाधान देते हुए स्थापना का अत्यंत परिष्कृत रूप रख देता है। आगे आने वाले चिंतक उस परिष्कृत समाधान का और परिष्कार करते हैं। परिष्कार की इस अनवरत प्रक्रिया में भाषा की मंजाई तो होती ही है, विचारों की स्पष्टता भी सुनिश्चित होती चलती है। जहाँ कहीं कोई अर्थ इकहरा न होकर दुहरा है और केवल एक और सही अर्थ देना अभिष्ट है, वहाँ उस अर्थ का वहन करने वाली भाषा माँजी जाती है और विचार भी प्रखरतर बनाए जाते हैं। इस तरह से प्रवचन केवल गुरु-शिष्य संवाद ही नहीं है, अपने आप में भी प्रश्नों और उत्तरों की कल्पना का अभ्यास है। प्रवचन में ये सभी बातें सन्निविष्ट है। अंत में आता है प्रयोग। कालिदास ने कहा है—

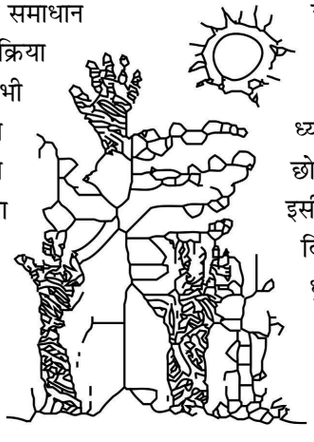

आपरितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।
बलवदपि शिक्षितानां ह्यात्मन्यप्रत्ययं चेत:॥

—मालविकाग्निमित्र

प्रयोग का विज्ञान मैं तब तक ठीक नहीं मानता, जब तक विद्वान् भली-भाँति परितुष्ट न हो जाए। कितनी भी कठिन अभ्यास प्रक्रिया से कोई विद्या क्यों न सीखी गई हो, सीखने वालों को अपने ऊपर विश्वास नहीं होता है। इस श्लोक से दो संकेत मिलते हैं कि हमारे यहाँ प्रयोग विज्ञान है। प्रयोग का अर्थ है प्रकृष्ट योग। योग तो अपने शरीर, मन, वचन, संतुलन तक सीमित रहता है, प्रयोग दूसरों के शरीर, मन, वचन से योग स्थापित करता है। साथ ही प्रयोग परीक्षण है। वस्तुओं के स्वभावों का निरीक्षण करके उनका स्वभाव भी विविधता का कुछ सामान्य कोटियों में वर्गीकरण है। पुन: उनकी ऐसी प्रस्तुति है कि प्रत्येक व्यक्ति को, जो उसे पढ़ता देखता, सुनता है, स्वभाव की विलक्षणता का ठीक-ठीक ज्ञान हो सके।

तुलसीदासजी ने भी कहा है, 'उपजहिं अनत अनत सुख लहहीं।' (अन्यत्र उपजते हैं, अन्यत्र शोभा पाते हैं, रचता कोई है, पर रचना ग्राहक को अच्छी लगती है, तभी शोभा पाती है)। तुलसीदास की बात हर रचना पर लागू होती है और शिक्षा भी रचना ही है।

प्रयोग का तीसरा अर्थ भी है, आचरण में उतारना। 'पर उपदेश कुसल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे'। तुलसीदास की इस उक्ति में यही बात रेखांकित की गई है कि आचरण में न उतारें, तो समस्त अद्वैत पाखंड हो जाता है। सर्वभूतहित की बात उपहास हो जाती है। प्रयोग बाह्य प्रयोग तो है ही, वह समस्त विधाओं का चरम परीक्षण है। व्याकरण पढ़ लिया और व्याकरण के नियमों को अपनी ही भाषा के तत्त्वों पर घटा न सकें, तो व्याकरण ज्ञान व्यर्थ है। प्रश्न ज्योतिष पढ़ा और मुट्ठी में अँगूठी रखकर पूछा गया कि क्या है? प्रयोग में अनभिज्ञ ज्योतिषी ने बतलाया, गोल है, बीच में खाली है, पत्थर है, पर निष्कर्ष निकाला चक्की है। सामान्य ज्ञानवाला व्यक्ति भी जानता है कि चक्की मुट्ठी में नहीं बंद होगी। ज्योतिषी केवल शास्त्र जानता था, उसको प्रयोग से पुष्ट नहीं किया था। प्रयोग और कुछ नहीं, जीवन को खुली आँख से देखना है और शास्त्र को इस जीवन में प्रमाणित करना है। हमारी चिंतन परंपरा जब से प्रयोग से अलग हुई, तब से इसकी गतिशीलता क्षीण होती गई। ज्योतिषी ने नक्षत्रों का निरीक्षण करना छोड़ दिया। वैयाकरण ने भाषा के बदलते स्वरूप को ध्यान से देखना छोड़ दिया। वास्तुशास्त्री ने निर्माण-कार्य छोड़ दिया। नाट्यशास्त्रवेत्ता ने नाटक करना छोड़ दिया। इसी प्रकार दर्शनशास्त्री ने नई ज्ञान सामग्री का परीक्षण छोड़ दिया। इसलिए शास्त्रों की बोधकता कुछ कुहासे के भीतर धुँधली हो गई। पश्चिम के ज्ञान से आतंकित हुए बिना उसे समझना और उसकी क्षमता-अक्षमता को समझना हमारी विद्याओं के विकास के हित में है। हम अपनी विद्याओं को प्राच्य या प्राचीन मानकर भी अलग रख रहे हैं, यह न केवल अपनी विद्याओं के लिए घातक है, यह पश्चिमी विद्याओं के लिए भी घातक है। हमारा मन-मस्तिष्क खुला रहा है। अब भी खुला रहना चाहिए। तभी हम अपने स्वरूप की सही पहचान कर सर्वत्र और अपने ज्ञान का सही उपयोग अपने देश के हित में और विश्व के हित में कर सकेंगे।

हमारे यहाँ ज्ञान-प्रक्रिया एकांतिक नहीं रही है, 'एतावदिति निश्चिता:' (यहीं तक सबकुछ है, ऐसा आसुर बुद्धिवाले ही माने बैठे रहते हैं)। इसीलिए हमारे यहाँ गुरु शिष्य से पराजित होने में अपनी जीत और अपनी सार्थकता मानते हैं। वे यह जानते हैं कि ज्ञान-यात्रा मुझ तक ही समाप्त नहीं होनी चाहिए, यह आगे जानी चाहिए। इसके लिए तैयार होना चाहिए कि सत्य की कसौटी बड़ी निर्मम होती है। इसे देखना हो, तो महाभारत पढ़ें और द्रौपदी और गांधारी के प्रति श्रीकृष्ण के निर्मम वचन पढ़ें, युधिष्ठिर के स्वर्गारोहण के अवसर पर अपने भाइयों और द्रौपदी के बर्फ में गिरते जाने पर कठोर सत्य वचन पढ़ें। सत्य की खोज ही ज्ञान का मुख्य प्रयोजन है। इसीलिए श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि ज्ञान की आग सभी कर्मों को भस्म कर देती है। ज्ञान को आग कहने का अर्थ केवल यह नहीं है कि वह जलाता है, वह केवल दाहक है, आग कहने का यह भी अर्थ है कि वह प्रकाशक है, एक-दूसरे के चेहरे की पहचान कराता है, एक-दूसरे को सन्निकट लाता है, एक-दूसरे को बातचीत के

लिए उकासता भी है, वह आत्मीयता का बोध कराता है। वह अपने चारों ओर घिरे अंधकार का भयमात्र नहीं दूर करता, वह उन आतंकों को भी दूर करता है, जो दूर से हिंस्र पशुओं से संभावित होता है। ये हिंस्र पशु हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य। इसीलिए विद्या को विमुक्ति दिलाने वाली कहा गया, केवल मुक्तिदायिनी नहीं।

ऐसी विद्या सोपानों के द्वारा सीखी जाती है। पहले सीमित वस्तुओं को समझने के लिए सीमित ज्ञान आवश्यक होता है। रेखागणित के सिद्धांत परिभाषा से अशुद्ध बिंदु और रेखा से सीखे जाते हैं, क्योंकि शुद्ध बिंदु और शुद्ध रेखा मूर्त रूप में बनेंगे नहीं, वे अवधारणाएँ हैं। अवधारणा साध्य है, साधन नहीं बनाई जा सकती। हमारे यहाँ न्याय, वैशेषिक, मीमांसा परम ज्ञान के पहले सोपान हैं, सांख्य-योग दूसरे सोपान हैं और वेदांत अंतिम सोपान है। न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और सांख्य और योग दर्शनों में बहुत्व स्वीकार किया गया है। इस बहुत्व को व्यावहारिक स्तर पर समझना आवश्यक है। इसकी उपेक्षा करने से एकत्व का ज्ञान पूरा नहीं होगा।

हमारी सभी विद्याएँ, ज्ञानधाराएँ इसलिए एक-दूसरे की उपकारक हैं, क्योंकि ज्ञान समावेशक है। उनमें आपस में विरोध नहीं, जैसा कि भ्रमवश समझा जाता है। जो एक दर्शन से दूसरे में, एक चिन्तक से दूसरे चिंतक में मतभेद और खंडन-मंडन दिखाई देता है, उसका तात्पर्य यही है कि अखंड को समझने के लिए खंड-खंड अलग करके समझना आवश्यक है। एक खंड को समझने के लिए दूसरे खंड से अलग-अलग वैशिष्ट्य समझना आवश्यक है। श्रीमण और वैदिक विचारधाराओं में विरोध की बात की जाती है। श्रमण विचारधारा में शास्त्रों की विद्रोही विचारधारा की बात की जाती है। लोग यह नहीं सोचते कि वैचारिक टकराव टकराव नहीं है, वह सत्य को समझने का अभ्यास है।

पहले हम द्रव्यों को वस्तु के रूप में समझते हैं, और अव्यक्त आत्मा को भी उसी तरह द्रव्य मानते हैं, जैसे काल दिक और आकाश को। इसके बाद हम द्रष्टा और दृश्य के रूप में दूसरे सोपान में विभाजन करते हैं। जब द्रष्टा का ज्ञान हो जाता है, तो अंतिम सोपान में हम द्रष्टा-दृश्य में अंतर मिटा देते हैं।

इस प्रकार हम उपनिषद के शब्दों में—

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।

अविद्या के द्वारा हम मृत्यु का संतरण करते हैं। अविद्या अर्थात् सीमित ज्ञान हमें केवल वहीं तक पहुँचाती है, जहाँ हम यह जान पाते हैं कि मृत्यु अंत नहीं है, खंडित सत्य सत्य नहीं है। परंतु असीमित ज्ञान अर्थात् विद्या के द्वारा यह संभव होता है कि अमृत तत्त्व के आस्वादक बनें। अखंड सत्य अखंड आनंद है। दु:ख से मुक्ति होगी, विमुक्ति नहीं है। आनंद की प्राप्ति दु:ख-सुख से परे निर्बाध अनंत आनंद की प्राप्ति की विमुक्ति है।

हमारी सभी विद्याएँ, ज्ञानधाराएँ इसलिए एक-दूसरे की उपकारक हैं, क्योंकि ज्ञान समावेशक है। उनमें आपस में विरोध नहीं, जैसा कि भ्रमवश समझा जाता है। जो एक दर्शन से दूसरे में, एक चिन्तक से दूसरे चिंतक में मतभेद और खंडन-मंडन दिखाई देता है, उसका तात्पर्य यही है कि अखंड को समझने के लिए खंड-खंड अलग करके समझना आवश्यक है। एक खंड को समझने के लिए दूसरे खंड से अलग-अलग वैशिष्ट्य समझना आवश्यक है। श्रीमण और वैदिक विचारधाराओं में विरोध की बात की जाती है। श्रमण विचारधारा में शास्त्रों की विद्रोही विचारधारा की बात की जाती है। लोग यह नहीं सोचते कि वैचारिक टकराव टकराव नहीं है, वह सत्य को समझने का अभ्यास है। देखना यह चाहिए कि क्या जीवन-पद्धति में टकराव है? वहाँ तो सामान्य भूमि है ही। प्रात:काल से दूसरे प्रात:काल तक दैनंदिन जीवन एक-सा है, विरक्त परिव्राजकों के लिए आदरभाव एक-सा है, ज्ञान सीखने की गुरु-शिष्य परंपरा एक-सी है, भक्ति भाव और उसकी बाह्य और आभ्यंतर अभिव्यक्ति एक-सी है, योग का अनुशासन एक-सा है, कर्मवाद एक-सा है। यह स्वीकार भाव भी एक-सा है कि प्रत्येक को अपनी रुचि के अनुसार परम सत्य के अनुसंधान का मार्ग वरण करने का अधिकार है। यदि ऐसी बात है, तो यही भाव पश्चिम की ज्ञान-पद्धति और साधना-पद्धति के प्रति भी होना हमारी परंपरा की दृष्टि से सहज है। संकोच पश्चिम के लोगों को हो सकता है, क्योंकि अभी भी चार सौ वर्षों की औपनिवेशिक मनोवृत्ति से उनकी मुक्ति नहीं हुई है, हमारी तो विमुक्ति पहले ही हो चुकी है। विश्व को ज्ञान के इस विमोचक रूप को आज नहीं, तो कल पहचानना ही होगा कि सभी ज्ञान में यह क्षमता होनी चाहिए कि अपना कहा जाने वाला सबकुछ जाता हो, चला जाए, पर मनुष्य की ज्ञान-यात्रा ठीक राह पर चलती रहे। जो चिंतन परंपरा ईश्वर को माया से ढँका कह सकती है और इसे चरम सत्य नहीं स्वीकार करती है, तथागत को भी संवृत्ति मानकर अवास्तविक मान सकती है, वह कभी क्षीण नहीं होगी। जो शुद्ध ज्ञान की परिभाषा यह मानता है कि—

सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते।
अविभक्तं विभक्तेषु ज्ञानं तद्विद्धि सात्त्विकम्॥

वही ज्ञान शुद्ध ज्ञान है, तो समस्त प्राणियों में, समस्त पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, पंचमहाभूतों में, समस्त सत्ताओं में एक न चुकने वाला भाव जो है, उससे कुछ अलग होने का भाव, जो जानना चाहते हैं, वह होने का भाव देखता है और जो विभक्ति विलग दिखने वाले पदार्थों में एक अविभक्त (संपूर्ण, अखंड) भाव देखता है। वह स्वयं भी कभी चुकेगा नहीं, वह अव्यय बना रहेगा, भले वह सीमित अर्थ में कुछ कम शक्तिशाली दिखे। इस सात्त्विक शुद्ध ज्ञान की आवश्यकता आज के खंडित और परस्पर अविश्वासी, परस्पर भयभीत संसार में जितनी है और दिनोंदिन जितनी और बढ़ती जाएगी, उतनी कभी न रही होगी। भयंकर जकड़न के बीच विमुक्ति अधिक जोरदार होती है। वह जकड़न चतुर्दिक् हैं, जड़ वस्तुओं की नहीं, जड़ वस्तुओं के साथ जुड़ाव की जकड़न और पीड़ा दे रही है। वही आशा है नए या अपने पुराने ज्ञानोदय की।

महाकुंभ : एकता का महायज्ञ

● **नरेंद्र मोदी**

विश्व का इतना बड़ा आयोजन, हर रोज लाखों श्रद्धालुओं का स्वागत और चलने वाला महायज्ञ, एक नया नगर बसाने का महा-अभियान, प्रयागराज की धरती पर एक नया इतिहास रचा जा रहा है। २०२५ के प्रारंभ में महाकुंभ का आयोजन देश की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक पहचान को नए शिखर पर स्थापित करेगा। मैं तो बड़े विश्वास के साथ कहता हूँ, बड़ी श्रद्धा के साथ कहता हूँ, अगर मुझे इस महाकुंभ का वर्णन एक वाक्य में करना हो तो मैं कहूँगा—यह 'एकता का महायज्ञ' होगा।

हमारा भारत पवित्र स्थलों और तीर्थों का देश है। गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा जैसी अनेक पवित्र नदियों का देश है। इन नदियों के प्रवाह की जो पवित्रता है, इन अनेकानेक तीर्थों का जो महत्त्व है, जो माहात्म्य है, उनका संगम, उनका समुच्चय, उनका योग, उनका संयोग, उनका प्रभाव, उनका प्रताप यह प्रयागराज है। यह केवल तीन पवित्र नदियों का ही संगम नहीं है। प्रयाग के बारे में कहा गया है—माघ मकरगत रबि जब होई। तीरथपतिहिं आव सब कोई॥ अर्थात् जब सूर्य मकर में प्रवेश करते हैं, सभी दैवीय शक्तियाँ, सभी तीर्थ, सभी ऋषि, महर्षि, मनीषी प्रयाग में आ जाते हैं। यह वह स्थान है, जिसके प्रभाव के बिना पुराण पूरे नहीं होते। प्रयागराज वह स्थान है, जिसकी प्रशंसा वेद की ऋचाओं ने की है।

प्रयाग में पग-पग पर पवित्र स्थान हैं, पग-पग पर पुण्य क्षेत्र हैं। त्रिवेणीं माधवं सोमं, भरद्वाजं च वासुकिम्। वन्दे अक्षय-वटं शेषं, प्रयागं तीर्थनायकम्॥ अर्थात् त्रिवेणी का त्रिकाल प्रभाव, वेणी माधव की महिमा, सोमेश्वर के आशीर्वाद, ऋषि भरद्वाज की तपोभूमि, नागराज वासुकि का विशेष स्थान, अक्षय वट की अमरता और शेष की अशेष कृपा—ऐसा है हमारा तीर्थराज प्रयाग! तीर्थराज प्रयाग यानी 'चारि पदारथ भरा भँडारू। पुन्य प्रदेस देस अति चारू'॥ अर्थात् जहाँ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ सुलभ हैं, वह प्रयाग है। प्रयागराज केवल एक भौगोलिक भूखंड नहीं है। यह एक आध्यात्मिक अनुभव क्षेत्र है। पिछले कुंभ में भी मुझे संगम में स्नान करने का सौभाग्य मिला था। २०२५ कुंभ के आरंभ से पहले मैंने एक बार फिर माँ गंगा के चरणों में आकर आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त किया है। मैंने संगम घाट के लेटे हुए हनुमानजी के दर्शन किए। अक्षयवट वृक्ष का आशीर्वाद भी प्राप्त किया। इन दोनों स्थलों पर श्रद्धालुओं की सहूलियत के लिए हनुमान कॉरिडोर और अक्षयवट कॉरिडोर का निर्माण हो रहा है।

महाकुंभ हजारों वर्ष पहले से चली आ रही हमारे देश की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक यात्रा का पुण्य और जीवंत प्रतीक है। एक ऐसा आयोजन, जहाँ हर बार धर्म, ज्ञान, भक्ति और कला का दिव्य समागम होता है। हमारे यहाँ कहा गया है—दश तीर्थ सहस्राणि, तिस्र: कोट्यस्तथा अपरा:। सम आगच्छन्ति माघ्यां तु प्रयागे भरतर्षभ॥ अर्थात् संगम में स्नान से करोड़ों तीर्थ के बराबर पुण्य मिल जाता है। जो व्यक्ति प्रयाग में स्नान करता है, वह हर पाप से मुक्त हो जाता है। राजा-महाराजाओं का दौर हो या फिर सैकड़ों वर्षों की गुलामी का कालखंड, आस्था का यह प्रवाह कभी नहीं रुका। इसकी एक बड़ी वजह यह रही है कि कुंभ का कारक कोई बाह्य शक्ति नहीं है। किसी बाहरी व्यवस्था के बजाय कुंभ मनुष्य के अंतर्मन की चेतना का नाम है। यह चेतना स्वत: जाग्रत् होती है। यही चेतना भारत के कोने-कोने से लोगों को संगम के तट तक खींच लाती है। गाँव, कस्बों, शहरों से लोग प्रयागराज की ओर निकल पड़ते हैं। सामूहिकता की ऐसी शक्ति, ऐसा समागम शायद ही कहीं और देखने को मिले। यहाँ आकर संत-महंत, ऋषि-मुनि, ज्ञानी-विद्वान्, सामान्य मानवी सब एक हो जाते हैं; सब एक साथ त्रिवेणी में डुबकी लगाते हैं। यहाँ जातियों का भेद खत्म हो जाता है, संप्रदायों का टकराव मिट जाता है। करोड़ों लोग एक ध्येय, एक विचार से जुड़ जाते हैं। इस बार भी महाकुंभ के दौरान यहाँ अलग-अलग राज्यों से करोड़ों स्नानार्थी जुटेंगे। उनकी भाषा अलग होगी, जातियाँ अलग होंगी, मान्यताएँ अलग होंगी, लेकिन संगम नगरी में आकर वे सब एक हो जाएँगे। इसलिए मैं फिर एक बार कहता हूँ कि महाकुंभ एकता का महायज्ञ है, जिसमें हर तरह के भेदभाव की आहुति दे दी जाती है। संगम में डुबकी लगाने वाला हर भारतीय 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की अद्‌भुत तसवीर प्रस्तुत करता है।

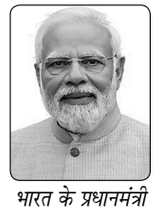

भारत के प्रधानमंत्री

महाकुंभ की परंपरा का सबसे अहम पहलू यह है कि इस दौरान देश को दिशा मिलती है। कुंभ के दौरान संतों के वाद में, संवाद में, शास्त्रार्थ में, देश के सामने उपस्थित अहम विषयों और आसन्न चुनौतियों पर व्यापक चर्चा होती थी और फिर संतजन मिलकर राष्ट्र के विचारों को एक नई ऊर्जा देते थे, नई राह भी दिखाते थे। संत-महात्माओं ने देश से जुड़े कई महत्त्वपूर्ण निर्णय कुंभ जैसे आयोजन स्थल पर ही लिये हैं। जब संचार के आधुनिक माध्यम नहीं थे, तब कुंभ जैसे आयोजनों ने बड़े सामाजिक परिवर्तनों का आधार तैयार किया था। कुंभ में संत और ज्ञानी लोग मिलकर समाज के सुख-दु:ख की चर्चा करते थे, वर्तमान और भविष्य को लेकर चिंतन करते थे; आज भी कुंभ जैसे बड़े आयोजनों का माहात्म्य वैसा ही है। ऐसे आयोजनों से देश के कोने-कोने में समाज में सकारात्मक संदेश जाता है, राष्ट्रचिंतन की यह धारा निरंतर प्रवाहित होती है। इन आयोजनों के नाम अलग-अलग होते हैं, पड़ाव अलग-अलग होते हैं, मार्ग अलग-अलग होते हैं, लेकिन यात्री एक होते हैं, मकसद एक होता है।

कुंभ और धार्मिक यात्राओं का इतना महत्त्व होने के बावजूद पहले की सरकारों के समय इनके माहात्म्य पर ध्यान नहीं दिया गया। श्रद्धालु ऐसे आयोजनों में कष्ट उठाते रहे, लेकिन तब की सरकारों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। इसकी वजह थी कि भारतीय संस्कृति से, भारत की आस्था से उनका लगाव नहीं था, लेकिन आज केंद्र और राज्य में भारत के प्रति आस्था, भारतीय संस्कृति को मान देने वाली सरकार है, इसलिए कुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए सुविधाएँ जुटाना डबल इंजन की सरकार अपना दायित्व समझती है। इसलिए यहाँ केंद्र और राज्य सरकार ने मिलकर हजारों करोड़ रुपए की योजनाएँ शुरू की हैं।

हमारी सरकार ने विकास के साथ-साथ विरासत को भी समृद्ध बनाने पर फोकस किया है। आज देश के कई हिस्सों में अलग-अलग टूरिस्ट सर्किट विकसित किए जा रहे हैं। रामायण सर्किट, श्रीकृष्ण सर्किट, बुद्धिस्ट सर्किट, तीर्थंकर सर्किट—इनके माध्यम से हम देश के उन स्थानों को महत्त्व दे रहे हैं, जिन पर पहले फोकस नहीं था। स्वदेश दर्शन योजना हो, प्रसाद योजना हो—इनके माध्यम से तीर्थस्थलों पर सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। अयोध्या के भव्य राम मंदिर ने पूरे शहर को कैसे भव्य बना दिया है, हम सब इसके साक्षी हैं। विश्वनाथ धाम, महाकाल महालोक की चर्चा आज पूरे विश्व में है। यहाँ अक्षयवट कॉरिडोर, हनुमान मंदिर कॉरिडोर, भरद्वाज ऋषि आश्रम कॉरिडोर भी इसी विजन का प्रतिबिंब हैं। श्रद्धालुओं के लिए सरस्वती कूप, पातालपुरी, नागवासुकि, द्वादश माधव मंदिर का कायाकल्प किया जा रहा है।

पुण्य प्रयागराज निषादराज की भी भूमि है। भगवान् राम के मर्यादा पुरुषोत्तम बनने की यात्रा में एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव शृंगवेरपुर का भी है। भगवान् राम और केवट का प्रसंग आज भी हमें प्रेरित करता है। केवट ने अपने प्रभु को सामने पाकर उनके पैर धोए थे, उन्हें अपनी नाव से गंगा पार कराई थी। इस प्रसंग में श्रद्धा का अनन्य भाव है, इसमें भगवान् और भक्त की मित्रता का संदेश है। इस घटना का संदेश है कि भगवान् भी अपने भक्त की मदद ले सकते हैं। प्रभु श्रीराम और निषादराज की इसी मित्रता के प्रतीक के रूप में शृंगवेरपुर धाम का विकास किया जा रहा है। भगवान् राम और निषादराज की प्रतिमा भी आने वाली पीढ़ियों को समता और समरसता का संदेश देती रहेगी।

कुंभ जैसे भव्य और दिव्य आयोजन को सफल बनाने में स्वच्छता की बहुत बड़ी भूमिका है। महाकुंभ की तैयारियों के लिए 'नमामि गंगे' कार्यक्रम को तेजी से आगे बढ़ाया गया है। प्रयागराज शहर के सैनिटेशन और वेस्ट मैनेजमेंट पर फोकस किया गया है। लोगों को जागरूक करने के लिए 'गंगा दूत', 'गंगा प्रहरी' और 'गंगा मित्रों' की नियुक्ति की गई है। इस बार कुंभ में १५ हजार से अधिक सफाईकर्मी भाई-बहन कुंभ की स्वच्छता को सँभालने वाले हैं। कुंभ की तैयारी में जुटे अपने सफाईकर्मी भाई-बहनों का अग्रिम आभार भी व्यक्त करूँगा। करोड़ों लोग यहाँ पर जिस पवित्रता, स्वच्छता, आध्यात्मिकता के साक्षी बनेंगे, इनके योगदान से ही संभव होगा। इस नाते यहाँ हर श्रद्धालु के पुण्य में भी भागीदार बनेंगे। जैसे भगवान् कृष्ण ने जूठी पत्तल उठाकर संदेश दिया था कि हर काम का महत्त्व है, वैसे ही आप भी अपने कार्यों से इस आयोजन की महानता को और बड़ा करेंगे। आप ही हैं, जो सुबह सबसे पहले ड्यूटी पर लगते हैं और देर रात तक आपका काम चलता रहता है। २०१९ में भी कुंभ आयोजन के समय यहाँ की स्वच्छता की बहुत प्रशंसा हुई थी। जो लोग हर ६ वर्ष पर कुंभ या महाकुंभ में स्नान के लिए आते हैं, उन्होंने पहली बार इतनी साफ-सुंदर व्यवस्था देखी थी, इसलिए आपके पैर धोकर मैंने कृतज्ञता व्यक्त की थी।

कुंभ से जुड़ा एक और पक्ष है, जिसकी चर्चा उतनी नहीं हो पाती। यह पक्ष है—कुंभ से आर्थिक गतिविधियों का विस्तार। हम सभी देख रहे हैं, कैसे कुंभ से पहले इस क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों में तेजी आ रही है। लगभग डेढ़ महीने तक संगम किनारे एक नया शहर बसा रहेगा। यहाँ हर रोज लाखों की संख्या में लोग आएँगे। पूरी व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रयागराज में बड़ी संख्या में लोगों की जरूरत पड़ेगी। ६००० से ज्यादा हमारे नाविक साथी, हजारों दुकानदार साथी, पूजा-पाठ और स्नान-ध्यान कराने में मदद करने वाले सभी का काम बहुत बढ़ेगा, यानी यहाँ बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर तैयार होंगे। सप्लाई चेन को बनाए रखने के लिए व्यापारियों को दूसरे शहरों से सामान मँगाने पड़ेंगे। प्रयागराज कुंभ का प्रभाव आसपास के जिलों पर भी पड़ेगा। देश के दूसरे राज्यों से आने वाले श्रद्धालु ट्रेन या विमान की सेवाएँ लेंगे, इससे भी अर्थव्यवस्था में गति आएगी, यानी महाकुंभ से सामाजिक मजबूती तो मिलेगी ही, लोगों का आर्थिक सशक्तीकरण भी होगा।

महाकुंभ २०२५ का आयोजन जिस दौर में हो रहा है, वह टेक्नोलॉजी के मामले में पिछले आयोजन से बहुत आगे है। आज पहले की तुलना में कई गुना ज्यादा लोगों के पास स्मार्ट फोन हैं। २०१३ में आयोजित महाकुंभ के समय डेटा आज की तरह सस्ता नहीं था। आज मोबाइल फोन में यूजर फ्रेंडली ऐप्स हैं, जिसे कम जानकार व्यक्ति भी उपयोग में ला सकता है। अभी यहाँ कुंभ सहायक चैटबॉट को लॉन्च किया गया है। पहली बार कुंभ आयोजन में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और चैटबॉट का प्रयोग होगा। ए.आई. चैटबॉट ग्यारह भारतीय भाषाओं में संवाद करने में सक्षम है। मेरा सुझाव है कि डेटा और टेक्नोलॉजी के इस संगम से ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को जोड़ा जाए, जैसे महाकुंभ से जुड़ी फोटोग्राफी कंपटीशन का आयोजन किया जा सकता है। महाकुंभ को एकता के महायज्ञ के रूप में दिखाने वाली फोटोग्राफी की प्रतियोगिता रख सकते हैं। इस पहल से युवाओं में कुंभ का आकर्षण बढ़ेगा। कुंभ में आने वाले ज्यादातर श्रद्धालु इसमें हिस्सा लेंगे। जब ये तसवीरें सोशल मीडिया पर पहुँचेंगी तो कितना बड़ा कैनवास तैयार होगा, इसकी कल्पना नहीं कर सकते। इसमें कितने रंग, कितनी भावनाएँ मिलेंगी, यह सब गिन पाना मुश्किल होगा। आप अध्यात्म और प्रकृति से जुड़ी किसी प्रतियोगिता का आयोजन भी कर सकते हैं।

देश एक साथ विकसित भारत के संकल्प की ओर तेजी से बढ़ रहा है। मुझे विश्वास है कि इस महाकुंभ से निकली आध्यात्मिक और सामूहिक शक्ति हमारे इस संकल्प को और मजबूत बनाएगी।

प्रधानमंत्री निवास, ७ लोक कल्याण मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

अनामंत्रित

● **रामनगीना मौर्य**

"पा! जरा इधर तो आइए? मिथिलेश्वर अंकल ने आज सोशल-मीडिया पर ताशी दीदी की शादी की जो ये बाईस-तेईस तसवीरें पोस्ट की हैं, उन्हें जरा गौर से देखिए। ताशी दीदी की शादी में तो हम सभी लोग गए थे। लेकिन किसी भी फोटो में आप, मम्मी या मैं, कहीं भी नहीं दिख रहे। ताशी दीदी ने जयमाल के बाद अपनी सहेलियों संग जो फोटो सेशन कराया था, उसमें तो मैं भी तीन-चार जगह थी, लेकिन वह वाली एक भी फोटो यहाँ नहीं दिख रही? यह देखिए, मेरे मोबाइल में तो ताशी दीदी संग खिंची गई दस-बारह फोटोज भी हैं।"

"हाँ बेटा! तुमने ठीक गौर किया। हम लोग तो किसी भी फोटो में नहीं हैं। यह तो वाकई आश्चर्यजनक बात है।"

"और बाकी कुछ अंकलजी, ये एस.पी. अंकल, ये इंजीनियर अंकल, ये डॉक्टर अंकल और जरा ये गायिका सुषमा आंटीजी की भी पोस्ट देखिए? इन लोगों ने भी शादी-समारोह की तसवीरें अपने-अपने वॉल पर पोस्ट की हैं, लेकिन उनके भी किसी पोस्ट में हम लोग नहीं दिख रहे हैं?"

"बड़ी अजीब बात है। बच्चों की ग्रुपिंग में एक फोटो ऐसी जरूर है, जिसमें तुम हो। हम लोग तो सचमुच कहीं नहीं दिख रहे हैं। क्या वजह हो सकती है? खैर···अभी तुम जाओ। अगले हफ्ते से तुम्हारे एग्जाम्स शुरू होने वाले हैं। अपनी पढ़ाई की तरफ ध्यान दो। मैं देख रहा हूँ, आजकल तुम्हारे हाथ में हर वक्त ये स्मॉर्ट-फोन रहता है। अगर एग्जाम में अच्छे नंबर लाने हैं तो सोशल-मीडिया से कुछ दिन के लिए दूरी बना लो।"

सम्यकजी अब अपनी बिटिया को क्या समझाते? उन्होंने तो उसे सोशल-मीडिया पर अनावश्यक समय बिताने के बजाय पढ़ाई की तरफ ध्यान देने का लैक्चर पिलाते, हल्के झिड़कते, उसे वहाँ से जाने के लिए कह दिया, लेकिन उन तसवीरों में उनके परिवार को नेग्लेक्ट करने के कारणों पर तो उनके दिलोदिमाग में मंथन चल ही रहा था। देर तक इसके पीछे छुपे कारणों पर अंतर्गुंफित से सोचते, भन्नाए, मौन साधे बैठे रहे।

बहरहाल, रुकिए! अगर सम्यकजी अपनी बिटिया को इसके पीछे के कारणों के बारे में नहीं बता पाए, तो क्या हमारा फर्ज नहीं बनता कि हम आप सभी को उन कारणों के बारे में तफसील से बताएँ कि सम्यकजी और उनके परिवार के लोगों की तसवीरें सोशल-मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्मों पर साझा की गई उन पोस्ट्स में क्यों नहीं हैं? जैसा कि हम सब वाकिफ हैं, हर कहानी का मध्य, अंत और शुरुआत होती है, इसकी भी है। हालाँकि···इसके लिए कुछ वर्ष पीछे जाकर फिर वापस आना होगा।

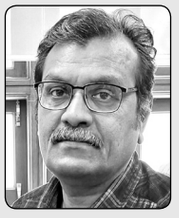

सुपरिचित लेखक। अब तक आठ कहानी-संग्रह तथा कई साझा संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित। 'साहित्य गौरव सम्मान', 'डॉ. विद्यानिवास मिश्र पुरस्कार', 'साहित्य शिरोमणि सम्मान', 'लोकमत सम्मान', 'साहित्यकार सम्मान', 'प्रो. श्यामनारायण लाल स्मृति सम्मान', 'पं. प्रताप नारायण मिश्र सम्मान' एवं कई सम्मानों से सम्मानित। संप्रति उत्तर प्रदेश सचिवालय, लखनऊ में विशेष सचिव के पद पर कार्यरत।

सम्यकजी खाद्य महकमे में इंस्पेक्टर हैं। उनकी पत्नी संगीताजी एक सरकारी स्कूल में अध्यापिका हैं। इन दोनों की एक बेटी वैशाली भी है, जो शहर के प्रतिष्ठित पब्लिक स्कूल में पढ़ती है। बिटिया पढ़ने-लिखने में शुरू से ही होनहार रही है, लिहाजा उसके माँ-बाप को उसे हमेशा ही प्रशासनिक अफसर के रूप में देखने की इच्छा रही। लेकिन बिटिया तो किसी और मिट्टी की बनी हुई थी, उसने उन्हें साफ मना कर दिया। उसकी अभिरुचि प्रशासनिक सेवाओं में जाने के बजाय खुद का स्टॉर्टअप शुरू करने की थी।

फिलहाल···थोड़ी देर के लिए वैशाली बिटिया को यहीं छोड़ते हैं, और लौटते हैं उसके माँ-बाप की तरफ।

सम्यकजी की रुचि अपने कार्य के साथ-साथ, मित्र मंडली संग यदा-कदा छिट-पुट सामाजिक कार्यों में भी रही है। उनकी अध्यापिका पत्नी संगीताजी भी कभी-कभार उनके साथ ऐसे कार्यों में प्रतिभाग कर लेतीं, जिससे सम्यकजी और उनकी पत्नी की खासी बड़ी मित्र मंडली हो गई। संगीताजी को अध्यापन के साथ-साथ कविताएँ लिखने का भी शौक रहा है। यदा-कदा वे अपनी कविताएँ सोशल-मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्मों पर साझा भी करती रहती हैं। जाहिर है, उनकी कविताओं को पसंद करने वालों में उनकी मित्र मंडली के ही ज्यादातर सदस्य रहते हैं। अमूमन हर कविता पर उन्हें सौ-डेढ़ सौ लाइक्स और पचास-साठ के

आसपास कमेंट्स आदि तो मिल ही जाते हैं। पिछले कुछ वर्षों से लगभग इसी तरह की दिनचर्याओं में उनका जीवन व्यतीत होता रहा। वे और लगभग उनकी पूरी मित्र मंडली ही आभासी दुनिया के भ्रमजाल में व्यस्त रहती। अगर कहा जाए कि योमो, यानी 'फियर ऑफ मिसिंग आउट' जैसी किसी मन:स्थिति में आकर किसी तरह की कुंठाग्रस्त स्थिति में हों, तो कोई आश्चर्य नहीं होगा।

यद्यपि सम्यकजी से मेरी गहरी दोस्ती नहीं है। जान-पहचान ही है। परंतु एक ही शहर में पोस्टिंग होने के कारण राह चलते बाजार, कचहरी, मॉल, रेस्तराँ या किसी सरकारी दफ्तर आदि में यदा-कदा उनसे मुलाकात हो ही जाती है। काफी पहले वे किसी सज्जन के काम से, उन्हें लेकर मेरे घर भी आ चुके हैं। ड्रॉइंग-रूम में किताबों की रैक देखकर, पढ़ने-लिखने की मेरी अभिरुचि देखते, पढ़ने वास्ते वे मुझसे कुछ किताबें भी माँगकर ले गए थे। मुझे याद है कि कुछ किताबों संग तो उन्होंने विभिन्न भाव-मुद्रा में मेरे साथ फोटो भी खिंचाए थे। किताबों में उनकी रुचि देखते मुझे लगा कि उन्हें भी पढ़ने का शौक है, सो मैंने उन्हें पढ़कर लौटा देने की शर्त पर कुछ किताबें दे दी थीं। लेकिन मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि अगले दिन उन्होंने मेरी किताबों संग विभिन्न मुद्राओं में उतारी गई वे तसवीरें सोशल-मीडिया पर साझा करते, मुझसे हुई मुलाकात के बारे में कशीदें काढ़ते, साहित्य की वर्तमान स्थिति पर देर तक चर्चा करने की बातें लिख मारी थीं। जबकि मुझे अच्छी तरह याद है, उनके संग मेरी ऐसी कोई बातचीत नहीं हुई थी। उन्होंने कुछ किताबों संग मेरे साथ फोटो जरूर खिंचाई थी। हाँ, बाकी समय वे चाय-बिस्कुट और नमकीन पर ही हाथ साफ करते रहे। कहाँ साहित्य और कहाँ की साहित्यिक बातचीत?

चूँकि उनकी आदत थी, जब-तब लोगों से मिलने पर उसे यादगार मुलाकात बताते, सोशल-मीडिया पर तसवीरें साझा करने की, सो मैंने भी उस घटना को गंभीरतापूर्वक नहीं लिया। हाँ, इतना जरूर याद है कि कुछ समय बाद अपनी किताबों की वापसी के संबंध में याद दिलाने पर उन्होंने मेरी किताबें यह कहते लौटा दी थीं कि 'भाई साहब, कामकाजी व्यस्तता की वजह से आपकी किताबें पढ़ नहीं पाया।'

बहरहाल, मेरे और उनके विचार मिलते-जुलते नहीं थे, उनकी गतिविधियाँ, प्राथमिकताएँ, सहभागिताएँ, ज्यादातर अपने संगी-साथियों तक ही सीमित रहती थीं। कुछ मुद्दों को लेकर यदा-कदा उनसे बहस भी हो जाती। फिर मुझे यह अहसास भी था कि उनकी ये गतिविधियाँ, कवायदें येन-केन-प्रकारेण चर्चा में बने रहने के उद्देश्य से ही थीं। उनके क्रियाकलापों में गंभीरता कम, दिखावा या प्रदर्शन ज्यादा रहता। जाहिर है, मेरी मंजिल, मुद्दे, मकसद, उनसे भिन्न होने के कारण मेरा उन संग निभ पाना संभव नहीं था, सो इन्हीं सब कारणों से मैं उनकी मित्र मंडली से लगभग बाहर ही रहा।

समय बीतने के साथ-साथ स्वाभाविक तौर पर उनकी मित्र मंडली भी शनै:-शनै: बढ़ती रही। बताता चलूँ, उनकी मित्र मंडली में ज्यादातर सेवारत, सेवानिवृत्त, विभिन्न पदों पर रह रहे, रह चुके प्रशासनिक अधिकारी आदि ही थे। कालांतर में उनकी मित्र मंडली में कुछ पुराने, नए जनप्रतिनिधिगण और शहर की नामी-गिरामी हस्तियाँ, कुछ सेलिब्रिटीज आदि भी शामिल होती गईं। ऐसा विश्वास के साथ इसलिए भी कह रहा हूँ कि वे अपनी मित्र मंडली के साथ जब भी कहीं किसी फंक्शन आदि में होते, बीते दिनों किसी मित्र से मिले होते, परिवार संग पिकनिक पर गए होते या मेट्रो-ट्रेन, चिड़िया घर में बाल-ट्रेन, नाव आदि की सवारी किए होते, तो यादगार के लिए हर किसी मौके पर प्राय: उन संग, उनके और अपने पारिवारिक सदस्यों संग ली गई ढेरों तसवीरें, सेल्फी आदि सोशल-मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्मों पर साझा जरूर करते।

कभी-कभी तो ये मित्र मंडली, शहर से दूर किसी रिसोर्ट में देर रात तक पार्टियाँ आयोजित करते, गप्पें मारते, लेडीज-संगीत कार्यक्रम आदि में नाचने-गाने-थिरकने के वीडियो-क्लिप्स, यहाँ तक कि अपने बचपन की बातें, तसवीरें उनसे जुड़ी धुँधली यादें भी यदा-कदा सोशल-मीडिया पर इस तरह साझा करते, मानो इनके बीच वर्षों पुरानी गाढ़ी दोस्ती हो।

ऐसा उनके मित्रगण भी करते थे, लेकिन उन संग खींची गई तसवीरें, सेल्फी आदि सोशल-मीडिया पर पोस्ट करने में सम्यकजी कुछ ज्यादा ही उत्साह दिखाते थे। सम्यकजी आखिर थे तो इंस्पेक्टर ही, लेकिन उनकी मित्र मंडली के लोग, जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, बड़े अधिकारी या शहर, प्रदेश के गण्यमान्यजन भी थे। जाहिर है, उन लोगों की पत्नियाँ और बच्चे भी खुद को उसी अनुसार, बड़ी पदवी वाले या सेलीब्रिटी आदि ही समझते थे।

विगत सात-आठ वर्षों में हुआ यह कि सम्यकजी तो इंस्पेक्टर पद पर ही रह गए। लेकिन समय बीतने के साथ-साथ उनकी मित्र मंडली में जो अधिकारी वर्ग से थे, वे सभी अपने-अपने विभागों में पदोन्नति पाते गए। अन्य गण्यमान्यजन भी अपने-अपने क्षेत्रों में तरक्की करते गए। साथ ही उन सभी के बच्चे भी ऊँची कक्षाओं में पहुँचते रहे।

शुरुआती वर्षों में सम्यकजी को ये सब बहुत अच्छा लगता था। सम्यकजी की बच्ची वैशाली ने भी मित्र मंडली के सदस्यों के बच्चों संग ही प्रतिष्ठित स्कूल में पढ़ाई की। साप्ताहिक छुट्टियों में या यदा-कदा किसी कार्यक्रम आदि में जब ये मित्र मंडली आपस में मिलती-जुलती, तो इन सदस्यों के बच्चे भी आपस में हँसते-बोलते-खेलते।

स्कूली दिनों के बाद मित्र मंडली में सभी सदस्यों के बच्चे अपने-अपने माता-पिता की इच्छाओं या अपनी अभिरुचि के अनुसार इंजीनियरिंग, मेडिकल या अन्य स्ट्रीम आदि में कॅरियर बनाने हेतु शहर के प्रतिष्ठित इंस्टीट्यूट में, तो कुछ बच्चों ने उच्चशिक्षा के लिए अन्य शहरों का रुख किया। वैशाली ने शहर के विश्वविद्यालय में बी.ए. में एडमिशन लिया।

चूँकि मित्र मंडली के सदस्यों के ज्यादातर बच्चे अन्य शहरों में रहकर उच्चशिक्षा ग्रहण कर रहे थे, जिससे अब उनके नए-नए मित्र भी बन गए थे। ऐसे में किन्हीं कार्यक्रम आदि में मित्र मंडली के मेल-मिलाप के अवसर पर सम्यकजी की बच्ची वैशाली संग, मित्र मंडली के सदस्यों के बच्चों का रवैया अब वैसा नहीं रह गया, जैसा कि स्कूली दिनों में था। जाहिर है, कुछ सामाजिकतावश या अनजान कारणोंवश, मित्र मंडली के सदस्यों की पत्नियों के तेवर भी सम्यकजी की पत्नी संगीताजी के प्रति बदलते गए।

स्वाभाविक है कि मित्र मंडली के बड़े ओहदे वालों, सेलिब्रिटीज आदि की प्रभुवर्ग की भाषा, उनके बात-व्यवहार से सम्यकजी कभी-कभी असहज भी हो जाते। लेकिन पता नहीं किस मोहाविष्ट के चलते वे अपने मान-सम्मान की परवाह किए बिना मित्र मंडली से दूरी बनाए रखने के बजाय उनसे जुड़े रहने के ही हिमायती रहे। हालाँकि बातचीत में यदा-कदा उनके मुँह से इनकी वजहें भी निकल आतीं कि···'बड़े लोगों से दोस्ती रखने में फायदा-ही-फायदा है। पता नहीं कौन, कब, किस भेस में मददगार साबित हो जाए?'

समय बीतते, वक्त बदलते, भला देर कहाँ लगती है? जिनके साथ सम्यकजी, हँसते-मुसकराते, बोलते-बतियाते, पार्टियाँ अटेंड करते, तसवीरें खिंचाते, उन्हें सोशल-मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्मों पर साझा करते रहते, अब वो मंजर बदल चुका था।

सम्यकजी को याद है कि अभी लगभग महीना भर पहले ही उनकी मित्र मंडली के सदस्य परमेश्वरनजी, जोकि पुलिस अधीक्षक हैं, ने अपनी शादी की पच्चीसवीं सालगिरह मनाई, लेकिन उस समारोह में उन्होंने सम्यकजी को आमंत्रित नहीं किया। मित्र मंडली के ही एक अन्य सदस्य आई.ए.एस. अधिकारी तरुण प्रकाशजी ने अपने गृह-प्रवेश के मौके पर भी सम्यकजी को नहीं बुलाया। इन कार्यक्रमों की जानकारी उन्हें तब मिली, जब परमेश्वरनजी और तरुण प्रकाशजी ने उन समारोहों की तसवीरें सोशल-मीडिया पर साझा कीं। यद्यपि उन्होंने बुझे मन से उन पोस्ट्स को लाइक करते, मित्र मंडली के सदस्यों को बधाइयाँ दे दी थीं। प्रत्युत्तर में उन लोगों ने सिर्फ लाइक का ही बटन दबाया था, मानो औपचारिकता निभाई हो। जबकि उनके द्वारा अन्य लोगों को बाकायदे आभार प्रकट करते, धन्यवाद भी ज्ञापित किया गया था।

इन्हीं सब कारणों के मद्देनजर सम्यकजी ने महसूस किया कि इधर कुछ समय से उनकी मित्र मंडली के सदस्यों का व्यवहार उनके और उनके परिवार के प्रति अभूतपूर्व तरीके परिवर्तित हो गया है। इधर बीच ऐसे ढेरों मौके आए, जिनमें वे मित्र मंडली के बीच शनैः-शनैः खुद को बेतरह उपेक्षित पाते रहे। इस तरह, सम्यकजी और उनका परिवार अपनी मित्र मंडली के लिए कब अवांछित हो गया···वे जान ही नहीं पाए।

बेटी के प्रश्न पर तो उस दिन वे भकुआकर रह गए। जब सम्यकजी की मित्र मंडली के ही एक सदस्य, मिथिलेश्वरजी, सेवानिवृत्त मजिस्ट्रेट साहब की पोती, ताशी की शादी में वे सपरिवार शामिल हुए थे। उस अवसर पर पूरी मित्र मंडली जमा थी। सभी अपनी-अपनी यादें ताजा करते, उठते-बैठते, खाना खाते, सिंगल और ग्रुप में, विभिन्न एंगल्स से तसवीरें खीचते-खिंचवाते पार्टी का लुत्फ ले रहे थे। लेकिन पता नहीं क्यों, जब तसवीरें लेने की बात आती, तो मित्र मंडली के सदस्य, उनकी पत्नियाँ, यहाँ तक कि उनके बच्चे भी, सम्यकजी और उनके परिवार से किनारा करते, कतराने लगते। यहाँ तक कि बहुत आनाकानी के बाद ताशी ने भी वैशाली के साथ सिर्फ एक या दो फोटो ही खिंचवाया था। यह अलग बात है कि उस अवसर पर यादगार के लिए वैशाली ने ही अपने स्मॉर्ट-फोन से दस-बारह फोटो खींचे थे।

हद तो तब हो गई, जब उनकी मित्र मंडली के कुछ सदस्यों ने इस शादी-पार्टी की तसवीरें सोशल-मीडिया पर साझा कीं। सम्यकजी और उनका परिवार उन तसवीरों में कहीं भी नहीं दिख रहा था। बच्चों की ग्रुपिंग में एक फोटो ऐसी जरूर दिखी, जिसमें वैशाली बिटिया उपस्थित थी, लेकिन उनकी पत्नी संगीताजी तो किसी भी फोटो में नजर नहीं आईं। सम्यकजी ने ध्यान दिया कि उनके पूरे परिवार को लगभग हर तसवीर में क्रॉप कर दिया गया था।

मजे की बात यह थी कि उस विवाह समारोह में मैं भी आमंत्रित था। कारण कि मिथिलेश्वरजी विश्वविद्यालयीय दिनों में हॉस्टल में मेरे रूम-पार्टनर रह चुके थे। लेकिन घर में शादी होने के कारण उनकी व्यस्तता और इस मित्र मंडली का सदस्य न होने के कारण मेरे पास वहाँ उपस्थित लोगों संग बोलने-बतियाने या हास-परिहास के सीमित अवसर ही थे। फिर अकेले होने की वजह से मेरा वहाँ मन भी नहीं लग रहा था। ऐसे में वर-वधू को आशीर्वाद देते, नाश्ते के बाद थोड़ी देर तक विवाह कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने, वहाँ उपस्थित लोगों की गतिविधियों से दो-चार होने के उपरांत मैं अपने घर लौट आया था।

खैर···। वो कहते हैं न कि मुँह से बड़ा कौर उठाने, चादर से बाहर पाँव फैलाने की अपनी जगजाहिर दिक्कतें तो हैं ही। फिर जैसा हम सोचते हैं, वैसा हमेशा होता ही कहाँ है? बात बस इतनी सी है। देखा जाए तो··· इस बिंदु पर आकर ये कहानी खत्म हो जानी चाहिए। लेकिन सम्यकजी को कौन समझाए!

साअ

५/३४८, विराज खंड, गोमती नगर
लखनऊ-२२६०१० (उ.प्र.)
दूरभाष : ९४५०६४८७०१

इस अंक के चित्रकार

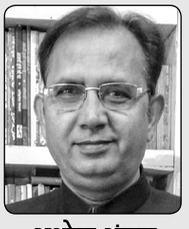

अशोक अंजुम

सुपरिचित रचनाकार। अब तक चार हास्य-व्यंग्य-संग्रह, पाँच गजल-संग्रह, 'एक नदी प्यासी' गीत-संग्रह; हास्य-व्यंग्य एवं गजल, कविता, दोहा, लघुकथा, गीत आदि विधाओं पर सत्ताईस पुस्तकें संपादित। 'राष्ट्रभाषा गौरव', 'काव्यश्री', 'साहित्यश्री' सहित दर्जनों पुरस्कार। संप्रति 'प्रयास' पत्रिका के संपादक।

संपर्क : स्ट्रीट-२, चंद्र विहार कॉलोनी
(नगला डालचंद) क्वारसी बाईपास,
अलीगढ़-२०२००१ (उ.प्र.)
दूरभाष : ०९२५८७७९७४४

सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः

● **योगी आदित्यनाथ**

महाकुंभ भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक चेतना का स्पंदन है। 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत-समावेशी भारत' की दिव्य और जीवंत झाँकी है। बहुपंथीय, बहुसांस्कृतिक, बहुभाषी भारत के ममतामयी अंक में पुष्पित और पल्लवित होने वाला कुंभ एक मेला अथवा स्नान की डुबकी मात्र न होकर भारतवर्ष की अनेकता में एकता का शाश्वत और समेकित जयघोष है। वैभव और वैराग्य के मध्य आस्था का कलरव 'महाकुंभ' सनातन संस्कृति का एक ऐसा महान् पर्व है, जो नदी के पावन प्रवाह में समस्त विभेदों, विवादों और मतांतरों को विसर्जित कर देता है। पृथ्वी पर लगने वाला यह सबसे बड़ा आध्यात्मिक मेला है।

इस बहुप्रतीक्षित मेले में मोक्ष व मुक्ति की कामना के साथ ही तन, मन तथा मति के दोषों की निवृत्ति के लिए करोड़ों श्रद्धालु अपने अहम् और वहम् को विस्मृत कर महान् सनातन संस्कृति की अमृतधारा में स्नान करते हैं। हम सभी को दिव्य-भव्य महाकुंभ प्रयागराज-२०२५ के साक्षी बनने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है, यह परम सौभाग्य की बात है। पौराणिक शास्त्रों में कुंभ पर्व की महिमा का गुणगान करते हुए इसके स्नान को समस्त पापों का नाशक एवं अनंत पुण्यदायक बताया गया है। स्कंद पुराण में वर्णित है—

सहस्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानशतानि च।
वैशाखे नर्मदा कोटिः कुम्भस्नानेन तत्फलम्॥

अर्थात् एक हजार बार कार्तिक मास में गंगा में स्नान करने से, सौ बार माघ में संगम स्नान करने से, वैशाख में एक करोड़ बार नर्मदा-स्नान करने से जो पुण्यफल अर्जित होता है, वह कुंभ में केवल एक बार स्नान करने से प्राप्त होता है। विष्णु पुराण में भी कुंभ-स्नान की प्रशंसा में कहा गया है—

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च।
लक्षप्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानेन तत्फलम॥

अर्थात् हजार बार अश्वमेध यज्ञ करने से, सौ बार वाजपेय-यज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की परिक्रमा करने से जितनी पुण्यराशि संचित होती है, उतनी कुंभ में एक बार स्नान करने से प्राप्त होती है।

अद्भुत बात है कि न निमंत्रण-पत्र का प्रकाशन होता है, न ही

योगी आदित्यनाथ वर्तमान में उत्तर प्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री और देश के सर्वश्रेष्ठ राजनेताओं में से एक हैं। इसके अलावा वह गोरखपुर के प्रसिद्ध गोरखनाथ मंदिर के पीठाधीश्वर/महंत भी हैं।

किसी के पास बुलावा भेजा जाता है, न ही आगमन हेतु सामूहिक अनुरोध किया जाता है, लेकिन जब भी महाकुंभ का आयोजन होता है, तो स्वतः स्वस्फूर्त भाव से श्रद्धा और भक्ति का जनसिंधु उमड़ पड़ता है। कुंभ का आयोजन हरिद्वार (गंगा तट), उज्जैन (क्षिप्रा तट) तथा नासिक (गोदावरी तट) पर भी होता है, किंतु प्रयागराज कुंभ की विशेष महत्ता है। श्रद्धालुओं को यहाँ तीन पवित्र नदियों के संगम में स्नान करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। वैसे भी प्रयागराज को तीर्थराज की उपमा प्रदान की गई है। गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं—

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ।
कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा।
सुख सागर रघुबर सुखु पावा॥

अर्थात् प्रयागराज की महिमा कौन कह सकता है भला? यदि पाप रूपी मदमस्त हाथियों का समूह सबकुछ नष्ट करने पर तुला हो तो सिंह रूपी तीर्थराज प्रयाग उनका वध कर सकता है। ऐसे तीर्थराज का दर्शन कर स्वयं प्रभु श्रीरामचंद्रजी ने भी सुख पाया। ऐसे प्रयागराज में महाकुंभ के आयोजन का सौभाग्य बिना हरिकृपा के नहीं प्राप्त हो सकता है। मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर 'महाकुंभ' को आध्यात्मिकता और आधुनिकता के साथ ही राष्ट्रीय एकता, भारतीय दर्शन और समस्त सृजन शक्तियों का अद्भुत संगम बनाने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। आस्था का अविराम प्रवाह लिये कुंभ मेला पूरी दुनिया के लिए आकर्षण का केंद्र है। आध्यात्मिकता की अनुभूति को प्रगाढ़ करता यह आयोजन ज्योतिष, खगोल विज्ञान, परंपरा, कर्मकांड, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि का संगम है। यह चारों वेदों और सनातन सभ्यता का संगम है। मानवता का अनंत प्रवाह और ऊर्जा का अक्षय स्रोत है।

ध्यान से देखिए, संगम की चमकती रेत पर 'वैभव और वैराग्य' साथ में अठखेलियाँ करते दिखाई पड़ेंगे। न्यूनतम सुविधाओं में रहकर भी अंतर्मन के आनंद को खोजा और सँजोया जा सकता है, उससे जीवन की राह बनाई जा सकती है। यह कला कुंभ की पाठशाला में बड़ी सहजता से सीखी जा सकती है। ऐसे अनेकानेक दृष्टांत मिलते हैं, जब अनेक विदेशी श्रद्धालुओं ने यहाँ की आध्यात्मिक रजकणों से अभिभूत होकर अपनी भौतिक संपन्नता को त्याग दिया और भक्तिसागर में लीन हो गए हैं। इसके पीछे का कारण यह है कि भौतिकता हमें प्रभावित तो करती है, किंतु प्रेरित नहीं करती। इसीलिए कहते हैं कि 'इंप्रेसिव वर्ल्ड' से 'इंस्पाइरिंग वर्ल्ड' के पथ के पथिक का गंतव्य है 'महाकुंभ'।

भारतीय संस्कृति की समेकित अभिव्यक्ति 'अर्पण, तर्पण और समर्पण' का संगम 'महाकुंभ' स्पिरिचुअल इंस्परेशन के साथ ही सोशल रिफॉर्मेशन का मूवमेंट भी है। तभी तो लोक-जीवन में कहा जाता है कि कुंभ सनातन संस्कृति की एकात्मता का अमृत रूपी प्रवाह है, जो अनंत काल से प्रवहमान है। किंतु आज की आत्मकेंद्रित, सुविधाभोगी, समयाभाव वाली जीवनशैली हमें इसके वास्तविक अमृतपान से वंचित कर रही है। जबकि तीन-चार दशक पूर्व तक साधनों के अभाव में भी श्रद्धालुओं का बहुत बड़ा वर्ग पूरे कुंभ तक रुकता था। यहाँ पूज्य साधु-संतगण, सम्मानित संन्यासी गण, धर्माचार्यों, महामंडलेश्वरों, पूज्य शंकराचार्यों, मनीषी-चिंतकों, ऋषि-मुनियों, दार्शनिकों, वीतरागियों की गरिमामयी उपस्थिति में हमारे जीवन-मूल्यों, आदर्शों का नीरक्षीर विवेचन, उनकी प्रासंगिकता पर चिंतन, सामाजिक समस्यायों पर मंथन होता था। जिससे सामाजिक जीवन को सहज प्रवाह और नूतनता प्राप्त होती थी। चिंतन में जीवंतता बनी रहती थी, जड़ता तो कोसों दूर होती थी। यहाँ से लौटकर लोग अपने गाँव और समाज में कुंभ में हुए विमर्श को साझा करते थे। जिज्ञासु और आस्थावान जनों के आग्रह पर अनेक साधु-संत कुंभ से लौटते हुए उनके गाँवों में ठहरते और प्रवचन करते थे। इस अभ्यास से धर्मानुप्राणित भारतीय लोक-चेतना के द्वारा लोकांचलों में निवास करने वाले पठित-अपठित साधारण जनों तक धर्म और संस्कृति के स्वर पहुँचते थे।

कुंभ की अनेक व्याख्याएँ हैं। जैसे भारतीय दर्शन में जीवात्मा को अमृत तथा शरीर को कुंभ कहा गया है। इस शरीर रूपी कुंभ में आत्मा रूपी अमृत-तत्त्व विद्यमान माना गया है। जो पाप-पुण्य, भेद-अभेद, अपना-पराया, मोह-माया से आच्छादित रहता है। आत्म-तत्त्व के बोध के द्वारा ज्ञान के अमृतमयी जल से आचमन का सौभाग्य कुंभ है।

महाकुंभ-२०२५ में लगभग ४० करोड़ श्रद्धालुओं का संगम नगरी में आगमन अनुमानित है। उन्हें सभी संभव बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराना राज्य सरकार की प्राथमिकता है। १२ वर्षों के अंतराल के उपरांत आगामी वर्ष में आयोजित होने जा रहा प्रयागराज महाकुंभ अब तक के सभी कुंभ पर्वों के सापेक्ष अधिक दिव्य और भव्य होगा। मानवता की यह अमूर्त सांस्कृतिक विरासत पूरी दुनिया को सनातन भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परंपरा, विविधतापूर्ण सामाजिक परिवेश और लोकआस्था का साक्षात्कार कराएगी।

वर्ष २०१९ कुंभ में कुल ५,७२१ संस्थाओं का सहयोग लिया गया था, जबकि महाकुंभ में लगभग १० हजार संस्थाएँ एक उद्देश्य के साथ कार्य कर रही हैं। ४,००० हेक्टेयर में विस्तीर्ण २५ सेक्टरों में बँटे महाकुंभ मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं की सुविधा के दृष्टिगत सभी आवश्यक प्रबंध किए जा रहे हैं। १२ कि.मी. लंबाई के घाट, १,८५० हेक्टेयर में पार्किंग, ४५० कि.मी. चकर्ड प्लेट, ३० पांटून पुल, ६७ हजार स्ट्रीट लाइट, १,५०,००० शौचालय, १,५०,००० टेंट के साथ ही २५ हजार से अधिक पब्लिक एकोमडेशन की व्यवस्था की जा रही है। पौष पूर्णिमा, मकर संक्रांति, मौनी अमावस्या, बसंत पंचमी, माघ पूर्णिमा और महाशिवरात्रि के विशेष स्नान पर्व पर सुरक्षा और सुविधा के लिए विशेष कार्ययोजना तैयार की गई है। महाकुंभ जैसे वृहद आयोजन को यादगार बनाने के लिए चार प्रमुख बिंदुओं, यथा सूचना, स्वच्छता, संचार और सुरक्षा पर होलिस्टिक अप्रोच के साथ प्रदेश सरकार कार्य कर रही है। हर किसी को सही सूचना, पूरे क्षेत्र में बेहतर सैनिटेशन व्यवस्था, सुदृढ़ संचार तंत्र और सबकी सुरक्षा की सुनिश्चितता हमारी शीर्ष प्राथमिकता है। प्रयागराज, प्रदेश और देश के बाहर से करोड़ों तीर्थयात्रियों का महाकुंभ में आगमन होगा। स्थान, मार्ग, स्थलों आदि से संबंधित सुविधा और मार्गदर्शन के लिए 'महाकुंभ मेला २०२५' ऐप की व्यवस्था की गई है। यह ऐप प्रयागराज में घाटों, मंदिरों और प्रमुख धार्मिक स्थलों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान करेगा, ताकि श्रद्धालु और पर्यटक बिना किसी परेशानी के अपने गंतव्य तक पहुँच सकें।

धार्मिक आस्था एवं पर्यटन के लिहाज से महत्त्वपूर्ण प्रयागराज के विभिन्न मंदिरों और पौराणिक स्थलों जैसे अक्षयवट, सरस्वती कूप, पातालपुरी, बड़े हनुमान मंदिर, द्वादश माधव मंदिर, भरद्वाज आश्रम, नागवासुकी मंदिर और शृंगवेरपुर धाम का सौंदर्यीकरण और जीर्णोद्धार अंतिम चरण में है। इन धार्मिक स्थलों के सुदृढ़ीकरण के माध्यम से प्रयागराज का पुरातन वैभव भी पुनर्स्थापित होगा। महाकुंभ के पौराणिक महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इस बार मेला क्षेत्र में अमृत कलश की स्थापना की जाएगी। करीब १२ हजार वर्ग फीट भूमि पर अमृत कलश से टपकती बूँद के दृश्य को प्रतिकृति के रूप में प्रदर्शित किया जाएगा। इस भव्य आयोजन को अविस्मरणीय बनाने के लिए नगर की सड़कों, चौराहों, दीवारों के साथ मंदिरों और सेतुओं को भी युद्ध स्तर पर सजाया-सँवारा जा रहा है। इसी क्रम में कुंभ नगरी के पाँच पौराणिक मंदिर माँ अलोप शंकरी देवी मंदिर, श्री शंकर विमान मंडपम मंदिर, सिविल लाइंस का श्री हनुमंत निकेतन मंदिर, शृंगवेरपुर धाम का शृंगी ऋषि मंदिर और नागवासुकी मंदिर

को फसाड लाइटिंग से जगमगाने के लिए व्यवस्था की गई है। पर्यटक और श्रद्धालु रात्रि के समय इन मंदिरों को कलात्मक, सुसज्जित और भव्य रूप में देख सकेंगे। इससे नाइट टूरिज्म को बढ़ावा मिलेगा। इसके अलावा यमुना किनारे स्थित किले और शास्त्री पुल में भी फसाड लाइटिंग का कार्य हो रहा है। पर्यटन को बढ़ावा देने के दृष्टिगत टेंट सिटी, त्रिवेणी पुष्प, फ्लोटिंग रेस्टोरेंट, वॉटर स्पोर्ट एवं स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स आदि भी निर्माणाधीन हैं। रेल भारत की जीवनरेखा है। सुगम, सस्ती, सुविधायुक्त, सुरक्षित यात्रा के लिए यात्रियों की प्रथम पसंद है। प्रयागराज महाकुंभ में भी लगभग १० करोड़ यात्रियों और श्रद्धालुओं के रेलगाड़ियों के माध्यम से पहुँचने का अनुमान है। प्रयागराज के सभी रेलवे स्टेशनों पर लगभग २५,००० यात्रियों के ठहरने के लिए १० आश्रय स्थलों का निर्माण अंतिम दौर में है। क्राउड मैनेजमेंट को लेकर महाकुंभ रेलवे नोडल डिविजन प्रयागराज मंडल ने रोडमैप तैयार कर लिया है।

प्रदेश सरकार ने श्रद्धालुओं के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए भी पुख्ता इंतजाम किए हैं। विश्व के सबसे बड़े आध्यात्मिक आयोजन में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए १० लाख ओ.पी.डी. और १० हजार आई.पी.डी. पूरी तरह तैयार कर ली गई हैं। श्रद्धालुओं के स्वास्थ्य की जाँच के लिए हाईटेक अस्थायी अस्पताल बनाए जा रहे हैं, जिसमें रायबरेली एम्स के चिकित्सकों की टीम भी देखभाल के लिए मौजूद रहेगी। इसी क्रम में प्रयागराज के सभी प्रमुख अस्पतालों को अपग्रेड किया जा रहा है। महाकुंभ में श्रद्धालुओं और पर्यटकों के सुगम आवागमन के लिए शहर की प्रमुख सड़कों का चौड़ीकरण का कार्य अपने अंतिम चरण में है। प्रयागराज शहर की कनेक्टीविटी को सुदृढ़ किए जाने हेतु भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग द्वारा प्रयागराज रिंग रोड एवं कई अन्य राजमार्ग तथा रोडवेज एवं ट्रांसपोर्ट हाइवे मंत्रालय द्वारा गंगा नदी में ६ लेन पुल का निर्माण कार्य भी प्रगति पर है। प्रयागराज शहर स्थित बमरौली एयरपोर्ट कनेक्टीविटी को सुगम किए जाने हेतु सूबेदारगंज में आर.ओ.बी. एवं फ्लाईओवर तथा एयरपोर्ट रोड का सौंदर्यीकरण/सुदृढ़ीकरण किया जा रहा है। सड़कों का चौड़ीकरण, ड्रेनेज सिस्टम, लाइटिंग और अन्य बुनियादी सुविधाओं का सुदृढ़ीकरण से यातायात सुगम होगा और आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। प्रयागराज महाकुंभ २०२५ में आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं और पर्यटकों की सुविधा को देखते हुए कुंभ मेले में कार्यरत ड्राइवर, नाविक, गाइड और ठेला संचालक आदि विशेष तरह के ट्रैक सूट पहने नजर आएँगे। प्रत्येक ट्रैक सूट पर कुंभ और पर्यटन विभाग का प्रतीक चिह्न अंकित होगा। यह संबंधित व्यक्ति की पहचान को दरशाएगा, जिससे किसी भी प्रकार की जानकारी या सहायता में पारदर्शिता बनी रहेगी। इस नई व्यवस्था से मेले में किसी भी प्रकार की अव्यवस्था और यात्री समस्याओं को नियंत्रित किया जा सकेगा। लगभग २,३०० कैमरों द्वारा क्राउड मॉनिटरिंग, क्राउड डेंसिटी एनालिसिस, इंसीडेंट रिपोर्टिंग और स्वच्छता की निगरानी एवं सुरक्षा के दृष्टिगत निगरानी आदि हेतु उपयोग लाया जा रहा है। गत कुंभ मेला २०१९ में १,१०० कैमरे स्थापित किए गए थे।

अमृतकाल में आयोजित होने जा रहा यह अध्यात्म और आत्म-साक्षात्कार का विशाल महोत्सव अर्थव्यवस्था के लिए भी 'अमृत' है। महोत्सव से जुड़ी आर्थिक गतिविधियों से विभिन्न क्षेत्रों में लगभग ६,००,००० से अधिक श्रमिकों के लिए रोजगार का सृजन होने की संभावना है। कुंभ में ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, सिंगापुर, अमेरिका, यूके, श्रीलंका समेत विश्व के अनेक राष्ट्रों से राजनयिक, पर्यटक और श्रद्धालु आते हैं। इसलिए आतिथ्य के क्षेत्र, एयरलाइंस, हवाई अड्डों और ट्रैवेल्स, चिकित्सा और इको-टूरिज्म आदि के क्षेत्र में बड़ी संख्या में रोजगार सृजित होने लगा है। इसके अलावा अनौपचारिक क्षेत्र में हजारों रोजगारों के सृजित होने की आशा है। प्रयागराज महाकुंभ जैसे विशाल जनसमागम से न सिर्फ वेंडर्स, टैक्सी चालक, टूर गाइड, दुभाषिए और पर्यटकों के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष तौर पर संपर्क में आने वाले सेवा प्रदाताओं की आय बढ़ेगी, बल्कि ४५ हजार से अधिक परिवारों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार भी मिलेगा। इसके साथ ही समस्त धार्मिक पर्यटन स्थलों के आसपास भी रोजगार के नए स्रोत विकसित होंगे। निश्चित रूप से प्रधानमंत्रीजी के मार्गदर्शन में केंद्र सरकार के सहयोग से भव्य-दिव्य प्रयागराज महाकुंभ सुरक्षा, सुविधा और सुव्यवस्था का वैश्विक मानक बनेगा। श्रद्धालुओं तथा पर्यटकों की सुविधा और कुंभ जैसे विहंगम आयोजन की गरिमा के लिए विश्वस्तरीय आधारभूत ढाँचे, सुंदर भवन, उत्कृष्ट तकनीकी सेवाएँ इत्यादि आवश्यक हैं, किंतु महाकुंभ के माहात्म्य को जानने के लिए आपको पावन त्रिवेणी के प्रवहमान जल से साक्षात्कार करना होगा, जिसने बदलते युगों की हर करवट को देखा है। जो सभ्यताओं और इतिहास के उत्थान-पतन का साक्षी है।

महाकुंभ की परंपरा हमारी महान् आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत से पुष्पित और पल्लवित हुई है। कुंभ मेला 'सेल्फ डिस्कवरी' का एक बड़ा माध्यम है। यहाँ पधारने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अलग-अलग अनुभूति होती है। यहाँ किसी को अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं, तो किसी को जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति का मार्ग मिल जाता है। कोई संस्कृतियों के समुच्चय को देखकर लहालोट हो जाता है तो कोई सत्य से साक्षात्कार कर उसे प्राणों में प्रतिष्ठित करने लगता है। यहाँ के दिव्य परिवेश के आलोक में कोई अपने सीमित 'स्व' से निकलकर समष्टि के प्रति समर्पित हो जाता है तो कोई आत्म-तत्त्व का बोध कर नारायण रूपी महासागर में व्याप्त अमृत-तत्त्व का पान करता है। विश्व में चल रहे व्यक्तिवाद, उपभोक्तावाद, भौतिकवाद के तेज अंधड़ के मध्य

यहाँ सनातन दर्शन 'कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥ का लोक मंगलकारी संदेश 'सहयोग, सहजीवन और सहअस्तित्व' की कालजयी भावना को मजबूती प्रदान करता है।

महाकुंभ द्योतक है कि प्राचीनता मात्र संगृहीत ही न हो अपितु उसका पुनर्संधान भी हो। प्राचीन काल का केवल गुणगान ही न हो, बल्कि उसकी रचना-प्रक्रिया और विचारों को आधुनिक स्वरूप में ढालने की तकनीक पर भी ध्यान हो। दर्शन और विचारों का लोकमंगल के साथ ही लोकरंजक स्वरूप भी हो। समुद्र-मंथन के समय से सभ्यता की अमृत-पान की चिर अभिलाषा कब पूर्ण होगी, यह तो समय ही बताएगा, किंतु सनातन संस्कृति की संपूर्णता, उसकी संप्रभुता और उसकी सार्वभौमिकता के लिए महाकुंभ एक अमृत रूपी वरदान के समान है। तीर्थराज प्रयाग में महाकुंभ-२०२५ उसी अमृत-धारा में सराबोर होने के लिए आपका आह्वान कर रहा है। संन्यासियों के सबसे बड़े जूना अखाड़े के संतगणों के शाही अंदाज में संगम नगरी में प्रवेश के साथ ही महाकुंभ-२०२५ का श्रीगणेश हो गया है।

१३ जनवरी, २०२५ से २६ फरवरी, २०२५ तक कुल ४५ दिन चलने वाला यह अध्यात्म और संस्कृति का महाकुंभ मानवता के लिए, विश्व-ग्राम के लिए शांति और सद्भाव की एक नई भोर लेकर आएगा। इसलिए आध्यात्मिक यात्रा के अनिर्वचनीय अनुभव के लिए, सांस्कृतिक एकता की आनंदमयी अनुभूति के लिए, अतुल्य परंपराओं और युगांतरकारी प्रेरणाओं से साक्षात्कार के लिए; भक्ति, शक्ति और मुक्ति प्राप्ति की युक्ति के लिए; आस्था, अस्मिता और आनंद के संगम के लिए; साधना, उपासना और आराधना में लीन होने के लिए; सकारात्मकता और आत्मीयता से ओतप्रोत होने के लिए; स्वयं से संवाद के लिए और पृथ्वी पर सबसे विराट् मानव समागम का साक्षी बनने के लिए 'सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः' यानी 'सभी प्रकार की सिद्धि प्रदान करने वाले कुंभ' में अवश्य पधारें।

मुख्यमंत्री निवास, ५ कलिदास मार्ग, लखनऊ-२२६००७

दरार

लघुकथा

• देवेंद्र कुमार मिश्रा

दो बच्चों के साथ रवि और रवीना सुखी जीवन जी रहे थे। एक दिन घर पर पुलिस आई और रवि को पकड़कर ले गई। पुलिस स्टेशन में दफ्तर के कुछ और लोग भी थे, बचाव के लिए सभी के परिवार वाले भी और पीड़िता अपनी माँ के साथ। क्या, कब, कैसे हुआ? पीड़िता की माँ ने बताया, साहब, मैं दफ्तर के बाहर चाय बेचती थी। पैसा कम पड़ने पर साहब लोगों के साथ···कुछ अतिरिक्त कमाई करके अपनी बेटी की पढ़ाई का बंदोबस्त कर लेती थी। उसी के भविष्य के लिए मैंने ये रास्ता चुना। चाय बेचने से काम नहीं चल रहा था, मेरी बेटी जिसकी उम्र ८ साल है, स्कूल से मेरे चाय की दुकान पर आकर खेलती और मेरे साथ ही घर चली जाती। एक दिन इनके बड़े साहब ने बेटी का जिक्र किया। मैंने कहा, आप राक्षस हैं क्या, कन्या है वो फूल सी, आपने सोच भी कैसे लिया। कई दिन बाद मेरी बेटी इन्हीं के दफ्तर के बाद जख्मी और बलत्कृत पाई गई। मैं दौड़कर डॉक्टर के पास ले गई, रिपोर्ट की। बेटी ने दफ्तर के दो लोगों का नाम बताया है, जिसमें साहब के अलावा रवि साहब भी हैं। रवीना सन्नाटे में आ गई। पुलिस अधिकारी बच्ची और उसकी माँ के साथ रवि और साहब को लेकर आ गए। पता नहीं क्या हुआ कि मामला झूठा पाया गया। सब जा चुके थे, रवीना ने गौर से रवि के चेहरे को देखते हुए कहा, "अंदर ऐसा क्या हुआ कि बयान बदल दिए गए?" "सब झूठ पाया गया।" रवि ने कहा, "वह ब्लैकमेल कर रही थी। पुलिस वाला समझ गया, मामला खत्म।" रवीना ने पूछा, "क्या तुम सच कह रहे हो?" रवि ने गुस्से में कहा, "यह सब होता रहता है, दुनिया है, चलता रहता है, कोई अपराध करता है, कोई ब्लैकमेल करता है, कोई समझौता करके कमाता है, सबको बचाता है।" रवीना के प्रश्न पर रवि के गोलमोल उत्तर से रवीना समझ गई कि उसका पति दोषी है। दोषी भी ऐसा वैसा नहीं, बहुत बड़ा। घिनौने काम के लिए वह कभी रवि को माफ नहीं कर सकी। उसने रवि से एक घर में रहते हुए सारे संबंध तोड़ लिए। रवि के हर सवाल पर रवीना एक ही बात कहती, तुम गंदे, घिनौने और नीच हो। खबरदार मेरे पास आए तो, मेरी बेटी के बाप नहीं रहे तुम। रवीना ने बेटी को बोर्डिंग स्कूल भेज दिया, समय गुजरता गया। बेटे की नौकरी लग गई, वह विदेश चला गया। बेटी का विवाह हो गया, रवीना और रवि एक ही घर में दो अजनबियों की तरह जिंदगी के बचे दिन काट रहे थे। उनके मध्य जो दरार थी, वह कम नहीं हुई, ज्यों-की-त्यों रही अंत तक। रवीना ने कभी माफ नहीं किया और न रवि ने कभी माफी माँगी।

ए-२९, फर्स्ट फ्लोर,
राजुल ड्रीम सिटी, अमखेरा रोड,
जबलपुर-४८२००४ (म.प्र.)

कहानी

रखियो टेक हमारी

• विद्या विंदु सिंह

गोदावरी काकी बचपन से ही समझौते जीती आई थीं। पाँच बहनों में सबसे छोटी थीं, जो अवांछित आ गई थीं, इस आशा में कि अबकी बार शायद कुल का दीपक आ जाए। उनके जन्म से माँ की हैसियत दो कौड़ी से भी कम हो गई थी। माँजी के ससुरजी ने कहा था कि इससे अच्छा तो था बाँझ ही रहती। पाँच-पाँच चुड़ैल घर में आ गईं। अब इनका बोझा मेरा बेटा कैसे उतारेगा।

गोदावरी के गाँव के पास एक तालाब था, जिसमें वह बहनों के साथ शौच के बाद नहाने और कपड़े धोने जाया करती थी।

वहाँ जाने पर माँ का सिखाया मंत्र पाँचों बहनें पढ़तीं—

तुइयाँ भुइयाँ धरम तुहार,
पाँचों बहिनी धरम तुहार,
तू मामा हम भैनें तुहार।

उसने माँ से पूछा था कि हमें ऐसा क्यों कहना चाहिए? माँ ने बताया था कि इसी तालाब में पाँच लड़कियाँ एक साथ डूबकर मरी थीं। पाँचों नहा रही थीं, एक लड़की का पैर गड्ढे में पड़ा, वह डूबने लगी, दूसरी ने बचाने को हाथ बढ़ाया, वह भी डूबने लगी, इस तरह पाँचों डूब गई थीं।

गोदावरी सोचती, कहीं हम पाँचों भी ऐसे ही न डूब जाएँ। लेकिन माँ ने तो इसीलिए मंत्र सिखाया है कि मंत्र बोलो तो रक्षा होगी। मामा-भैनें का रिश्ता क्यों कहा जाता है? पूछने पर दादी ने बताया था कि कहते हैं कि मामा अपने भानजे-भानजी को हानि नहीं पहुँचाता। दादी शेर और गाय-बछड़े की कहानी सुनातीं, जिसमें बछड़े ने मामा कहकर शेर का दिल जीत लिया था और अपनी माँ को उसका शिकार होने से बचा लिया था।

गोदावरी की हर बहन का भिन्न स्वभाव था। सबसे बड़ी हवा से भी बजनी बाजती है, ऐसा गाँव की औरतें कहती थीं।

नंबर-दो को लोग कहते थे कि ई गेदहरी (लड़की) ठस्स है, जहाँ अड़ गई वहीं जमी रहती है, कोई लाख कहे सुनती नहीं है।

नंबर-तीन सबसे हँसोड़ थी, उसकी बातें सुनकर लोग लोटपोट हो जाते थे।

नंबर-चार तो बात-बात पर रोती थी, खुशी हो या दु:ख, उसकी आँखें भर ही आती थीं। बरसती भी थीं।

नंबर-पाँच पर गोदावरी थी, जो सबकी सुनती, सहती, सबकी बात मानती, सबके सुख-दु:ख की चिंता करती, सबकी सेवा करती।

बाबा बीमार हुए तो उसने जी-जान से उनकी सेवा की। उसे याद करके बाबा पछताते हुए रोने लगते थे। अरे गोदा! मैंने तेरा सबसे ज्यादा तिरस्कार किया था, सबसे ज्यादा दु:ख दिया था। पर तूने मेरी इतनी सेवा की। बिटिया! मुझे क्षमा कर दे, नहीं तो ऊपर वाला भी मुझे माफ नहीं करेगा।

लोक-साहित्य की आधिकारिक लेखिका। कहानी, उपन्यास लोक-साहित्य, नाटक, निबंध, बाल-साहित्य आदि विषयों पर शताधिक कृतियाँ तथा अनेक संपादित कृतियाँ प्रकाशित। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के विभिन्न केंद्रों से रचनाओं का निरंतर प्रसारण। अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मान एवं पुरस्कार।

गोदावरी की चार बहनों की शादी हो गई थी, बड़ी बहन के मर जाने पर उसके पति से नंबर-दो की शादी कर दी गई थी। दुहाजू पति की उम्र में पंद्रह वर्ष का अंतर था, पर लड़कों की उम्र थोड़े देखी जाती है। लड़की की इच्छा-अनिच्छा का तो प्रश्न ही नहीं था। वह 'ठस' (जिद्दी) थी, उसके लिए वर तलाशना बहुत कठिन था।

तीसरी को दूर के रिश्ते की नि:संतान बुआ ने अपने देवर के लिए चुन लिया था। यह सोचकर कि देवरानी बनकर आएगी तो सेवा भी करेगी और आदर भी देगी, अपनी भतीजी है, उसके हँसोड़ स्वभाव पर सभी न्योछावर थे।

चौथी को एक कवि ने पसंद कर लिया था, उन्हें उसकी आँखों में भरे आँसुओं में प्रेम का सागर लहराता दिखता था। वह उसकी संवेदनशीलता के कायल थे।

अब बची रह गई थी गोदावरी, कई रिश्तेदारों ने आकर उसका हाथ अपने पुत्र के लिए माँगा, क्योंकि उसकी सहनशीलता और कर्मठता के सभी कायल थे।

गोदावरी का विवाह सेना के रिटायर्ड कर्नल के बेटे से हो गया। पति भी फौज में थे। घर में पूरा फौजी अनुशासन था। गोदावरी ने मायके की लसर-पसर गृहस्थी सँभाली थी। यहाँ की अनुशासनबद्ध गृहस्थी के साथ भी समझौता कर लिया।

गोदावरी दो बेटों की माँ बनी। बच्चे अनुशासन की जकड़बंद व्यवस्था से विद्रोह कर उठे। वे नए जमाने की शानो-शौकत और आरामतलब जिंदगी जीने लगे। माँ ने उनसे भी समझौता कर लिया। सास सरलमना थीं, बहू को वही पसंद करके लाई थीं, सास-ससुर की सेवा मन से कर रही थीं।

अब गोदावरी की पहली बहू आई, सभी सासों की तरह गोदावरी ने भी जो सपनों का महल सँजोया था, वह ध्वस्त हो गया।

जब तक छोटे देवर का विवाह नहीं हुआ, तब तक तो किसी तरह परिवार गोदावरी की कोशिशों से जुड़ा रहा। वह रात-दिन सबको खुश रखने में सबके लिए सुविधा जुटाने में स्वयं को खपाती रही। सास-ससुर

पति, बेटे, बहू—सभी की सेवा में वह चुकती रही। परिवारकर्ता के रूप में गौरवबोध लिये हुए।

छोटे बेटे का विवाह होते ही दूसरी बहू आई तो बड़ी को लगा कि मेरी उपेक्षा हो रही है। उसकी कोई प्रशंसा कर दे तो वह बैरी लगने लगे। धीरे-धीरे कटुता बढ़ती गई, छोटी भी नारी अस्मिता के अहम के बोध से भरी थी। दोनों में से कोई भी झुकने को तैयार नहीं। पलड़े का संतुलन बनाए रखने के लिए गोदावरी तराजू बनकर कोशिश करती रही, परंतु तालमेल नहीं कर सकी।

बड़े ने अपना घर अलग बसा लिया, पर बड़ी बहू को इससे भी संतोष नहीं हुआ। उसे लगता कि सास-ससुर छोटे को सबकुछ दे देंगे, मेरा अधिकार भी छीन लेंगे।

गोदावरी को अब मानसिक यंत्रणा होने लगी। शरीर से अधिक मन थकने लगा। किसी से सेवा की अपेक्षा तो चुक ही गई थी। सबकी सेवा करके कुछ सुधारने, संतुष्ट करने का उत्साह भी चुक गया। उसके पति को भी बहुएँ अपने-अपने ढंग से अपनी-अपनी ओर करने की चेष्टा करती रहतीं।

पुत्र अपनी-अपनी पत्नी के अधीन थे ही, जो वे कहलवातीं, माँ को वही कहते। धीरे-धीरे शिष्टाचार का भी लोप होता जा रहा था। जिन संस्कारों को डालने के लिए उसने जीवन भर तप किया था, वे कपूर से उड़ गए थे। अपने आसपास के परिवेश में भी संस्कारों की प्रतिष्ठा के लिए वह लगातार कोशिश करती रही। बहुत से लोगों ने उसे श्रेय दिया और अपने बच्चों को उसके पास भेजना चाहा। वहीं उसके अपने बच्चे से कन्नी काटने का और दूर करने का उपक्रम करते रहे।

गोदावरी सोचती और हताश होती, पर उसने मन को समझा लिया था। धीरे-धीरे मन निर्लिप्त हो गया। घर की व्यवस्था में रात-दिन चकरघिन्नी खाने वाली गोदावरी ने हथियार डाल दिए।

अब तो लोग उसे चिढ़ाने के लिए घर में अव्यवस्था पैदा करते, गंदगी फैलाते, उसकी इच्छा के विरुद्ध आचरण करते, पर वह चुप रहती। वही लोग उसे उकसाते, खीझने को बाध्य करते, पर वह आक्रोश पीने लगी थी। जन्म से ही अभ्यासी थी।

वह सोचती, क्या यह मेरी हार है, पर उसके भीतर बैठा अपना आत्मबोध उससे कहता था कि यह तेरी हार नहीं शक्ति है, जीत है।

इधर काया क्षीण होती जा रही थी तो मन भी कातर हो रहा था। अपनों के दुर्व्यवहार से जाने कितने छेद मन में बन गए थे। कील निकाल देने पर भी छेद तो बने ही रहते हैं। यहाँ तो क्षमा माँगकर कील निकालने की कोशिश भी किसी ने नहीं की थी।

प्रभु नाम उसके मन में गूँजता रहता था, वह पुकारती मेरी सहने की, कर्तव्य करते रहने की टेक रख लेना प्रभु। वह गुनगुनाती 'अब मोरी राखो टेक हरी' उसकी तर्ज पर उसने कई भजन रचे थे। उसके होंठों पर एक पंक्ति उठते-बैठते हरदम फूटती रहती—'रखियो टेक हमारी प्रभुजी!'

उसे विश्वास था कि यह टेक प्रभु जरूर रखेंगे। उसका विश्वास जीत गया। किसी की सेवा नहीं ली।

पूजा पर बैठे-बैठे हाथ में माला जप रही थी, अचानक धुकधुकी बढ़ गई, सीने में दर्द होने लगा, पूजा की चौकी पर सिर टिका लिया। हे राम की आह निकली और प्राण पखेरू उड़ गए। हाथ में कलम थी और राम-नाम लिखने की कॉपी थी। कॉपी भर चुकी थी। राम नाम बैंक में जमा कर नई लानी थी।

खबर पाकर परिवार जुटा, उनकी पूजा की चौकी पर नेत्रदान, देहदान के कागज उस दिन ऊपर ही रखे थे। क्या गोदावरी को पूर्वाभास था कि प्रभु टेक रखने वाला है?

साअ
४५, गोखले विहार मार्ग,
लखनऊ-२२६००१
दूरभाष : ९३३५९०४९२९

पाठकों से निवेदन

- जिन पाठकों की वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है, कृपया वे सदस्यता का नवीनीकरण समय से करवा लें। साथ ही अपने मित्रों, संबंधियों को भी सदस्यता ग्रहण करने के लिए प्रेरित करने की कृपा करें।
- सदस्यता के नवीनीकरण अथवा पत्राचार के समय कृपया अपने सदस्यता क्रमांक का उल्लेख अवश्य करें।
- सदस्यता शुल्क यदि मनीऑर्डर द्वारा भेजें तो कृपया इसकी सूचना अलग से पत्र द्वारा अपनी सदस्यता संख्या का उल्लेख करते हुए दें।
- चैक **साहित्य अमृत** के नाम से भेजे जा सकते हैं।
- ऑन लाइन बैंकिंग के माध्यम से बैंक ऑफ इंडिया के एकाउंट नं. 600120110001052 IFSC-BKID 0006001 में **साहित्य अमृत** के नाम से शुल्क जमा कर फोन अथवा पत्र द्वारा सूचित अवश्य करें।
- आपको अगर **साहित्य अमृत** का अंक प्राप्त न हो रहा हो तो कृपया अपने पोस्ट ऑफिस में पोस्टमैन या पोस्टमास्टर से लिखित निवेदन करें। ऐसा करने पर कई पाठकों को पत्रिका समय पर प्राप्त होने लगी है।
- सदस्यता संबंधी किसी भी शिकायत के लिए कृपया फोन नं. 011-23257555, 8448612269 अथवा sahityaamritindia@gmail.com पर इ-मेल करें।

प्रेमचंद की खेल, पशु-पक्षी एवं बाल-जीवन की कहानियाँ

• कमल किशोर गोयनका

प्रेमचंद का कथा-साहित्य उस काल के किसी भी कथाकार एवं कवियों की तुलना में बहुत अधिक व्यापक तथा वैविध्यपूर्ण है। उनके १४ उपन्यास, ३०० कहानियाँ, ३ नाटक तथा हजारों पृष्ठों का अन्य साहित्य है, जिसमें उनके पत्र, संपादकीय, लेख, अनुवाद आदि सम्मिलित हैं। प्रेमचंद के साहित्य में प्रमुखता उनके कथा-साहित्य की है और उनकी ख्याति इसी कारण 'कथा-सम्राट्' के रूप में हुई और इसी के कारण वे देश ही नहीं, विदेश में भी लोकप्रिय हुए और उनकी कला-कृतियों का विभिन्न देशी-विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ। उनकी ख्याति उपन्यासकार तथा कहानीकार दोनों रूपों में हुई और कुछ आलोचकों ने उनके उपन्यासकार को प्रमुख माना और कुछ ने उनके कहानीकार को प्रथम स्थान दिया। असल में, प्रेमचंद के उपन्यास मुख्यत: राष्ट्रीय और सामाजिक समस्याओं को केंद्र में रखते हैं और उनकी कहानियाँ अपने रूपाकार के कारण व्यक्ति और उसकी समस्याओं, पारिवारिक रिश्तों तथा उलझनों एवं स्त्री-विमर्श पर अधिक केंद्रित हैं, लेकिन वहाँ भी राष्ट्रीय एवं सामाजिक प्रश्नों को छोड़ा नहीं गया है। उनके उपन्यासों का रंगमंच व्यापक है, समाज की बड़ी-बड़ी समस्याएँ हैं और उनका परिदृश्य भव्य है, लेकिन कहानियाँ प्राय: किसी एक मनोभाव, किसी एक घटना और किसी एक मानवीय मनोवृत्ति पर आधारित होती हैं और एक कहानी में एक पात्र से लेकर ५-६ तक होते हैं, परंतु इसके बावजूद उनकी कहानियों में जीवन और पात्रों के वैविध्यपूर्ण तथा व्यापक संसार को स्थान मिला है और इस कहानी-संसार में इतने वर्ण, वर्ग, धर्म, जाति, आयु के पात्र हैं तथा मनुष्य के साथ इतने अन्य जीवधारी पात्र हमारे सामने आते हैं कि उनकी व्यापक तथा सूक्ष्म रचनात्मक दृष्टि तथा संवेदनात्मक परिदृश्य पर आश्चर्य होता है कि उन्होंने कैसे मनुष्य ही नहीं, पृथ्वी के अन्य जीवों को भी अपने कहानी-संसार में स्थान दिया और उन्हें मानवीय जगत् का अनिवार्य अंग बना दिया। प्रेमचंद के इस क्रांतिकारी तथा मौलिक संसार की ओर प्राय: आलोचकों तथा पाठकों की दृष्टि कम गई है और उनकी साहित्य में चर्चा भी अत्यल्प हुई है। प्रेमचंद की प्रगतिशील आलोचना ने इन कहानियों की पूर्णत: उपेक्षा की और उनके कहानी-संसार को 'कफन', 'सद्गति', 'ठाकुर का कुआँ' आदि छह-सात कहानियों तक सीमित कर दिया और उनकी इस समग्र साहित्य-चेतना को लगभग अदृश्य कर दिया। यह प्रेमचंद की व्यापक संवेदना को सीमित करना था, उनकी रचनात्मकता को अपने राजनीतिक उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करना था और उनके पाठकों को उसी प्रेमचंद को पढ़ने-समझने के लिए विवश करना था, जिसे वे असली प्रेमचंद मानते और मनवाते रहे और जिन्हें वे दशकों तक विभिन्न पाठ्यक्रमों का अनिवार्य हिस्सा बनाते रहे। प्रेमचंद की इस व्यापक महानता तथा मानवीयता एवं अन्य जीवों के प्रति उनकी घनीभूत भावभूमि को सीमित महानता (?) तक संकुचित करना था और एक दृष्टि से देखा जाए तो प्रेमचंद को असली-नकली में बाँटना था और प्रेमचंद को समग्रता में देखने की साहित्यिक कसौटी पर ही आघात करना था। यह एक साहित्यिक छल था, एक-एक प्राकृतिक रूप और सत्य को नकारना था और लेखकाय कुंडा भी तथा अपराध भी, जिसने कई दशकों तक हिंदी पाठकों, अध्यापकों तथा छात्रों को छला और एक गहन संवेदना के संसार को गायब कर दिया, पर अब इसकी काली छटा अब छट चुकी है, यह राजिश साजिश खुल चुकी है और यह कहानी-संग्रह इसका प्रमाण है।

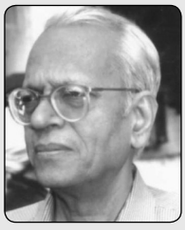

जाने-माने साहित्यकार। इकतालीस वर्षों से दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन। अब तक प्रेमचंद पर बाईस तथा अन्य साहित्यकारों पर बीस पुस्तकें प्रकाशित। एक नवीनतम विषय 'गांधी की पत्रकारिता' पर एक पुस्तक। प्रेमचंद साहित्य के विशेषज्ञ के रूप में ख्यात। विभिन्न संस्थाओं, अकादमियों द्वारा सात पुरस्कार तथा मॉरीशस के एक पुरस्कार से सम्मानित। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष रहे।

प्रेमचंद की इस अवमूल्यन की स्थिति को ध्यान में रखकर ही इस 'प्रेमचंद : खेल, पशु-पक्षी तथा बाल जीवन की कहानियाँ' कहानी-संकलन को तैयार किया गया है, जिससे हिंदी पाठक प्रेमचंद की खेल, पशु-पक्षी तथा बाल जीवन की कहानियों का एक स्थान पर आनंद ले सकें और यह अनुभव कर सकें कि प्रेमचंद ने बाल तथा पशु-पक्षियों के जीवन को कितनी गहराई से तथा किस मानवीय मनोभाव से तथा मनुष्य एवं अन्य प्राणी जगत् को कितनी साहचर्यता के साथ समझा और समझाया था। प्रेमचंद के रचनाकाल में संभवत: वही एकमात्र ऐसे कहानीकार हैं,

जिन्होंने बाल एवं पशु-पक्षियों के जीवन को मानवीय सरोकारों के साथ जोड़कर यह बता दिया कि संपूर्ण प्राणी जगत् एकसूत्र में तथा एक ही नियम से संचालित होता है और वे परस्पर जुड़कर ही सृष्टि की रचना करते हैं। भारतीय जीवन में बालकृष्ण की लीलाओं का विशेष महत्त्व है और सूरदास ने अपने पदों से उनके बाल-रूप को घर-घर तक पहुँचा दिया और वन का, जंगल का, अरण्य का महत्त्व तो किसी से छिपा नहीं है। भगवान् राम के जीवन के चौदह वर्ष वनवास में ही व्यतीत हुए और पशु-पक्षियों के साथ ही वे घुल-मिलकर रहे और हिंदू धर्म में तो संन्यास का जीवन ही वन प्रदेश में गुजारना होता है। 'महाभारत' के पांडव द्रौपदी के साथ अंत में हिमालय की ओर चले गए और वहीं उनका प्राणांत हुआ। इसी प्रकार, हमारे यहाँ जितने भी संन्यासी हुए, उन्होंने वन प्रदेश में जाकर ही ज्ञान-साधना की और ईश्वर की अनुभूति की। हमारी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति भी वनांचल में ही होती थी। जैनेंद्र की अवश्य इस समय की कहानी 'खेल' मिलती है। प्रेमचंद का जन्म भी गाँव में हुआ था और वे शहर की तुलना में गाँव में ही रहना पसंद करते थे। वे जब भी शहर में रहे, उनके पास गाय हमेशा रही और जहाँ तक उनके बाल-जीवन का प्रश्न है, वे माँ के प्रेम से वंचित रहे, पर किशोरावस्था में पढ़ने जाने पर हर तरीके के खेल खेले, शैतानियाँ कीं और मटरगस्ती भी खूब की। उनका जीवन भी शहरी जीवन में रहने वाले अपने समकालीन लेखक जयशंकर प्रसाद से भिन्न था और यह भी एक कारण है कि प्रेमचंद के साहित्य में ग्रामांचल पर लिखा सर्वश्रेष्ठ उपन्यास 'गोदान' लिखा गया। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि वे अपने अंतिम समय में अपने गाँव लमही जाकर रहना चाहते थे, लेकिन वह उनको सुलभ न हो सका। उनके पुत्रों ने उन्हें बनारस में ही रखा और वहीं उनका देहांत हुआ। इन कहानियों को यदि हम इन सभी संदर्भों के साथ पढ़ेंगे और समझेंगे तो हम उनकी भारतीय जीवन तथा संस्कृति एवं मानवेतर सृष्टि के प्रति उनका अपनत्व एवं प्रतिबद्धता को भी समझ सकेंगे।

प्रेमचंद ने २ जनवरी, १९३३ के 'जागरण' में 'पश्चिमी व्यायाम का पागलपन' लेख में लिखा था—"यह हमारी 'मानसिक दासता' का ही एक रूप है कि हम स्कूलों में कबड्डी, गुल्ली-डंडा, लखनी इत्यादि भारतीय खेलों का प्रचार नहीं करते, जो देश के लिए अनुकूल हैं और बहुत ही कम खर्च पर खेले जा सकते हैं। अपनी कोई चीज अच्छी नहीं, बाहर की सभी चीजें अच्छी। आज यूरोप वाले भारतीय खेलों का व्यवहार करने लगें तो वहाँ के लोगों की आँखें खुलें।" प्रेमचंद यही विचार 'गुल्ली-डंडा' कहानी के आरंभ में लिखते हैं—"हमारे अंग्रेजीदाँ दोस्त मानें या न मानें, मैं तो यही कहूँगा कि गुल्ली-डंडा सब खेलों का राजा है।

इस कहानी-संकलन—'प्रेमचंद : खेल, पशु-पक्षी एवं बाल जीवन की कहानियाँ' में कुल १६ कहानियाँ हैं, जो तीन भागों में बाँटकर कालक्रम से रखी गई हैं—खेल जीवन की तीन, पशु-पक्षी जीवन की आठ और बाल जीवन की पाँच कहानियाँ संकलित की गई हैं। इन कहानियों में, खेल और बाल-जीवन की कहानियों में प्रत्यक्षत: बाल-जीवन के ही कथा-प्रसंग हैं और पशु-पक्षी जीवन की कहानियों में से कुछ में भी बच्चों के जीवन की कथाएँ हैं। प्रेमचंद ने बालकों के लिए विशेष रूप से भी साहित्य लिखा है और वह मेरी पुस्तक 'प्रेमचंद का समग्र बाल-साहित्य' में संकलित है। इसमें कुछ महान् व्यक्तियों की जीवनियाँ हैं, राम की जीवनी है तथा हाथी, भालू आदि पर कहानियाँ हैं, लेकिन इस संकलन में दी गई कहानियाँ बाल-जीवन पर होने पर भी वे उनकी अन्य साहित्यिक कहानियों के समान ही प्रकाशित हुईं और उनके द्वारा ही अपने कहानी-संग्रहों में संकलित की गईं। अत: ये बाल-जीवन पर लिखी कहानियाँ होने पर भी सामान्य बाल-साहित्य के स्वरूप और स्तर से कहीं अधिक साहित्यिक हैं, इसलिए स्वयं लेखक भी अपने अन्य बाल-साहित्य की तुलना में इन्हें भिन्न मानता है और सही माना है तथा अपनी अन्य कहानियों के समान पत्रिकाओं में तथा बाद में अपने कहानी-संग्रहों में संकलित करता है। ये कहानियाँ केवल बच्चों के लिए नहीं हैं, साहित्य के सामान्य पाठकों के लिए हैं। बालक इनमें पात्र तो जरूर हैं, लेकिन वे मानवीय जीवन के बड़े पक्षों को उद्घाटित करते हैं। यही कारण है कि ये कहानियाँ साहित्य की कोटि में आती हैं और लेखक के कहानी-भंडार का अंग बनती हैं।

प्रेमचंद की 'खेल' शीर्षक के अंतर्गत तीन कहानियाँ हैं—'गुल्ली डंडा' (फरवरी १९३३), 'बड़े भाई साहब' (नवंबर १९३४) तथा 'क्रिकेट मैच' (जुलाई १९३७)। ये तीनों कहानियाँ उनके प्रौढ़ काल की, अर्थात् १९३३-३६ की रचनाएँ हैं। अत: जो लोग यह कहते हैं कि १९३० के बाद प्रेमचंद मार्क्सवादी हो गए थे, वे इन कहानियों को पाठकों की निगाह से ओझल कर देना चाहते हैं। ये कहानियाँ उनके भारतीय मन की कहानियाँ हैं और वे खेलों में भारतीयता के पक्ष में है। प्रेमचंद में अपने भारतीय खिलाड़ियों के मान-सम्मान का कितना ध्यान था, इसका प्रमाण उनकी चुनार के स्कूल में सन् १९०० में पहली मास्टर की नौकरी की एक घटना से मिलता है। उस समय उनकी आयु बीस वर्ष की थी। स्कूल में स्कूली छात्रों तथा गोरों की टीम में फुटबॉल के मैच में गोरों के हारने पर एक गोरे खिलाड़ी ने अपने बूट से एक स्कूली छात्र को ठोकर मारी थी, इस पर प्रेमचंद मैदान से एक झंडी उखाड़ कर उस गोरे पर बेतहाशा पिल पड़े और फिर छात्रों ने उसकी खूब पिटाई की। इस प्रकार फुटबॉल के विदेशी खेल ने प्रेमचंद के एक स्वाभिमानी भारतीय होने की छवि को प्रकट कर दिया। प्रेमचंद ने २ जनवरी, १९३३ के 'जागरण' में 'पश्चिमी व्यायाम का पागलपन' लेख में लिखा था—"यह हमारी 'मानसिक दासता' का ही एक रूप है कि हम स्कूलों में कबड्डी, गुल्ली-डंडा, लखनी इत्यादि भारतीय खेलों का प्रचार नहीं करते, जो देश के लिए अनुकूल हैं और बहुत ही कम खर्च पर खेले जा सकते हैं। अपनी कोई चीज अच्छी नहीं, बाहर की सभी चीजें अच्छी। आज यूरोप वाले भारतीय खेलों का व्यवहार करने लगें तो वहाँ के लोगों की आँखें खुलें।" प्रेमचंद यही विचार 'गुल्ली-डंडा' कहानी के आरंभ में लिखते हैं—"हमारे अंग्रेजीदाँ दोस्त मानें या न मानें, मैं तो

यही कहूँगा कि गुल्ली-डंडा सब खेलों का राजा है। जब कभी लड़कों को गुल्ली-डंडा खेलते देखता हूँ तो जी लोटपोट हो जाता है कि इनके साथ जाकर खेलने लगूँ। न लान की जरूरत, न शिनगार्ड की, न नेट की, न थापी की। मजे से किसी पेड़ से एक टहनी काट ली, गुल्ली बना ली और दो आदमी भी आ गए तो खेल शुरू हो गया। विलायती खेलों में सबसे बड़ा ऐब है कि उनके सामान महँगे होते हैं। जब तक कम-से-कम एक सैकड़ा न खर्च कीजिए, खिलाड़ियों में शुमार ही नहीं हो सकता। यह गुल्ली-डंडा है कि बिना हर्द-फिटकरी के चोखा रंग देता है, पर हम अंग्रेजी चीजों के पीछे ऐसे दीवाने हो रहे हैं कि अपनी सभी चीजों से अरुचि हो गई है। हमारे स्कूलों में हरेक लड़के से तीन-चार रुपए सालाना केवल खेलने की फीस ली जाती है। किसी को यह नहीं सूझता कि भारतीय खेल खिलाएँ, जो बिना दाम-कौड़ी के खेले जाते हैं। अंग्रेजी खेल उनके लिए हैं, जिनके पास धन है। गरीब लड़कों के सिर क्यों यह व्यसन मढ़ते हो।" प्रेमचंद का यह गुल्ली-डंडा दर्शन उनकी कहानी 'बैंक का दिवाला' (१९१९) में पहली बार दिखाई देता है, जब कहानी में कुँवर जगदीश सिंह और अहीर शिवदास बचपन में गुल्ली-डंडा खेलते हैं और एक बार फिर गुल्ली-डंडा खेलना चाहते हैं। असल में 'गुल्ली-डंडा' में कथावाचक (जो थानेदार का बेटा और इंजीनियर है) तथा गया चमार (जो डिप्टी साहब का साईस है) इसी 'बैंक का दिवाला' कहानी के पात्रों के वंशज है।

यह कहानी 'गुल्ली-डंडा' एक प्रकार से गुल्ली और डंडे के रिश्तों की कहानी है, वैसे ही उच्च-वर्ग तथा निम्न-वर्ग के रिश्तों की कहानी है और प्रेमचंद की खूबी है, जो उनकी अपनी है कि निम्न-वर्ग तथा समाज का सबसे अंतिम व्यक्ति अपनी भद्रता, अपनी शालीनता और अपनी सामान्यता की मानवीय विशिष्टता से उच्च-वर्ग के अहंकार तथा मिथ्या श्रेष्ठता का चेहरा उजागर कर देता है और उसका शमन करता है। स्वामी विवेकानंद ही नहीं, प्रेमचंद भी मानते हैं कि मनुष्यता का अधिक मनोभाव समाज के साधारण लोगों में ही होता है। यह मात्र खेल की कहानी नहीं है, बल्कि इसकी गुल्ली कई दिशाओं में जाती है और इसका डंडा मनुष्य के वर्ण-जाति-भेद, पद-भेद तथा अर्थ-भेद को पीट-पीटकर भेदरहित समाज की रचना का स्वप्न जाग्रत् करता है। गुल्ली-डंडा प्रतीकात्मक वस्तु है। डंडा उच्च-वर्ग, उच्च-पद, और उच्च-शिक्षा एवं सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक है। डंडा गुल्ली को मारकर उछालता है, पीटता है और दूर-से-दूर फेंकता है। गुल्ली इतनी छोटी और कमजोर है कि वह डंडे की ताकत के इच्छानुसार नाचती, घूमती, भागती और पिटती है। गुल्ली की यह त्रासदी है कि वह डंडे की निरंकुशता के सम्मुख निस्सहाय है और वह दासी बनने को मजबूर है। डंडा मजबूत और शक्तिशाली है और उसके सामने गुल्ली की कोई हस्ती नहीं, लेकिन गुल्ली के पास एक ऐसा दाँव है, जो उसे विजयी बना सकता है। यदि गुल्ली निशाना साधकर टन से डंडे पर लगती है तो खिलाड़ी आउट हो जाता है और गुल्ली को पिदने से मुक्ति मिलती है। असल में, गुल्ली को अपनी शक्ति-सामर्थ्य को समझना होगा। उसे सटीक निशाना साधना होगा, तभी वह डंडे के अहंकार तथा दमन से अपनी रक्षा कर सकती है और ऐसी अन्यायी शक्ति को पराजित भी कर सकती है। कहानी में कथानक तथा गया दलित के दो बार गुल्ली-डंडा खेलने के प्रसंग हैं और दोनों में ऊँच-नीच, सभ्य-देहाती, धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित के बीच का अंतर विद्यमान है, परंतु लेखक कहानी के अंत में कथावाचक की अफसरी के सम्मुख गया का सद्वयवहार, नम्रता, मनुष्यता एवं बड़ों को सम्मान देने में बहुत ऊँचा बना देता है। इस मनुष्यता में कथावाचक हारता है और गया जीता है। गुल्ली हो या गया, निम्न हो या दलित अथवा कितना ही लघुतम हो, उसकी मनुष्यता उसे बड़ा बनाती है। गया बड़ा हो जाता है और कथावाचक इंजीनियर छोटा और यह छोटेपन की बड़ी ताकत है। इस दलित-चिंतन में स्वामी विवेकानंद और प्रेमचंद एक हैं।

इस विषय की दूसरी कहानी है—'बड़े भाई साहब'। यह दो भाइयों की कहानी है और छोटा भाई कथावाचक है और वह बड़े भाई के साथ हॉस्टल में रहकर पढ़ता है। कथावाचक कम पढ़ता है और पास होता है तथा बाहर जाकर खूब खेल खेलता है, लेकिन बड़े भाई खूब पढ़ते हैं और खेलते भी नहीं, फिर भी फेल होते रहते हैं, लेकिन छोटे भाई को खेलकूद से रोकते हैं और कहानी में बड़े भाई खेलने-कूदने पर खूब फटकारने पर भी जब एक कानकौआ ऊपर से गुजरता है तो खुद बड़े भाई साहब उसकी डोर उछलकर पकड़कर बेतहाशा हॉस्टल की तरफ दौड़ पड़ते हैं। इस प्रकार, प्रेमचंद कहानी में घोर पढ़ाकू एवं खेलकूद विरोधी पात्र को भी खिलाड़ी बना देते हैं और शिक्षा में खेलकूद के महत्त्व को स्थापित कर देते हैं। इसी प्रकार उनकी 'क्रिकेट मैच' एक महत्त्वपूर्ण कहानी है। यह उनकी मृत्यु के बाद जुलाई १९३७ में छपी और एक राष्ट्रीय महत्त्व की कहानी है। प्रेमचंद ने 'जागरण' के १ तथा १५ जनवरी, १९३४ के अंकों में 'एम.सी. सी.' पर दो टिप्पणियाँ लिखी थीं, जिनमें वे भारतीय क्रिकेट की रीति-नीति की व्यंग्यपूर्ण आलोचना करते हुए लिख चुके थे कि हॉकी, फुटबॉल, टेनिस आदि में अंग्रेजों से जीतकर बस स्वराज्य मिलने वाला है। 'क्रिकेट मैच' कहानी क्रिकेट कप्तान की डायरी के रूप में लिखी गई है और वह लगभग तीन महीनों की डायरी के आधार पर निर्मित होती है। इसका मुख्य स्वर भी भारतीय पराधीनता से मुक्त होने के लिए भारतीयों को एक मन से क्रिकेट मैच को जीतने के समान ही अपने स्वराज-खेल को खेलने का मंत्र देते हैं। प्रेमचंद विदेशी खेलों के विरोधी है, पर वे इसका उपयोग तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना एवं संगठित होकर एक लक्ष्य के लिए समर्पित कोने का भाव उत्पन्न करते हैं। मिस मुखर्जी इंग्लैंड से आकर बेहतरीन खिलाड़ियों की एक टीम बनाना चाहती है और बंबई में उसकी बनाई क्रिकेट टीम जीतती है और वह खिलाड़ियों से कहती हैं कि यदि आप जैसे नौजवान लक्ष्य की पूर्ति के लिए जीना और मरना सीख जाएँ, तो चमत्कार कर दिखाएँ। जीवन का लक्ष्य बहुत ऊँचा है। सच्ची जिंदगी वही है, जहाँ हम अपने लिए नहीं सबके लिए जीते हैं। मिस हेलन के इस जीवन-मृत्यु का संदेश है—'सबके लिए जीना, सबको मिलकर एक लक्ष्य के लिए जीना और यही उसकी जनता की सेवा है और यही सबके लिए जीना।' 'ऋग्वेद' में एक मंत्र है—'संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मानांसि जानताम्', अर्थात् हम सब साथ चलें, साथ संवाद करें, सब मिलकर विराट् मन रचें, सबका हो एक आदर्श, सबके हृदय हों अभिन्न, हर मन

स्पंदित हो एक भाव तथा सब मिलें सुंदर रूप में एक साथ और पूर्वकाल में देवगण ज्यों ग्रहण करते थे यज्ञ की हवि, वैसे ही मिलित भाव से धरती की संपदा का उपयोग करें। ऋग्वेद-काल में सबको एक साथ मिलकर, एक ही भाव से, एक सूत्र में बाँधकर लक्ष्य के लिए कर्मशील होना था और प्रेमचंद-काल में भी देश के मन को एक सूत्र में बाँधकर स्वाधीनता की लक्ष्य-सिद्धि के लिए समर्पित होना था। प्रेमचंद इस आदर्श को अपने जीवन के अंत तक जी रहे थे, क्योंकि चाहे क्रिकेट के खेल को जीतना हो अथवा स्वराज्य की प्राप्ति का लक्ष्य हो, उसे गांधी, बोस, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद या वीर सावरकर नहीं, बल्कि केवल सामूहिक एकाग्र संगठित चेतना से ही प्राप्त किया जा सकता था। प्रेमचंद्र ऋग्वेद के मंत्र में देश की स्वतंत्रता का मंत्र देख रहे थे और 'क्रिकेट मैच' कहानी भी उसी महत्त्वपूर्ण उद्देश्य के लिए रची गई थी। लेखक का युवकों के लिए स्पष्ट संदेश है—देश के लिए खेलों, देश के लिए जीयो, सब मिलकर एक लक्ष्य के लिए संघर्ष करो, लक्ष्य के प्रति एकाग्र और सामूहिक शक्ति ही देश को पराधीनता से मुक्त कर सकती है। प्रेमचंद का वैशिष्ट्य है कि वे एक विदेशी खेल में भी भारतीय आकांक्षा एवं भारतीय मन को प्रतिबिंबित कर देते हैं तथा भारतीयता की छाप लगा देते हैं। इस प्रकार, प्रेमचंद क्रिकेट खेल के द्वारा भी अपने महान् लक्ष्य स्वराज्य की प्राप्ति और भारतीय आत्मा की रक्षा करते हैं। खेलों का ऐसा राष्ट्रीय लक्ष्यों के लिए उपयोग प्रेमचंद के अलावा किसी अन्य हिंदी कहानीकार ने नहीं किया।

इस कहानी-संकलन का दूसरा खंड है—'पशु-पक्षी की कहानियाँ'। इसमें आठ कहानियाँ हैं—'आत्माराम', 'स्वत्व-रक्षा', 'नागपूजा', 'अधिकार-चिंता', 'पूर्व-संस्कार', 'सैलानी बंदर', 'दो बैलों की कथा' तथा 'कोई दु:ख न हो तो बकरी खरीद लो'। इन सभी कहानियों में विभिन्न पशु-पक्षी ही कथाएँ ही केंद्र में हैं और इनमें क्रमश: तोता, घोड़ा, नाग, कुत्ता, बछड़ा, बंदर, बैल तथा बकरी ही कहानी की रचना का मुख्याधार है। प्रेमचंद की इन कहानियों में केवल 'दो बैलों की कथा' की ही आलोचकों ने चर्चा की है, अन्यथा शेष कहानियों के भाव तथा विचारगत सौंदर्य से पाठक वंचित ही रहा है। प्रेमचंद 'आत्माराम' (जनवरी, १९२०) को अपनी श्रेष्ठ कहानियाँ में गणना करते हैं, पर वे २५ सितंबर, १९१९ को मुंशी दयानारायण निगम को पत्र में लिखते हैं कि 'आत्माराम कहानी इस कद्र हिंदू हो गई है कि वह 'कहकशां' उर्दू पत्रिका के लायक नहीं है।' यह एक प्रकार से एक जनश्रुति के आधार पर लिखी गई है। महादेव सुनार के पास एक तोता है और वह प्राय: सबेरे उसे सैर करते समय ले जाता है और यदा-कदा 'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता' का मंत्र जपता रहता है। उसे एक दिन इसी तोते के कारण एक पेड़ के नीचे लुटेरों का अशर्फियों से भरा कलश मिलता है और वह घर आकर बदल जाता है तथा अनेक धार्मिक कार्य करता है और अंत में मोह-माया छोड़कर हिमाचल चला जाता है और 'आत्माराम' के रूप में प्रसिद्ध हो जाता है। 'स्वत्व-रक्षा' (जुलाई, १९२२) में घोड़ा है, जिसके हठ से तथा जिसके स्वत्व-बोध से प्रेमचंद का निष्कर्ष है कि जब घोड़ा अपने स्वत्व की रक्षा कर सकता है तो हम हिंदुस्तानी क्यों नहीं कर सकते? इस प्रकार एक घोड़ा राष्ट्रीय जागरण का आधार बनता है। 'नागपूजा' (अगस्त, १९२२) कहानी हिंदू समाज की पौराणिक आस्थाओं तथा लोकविश्वासों पर आधारित है। हिंदू समाज में सैकड़ों वर्षों से साँप के प्रति लोकविश्वास के कारण प्रत्येक वर्ष उसकी पूजा होती रही है। 'गरुड़ पुराण', 'नारद पुराण' तथा 'स्कंद पुराण' में नाग-पंचमी को नाग को दूध पिलाने का विधान है। प्रेमचंद ने इसी विश्वास पर यह कहानी लिखी है और तिलोत्तमा दो बार विधवा होती है, क्योंकि दोनों बार उसके दूल्हे को नाग डस लेता है और तीसरी बार भी नाग उसके पति पर आक्रमण करता है। प्रेमचंद के जीवन में यह वह समय था, जब वे हिंदू संस्कृति तथा उसकी आस्थाओं तथा लोक-कथाओं में विश्वास कर रहे थे। उन्होंने अपने 'वरदान' उपन्यास (१९२०) को राजा हरिश्चंद्र-शैव्या की कथा को अर्पित किया है और 'कायाकल्प' उपन्यास में वे पुनर्जन्म की कथा का वर्णन करते हैं। 'अधिकार-चिंता' (अगस्त १९२२) कहानी इससे भिन्न है और इसमें नाग के स्थान पर कुत्ता कथा का नायक है। इसमें अधिकार चिंता मनुष्य में नहीं कुत्ते में जाग्रत् होती है और उसके व्यवहार और नीतियाँ उसे अंग्रेजों का प्रतीक बना देते हैं। आज कहानी के कुत्ते की अंग्रेज के रूप में पूर्ण व्याख्या करना कठिन है, लेकिन इसमें कोई संदेश नहीं रहता है कि लेखक कुत्ते की अधिकार-चिंता संदिग्ध साधनों से पेट भरना, प्रतिद्वंद्वी की चिंता, राजा बनने की आकांक्षा, नदी पार कर रमणीक प्रदेश में पहुँचना, पशुओं को परस्पर लड़ाकर नष्ट करना, ईश्वर इच्छा से शासक बनने को प्रचारित करना तथा किसी नए शासक को आने से रोकने इत्यादि में अपने समय के अंग्रेज शासकों की छवि ही अंकित करता है। प्रेमचंद इस तरह अपने राष्ट्रीय लक्ष्यों के लिए पशुओं का भी उपयोग करते हैं और हिंदी कहानी में यह सर्वथा मौलिक प्रयोग है और इसे हिंदी कहानी में पशु-विमर्श की शुरुआत का श्रेय दे सकते हैं।

पशु-पक्षी संबंधी कहानियों में कालक्रम से 'पूर्व-संस्कार' (दिसंबर १९२२) आती है। यह कहानी हिंदू-धर्म के विश्वास पुनर्जन्म पर आधारित है और प्रेमचंद के विश्वास की प्रतीक है। हिंदू धर्म में गाय और नंदी (बछड़ा) दोनों देवतुल्य हैं। वे अत्यंत पवित्र और पूजनीय हैं। प्रेमचंद की कहानी 'पूर्व-संस्कार' में धर्मपरायण शिवटहल एक अपराध के कारण बछड़े के रूप में जन्म लेता है और प्रायश्चित्त की अवधि पूरी करने पर शरीर त्याग कर निर्माण प्राप्त करता है। कहानी में प्रेमचंद इस विश्वास की कही आलोचना नहीं करते, बल्कि उसका भाई रामटहल का भी हृदय-परिवर्तन होता है और अपराधों की दुनिया को छोड़कर दया और विवेक को अपना लेता है। 'सैलानी बंदर' (फरवरी, १९२४) लेखक के पशु-प्रेम की कहानी है और वे पशु-पक्षी में भी मानवीय संवेदना खोज लेते हैं। बंदर मदारी जीवनदान और उसकी पत्नी बुधिया की आजीविका का साधन है। एक बार बंदर पकड़ा जाता है और सर्कस में पहुँच जाता है और जब सर्कस में आग लगती है तो वह भागकर अपनी मालकिन के पास पहुँचता है, पर तब तक मदारी मर चुका है और बुधिया पागल हो गई है, लेकिन बंदर उसे पहचानकर उसके पैरों में लिपट जाता है और वह भी मन्नू बंदर को गले लगा लेती है। इस प्रकार बंदर भी मनुष्य के साथ

अपने संबंधों को निभाता है और रिश्तों की गरमाहट को जानता है। इसके बाद उनकी प्रसिद्ध कहानी 'दो बैलों की कथा' (अक्तूबर १९३१) का प्रकाशन होता है और उनकी सर्वश्रेष्ठ कहानियों में इसकी गणना होती है, लेकिन प्रगतिशील लेखक/आलोचक इसका उल्लेख भी नहीं करते। इस कहानी में हीरा और मोती दो बैल हैं, जो मानवीय संवेदनशीलता, साहस, स्वतंत्रता-प्रेम, कर्मशीलता, अपनत्व, संघर्ष और ईमानदारी में पशु योनि में होकर भी मनुष्यों से श्रेष्ठ हैं। ये बैल मनुष्य की भाषा में बात करते हैं, लेकिन वे अपने पशु-धर्म, पशु-कर्म तथा पशु-जीवन का त्याग नहीं करते और उनका पशु तथा मनुष्य के रूपों का संगम प्रेमचंद की अद्‌भुत संवेदना और कलात्मकता का प्रमाण है। उनका परस्पर प्रेम मित्रता, आत्मीयता, संघर्ष और दूसरे पशुओं के प्रति मानवीयता भी अद्‌भुत है। वे अपने व्यवहार से पशु को भी मनुष्य से श्रेष्ठ बनाकर अमर पात्र बन जाते हैं। इस खंड की अंतिम कहानी है—'कोई दु:ख न हो तो बकरी खरीद लो' (मार्च १९३५) है, जो कथावाचक के बकरी पालने के अनुभव तथा उसकी पत्नी के बकरी के बच्चों के प्रति प्रेम का वर्णन है। कहानी साधारण है, पर मनोरंजक और हास-परिहास पूर्ण है।

इस कहानी-संकलन का तीसरा खंड है—'बाल जीवन की कहानियाँ', जिसके अंतर्गत पाँच कहानियाँ हैं—'चोरी', 'कजाकी', 'नादान दोस्त', 'खेल' तथा 'ईदगाह'। इनमें 'खेल' कहानी उर्दू में छपी थी और कमल किशोर गोयनका ने इसे खोजकर हिंदी में प्रकाशित कराया और हिंदी संसार को पहली बार जानकारी मिली। इनमें भी 'ईदगाह' कहानी की ही चर्चा हुई और बहुत हुई, यहाँ तक कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने एक भाषण में इस कहानी का उल्लेख किया। इन कहानियों को 'खेल' शीर्षक के अंतर्गत भी रखा जा सकता है, पर ये मुख्यत: बाल-जीवन के मार्मिक पक्ष का उद्‌घाटन करती हैं, इसलिए इन्हें बाल-जीवन की कहानियों के रूप में देखना उचित होगा। इस खंड की आरंभिक दो कहानियाँ 'चोरी' तथा 'कजाकी' प्रेमचंद की आत्मकथात्मक कहानियाँ हैं, ऐसा अमृत राय मानते हैं और सही मानते हैं। ये कहानियाँ प्रथम पुरुष में लिखी गई हैं। अमृतराय के अनुसार 'चोरी' के हलधर का वास्तविक नाम बलभद्र है। 'चोरी' कहानी उनके बाल-जीवन की घटना है। कहानी का वलभद्र उनका चचेरा भाई है। प्रेमचंद कहानी के आरंभ में अपने बचपन को याद करते हुए लिखते हैं—"हाय बचपन! तेरी याद नहीं भूलती। वह कच्चा, टूटा घर, वह पयाल का बिछौना, वह नंगे बदन, नंगे पाँव खेतों में घूमना, आम के पेड़ों पर चढ़ना, सारी बातें आँखों के सामने फिर रही हैं। चमरौधे जूते पहनकर उस वक्त जितनी खुशी होती थी, अब फ्लैक्स के जूतों से भी नहीं होती। गरम पनुए रस में जो मजा था, वह अब गुलाब के शरबत में भी नहीं, चबेने और कच्चे बैरों में जो रस था, वह अंगूर और खीरमोहन में भी नहीं मिलता।" इसकी कहानी चोरी के एक रुपए तथा उसके परिणाम की कहानी है, जो लेखक के बचपन की सुंदर झाँकी देती है। 'कजाकी' कहानी भी प्रेमचंद के बचपन की ही कहानी है, जिसे वे चालीस साल के बाद लिखते हैं। कजाकी डाकमुंशी है और उसके साथ लेखक अपने बचपन के अनुभवों की कहानी लिखता है। इसमें हिरन के बच्चे का पदार्पण होता है और अंत में कजाकी नौकरी पर बहाल होता है और मुन्नू हिरन हाथ से निकल जाता है। ये कहानियाँ यद्यपि लेखक की आत्मकथात्मक कहानियाँ हैं, पर बाल-जीवन के इनमें ऐसे दृश्य हैं, जो अन्य बाल कहानियों में नहीं मिलते।

'नादान दोस्त' (१९२८) केशव और श्यामा दो बाल पात्रों की कहानी है। ये बच्चे अपने भोलेपन में चिड़िया के अंडे को धूप से बचाने के लिए कार्निस से हटाकर चिथड़ों पर रख देते हैं तो चिड़िया उन्हें फेंक देती है। इस पर उनकी माँ बताती है कि अंडे छूने पर वे गंदे हो जाते हैं तो चिड़िया उन्हें नहीं सेती। वे तो चिड़िया की मदद करना चाहते थे, पर वे अपने भोलेपन एवं अबोधता में नुकसान कर देते हैं। 'खेल' (अप्रैल १९३१) कहानी प्रेमचंद की हिंदी में प्रकाशित नहीं थी, परंतु कमल किशोर गोयनका ने इसका उर्दू से हिंदी में लिप्यंतर किया। इस कहानी से पूर्व जैनेंद्र कुमार की इसी शीर्षक 'खेल' से कहानी छप चुकी थी और ऐसा लगता है कि प्रेमचंद ने उसे पढ़कर ग्रामांचल के बच्चों के खेल पर इस कहानी को लिखकर उसका दूसरा रूप रखा। जैनेंद्र कुमार की 'खेल' कहानी सन् १९२८ में प्रकाशित हुई, जब वे २२-२३ वर्ष के थे और प्रेमचंद ने लगभग ४१ वर्ष की आयु में और जैनेंद्र कुमार की कहानी के छपने के तीन वर्ष बाद इस कहानी को लिखा। जैनेंद्र की कहानी 'खेल' के पात्र सुरबाला (७ वर्ष) और मनोहर (९ वर्ष) का है, वे शहरी पात्र हैं और वे नदी के किनारे बालू से भाड़ तथा कुटी बनाने और जोड़ने का खेल खेलते हैं। इस कहानी पर जैनेंद्र कुमार ने डॉ. लोठार लुत्से से कहा था, "जीवन एक ऐसा खेल है, ऐसी क्रीड़ा है, जिसमें तरह-तरह की लहरें आती हैं, परंतु मनुष्य बड़प्पन में इसे खो देता है। कहानी में बच्चों का जो तमाशा है, उसका मेरे निकट बहुत महत्त्व है। इसीलिए कहानी में दार्शनिकों तथा पाठकों पर व्यंग्य है, क्योंकि वे बुद्धि पर भरोसा करते हैं, जो भटकाती है। हम जब खेल की तरह जीवन को पूरा-का-पूरा अपना लेते हैं, तो बुद्धि-भ्रम तथा बुद्धि का मान एवं संभ्रंम खत्म हो जाता है और गुत्थियाँ, गाँठें आदि दूर होती हैं और एक प्रवाह खुल जाता है।"

कहानी में एक दार्शनिक पृष्ठभूमि भी है, जो जैनेंद्र के दार्शनिक चिंतन की झलक देती है, परंतु प्रेमचंद की कहानी में लेखक कहीं नहीं है और उसमें गाँव के बच्चों का शहर से आने वाले खोमचे वाले का गाँव में आकर बच्चों को मिठाई आदि बेचने का नाटक है, जो नाटक होते भी बाल-जीवन का वास्तविक चित्र बनता है। रमेशचंद्र शाह ने इस कहानी

'नादान दोस्त' (१९२८) केशव और श्यामा दो बाल पात्रों की कहानी है। ये बच्चे अपने भोलेपन में चिड़िया के अंडे को धूप से बचाने के लिए कार्निस से हटाकर चिथड़ों पर रख देते हैं तो चिड़िया उन्हें फेंक देती है। इस पर उनकी माँ बताती है कि अंडे छूने पर वे गंदे हो जाते हैं तो चिड़िया उन्हें नहीं सेती। वे तो चिड़िया की मदद करना चाहते थे, पर वे अपने भोलेपन एवं अबोधता में नुकसान कर देते हैं।

को पढ़कर मुझे १० जुलाई, २०१३ के पत्र में लिखा था—"'खेल' कहानी का तो मुझे पता ही नहीं था। आपने ही इसे उर्दू पत्रिका 'चंदन' से खोजा और उपलब्ध कराया। मैं तो इसे पढ़कर चकित रह गया। आपका यह कहना सही है कि 'बालकों के अभिनय तथा खेल में इतनी वास्तविकता है कि वह खेल नहीं जीवन का वास्तविक चित्र प्रतीत होता है। इस तरह प्रेमचंद अभिनय को जीवन में परिवर्तित कर देते हैं। यह प्रेमचंद की कहानी कला की उपलब्धि है। यह कहानी आपने 'अभिनय इमरोज' के माध्यम से पढ़वाई, इसके लिए कृतज्ञ हूँ।" प्रेमचंद की 'ईदगाह' कहानी बहुचर्चित तथा उनकी श्रेष्ठ कहानियों में रखी गई। यह मुस्लिम त्योहार ईद पर लिखी गहरी संवेदना की मार्मिक कहानी मानी गई और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तक ने अपने एक भाषण में इसकी चर्चा की। इस कहानी में ईद के त्योहार पर हामिद अपनी दादी से तीन पैसे लेकर अपने हम उम्र दोस्तों महमूद, मोहसिन, नूर और सम्मी के साथ मेले में जाता है। वे गाँव से शहर में आते हैं, तो अदालत, कॉलेज तथा क्लबघर देखते हैं और टिप्पणियाँ करते चलते हैं और मेमों से अपनी अम्मी की तुलना करते हैं। बच्चे जिन्नात की और फिर कांस्टेबल (सिपाही) के बारे में कहते हैं कि ये चोर-डाकू से मिले रहते हैं और यही चोरी कराते हैं। चारों बच्चे मेले में पहुँचकर महमूद सिपाही, मोहसिन भिश्ती, नूरे वकील और सिम्मी धोबिन का खिलौना खरीदते हैं और हामिद तीन पैसे में चिमटा लेता है यह सोचकर कि "दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं तो हाथ चल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उँगलियाँ नहीं जलेंगी। घर में एक काम की चीज हो जाएगी। खिलौने से क्या फायदा! व्यर्थ में पैसे खराब होते हैं। जरा देर ही तो खुशी होती है।" अब सारे बच्चे अपने-अपने खिलौनों के साथ लौटते हैं और अपने-अपने खिलौनों की तारीफ करते हैं और चिमटा भी खिलौना है, इसे समझाते हुए हामिद अपने दोस्तों से कहता है, "खिलौना क्यों नहीं है। अभी कंधे पर रखा, बंदूक हो गई। हाथ में ले लिया, फकीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मंजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने कितना भी जोर लगावें, मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है—चिमटा।" इस पर बच्चे दो दलों में बँट जाते हैं और अपने-अपने तर्कों से अपने खिलौने के गुणों का बखान करते हैं, लेकिन हामिद के आघातों से आतंकित हो उठते हैं। इस पर लेखक हामिद के पक्ष में यह टिप्पणी करता है—"उसके पास न्याय का बल है और नीति की शक्ति। एक ओर मिट्टी है, दूसरी ओर लोहा, जो इस वक्त अपने को फौलाद कह रहा है। वह अजय है, घातक है। अगर कोई शेर आ जाए तो मियाँ भिश्ती के छक्के छूट जाएँ, मियाँ सिपाही मिट्टी की बंदूक छोड़कर भागें, वकील साहब की नानी मर जाए, चुगे में मुँह छिपाकर जमीन पर लेट जाएँ। मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रुस्तमेहिंद लपककर शेर की गरदन पर सवार हो जाएगा और उसकी आँखें निकाल लेगा। XXX हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रुस्तमेहिंद है। इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे, सम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा, टूट-फूट जाएँगे, हामिद का चिमटा तो बना रहेगा, बरसों।" आगे चलकर यह सच निकलता है कि मिट्टी के सारे खिलौने नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं और चिमटा विजयी होता है और दादी अमीना हामिद को गले लगाकर रोने लगती है और लेखक लिखता है, "बच्चा हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँखों की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता।" इस प्रकार, यह कहानी बालक हामिद की संवेदनाओं तथा उसके पवित्र इनसानी भावों की चरम अभिव्यक्ति है और अमीना भी बालिका बनकर मर्म को छूती है। कहानी जितनी बालक हामिद की है, उतनी ही प्रेमचंद की भी है। प्रेमचंद बच्चों के साथ-साथ चलते हैं और शहरी जीवन तथा सिपाही, वकील आदि पर जो बच्चे बोलते हैं, वे एक प्रकार से प्रेमचंद ही बोल रहे हैं। प्रेमचंद इस कहानी में भी 'न्याय और नीति' के रूप में चिमटे के साथ हैं, अंग्रेजी सिपाही, वकील, क्लब-घर आदि के साथ नहीं। प्रेमचंद ने इस कहानी में भी हामिद के बालपन के साथ अपने राष्ट्रीय विचारों को भी जोड़कर उसे दुगना महत्त्वपूर्ण बना दिया है।

और अंत में कहानियाँ हिंदी पाठकों तथा प्रेमचंद के प्रेमियों को उनके कहानी-संसार की एक ऐसी दुनिया से परिचित कराएँगी, जिसकी समग्रता में उन्हें पहली बार अनुभूति होगी और प्रेमचंद को जीवन के व्यापक परिदृश्य में पढ़ने और समझने का सुअवसर मिलेगा। अधिकांशत: ये कहानियाँ बाल जीवन, पशु-पक्षियों आदि से संबद्ध हैं। बाल जीवन में खेल ही प्रमुख है, अत: वे कहानियाँ भी बाल जीवन की ही झाँकी देती हैं, बस 'क्रिकेट मैच' युवकों के खेल की कहानी है। इन सभी में देश का बाल-जीवन, बाल-खेल तथा पशु-पक्षियों का प्राकृतिक जीवन ही हमें लेखक के एक जीवंत संसार की कोमल अनुभूतियों, सांस्कृतिक-राष्ट्रीय लक्ष्यों तथा मानवीयता के महत् भावों के उत्कर्ष की ओर ले जाता है और हम प्रेमचंद की व्यापक भारतीय दृष्टि, भारतीय चित्त तथा उच्च भारतीय मंतव्यों से समृद्ध हो उठते हैं। प्रेमचंद का यह व्यापक संसार तथा व्यापक रचनात्मकता उन्हें बाल्मीकि, व्यास, कालिदास तथा तुलसीदास की परंपरा से मिलता है, जो सनातन काल से जीवन के 'अमंगल' में 'मंगल' की अनुभूति करके साहित्य में प्रस्तुत करती रही है। तुलसीदास ने कहा भी है—'मंगल भवन अमंगल हारी'। प्रेमचंद हमें इसी शाश्वत मानवीयता के साथ जोड़ते हैं और उनसे पहले उपरोक्त महाकवि भी इसी सर्जनात्मक रीति-नीति का अनुपालन करते रहे हैं, बस अंतर यह है कि वह बाल-जीवन से होती है। आशा है, इन कहानियों को पाठक इसी मनोभूमि से ग्रहण करेंगे और इन्हें पढ़-समझकर स्वयं को पहले से अधिक समृद्ध पाएँगे।

साअ

ए-९८, अशोक विहार,
फेज प्रथम, दिल्ली-११००५२
दूरभाष : ०९८११०५२४६९

कुछ न करने का सुख

● गोपाल चतुर्वेदी

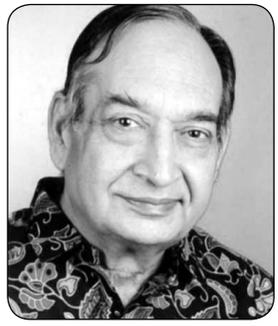

अपना-अपना जीवन-दर्शन है। उनकी शान में निखट्टू, आलसी, काहिल जैसे विशेषणों के प्रयोग किए जाते हैं। जैसा सभ्य समाज का चलन है, यह सब उनके पीठ पीछे की बात है। वरना सामने तो वह 'राजू भैया' हैं। जीवन से भले चले गए हों, पर सामंती युग का संबोधन अभी भी शेष है।

हम तो सिर्फ इतना जानते हैं कि लाला धनराज हमारे पड़ोसी हैं। उनके दो पुत्र रत्न हैं। बड़े जो हैं, वह कुछ आराम-तलब हैं। उनके लिए स्वर्गीय कवि कैलाश भाई की दो पंक्तियाँ 'बड़े बाप के बेटे हैं, जब से जन्म हुआ लेटे हैं' सर्वाधिक उचित प्रतीत होती हैं। वहीं लालाजी की छोटी संतान है। उसके रग-रग में फुरती है। घड़ी में अलार्म लगाकर सूरज निकलने के पहले जैसे उसकी अगवानी के लिए वह बिस्तर त्याग देता है। नित्य कर्मों से निवृत्त होकर पार्क में घूमने जाता है। वहीं वर्जिश कर पसीना बहाता है। घर लौटने पर उसके चेहरे पर संतोष की चमक है। अहैतुक लोग उसकी प्रशंसा करते हैं, "लाला धनराज भाग्यशाली हैं, ऐसी कर्मठ संतान पाई है।" कौन कहे लालाजी के मन में उसके लिए सपने हैं? दुकान पर बैठे-न-बैठे, जिस क्षेत्र में जाएगा, नाम कमाएगा। जैसे अभी कल ही की बात है। छोटा जो प्यार से छोटू कहलाता है, अपनी दिनचर्या के अनुसार, पार्क से घर आ रहा था कि एक वाहन ने उसे टक्कर मार दी और भोर के अँधेरे में फरार हो लिया। अब दुर्घटना-ग्रस्त छोटू का इलाज लालाजी का भार है। उसे वह दु:खी मन से वहन कर रहे हैं।

वहीं बड़का स्कूल न जाकर धनराज के साथ दूकान जाता है। ए.बी.सी. कौन कठिन है? यह तो उसने सीख ही ली है। उसे पता है कि दुकान की गद्दी उसके ही जिम्मे है। वह उसका व्यावहारिक प्रशिक्षण अभी से ले रहा है। उसने देखा और पाया कि लालाजी हर वस्तु के क्रय मूल्य में दस परसेंट का मुनाफा जोड़कर उसे बेचते हैं। इसमें भी पाँच परसेंट वह आवश्यक और अनिवार्य कार्यों की निबटाने के लिए अलग रखते हैं। कौन कहे, कब पुलिस या सेल्स-टैक्स वाला दस्तरी वसूलने आ धमकें? उनका मुँह और कलम पैसे चबाकर ही मौन रहती है। जैसे-जैसे सरकार भ्रष्टाचार के विरुद्ध नए-नए दाँव खोज रही है, उसका आकार और बढ़ता जा रहा है। जो काम पहले की नियत रेट पर होता था, अब उसकी रेट दुगनी है। निगरानी का खतरा जो बढ़ गया है। कर्मचारी विवश हैं। क्या करें? निगरानी वाले उनसे वसूलते हैं। लगता है कि जैसे भ्रष्टाचार की ऊपर से नीचे तक एक ऐसी चेन है, जो कहीं भी टूटी तो पूरी सरकारी प्रक्रिया ठप होने का अंदेशा है। प्रतीत होता है कि जैसे जीवन में रक्त का संचालन केवल ऊपर की कमाई से हो रहा है, कहीं भी रोक लगी तो मृत्यु की आशंका है। अब तो जिंदगी के लिए भ्रष्टाचार अनिवार्य है। जीवन कौन नहीं चाहता है? लिहाजा, भ्रष्टाचार भी, साँस की आवा-जाही का पर्याय है।

बड़कू बैठे-ठाले व्यापार की सफलता के गुर सीख रहा है। मुनाफा कमाने के तरीकों में पारंगत हो रहा है। वहीं उसका भाई छोटू एक पैर गँवाकर, उसकी जगह नकली टाँग से चलने को प्रयासरत है। यहाँ भी उसकी लगन दर्शनीय है। वह नियम से दिन में जब समय मिले, चलता रहता है। उसका पहला लक्ष्य अपनी शिक्षा पूरी करना है। धनराज भी यही चाहते हैं। कौन कहे, छोटू की कोशिश रंग लाए और वह प्रतियोगिता के माध्यम से आई.ए.एस. आदि बनने में सफल हो। पर छोटू का निश्चय कुछ और है। पहले उसने घर के लाइसेंसी रिवाल्वर से निशाने साधे। इसमें सफल होकर वह अब पेशेवर कोच के अंतर्गत प्रशिक्षण ले रहा है। पढ़ाई के साथ उसने अपने इस निजी शौक में भी महारत हासिल कर ली है। बड़कू उसका मजाक उड़ाते हैं। कोई पूछे तो वह बताते हैं कि छोटू कहीं निशाना लगा रहे होंगे। ऐसे वह खुद धनराज की गद्दी पर विराजमान है, अपने पिता के संपर्कों का लाभ ही नहीं उठा रहे, उन्हें बढ़ा भी रहे हैं। यों उनका हर काम बैठे-बैठे होता है। अगर किसी की खातिरदारी पाँच तारा होटल में करनी हो तो वह लुढ़कते हुए अपनी गाड़ी में जाकर बैठते हैं और फिर इसी, रोचक अंदाज को दोहराकर, खाने की मेज तक पहुँचते हैं। उनकी खाने में नैसर्गिक रुचि है। ऐसे कट्टर शाकाहारी परिवार में जन्म लेने के वाबजूद वह होटल में मीट-करी और मुरगे की टाँग के अधिक शौकीन हैं। लगातार बैठे रहने और मौके-बेमौके पाँच तारा होटल के शौक ने उन्हें बेडौल गोल-मटोल आकार का बना दिया है।

बैठे-ठाले धनराज उनका विवाह भी करवा गए हैं। उनकी पत्नी उनके आहार और आकार दोनों से चिंतित है, पर वह प्रसन्न है। ऊपर वाले ने जब उनको बैठने-खाने का सामान उपलब्ध कराया है तो उसे निभाएगा भी वही। वह बहुधा गूगल पर संसार के मोटे लोग देखकर और उनसे अपनी तुलना कर संतुष्ट हो लेते हैं। अब भी बहुत 'स्कोप' है। लुढ़कने का अंदाज उनके व्यक्तित्व का आकर्षण है। कोई भी नया संपर्क उनकी कद-काठी और चलने के स्थान पर लुढ़कने के अंदाज से बहुत

प्रभावित होता है। उन्हें भी अपनी इस विशेषता पर गर्व है। कोई भी उन्हें देखकर मुसकराए बिना नहीं रह पाता है। बड़कू को भी आभास है कि वह सार्वजनिक मनोरंजन के उपयोगी साधन हैं।

उनकी दुकान पर बोर्ड प्रो. धनराज का ही है। प्रो. का अर्थ 'प्रोपराइटर' से है, शिक्षा जगत् के प्रोफेसर से नहीं, पर अकसर ग्राहक उसे 'मोटे बड़कू' की दुकान ही कहते हैं। सीमित मुनाफे की अवधारणा के कारण दुकान लोकप्रिय भी है, जो वहाँ ग्राहकों की भीड़ से जाहिर होता है। बड़कू अपना लक्ष्य पा चुके हैं और छोटू उसकी ओर निरंतर अग्रसर हैं। पैरा-शूटिंग की प्रतियोगिता में वह अपने सूबे में अव्वल है। उसकी पूरी कोशिश अब भारत में यही स्थान पाने की है, जिसमें वह पूरी लगन और निश्चय से जुटे हैं।

यों समाज में कुछ न करने वाले हर क्षेत्र का शृंगार हैं। वह अपने पर 'मानक' होने का अभिमान भी करते हैं। दूसरे, उनकी ही तुलना में कार्यकुशल कहलाते हैं। ऐसों लोगों को भी काम-चोरी से परहेज नहीं है। दिन में थोड़ा-बहुत काम निबटाना ही उनकी वाह-वाही का कारण है। यह उनकी क्षमता से बेहद कम है। फिर भी जब इसी की प्रशंसा है तो और अधिक वह क्यों करें?

काम न करने की कला निजी और सरकारी क्षेत्र दोनों में समान है। फर्क इतना है कि सरकार कामचोरी के लिए बदनाम है, जबकि निजी क्षेत्र की वास्तविकता से अभी सब परिचित नहीं हैं।

हर बड़े निजी क्षेत्र का छोटा संपर्क कार्यालय दिल्ली में है। वह 'त्योहारी' के अलावा काम के अनुरूप भेंट, कैश और गिफ्ट बाँटता है। देखा गया है कि इस पुण्य के भ्रष्टाचार के कार्य में निजी क्षेत्र का कर्मचारी बहुत कार्यकुशल है। बाबू से लेकर अफसर तक की छवि स्विस घड़ी के समान हैं। सब सही समय की प्रक्रिया की विशेषज्ञता सा चलता रहता है। उधर प्रस्ताव आया नहीं कि उसकी भूमिका पहले से बनने लगती है। प्रस्तुत संयत्र कितना उपयोगी है। इसमें भारत के साथ मिलकर संयुक्त उत्पादन का भी प्रावधान है। कुछ दिनों में उसका निर्यात भी संभव है। वगैरह-वगैरह। निजी फर्म के कर्मचारी और अधिकारी, शासकीय बाबू से लेकर अफसर के कान में यही मंत्र फूँकते रहते हैं। मंत्र सरकार को सुहाये, इस खातिर, हर मुलाकात में छोटी-बड़ी भेंट देने का चलन है। "देखिए बाजार में यह नई बेड-शीट आई है। हमने दो-तीन घर पहुँचा दी है, शायद आपको भी भाए।" कलकत्ता की रसमलाई, मुंबई की असली फलों की आइसक्रीम वगैरह भी बँटती रहती है। इस गिफ्ट-भेंट को पाने वाले प्रसन्न हैं और देने वाले भी। कुछ दान दिया, कुछ स्वयं खाया। दो पीस सूट का कपड़ा भेंट को आया था। एक दिया एक घर पर रख लिया। इसी के कारण संपर्क का काम चोखा चलता है। जहाँ 'लेन' की संभावना है। वहाँ 'देन' में क्या दिक्कत?

संपर्क कार्यालय में सबके लिए प्रोत्साहन है। पाने वाले के लिए भी और देने वाले के लिए भी। लिहाजा कार्य कुशलता होना-ही-होना। काम न करने का सुख तो कलकत्ता के मुख्यालय के कर्मियों के लिए है। वहाँ कुछ दिन भर चाय खाते हैं, तो कुछ बीच-बीच में काम भी निबटाते हैं। इसी तरह कामचोरी और कार्य-कुशलता का संतुलन बना रहता है। बहुधा देखने में आया है कि काम न करने वाले के निजी संपर्क ही उन्हें नौकरी दिलवाते हैं। उसके चाचा, ताऊ या पिताजी श्रेष्ठ पद पर आसीन हैं। इस निजी उद्योग या फर्म पर उनकी काफी कल्याण की कृपा है। उस फर्म पर अहसान का निजी आभार इस कार्य-विमुख कर्मचारी की नौकरी है।

ऐसे काम न करने वाले अकसर प्रबंधन को भी पटा के रखते हैं, इनमें कुछ यूनियन के नेता बन जाते हैं। प्रबंधन उनका आभारी है। वह खुद काम करें-न-करें, दूसरों को काम करने की अनुमति देते हैं, वरना किसी भी बात या बिना बात स्ट्राइक का खतरा है।

जैसे कलकत्ता में चाय 'खाने' का चलन है, वैसे ही हर महानगर के अपने-अपने प्रिय शौक हैं। मुंबई में काम न करने वाला संगीत-प्रेमी है। वह दफ्तर में चिड़िया-बनाकर दिन भर अपने प्लेबैक की तलाश में व्यस्त है। कोई फिल्मों में नायक-खलनायक बनने का अरमान लेकर फिल्म-नगरी आया है। वह स्टूडियों दर स्टूडियों के चक्कर काटता है। कौन कहे कब उसके भाग्य का सितार चमक जाए? वह अपने दफ्ता का देवदास है। जब तक वह दफ्तर में है, अपनी पारी की खोज में है, वह नायक बनने की मुहिम में। ऐसों की कठिनाई है। वह प्रबंधन की कृपा पर निर्भर है। न उनके निजी संपर्क है, न काम रोकने की महारत। उनमें नौकरी पाने की योग्यता थी, उसे निभाने की नहीं। प्रबंधन भी ऐसों पर मेहरबान है। क्या पता, ऐसे कब एक दिन बड़े नायक या गायक बन बैठे? तब तो कहने को होगा कि इस निजी उद्योग या फर्म ने इन्हें बर्दाश्त ही नहीं किया, बढ़ावा भी दिया। ऊपर वाला ऐसों के साथ है। उनका गुजारा भी चल ही जाता है।

हमें कभी-कभी लगता है कि अपने निखट्टूपन के लिए सरकार व्यर्थ ही बदनाम है। कोई सोचे। यदि सरकार काम न करे तो देश कैसे चले? उसके बाबू-अफसर देश के भाग्य-विधाता हैं। आजादी के बाद ही इतनी योजनाएँ आई हैं। इतने कागज काले हुए हैं, इतने पुल, इमारतें बनी हैं, राज्यों का पुनर्गठन हुआ है, चुनाव हुए हैं, यदि सरकार निठल्ली होती तो यह सब कैसे संभव था? हो सकता है कि वह कुंभकर्ण की नींद से आक्रांत है, पर वक्त-जरूरत जग भी जाती है, यही क्या कम है?

सरकारी कर्मी के कंधे अधिकतर झुके रहते हैं। उसकी शक्ल पर दफ्तर जाते समय एक अनजानी सी मनहूसियत छाई रहती है। हमें लगता है कि ऐसा क्यों न हो? इनते बड़े देश और अब तो सर्वाधिक आबादी वाले मुल्क का बोझ उसके कंधे पर है। जितने लोग है, उतनी समस्याएँ हैं। इन सबका सोचकर उसके चेहरे पर गुलाब की ताजगी या भोर की मुसकान कैसे मुमकिन है? वह देश के प्रति समर्पित है। एक अकेले इनसान पर करोड़ों के भविष्य का भार?

हमारे एक परिचित बाबू ने दफ्तर के वक्त बाजार में सैर करते मिले तो यही ज्ञान दिया था। हमने जानना चाहा कि अभी तो दफ्तर का समय है, वह कैसे घूम-फिर रहे हैं? उनके उत्तर से हम आज तक प्रभावित हैं, "देखिए, साँस लेना जीवन का लक्ष्य है। दफ्तर के वातावरण में लाखों-करोड़ों समस्याओं की ऐसी घुटन है कि साँस लेने बाहर आना पड़ता है, वरना दम घुटकर रह जाए।" हमें उनसे हमदर्दी हुई। तभी दूसरे दोस्त ने

समझाया कि ऐसी बातें सिर्फ अपना महत्त्व जताने की खतिर हैं। ऐसे लोग काहिली और कामचोरी के ज्वलंत उदाहरण हैं। इनका विचार है कि इन्हें हजारों का वेतन सिर्फ दफ्तर आने-जाने के लिए मिलता है। इनका सरकार पर कोई जन्मजात अज्ञात उधार है, जिसे चुकाना उसका नेक कर्तव्य है। यह तो सिर्फ मूलधन के इच्छुक हैं, अगर कहीं ब्याज जोड़ते तो सरकार का दीवाला निकल जाता। यही क्या कम है कि वह दफ्तर आने का श्रम-साध्य कर्म केवल वेतन के लिए करते हैं? यह अपेक्षा करना कि बिना अन्य राशि पर वह काम भी करें सिर्फ भ्रम है? ऐसे भाग्यशाली न घर का काम करते हैं, न दफ्तर का। कुछ को शंका है कि ऐसों का समय कैसे बीतता है? हमें विश्वास है कि ऐसे कुछ न करने के सुख में इतने मगन हैं कि उन्हें समय का आभास कैसे हो? मनहूसियत की मुद्रा के ढोंगी वाकई में इतने तरोताजा हैं कि जैसे युद्ध के दौरान नेपोलियन घोड़े की पीठ पर सो लेता था, यह दफ्तर-गमन के समय अपनी कुरसी पर यही कर्म करने में समर्थ हैं। इनकी नींद तभी खुलती है, जब इन्हें कोई घूस के बतोर चाँदी के जूते मारे। नहीं तो इनका जीवन अधिकतर सुप्तावस्था में ही बीतता है। दूसरे के खर्च पर यह कैंटीन भ्रमण और वहाँ का पकवान सेवन भी कर लेते हैं। इनकी बाजार की सैर अकारण नहीं है। पैरों के श्रम से इन्हें नींद खूब आती है। जब घर-दफ्तर में सोने के सुख का आनंद लेना है तो कुछ-न-कुछ श्रम तो करना-ही-करना।

सरकार के अफसरों की हैसियत उनकी सेवा में लगी शासनीय गाड़ियों से आँकी जाती है। बड़ा अफसर वह है, जिसकी खिदमत में दो-तीन गाड़ियाँ हैं। सरकार से सिर्फ एक कार का जुगाड़ है, पर उसके पास एक-दो पब्लिक सेक्टर की भी जिम्मेदारी है। यदि वह कार दे दे अधिकारी के प्रयोग के लिए तो उसका कार्य श्रेष्ठ है, वरना सिर्फ संतोषजनक। कार से सरकार और पब्लिक सेक्टर के संबंध मधुर हो जाते हैं, अर्थात् उसका कोई भी कार्य शासन में नहीं अटकता है। उसका प्रस्ताव पहुँचा नहीं कि शासन की स्वीकृति आ जाती है। इन कारों का प्रयोग भी रोचक है। एक गाड़ी साहब की सेवा में है, दूसरी पत्नी और परिवार की। बच्चे स्कूल उसी से जाते हैं, मैडम की शॉपिंग और 'किटी पार्टी' उसी के प्रयोग से होती है। केंद्र में हो-न-हो राज्यों में इसी सामंती परंपरा का चलन है। बड़के अफसर कौन किसी राजा से कम हैं? उनसे ही मंत्रियों को प्रेरणा मिलती है।

कबीर ने अपने लेखन में हर विसंगति का वर्णन किया, पर न कभी मठ बनाया न पंथ चलाया। यह उनके अनुयायियों का करतब है। वैसे ही जनसेवक कुरसीपंथ के पक्षधर हैं। यह जनसेवा के प्रेरक नमूने हैं। चुनाव के समय तक वह एक प्रखर व प्रेरक जनसेवक हैं। बच्चे के लाड़-दुलार में वह उसे देखते ही गोद में उठाते हैं। अकसर उसकी सू-सू में भीगना उनके प्रेम की पराकाष्ठा है। जीतकर चुनाव क्षेत्र की गली-गली, जो उन्होंने पैदल घूमी है, वह उसे भी भूल जाते हैं। जनता का क्या, उसकी सेवा के इरादे वह संसद् या विधानसभा में ऐसे दोहराते हैं, जैसे कोई तोता सीखा हुआ पाठ जपे। ऐसा नहीं कि सब जनसेवक इसी प्रकार के हैं।

कुछ ने जनसेवा की अपनी शैली विकसित की है। वह सप्ताह में एक-दो दिन अपनी प्रिय जनता को दर्शन देते हैं। उसकी समस्या एक कान से सुन दूसरे से निकाल देते हैं। पर लिखित प्रतिवेदन की प्रति को उचित मंत्री को भेजने में वह चूक नहीं करते हैं। जनता के प्रतिवेदन को संबद्ध मंत्रालय भेजने का उनका कीर्तिमान है। उनके निजी सहायक ने एक निर्धारित टंकित पत्र बना रखा है। उसके माध्यम से वह प्रेषित कर दिया जाता है और प्रतिलिपि जन-सदस्य को दे दी जाती है। वह भी खुश और जनसेवा का कुरसी-पंथी भी।

पाँच वर्षों तक उसने इसी विधि से जनसेवा की है। जनता अब तक समझ गई है कि उनके पत्र महत्त्वहीन हैं। उनसे आज तक किसी का काम नहीं सधा है। इन की जनसेवा की कीर्ति और यश ऐसा व्यापक है कि उनका फिर से टिकट पाना और चुनाव हारना दोनों निश्चित है।

एक हालिया सरकारी शोध ने सुझाया है कि काम करने और निर्णय लेने वाले अधिकारी अकसर दंड के पात्र होते हैं। या तो कोर्ट उन्हें सजा देता है या वह विभागीय काररवाई के सुपात्र हैं। इसका इकलौता कारण है कि काम न करने की अनुकरणीय प्रवृत्ति में कुछ गलत होना संभव नहीं है। जो ज्यादा कार्यकुशलता दिखाते हैं, होम करते उन्हीं के हाथ जलते हैं।

यह व्यक्ति का नहीं, सरकार का भी सच है। तभी जनहित के निर्णय लेने वाली सरकार की वाहवाही कम और अलोचना अधिक होती है। इस संदर्भ में हर सिक्के के दो पहलू वाली बात सर्वथा सच है। कुछ का कथन है कि सफाई और शौचालय का प्रसार एक स्वाथ्यवर्धक कदम है। कइयों की आलोचना है कि शौचालय को देखने पर समझ आता है कि यह पैसा बनाने का साधनमात्र है। उनमें न गुणवत्ता है, न फ्लश करने का सुविधा। भारत के पारिवारिक विरोधी दलों का विश्वास और मान्यता है कि उनकी भूमिका केवल और केवल सरकार की आलोचना तक सीमित है। फिर चाहे वह आयुष्मान हो या गरीबों को फ्री राशन देने की योजना।

विरोधियों का मत है कि सरकार सबको बीमार करने पर उतारू है। उसका इरादा है कि कोई बिना हाथ पैर हिलाए राशन पाए और कतई नाकारा बने। सत्ता पक्ष याद दिलाता है कि उन्होंने भी गरीबी हटाने के नाम पर गरीब ही हटा दिए थे। पारिवारिक प्रजातंत्र के पंथी कहते हैं कि शासक पक्ष न संविधान का पालन करता है, न उसमें दिए आरक्षण का। संविधान का सम्मान करने वाले कतई धर्म निरपेक्ष और जाति-विहीन लोग हैं। यह मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारे जाकर हर जाति को पटाते हैं और सुविधानुसार हर धर्म और जाति के हो जाते हैं। उन्हें ऐसा अभ्यास है, इस नाटक के सफल अभिनय का, वह बड़े परदे के प्रसिद्ध नायक को भी मात दे दें। अल्पमत में रहकर भी उन्हें सत्ता पाने का पूरा विश्वास है, जैसे सावन में हर गधे को पूरी हरियाली चरने का या रानी चींटी को हाथी के कान में घुसकर उसे पछाड़ने का।

जब से त्वरित निर्णय लेने के कारण आला अफसर को प्रताड़ित किया गया है, उसने भी निर्णय लिया है कि वह भी कुरसी-पंथी जनसेवक का अनुकरण करेगा और सुखी रहेगा।

साअ

९/५, राणा प्रताप मार्ग,
लखनऊ-२२६००१
दूरभाष : ९४१५३४८४३८

चार गजलें

● राकेश भ्रमर

: एक :

कौन कहता है जमीं-आसमाँ नहीं मिलते,
सच तो ये है कि हमें दो जहाँ नहीं मिलते।

गैर से मिलके यकीनन सुकून आता है,
खुलके अब लोग भी अपने यहाँ नहीं मिलते।

हमने माँगी थी दुआ तुमने वहशतें दे दीं,
झूठ कहते थे कि वहशी यहाँ नहीं मिलते।

खून से अगर किसी की जिंदगी सँवरती तो,
चलते फिरते हुए मुर्दे यहाँ नहीं मिलते।

आँधियाँ आती हैं, तूफान गले मिलते हैं,
तंगदिल लोग हैं, बस दिल यहाँ नहीं मिलते।

किसी से कुछ न कहो, बस निहार लो सबको,
मीठी बातों के कदरदाँ यहाँ नहीं मिलते।

: दो :

जर्द पत्तों को किसी ने तो जलाया होगा,
मौत का जश्न किसी ने तो मनाया होगा।

पेड़ सहमे हैं, हवाओं में जिरह जारी है,
इन परिंदों को किसी ने तो डराया होगा।

घर तो ऊँचे हैं, मगर लोग बहुत छोटे हैं,
ऐसे रिश्तों को किसी ने तो निभाया होगा।

बाग में फूल, न तितली, न कहीं भँवरे हैं,
खिजाँ का गीत किसी ने तो सुनाया होगा।

लोग महफिल में चरागों से उलझ बैठे हैं,
सुबह का गीत किसी ने तो सुनाया होगा।

कौन रुकता है 'भ्रमर' आज किसी की खातिर,
कोई आएगा किसी ने तो बताया होगा।

: तीन :

कहीं पे गाँव, कहीं पे शहर बसा होगा,
इसी तरह से फिजाँ में जहर घुला होगा।

हवा के बोझ से मुमकिन है डाल टूटी हो,
मगर सभी के लिए ये शजर मरा होगा।

जहाँ पे आग लगी, बाढ़ और सूखा है,
वहीं गरीब का कोई बसर रहा होगा।

इसी मकाम में अब कुछ निशान बाकी हैं,
यहीं पे गाँव का बूढ़ा शजर रहा होगा।

शहर में मातमी माहौल कहाँ दिखता है,
गली में देख लो हर एक घर सजा होगा।

तुम्हारे बाद 'भ्रमर' बाग में खिजाँ होगी,
वो कारवाँ बहार का उधर रुका होगा।

सुपरिचित साहित्यकार। 'जंगल बबूलों के', 'हवाओं के शहर में' (गजल-संग्रह), 'उस गली में' (उपन्यास), 'अब और नहीं' (कहानी-संग्रह)। 'प्राची' मासिक पत्रिका का संपादन। पत्र-पत्रिकाओं में सौ से अधिक रचनाएँ प्रकाशित। दूरदर्शन लखनऊ तथा आकाशवाणी रामपुर, जबलपुर और मुंबई से रचनाओं का प्रसारण।

: चार :

कैसे हैं हालात गाँव के, कौन बताएगा,
कैसे मरा किसान खेत में, कौन बताएगा।

कहाँ गए वो बाग जहाँ पर पंछी गाते थे,
किसने जहर हवा में घोला, कौन बताएगा।

श्मशानों में बदल गए हैं खेत और खलिहान,
आग लगी कैसे बस्ती में, कौन बताएगा।

आसमान सूना है, बादल कहीं नहीं बरसे,
फिर ये बाढ़ कहाँ से आई, कौन बताएगा।

शहर गया विधवा का बेटा, वर्षों बीत गए,
उसकी पाती कब आएगी, कौन बताएगा।

जिसको देखो वही मसीहा बना गरीबों का,
फिर क्यों इतनी बढ़ी गरीबी, कौन बताएगा।

रहबर के हम साथ चले थे, रस्ता भूल गए,
शाम हुई, घर कैसे जाएँ, कौन बताएगा।

९६-सी, प्रथम तल,
पॉकेट-४, डी.डी.ए. फ्लैट्स,
मयूर विहार, फेज-१, दिल्ली-११००९१
दूरभाष : ९९६८०२०९३०

कृत्रिम बुद्धि की निगरानी में महाकुंभ मेला

● प्रमोद भार्गव

समय के साथ देश में लगने वाले दुनिया के सबसे बड़े मेले कुंभ में भी परिवर्तन देखने में आते रहे हैं। इसी बदलाव के चलते इस बार प्रयागराज में अस्थायी रूप से निर्मित की गई 'कुंभनगरी' में १३ जनवरी, २०२५ से शुरू होकर २६ फरवरी, २०२५ तक चलने वाले महाकुंभ में श्रद्धालुओं की निगरानी कृत्रिम बुद्धि से संचालित उपकरण करेंगे। इस हेतु कुंभनगरी का पूर्णत: डिजिटलीकरण कर दिया गया है। प्रत्येक १२ साल में प्रयाग में गंगा-यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों के संगम पर महाकुंभ आयोजित होता है। ४५ दिन चलने वाले इस कुंभ में ४५ करोड़ तीर्थयात्रियों के आने की उम्मीद है। २०१३ में २० करोड़ से ज्यादा यात्री प्रयाग पहुँचे थे। इस बार दोगुने से ज्यादा लोगों के पहुँचने का अनुमान इसलिए है, क्योंकि अयोध्या में राम मंदिर बनने के साथ वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर का भी कायाकल्प हुआ है। साथ ही आवागमन के साधन बढ़े हैं। अतएव ४ तहसील और ६७ ग्रामों की ६,००० हेक्टेयर भूमि पर मेले में यात्रियों के लिए समुचित प्रबंध योगी आदित्यनाथ सरकार ने किए हैं।

लोगों को आवाजाही में असुविधा न हो, इसलिए मेला प्राधिकरण और गूगल के बीच हुए समझौते के अंतर्गत आवागमन मानचित्र (नेविगेशन मैप) की सुविधा मोबाइल व अन्य संचार उपकरणों पर दी गई है। इस सुविधा से यात्री गंतव्य की स्थिति और दिशा हासिल कर सकते हैं। इस मानचित्र में मेले की धार्मिक महिमा से जुड़े नदी-घाट, मंदिर, अखाड़े, संतों के डेरे, ठहरने के स्थल, होटल और खान-पान संबंधी भोजनालयों की जानकारी एक क्लिक पर उपलब्ध होगी। २९ जनवरी को पड़ने वाली मौनी अमावस्या को सबसे बड़ा पर्व स्नान माना है। अतएव इस दिन छह से दस करोड़ लोग गंगा में स्नान करने का अनुमान है। बाकी पाँच पर्वों में २ से ८ करोड़ लोग संगम के पवित्र जल में डुबकी लगाने आ सकते हैं। वैसे तो सुरक्षा के लिए ३७,००० पुलिस और विभिन्न बलों के जवान तैनात रहेंगे, लेकिन इतने लोगों पर इन जवानों द्वारा निगाह रखना आसान नहीं है, इसलिए समूची कुंभनगरी में कृत्रिम बुद्धि आधारित कैमरे लगा दिए गए हैं। चप्पे-चप्पे पर लगे इन २,४०० कैमरों की आँख में ए.आई. लैंस लगे हैं। अतएव ये चेहरे पहचानकर अपराधियों पर नजर रखेंगे। इस नगरी में जगह-जगह डिजिटल और बहुभाषी टच स्क्रीन बोर्ड लगाए गए हैं। जिन पर किसी भी प्रकार की घटना की तत्काल शिकायत दर्ज कराई जा सकेगी। ये सुविधाएँ मेले में दिन-रात उपलब्ध रहेंगी। महाकुंभ के इस पर्व पर ढाई हजार करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं।

सुपरिचित लेखक। पहली कहानी बंबई 'नवभारत टाइम्स' में, दूसरी कहानी 'धर्मयुग' में छपी। मिथकों को वैज्ञानिक आधार देने के लिए उपन्यास 'दशावतार' लिखा, इसी परिप्रेक्ष्य में 'राजस्थान पत्रिका' और 'पत्रिका' के सभी संस्करणों में 'पुरातन और विज्ञान' शीर्षक से साप्ताहिक स्तंभ लिखा, जो खूब चर्चित हुआ।

कुंभ मेले की शुरुआत

कुंभ मेले का इतिहास करीब एक हजार साल पुराना माना जाता है। आदिशंकराचार्य ने इसे प्रारंभ किया था। लेकिन प्राचीन भारत की पौराणिक कथाओं के आधार पर कुंभ का आरंभ समुद्र-मंथन के समय से माना जाता है। समुद्र-मंथन की कथा दुर्वासा ऋषि के अभिशाप से जुड़ी है। इंद्र ने जब दुर्वासा का अभिवादन नहीं स्वीकारा तो उन्होंने इंद्र का वैभव नष्ट होने का श्राप दे दिया। श्राप फलीभूत हुआ। इससे मुक्ति के लिए भगवान् विष्णु की सलाह पर देव और देवताओं ने मिलकर क्षीर-सागर में मंथन किया। समुद्र-मंथन के अंत में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के आविष्कारक वैद्य धन्वंतरि एक हाथ में अमृत-घट और दूसरे में आयुर्वेद-ग्रंथ लेकर प्रकट हुए। अर्थात् उनके कर-कमलों में

मनुष्य के शारीरिक उपचार के प्रतीक रूप में जहाँ अमृत से भरा घड़ा था, वहीं किस रोग का उपचार कैसे किया जाए, उसकी पद्धति का पूरा शास्त्र भी था। अमृत देखते ही दानवों ने धैर्य खो दिया। वे विचलित हो गए। उसे हथियाने के लिए छीना-झपटी शुरू हो गई। इसी दौरान इंद्र ने अपने पुत्र जयंत को अमृत-कुंभ लेकर भागने का संकेत दिया। फलस्वरूप जयंत कलश छीनकर भाग खड़ा हुआ। दानव कलश छीनने के लिए जयंत के पीछे दौड़ पड़े। इस कुंभ को हड़पने के लिए देव एवं दानवों के बीच यह संघर्ष १२ वर्षों तक चला। इस संघर्ष के दौरान अमृत-कलश की बूँदें, जिन १२ स्थलों पर छलकीं, उसमें आठ स्थान स्वर्ग में हैं और हरिद्वार, प्रयाग, नासिक तथा उज्जैन पृथ्वी पर हैं। संघर्ष में सहयोग और कलश की सुरक्षा की दृष्टि से जयंत की सहायता सूर्य, चंद्र और बृहस्पति ने की। इनके भी रक्षा के दायित्व निश्चित थे। सूर्य अमृत-कुंभ को फूटने से, चंद्रमा धरती पर गिरने से और बृहस्पति ने दानवों के हाथों में जाने से बचाया। इसीलिए दुनिया के सबसे बड़े मेले 'कुंभ' का आयोजन बृहस्पति, सूर्य व चंद्र के आकाशीय योग के अनुसार होता है।

मोहिनी अवतार और राहु-केतु का जन्म

कलश प्राप्ति के संघर्ष को विराम नहीं लगते देख देवता असमंजस की मनोस्थिति में आकर खिन्न हो गए, तब विष्णु ने उन्हें ढाढ़स बँधाते हुए आश्वस्त किया, 'देवगण, निश्चिंत रहें। मैं इस कलश को प्राप्त कर आपकी कामना को पूरा करने का उपाय करता हूँ।' मुख से उद्धृत हुए इन शब्दों के साथ ही विष्णु ने अत्यंत सुंदर, सुगठित देहयष्टि और चंचला प्रवृत्ति की मोहिनी स्त्री का रूप धारण कर लिया। संघर्ष स्थल पर जब अप्सरा सी रूपवान स्त्री को देव व दानवों ने देखा तो एकाएक ठिठक गए। राक्षसों की मति व लालसा उस स्त्री की कांतिमयी देह की ओर आकर्षित होने लगी। देव व दानव जब एकटक निहारते हुए जड़वत् हो गए तो स्त्री अवतारी विष्णु बोले, 'आप लोग किस कारण से झगड़ रहे हैं?'

इस प्रश्न के उत्तर में राक्षसों ने अमृत-कलश को लेकर छिड़े संघर्ष का पूरा वृत्तांत सुना दिया। राक्षसों की कही बातें सुनकर वह स्त्री हँसी। जैसे उनकी मूढ़ता का उपहास कर रही हो। और फिर कुशलतापूर्वक राक्षसों पर वक्रदृष्टि डालते हुए बोली, 'हे दानवो! तुम व्यर्थ ही अपना समय, शक्ति और ऊर्जा नष्ट कर रहे हो? यदि चाहो तो मैं स्वयं ही यह अमृत एक समान भाग में बाँटकर पिला सकती हूँ। यदि सहमत हो तो बताओ?'

अंतत: किंकर्तव्यविमूढ़ असुरों ने विश्व-मोहिनी के रूपजाल से सम्मोहित होते हुए अमृतपान कराने की सहमति जता दी। राक्षसों की प्रगट मंशा से अवगत होने के बाद मोहिनी ने देव और दानवों से निवेदन करके उन्हें अमृतपान के लिए अलग-अलग पंक्तियों में बिठा दिया। शांतिपूर्वक बैठने के उपरांत मोहिनी रूपी मायावी विष्णु देवताओं को अमृतपान कराते रहे, किंतु असुरों को साधारण जल पिलाते रहे। मायावी मोहिनी के रूपजाल से विस्मित सम्मोहित व विवेक खोए असुर विष्णु की भेद से भरी इस लीला को नहीं समझ पाए।

लेकिन कुछ विलक्षण प्रतिभा के धनी व्यक्तियों में प्रच्छन्न माया को भी ताड़ने की कुदरती अंतर्दृष्टि होती है। सो मायावी विष्णु जब देवताओं की पाँत में अंतिम छोर पर बैठे देवगणों को अमृतपान करा रहे थे, तब उनकी इस माया को हिरण्यकशिपु की पुत्री सिंहिका और दैत्य विप्रचित्ति के पुत्र राहु ने ताड़ लिया। तब तत्परता से उसने अगोचर रूप से अपनी शक्तियों का आह्वान किया और देवरूप में अवतरित होकर देवताओं की पंक्ति में सूर्य व चंद्रमा के बीच में बैठ गया। मोहिनी रूपी विष्णु ने देवता के भ्रम में राहु को भी अमृत पिला दिया।

लेकिन कुछ विलक्षण प्रतिभा के धनी व्यक्तियों में प्रच्छन्न माया को भी ताड़ने की कुदरती अंतर्दृष्टि होती है। सो मायावी विष्णु जब देवताओं की पाँत में अंतिम छोर पर बैठे देवगणों को अमृतपान करा रहे थे, तब उनकी इस माया को हिरण्यकशिपु की पुत्री सिंहिका और दैत्य विप्रचित्ति के पुत्र राहु ने ताड़ लिया। तब तत्परता से उसने अगोचर रूप से अपनी शक्तियों का आह्वान किया और देवरूप में अवतरित होकर देवताओं की पंक्ति में सूर्य व चंद्रमा के बीच में बैठ गया। मोहिनी रूपी विष्णु ने देवता के भ्रम में राहु को भी अमृत पिला दिया।

किंतु जब सूर्य और चंद्रमा ने अपने अलौकिक तेज से राहु के छद्म भेस के पार देखा तो वे सच्चाई जान गए। उन्होंने तुरंत मोहिनी-रूपा विष्णु को छद्मभेसी राहु को संकेतों के माध्यम से अवगत कराया। सूर्य व चंद्रमा के संकेतों से जब विष्णु वास्तविकता से साक्षात् हुए तो आक्रोशित हो उठे और मोहिनी के मायावी रूप से मुक्त होकर अपने वास्तविक विष्णु के रूप में प्रगट हो गए।

भगवान् विष्णु को असली रूप और गुस्से के आवेग में देख राहु भयभीत होकर भाग खड़ा हुआ। तब क्रोधाग्नि से विचलित हुए विष्णु ने सुदर्शन चक्र छोड़कर राहु की गरदन धड़ से अलग कर दी। सुदर्शन चक्र से कटते ही राहु की देह दो भागों में विभाजित हो गई। चूँकि राहु अमृत पी चुका था, इस कारण उसके शरीर को संजीवनी मिल चुकी थी। फलस्वरूप उसके शीश और धड़ दोनों ही जीवित रहे। इनमें सिर 'राहु' कहलाया और धड़ 'केतु' के नाम से प्रचलित हुआ।

नवग्रहों में राहु-केतु की स्थापना

इनके नवग्रहों में शामिल होने और प्रसिद्धि पाने की भी विचित्र कथा है। जब विष्णु ने सुदर्शन से राहु का मस्तक काटा तो राहु का सिर तो वहीं रह गया, लेकिन उसका धड़ गौतमी नदी के तट पर जाकर गिरा। अमृतपान के कारण शरीर के दोनों ही भाग जीवित थे। जब इंद्र व अन्य देवतागण राहु व केतु के जीवित रहने के तथ्य से परिचित हुए तो अत्यंत भयभीत हो गए। और भय से मुक्ति तथा राहु-केतु से आजीवन छुटकारे के लिए भगवान्

शिव की शरण में गए। शिव द्वारा आने का कारण पूछने पर इंद्र ने विस्तार से घटना का विवरण देने के बाद निवेदन किया, 'हे प्रभु! दैत्य राहु आसुरी माया की अतींद्रीय शक्ति से देवता का रूप धारण करके अमृतपान करने में सफल हो गया है। विष्णु ने उसे मारने की कोशिश भी की, लेकिन वह मरा नहीं। हे प्रभु, यदि इस राक्षस के अंत:करण में तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करने की इच्छा जाग उठी, तो उसके लक्ष्य को रोकना असंभव होगा। अत: हे देवों के देव, महादेव, इस पर अंकुश का कोई उपाय करें! जिससे आने वाले संकट के भय से हम मुक्त हो जाएँ।'

तब धीरोदात्त भगवान् शिव बोले, 'हे देवगण! सृष्टि के कल्याण के लिए असुर राहु का विनाश आवश्यक है। आप लोग निश्चिंत रहें। मैं अति शीघ्र राहु के सिर और धड़ पर नियंत्रण के उपाय करता हूँ।' तत्पश्चात् शिव नेत्र बंद करके आत्मलीन हो गए। ध्यानस्थ शिव ने अपनी श्रेष्ठतम शक्तियों को आहूत किया। तदुपरांत तीसरे नेत्र से दिव्य ज्योति फूटी और क्रमश: मानवाकार में परिवर्तित होने लगी। इस दिव्य ऊर्जा का संचार योग बल से नाड़ी तंत्र से प्रस्फुटित हुआ था। चंद पलों के भीतर ही परोक्ष प्रक्रिया के चलते पूर्ण मानवाकार लेकर देवी चंडिका प्रगट हो गईं।

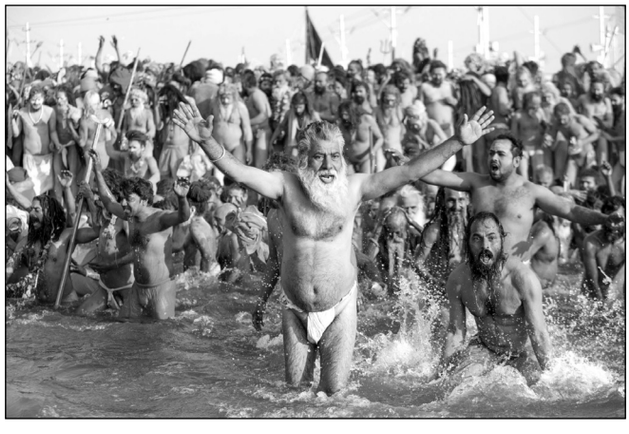

चंडिका के प्रकट होने के बाद शिव बोले, "हे देवी! अपनी समस्त शक्तियाँ तुम्हारे नेतृत्व में राहु के सर्वनाश के लिए मैं तुम्हें सौंपता हूँ। तुम तुरंत राहु का नाश करो।" अनेक मानवाकार रूपों में शिव-शक्तियाँ चंडिका के साथ हो लीं। चंडिका ने राहु के कटे मस्तक को साथ लेकर उसके धड़ को ढूँढ़ने का अभियान शुरू कर दिया। जब चंडिका का सामना राहु के धड़ से हुआ तो उसने चंडिका को संग्राम के लिए ललकार लगाई। धड़ की ललकार सुनकर चंडिका आश्चर्यचकित रह गई। राहु का मस्तक उनके पास था, तत्पश्चात् भी धड़ युद्ध के लिए सनद्ध था। चंडिका मस्तक को देवताओं के सुपुर्द कर धड़ से युद्धरत हो गईं। चंडिका ने अनेक मायावी शक्तियों का प्रहार धड़ पर किया, लेकिन उसका बाल भी बाँका नहीं हुआ।

तब लाचार देवता ब्रह्मा की शरण में पहुँचे और राहु को नियंत्रित करने का निवेदन किया। असहाय देवों को ब्रह्मा ने आश्वस्त किया और उनके साथ युद्ध-स्थल के लिए प्रस्थान कर गए। वहाँ पहुँचने पर ब्रह्मा ने देवों को राहु की स्तुति करने की सलाह दी। आज्ञाकारी बालकों की तरह देव स्तुति करने लगे। राहु ने प्रसन्न होकर युद्ध बंद कर दिया। तब ब्रह्मा बोले, "हे पुत्र! अमृतपान कर लेने से अब तुम्हारी मृत्यु संभव नहीं है। तुम्हारा शरीर विक्षत रूपों में भी जीवित रहेगा। अंतत: इस राक्षसी शरीर का त्याग कर अब तुम देवगणों में अपना स्थान प्राप्त करो।"

ब्रह्मा का तर्कसंगत परामर्श सुनकर राहु का विवेक जाग्रत् हो उठा और तत्क्षण उसने अपने शरीर के विनाश का रहस्य चंडिका को बता दिया। चंडिका ने तुरंत राहु के धड़ के दो फाड़ करके, उसमें से अमृत-रस निकाला और पी लिया। तब कहीं जाकर राहु के शरीर का नाश हुआ। तत्पश्चात् देवों ने राहु से प्रसन्न होकर उसके सिर और धड़ को छाया-ग्रह के रूपों में नवग्रहों में प्रतिष्ठित कर दिया। तभी से मस्तक 'राहु' और धड़ 'केतु' कहलाने लगे। आकाश में आज भी इनका महत्त्व खगोलीय एवं ज्योतिषीय विषयों में स्वीकारा जाता है। इन दोनों ग्रहों में वायु तत्त्व की प्रधानता है। राहु को अशुभ ग्रह माना जाता है, जबकि केतु को पतनशीलता रोकने का कारक ग्रह माना जाता है।

समुद्र-मंथन का विज्ञान

चूँकि अमृतपान के समय सूर्य और चंद्रमा ने राहु के छद्मवेश की वास्तविकता को जान लिया था, इस कारण उसे महाभारत जैसे ग्रंथों में आलंकारिक शिल्प में प्रस्तुत किया गया है। इसे विज्ञानसम्मत दृष्टिकोण और समुद्र-मंथन तथा कुंभ मेले पर हुए वैज्ञानिक अनुसंधानों से भी परिभाषित किया जा सकता है। आज विज्ञान उन सब तथ्यों पर एक-एक कर खरा उतर रहा है, जिन्हें कल तक मिथक या कपोल-कल्पित कहकर नजरअंदाज किया जाता रहा है। प्रकृति का सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन कर ऋषियों ने उन सब तथ्यों को व्याख्यायित किया है, जो ब्रह्मांड की संरचना से जुड़े हैं। जिनका प्रकृति के पल-पल परिवर्तित होते रहने वाले रूपों में खगोलीय महत्त्व है। मनीषियों ने कहा है कि मन, मंत्र एवं मैरूत के साथ आवाजाही क्रिया करने से ब्रह्मामृत की प्राप्ति होती है। ब्रह्मामृत की प्राप्ति के क्रम में ऐश्वर्य की उपलब्धि, अनुसंधान का वैज्ञानिक निष्कर्ष है।

शुरुआत जर्मन वैज्ञानिक अल्फ्रेड वेगनर के 'महाद्वीपीय प्रवाह' सिद्धांत से करते हैं। इसने समुद्र-मंथन आख्यान को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया है। वेगनर ने पृथ्वी की उत्पत्ति की सूचना देते हुए चौंकाने वाले तथ्य प्रस्तुत किए हैं। उनका मानना है, कई करोड़ वर्ष पहले सभी महाद्वीप एक जगह इकट्ठे थे। इस 'थल-पिंड' को वेगनर ने 'पेंजिया' कहा है। पेंजिया के चारों ओर जो जल क्षेत्र था, वह 'पेंथालासा' कहलाया। हमारे महर्षियों ने भी यही कहा। हाँ, संबोधन में अंतर जरूर है। ऋषियों ने इस थल पिंड पेंजिया को नारायण का नाभिकाल तथा पेंथालासा को 'एकार्णव जल' कहा है। यह थल पिंड अर्थात् नाभिकाल आरंभिक अवस्था में 'द्रुतपुंज' अर्थात् 'मैग्मा' के रूप में था, जो कालांतर में बदलाव की स्थितियों से गुजरता हुआ कठोर चट्टान बन गया। यही कठोरतम होकर सुमेरु पर्वत कहलाया। आगे चलकर यही सुमेरु सात खंडों में विभाजित हो गया। चक्राकार रूप में अवस्थित इन पर्वतों के नाम हैं—युगंधर, ईशाधर,

खदरिक, सुदर्शनगिरि, अश्वकर्ण, विनितक तथा निमिंधगिरि। पुराणों में इसी सुमेरु अर्थात् 'सियाल' को भूमंडल का केंद्र माना है। इसीलिए भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है, 'मेरु शिखरिणामहम्' अर्थात् मैं पर्वतों में सुमेरु हूँ।

यही मेरु आख्यानों में पृथ्वी कहलाई, जो चटकने के उपरांत सात भू-खंडों में विभाजित हुई, जिन्हें पुराणों में 'सप्तद्वीपवर्ती पृथ्वी' कहा गया। ये सात स्तर हैं—जलावरण, आग्नेयावरण, वातावरण, आकाशवरण, अहंकारावरण, महतत्त्वारण और अव्याक्तावरण। कालांतर में पृथ्वी के इन सात आवरणों के और भी टुकड़े हुए। लेकिन इस क्रम में चौंकाने वाली घटना यह थी कि पैंथालासा, अर्थात् एकार्णव जल के विभाजन से सात सागरों की भी उत्पत्ति हुई। ये हैं—लवणसागर, इक्षुसागर, सुरासागर, घृतसागर, दधिसागर, क्षीरसागर तथा जलसागर। इन्हीं सागरों को ऋषियों ने सबसे ज्यादा महत्त्व दिया। साथ ही बताया कि क्षीरसागर का निर्माण दो भू-स्तर के प्रारंभ में कच्छप का एक तरह हूबहू प्रतिदर्श था। भक्ति और अध्यात्म के क्रम में महर्षियों ने कच्छप सदृश्य भू-स्तर को विष्णु भगवान् का ही स्वरूप अर्थात् अवतार बतलाते हुए कहा, 'जले विष्णुः थले विष्णुः' अर्थात् ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है, जल में भी और थल में भी।

आख्यानों में यह स्पष्ट है कि जल में अयण के कारण ही विष्णु का एक नाम नारायण है। 'नारा' का अर्थ संस्कृत में जल है। इसी 'कूर्म' अनुरूप भूस्तर पर मंदार पर्वत भी स्थित था। जिसने पृथ्वी के अग्रचालन गति के कारण मथानी का कार्य किया। इसी सागर-मंथन प्रक्रिया में सभी भू-स्तर प्रवाहित होते गए और वर्तमान अवस्था में विस्थापित होकर स्थापित हुए। महाद्वीपों के प्रवाह क्रम में जलवायु परिवर्तन होने से बहुआयामी ऐश्वर्य की उत्पत्ति तय हुई।

विषयवार हम इनका यों विश्लेषण करते हुए वर्गीकरण कर सकते हैं, रसायन शास्त्र के विशेषज्ञों को समुद्र-मंथन में सुरा, सोम और विष मिले। प्राणिशास्त्रियों को कामधेनु गाय, श्वेतवर्णी उच्चैःश्रवा अश्व और चार दाँतों वाले श्वेत वर्ण के ऐरावत हाथी मिले। रत्न विशेषज्ञों को कौस्तुभ मणि मिली। शस्त्रायुध निर्माताओं की उपलब्धि थी, शाङ्र्ग धनुष! भूगर्भशास्त्रीय परीक्षण से चंद्रमा ग्रह उत्पन्न होकर पृथ्वी की परिक्रमा करने लगा। औद्योगिक विकास के फलित रूप में पारिजात वृक्ष मिला। आयुर्वेद और सौंदर्य प्रसाधन की दृष्टि से चिकित्सा विशेषज्ञ धन्वंतरि और चिकित्सा-शास्त्र के रूप में आयुर्वेद मिले। स्त्री के रूप में वारुणी और लक्ष्मी मिलीं। जल के जानकारों को शंख मिला।

पुराणों में सूर्य-चंद्रमा और राहु-केतु भी ग्रहों की कोटि में आते हैं, जबकि विज्ञान राहु व केतु को पिंड मानता है। राहु-केतु सिंह राशि की विशेष स्थिति से उत्पन्न पृथ्वी और चंद्रमा की छाया आकृतियाँ हैं। कहा भी गया है, 'सिंहिका सुशुवे राहु ग्रहं चन्द्रार्कमर्दनम्' अर्थात् अंतरिक्ष में सिंह राशि की उपस्थिति के कारण चंद्रमा ५ डिग्री के झुकाव पर स्थित है। गोया कथित रूप से दानव राहु का मुंड काट दिए जाने पर भी न तो मस्तक और न ही कबंध (धड़) संज्ञाशून्य हुए। चंद्रग्रहण के समय चंद्रमा या सूर्य को ढक देने वाली छाया की गोल आकृति को राहु-मुंड और चंद्रमा या पृथ्वी की ओट में पड़ने वाली लंबी छाया को धड़ अर्थात् केतु मान लेने से इन छायाग्रहों की विज्ञान-सम्मत मान्यता पुष्ट होती है।

इन सब पहलुओं को दृष्टिगत रखते हुए वास्तव में समुद्र-मंथन एक तो जिज्ञासु अनुसंधित्सुओं की समुद्र के आर-पार की महायात्रा है। दूसरे, महाद्वीपीय प्रवाह की एक कड़ी है और तीसरे, गृह-नक्षत्रों के विस्थापन की प्रक्रियाएँ हैं। विज्ञान में गृहों की जो परिभाषा है, वह पौराणिक आख्यानों की अवधारणा से भिन्न है। पुराणों में सूर्य-चंद्रमा और राहु-केतु भी ग्रहों की कोटि में आते हैं, जबकि विज्ञान राहु व केतु को पिंड मानता है। राहु-केतु सिंह राशि की विशेष स्थिति से उत्पन्न पृथ्वी और चंद्रमा की छाया आकृतियाँ हैं। कहा भी गया है, 'सिंहिका सुशुवे राहु ग्रहं चन्द्रार्कमर्दनम्' अर्थात् अंतरिक्ष में सिंह राशि की उपस्थिति के कारण चंद्रमा ५ डिग्री के झुकाव पर स्थित है। गोया कथित रूप से दानव राहु का मुंड काट दिए जाने पर भी न तो मस्तक और न ही कबंध (धड़) संज्ञाशून्य हुए। चंद्रग्रहण के समय चंद्रमा या सूर्य को ढक देने वाली छाया की गोल आकृति को राहु-मुंड और चंद्रमा या पृथ्वी की ओट में पड़ने वाली लंबी छाया को धड़ अर्थात् केतु मान लेने से इन छायाग्रहों की विज्ञान-सम्मत मान्यता पुष्ट होती है।

यही कारण है कि समुद्र-मंथन से प्राप्त अमृत के वितरण क्रम में राहु द्वारा अमृत पी चुकने के कारण विष्णु द्वारा उसका सिर धड़ से पृथक् कर दिए जाने के पश्चात् भी मृत्यु नहीं होती है। सूर्य के प्रकाश में चंद्रमा की छाया या चंद्रमा पर पड़ने वाली पृथ्वी की छाया का पड़ना ही वह रहस्य है, जो राहु की मृत्यु नहीं होने देता है। हाँ, उक्त छाया से ही सूर्य व चंद्रग्रहणों का अस्तित्व है, जो पूर्णिमा व अमावस्या के दिन दृष्टिगोचर होता है।

कुंभ का विज्ञान

सूर्य, पृथ्वी, चंद्रमा और गुरु के साथ शनि की विशेष स्थिति प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक के कुंभ व सिंहस्थ की तिथि सुनिश्चित रहती है। इस तिथि को एक स्थान पर आने में १२ वर्ष लगते हैं। इसी तथ्य को स्थापित करने की दृष्टि से बारह दिव्य दिवस का समय लगता है। वेगनर ने पृथ्वी की उत्पत्ति की जानकारी देने के क्रम में पेंजिया की स्थिति को अपने मानचित्र में दक्षिण ध्रुव में दरशाया है। वस्तुतः प्री कैंब्रियन युग में भूमंडल में जल-थल भाग दक्षिणी ध्रुव में इकट्ठे थे। इस कालखंड में भारतीय महाद्वीप भी दक्षिण ध्रुव के एकदम निकट था। इससे संकेत मिलता है कि प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन व नासिक भी दक्षिण ध्रुव के निकट रहे होंगे। उस कालखंड में वहाँ छह माह का दिन और छह माह की रात हुआ करती थी। आज भी दक्षिणी ध्रुव और उत्तरी ध्रुव में छह माह की रात्रि और छह माह के ही दिवस होते हैं। इस तरह से १२ दिन और १२

रात अर्थात् छह रात और एक दिन का गुणा-भाग करने से जो योगफल निकलता है, वह १२ वर्ष का होता है। स्पष्ट है, वेगनर की यह खोज पुराणों में दर्ज कूर्मावतार में उल्लेखित समुद्र-मंथन की कथा को विज्ञान के संदर्भ में पुष्टि करती है।

समुद्र मंथन की कालावधि

संस्कृत ग्रंथों में दर्ज ऐतिहासिक घटनाओं को इसलिए इतिहास सम्मत पाश्चात्य विद्वान् और वामपंथी नहीं मानते, क्योंकि उनमें तिथियों अर्थात् दिनांकों का उल्लेख नहीं है, जबकि ऐसा है नहीं। प्रत्येक महत्त्वपूर्ण घटना ही नहीं, हम अपने ईश्वरीय अवतारों का भी जन्म-दिन मनाते हैं। वास्तव में समुद्र-मंथन की घटना चाक्षुष मन्वंतर में घटित हुई, परंतु पंचांग की प्रविष्टियों के आधार पर दशावतार जयंतियों की मास व तिथियों का उल्लेख एक तरफ भारतीय ज्योतिष विज्ञान की समृद्ध परंपरा से साक्षात्कार कराता है, वहीं दूसरी ओर प्रत्येक चतुर्युग में इन अवतारों की निश्चित तिथि-मास की निरंतर पुनरावृत्ति की भी पुष्टि होती है। तदनुसार वैवस्त मन्वंतर के अट्ठाईसवें कलियुग की गणना यह संकेत देती है कि इस मन्वंतर की सतयुग में वैशाख शुक्ल पूर्णिमा के दिन कूर्मावतार का अवतरण और समुद्र-मंथन परियोजना की शुरुआत एक साथ, एक ही दिन हुई। तत्पश्चात् पूर्णिमांत कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी, अर्थात् अमांत आश्विन कृष्ण त्रयोदशी के दिन देव व दानवों को चरम लक्ष्य के रूप में अमृत की प्राप्ति हुई। इस प्रकार समुद्र-मंथन कुल १२ दिन-रात चला। मानव वर्ष के अनुसार इसे ही १२ वर्ष माना गया है।

कुंभ में सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति ग्रहों का महत्त्व

अमृत-कलश की रक्षा में सूर्य, चंद्र और बृहस्पति ने इंद्र पुत्र जयंत की रक्षा की थी। सूर्य ने अमृत घट को फूटने से, चंद्र ने गिरने से और बृहस्पति ने दानवों के हाथ में जाने से बचाया था। इसीलिए कुंभ पर्व का आयोजन बृहस्पति, सूर्य व चंद्र के आकाशीय योग के अनुसार होता है। समुद्र-मंथन की कथा में बृहस्पति, कुंभ और १२ की संख्या महत्त्वपूर्ण है। पुराणों में बृहस्पति को देवताओं का गुरु माना गया है, लेकिन वास्तव में वह सौरमंडल का एक ग्रह है, वह भी सबसे बड़ा ग्रह। बृहस्पति को नक्षत्र मंडल, यानी कुल १२ राशियों का एक चक्कर लगाने में करीब १२ वर्ष लगते हैं, जबकि वास्तव में ये होते ११.८६ वर्ष हैं। बृहस्पति के इसी सूर्य-परिभ्रमण काल के आधार पर भारत में प्राचीन काल में शक व विक्रम संवतों के भी प्रचलन से पहले बार्हस्पत्य संवत्सर की काल-गणना अस्तित्व में थी। बार्हस्पत्य संवत्सर के दो चक्र थे। एक १२ वर्ष का और दूसरा ६० वर्ष का चक्र। पहला चक्र बृहस्पति के १२ राशियों में होने वाले भ्रमण पर आधारित था, इसलिए उसके वर्षों का महाचैत्र, महावैशाख और माहों को चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन नाम दिए गए थे।

महाकुंभ का मेला ग्रह योग पर आधारित है। बृहस्पति को राशीचक्र का वस्तुत: सूर्य का एक चक्कर लगाने में मोटे तौर से १२ वर्ष लगते हैं। गोया कुंभ मेले १२ साल के अंतराल से आयोजित होते हैं। अमृत-घट प्राप्ति के लिए देव-दानव संग्राम १२ वर्षों तक चला। ये १२ वर्ष १२ वर्षीय बार्हस्पत्य संवत्सर के द्योतक हैं। अमृत-कलश से बूँदें भी १२ स्थलों पर छलकी थीं। अपनी सटीक काल-गणना से भारतीय मनीषियों ने यह भी ज्ञात कर लिया था कि बृहस्पति को राशि चक्र का एक चक्र पूरा करने में वस्तुत: ११ वर्ष और करीब ३१५ दिन लगते हैं। इस प्रकार ८४ साल में एक साल का अंतर पड़ जाता है। इस गुणनफल के हिसाब से छह कुंभ तो १२ वर्षों के अंतराल से होंगे, लेकिन सातवाँ कुंभ ११ वर्ष बाद आ जाएगा।

समुद्र-मंथन का स्थान

क्षीरसागर का पानी अपने विशिष्ट गुणों के कारण बेहद उपयोगी रहा है। भारत का केरल तट क्षीरसागर की प्रायोगिक भूमि रहा है। समुद्र-मंथन के लिए आधारभूमि होना जरूरी है। इस दृष्टि से यदि केरल तट पर देवों का समुदाय था तो लंका से अफ्रीका तक दैत्यों का समुदाय उपस्थित था। वस्तुत: देव संस्कृति मंत्र, तंत्र और अध्यात्म प्रधान थी, इसके विपरीत असुर भौतिकवादी थे। मंथन से अमृत-कलश प्राप्त हुआ तो देवता सबसे पहले उत्तर दिशा में गोदावरी के तट पर त्र्यंबकेश्वर (नासिक) पहुँचे। सबसे पहले यहीं कलश से अमृत की बूँदें छलकीं। नासिक के बाद भागते देव पूर्व की ओर अवंतिका (उज्जैन) आए। यहाँ क्षिप्रा के तट पर छीना-झपटी में कुछ बूँदें टपकीं। यहाँ से संघर्षरत देव-दानव हरिद्वार पहुँचे। यहाँ भी अमृत कलश छलका। तत्पश्चात् देव-दानव पश्चिम की ओर बढ़ते हुए प्रयाग पहुँचे। यहाँ भी बूँदें गिरीं। इस तरह पृथ्वी पर चार और स्वर्ग में आठ स्थलों पर अमृत-घट छलकने से बूँदें गिरीं। धरती पर तो कुंभ मेले लगने से समुद्र-मंथन की गाथा अमर है, लेकिन स्वर्ग में जिन आठ स्थलों पर अमृत-बूँदें गिरीं, वे किस अवस्था में हैं, कोई नहीं जानता। इस तरह से समुद्र-मंथन और कुंभ दोनों ही वैज्ञानिक अवधारणाएँ हैं।

साअ

शब्दार्थ ४९, श्रीराम कॉलोनी
शिवपुरी-४७३५५१ (म.प्र.)
दूरभाष : ०९४२५४८८२२४

आई शीतलहर

• मनमोहन गुप्ता

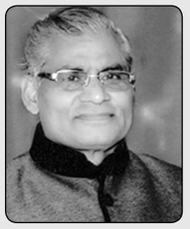

सपरिचित कहानीकार, कवि एवं समीक्षक। दो कहानी-संग्रह, दो कविता-संग्रह तथा राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में अनेक रचनाएँ निरंतर प्रकाशित। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर तथा हिंदी की अग्रणी संस्था साहित्य मंडल श्रीनाथद्वारा (राजसमंद) से 'ब्रजभाषा काव्य विभूषण' उपाधि से सम्मानित।

आई शरद ऋतु

पंछी देश-विदेश से आए
चहुँ ओर का देख प्रदूषण
मन-ही-मन बहुत घबराए।
कहीं चिल्लपों है हॉरन की
धुआँ निकला है विकराल,
प्रकृति रो रही उसे देखकर
भू का हुआ बुरा यह हाल।
दुर्लभ हुआ साँस का लेना
प्राणी अब कैसे जीएँगे,
जल दूषित उद्योग रसायन
इसको भी कैसे पीएँगे।
जागरूक होओ भू के प्राणी
अब तो थोड़ा ध्यान धरो,
रोको यह अविलंब प्रदूषण
मिलकर सभी प्रयास करो।
धरा पेड़ पर जब होंगे तब
जीवन सुखद रहेगा,
खेतों में हरियाली होगी
घर-घर में चाँद खिलेगा।
पर्यावरण चेतना की तुम
ऐसी ज्योति जलाओ—
'वर्षगाँठ पर पेड़ लगाएँ'
संदेशा सबको पहुँचाओ।

संडे क्यों नहीं···

शरद ऋतु के आते ही
राघव, चिराग घबराते हैं,
मम्मी खूब झिंझोड़ उठातीं
फिर भी नहीं उठ पाते हैं।
रजाई, कंबल माँ खींचती
तब वह रोने लगते हैं,
पापा-मम्मी भी बचपन की
यादों में खोने लगते हैं।
आँख मसलते वह हाथों से
कहते अभी सो लेने दो,
सर्दी का आनंद अनोखा
उसमें जरा खो लेने दो।
लेकिन घड़ी दौड़ती रहती
क्षण भर भी नहीं रुकती,
होती हो चाहे कैसी सर्दी
सम्मुख वह नहीं झुकती।
उसे देखकर ही तो मम्मी
प्रतिदिन हमें जगाती हैं,
स्कूल चलो समय हो गया
रट बस यही लगाती हैं।
मन मसोस कहते हैं मम्मी
संडे क्यों नहीं आता है?
छह दिनों तक कहाँ रहता है
हमको रोज जगाता है।

बड़े जोर का जाड़ा

बड़े जोर का जाड़ा आया
शीतलहर को लेकर
हाथ जेब से बाहर न आते
ठंड लगी बढ़-चढ़कर।
दस्ताने में सिकुड़ रही हैं
उँगली भी सब मिलकर,
बाहर आएँ तो हम कैसे
शीत पड़ी अति घिरकर।
कान में घुस जाए सर्दी तो
धमाचौकड़ी करती है,
गर्म पहन लें मफलर टोपा
तो थोड़ा सा डरती है।

गुड़ की गजक रेबड़ी तिल
के खाने से डर जाती है,
उन्हें देख शीतलहर की
नानी सी मर जाती है।
भुनी मूँगफली के दाने भी
बहुत ही अच्छे लगते हैं,
एक-एक कर सब खा जाते
बिल्कुल भी नहीं बचते हैं।
दादा-दादी की गोदी में
गरमाहट को पाकर,
नौ दो ग्यारह हो जाती है
शीतलहर सब जाकर।

इक दिन···

इक दिन सुमन सु-मन से बोला,
मेरा मन ढुलमुल क्यों डोला?
ऐसे भी कुछ होते जग में,
सूँघ फेंक देते मुझे मग में।
पहले तो सब गले लगाते,
पीछे सब मुझे हैं ठुकराते।
जब सुगंध है मुझ में होती,
सारी दुनिया ही खुश होती।
लिये हाथ में सब इतराते,
मेरी गंध लिये सुख पाते।
जब भंडार न उसका होता,
मेरा भी हृदय तब रोता।
उपहास सभी करते हैं मेरा,
डाले रहते उसका ही डेरा।
प्रभु! निवेदन है ये मेरा,
मत देना सुख का तुम घेरा।
ऐसे सुख में सार नहीं है,
दुनिया का तो प्यार यही है।
बदलो रंग ये कोमल चोला,
जग का डिब्बा तो है पोला।
इक दिन सुमन सु-मन से बोला,
मेरा मन ढुलमुल क्यों डोला?

पतवार हमारी···

मित्र नहीं जिसका दुनिया में
जीवन जीना है बेकार,
पार उतारे दुविधा-सागर
सत्य उसी का होता प्यार।
पतवार हमारी टूट गई
भवसागर पार कैसे होगा,
प्रेम दिया हृदय गहराई
दे क्यों गए हमको धोखा।
मुखारविंद मुसकान बिखेरे
तुम सबसे बतियाते थे,
मिलना शीघ्र नहीं होता तो
याद बहुत तुम आते थे।
अब दूभर हो गया आपसे
मिलना यहाँ धरा पर,
परलोक टिकट भी है नहीं
संभव किसी कृपा पर।

गुप्ता सदन, एस.बी.के.
गर्ल्स हा.सेकें. स्कूल के पास
मंडी अटलबंद, भरतपुर-३२१००१
दूरभाष : ६३७८२६२३२५

क्षमादान

• सुषमा मुनींद्र

उस क्षण इतिहास की लेखनी ढीली पड़ गई थी। वायु प्रवाह रुक गया, दिशाएँ प्रकंपित हो उठीं, नदियों के नीर में गति नहीं रही, पक्षी चहचहाना भूल गए। आश्रम में उपस्थित ऋषिगण को श्वास अवरुद्ध होता प्रतीत हुआ। जो होने जा रहा था, वह अब तक के इतिहास में न हुआ था। परशुराम पितृऋण से मुक्त होने हेतु अपनी माता रेणुका का शिरोच्छेद करने के लिए उन्हें गांधर्व ग्राम से ले आए थे। परशुराम के पिता भृगुश्रेष्ठ ऋषि जमदग्नि ने विस्फरित नेत्रों से देखा, उनका बलशाली पराक्रमी आज्ञाकारी पुत्र राम सचमुच रेणुका को ले आया है। जिस पथभ्रष्टा रेणुका को लाने में उनके बड़े तीनों पुत्र असफल रहे, उसे परशुराम लाया है। जिस पतिता, पापाचारिणी पत्नी का संहार करने के लिए भेजे गए पुत्र उनकी अवज्ञा कर हतबल, हतबुद्धि रिक्त हाथ लौट आए, उसे राम ले आया है। जमदग्नि को अपने इस सामर्थ्यवान पुत्र राम पर गौरव हो आया।

अधीर खड़े जमदग्नि के निकट आ परशुराम ने रेणुका को उनके चरणों में डाल दिया, "पिताजी, आपकी आज्ञानुसार मैं माता को ले आया हूँ।"

"राम, मेरे पुत्र, कुल गौरव, तू धन्य है। तेरे बड़े भाई तो सामर्थ्यविहीन, बलहीन, विवेकहीन प्रमाणित हो चुके हैं। तू मेरी आज्ञा को शिरोधार्य करेगा न?"

"मैं प्रस्तुत हूँ, पिताजी।"

"इसी क्षण इस अनार्या का, कुल-कलंकिनी का शिरोच्छेद कर यशस्वी बन। पितृ-आज्ञा का पालन करने से बड़ा धर्म दूसरा नहीं है।" जमदग्नि ने नेत्रों से अग्नि बरसाते हुए कहा।

वाणी में इतनी कठोरता थी कि वसुंधरा भी काँप उठी। परशुराम अपना परशु सँभालते हुए जमदग्नि के चरणों में नतमुख हुई अपनी माता से बोले, "मैं पितृ-आज्ञा के सम्मुख अत्यंत विवश हूँ। वह करने को उद्यत हूँ, जो आज तक किसी पुत्र ने न किया होगा।"

रेणुका ने निर्भय भाव से पुत्र के तने हुए परशु के सम्मुख गरदन झुका दी, "पुत्र राम, शीघ्रतिशीघ्र मेरा शिरोच्छेद कर। मेरे स्वामी ने मुझे कुल-कलंकिनी कहा है, मैं इस गुरुतर दोष का भार अब और वहन नहीं कर सकती। मेरा संहार करके मेरे इस भार का हरण कर, राम।"

सुपरिचित लेखिका। अब तक दो उपन्यास एवं बारह कहानी-संग्रह प्रकाशित। कहानियों का मराठी, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़, पंजाबी, अंग्रेजी, उर्दू, असमिया, गुजराती भाषाओं में अनुवाद। 'सुभद्रा कुमारी चौहान प्रादेशिक पुरस्कार', 'अखिल भारतीय मुक्तिबोध पुरस्कार' सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित।

रेणुका का कंठ अवरुद्ध था। नेत्रों से सतत अश्रु-प्रवाह हो रहा था। अपनी निष्कलंक, निष्पाप माता के साथ होते इस अन्याय को देख परशुराम आत्मग्लानि से भर उठे, अपराध-बोध छाती चीरने लगा। आह! कैसी परीक्षा, कैसी दुविधा आ खड़ी हुई है। माता का वध न करूँ तो पिता की अवज्ञा करने का भागी बनता हूँ और वध कर दूँ तो मुझसे कृतघ्न, निकृष्ट, अधम अन्य कौन होगा?

परशुराम को दुविधा में देख जमदग्नि गरजे—"इसने परपुरुष का सेवन किया है, यह आर्य कुल पर कलंक है। इसका वध ही आर्य जीवन के अस्तित्व की रक्षा कर सकता है।"

परशुराम तनिक दृढता से बोले, "पिताजी, मैं माँ का वध कर आपकी आज्ञा स्वीकार कर पुत्र धर्म का निर्वहन करूँगा, तदुपरांत अपना भी प्राणांत कर लूँगा। पिताजी की आज्ञा का उल्लंघन व माता का वध दोनों ही पुत्र-धर्म के प्रतिकूल है। आर्यत्व के विरुद्ध है। आर्यत्व के विरुद्ध जाकर मुझे जीने का अधिकार नहीं रहेगा।" इस उद्घोष से रेणुका और जमदग्नि जड़ हो गए। "तू अपना ही संहार कर लेगा, बेटा।" दोनों का समवेत स्वर गूँजा।

"हाँ, माता का वध कर मैं चांडाल से भी अधम हो जाऊँगा और मुझसे माता के रक्त से रंजित अपनी देह का भार ढोया न जाएगा।"

परशुराम कुछ क्षण को मौन हो गए, तत्पश्चात् बोले, "पिताजी,

माता के शिरोच्छेद से पूर्व मैं आपसे एक प्रश्न पूछने की अनुमति चाहता हूँ। आपने मेरे भाइयों को माता के वध के लिए भेजा, किंतु स्वयं जाकर यह देखने की चेष्टा नहीं की कि वे गंधर्वराज के यहाँ कर क्या रही हैं? अनुमान के आधार पर वध जैसा कठोर दंड निर्धारित कर देना ही आपका सिद्धांत है? यही है आर्यत्व? कर्तव्यपरायणता? धर्म की रक्षा?"

"राम, अपने पिता से ऐसे ऊँचे स्वर में वार्त्ता करते तुझे तनिक भी लज्जा नहीं आती? क्या तू भी अपने भाइयों की तरह बल, सामर्थ्य, साहस खो चुका है?" जमदग्नि ने कटाक्ष किया।

"नहीं पिताजी। मैं इस वध के लिए दृढ़ हूँ, पर सत्य को भी उद्घाटित करना चाहता हूँ। पिताजी, मेरी माता गंधर्वराज के यहाँ विलासिनी बनकर नहीं रहीं। वे तो वहाँ रक्त-पित्त से पीड़ित कराहते, काल का कलेवा बनते रुग्णों की परिचर्या कर रही थीं। माता जब अपने पितृगृह से लौट रही थीं, तब गंधर्वराज एक-दो दिन के लिए उन्हें उस उत्सव में सम्मिलित होने के लिए आदरपूर्वक ले गए। तभी वहाँ रक्त-पित्त के रोग का प्रकोप हो गया। रोग बढ़ता देख बहुत से गंधर्व, जो रोग से प्रभावित नहीं हुए थे, पलायन कर भाग गए। रुग्णों की देख-रेख वाला कोई न था। मानवतावश, रुग्णों की सहायतार्थ माँ को रुक जाना पड़ा। माँ की सेवा, दया, ममता से अभिभूत वे सब माँ पर श्रद्धा करने लगे। माँ देवी की तरह पूज्य हो गईं।

"पिताजी, मैंने गंधर्वग्राम की असहायता, पीड़ा, वेदना, छटपटाहट, चीत्कार, करुणा देखी है। उस करुण दृश्य को देख हृदय फटता है, किंतु मैंने तो आपकी प्रतिज्ञा को परिपूर्ण करने का व्रत लिया है। कुछ रक्त-पित्त पीड़ित रुग्ण काल का ग्रास बन गए। जो शेष थे, उनकी पीड़ा का अंत करने के लिए मैंने इसी परशु से उनका वध कर दिया। क्योंकि उन्हें नि:सहाय छोड़कर माँ आ नहीं रही थीं और मैं रिक्त हाथ लौट नहीं सकता था। नरसंहार ही विकल्प था।

"पिताजी, माँ पराये घर रहीं अवश्य, पर भोग-विलास हेतु नहीं अपितु मानव-सेवा का महान् उद्देश्य लेकर। पिताजी, क्या अब भी आप समझते हैं, ऐसी स्त्री दुष्चरित्र हो सकती है? परपुरुष स्पर्शिनी हो सकती है? कुल की कीर्ति नष्ट करने वाली हो सकती है? सत्य जानकार भी आप माँ को दंड देना चाहते हैं?"

परशुराम ने पिता को शब्दों से बींध डाला। पिता का चेहरा विवर्ण हो आया। परशुराम आग्रह कर पिता के चरणों में गिर गए और आगे बोले, "पिताजी, अपराध प्रमाणित न होते हुए दंड दिया जाए, क्या यह न्याय-संगत है? धर्म का पोषण है?" रेणुका ने जमदग्नि ऋषि के चरणों में नत पुत्र के शीश पर हाथ फेरा—"राम, अपने पिता से प्रश्न करने की धृष्टता न कर। मेरा वध कर। बेटा, तू मेरा पुत्र है तो इस लोकनिंदा, कुलकलंक से मुझे मुक्त कर दे।"

जमदग्नि जैसे निद्रा से जागे। पुत्र के स्वर की अनुगूँज उनके हृदय, उनके मस्तिष्क को आंदोलित कर रही थी। स्नायुओं को शिथिल कर रही थी। पश्चात्ताप में डूबने लगे। लगा मूर्च्छित हो जाएँगे। वे कैसा सर्वनाश, कैसा पाप करने का हठ ठान बैठे हैं? धिक्कार है इस हठधर्मिता को! वे स्वयं को कुछ कहने की स्थिति में नहीं पा रहे थे। शब्दकोश रिक्त होता जान पड़ रहा था।

रेणुका पुन: बोली, "राम, विलंब न कर। स्वामी की दृष्टि में गिरकर एक-एक क्षण मेरे लिए यम-यातना के सदृश्य है। मेरा उद्धार कर बेटा।" जमदग्नि ने देखा, परशुराम परशु पर अपनी पकड़ दृढ़ कर रहे हैं। देह की संपूर्ण ऊर्जा, संपूर्ण बल एकत्र कर वे चीख उठे, "राम, रुक जा, यह क्या कर रहा है।"

"अपनी निरपराध माँ का वध कर रहा हूँ, पिताजी।"

"नहीं, राम, नहीं। परशु फेंक पुत्र। हे भगवान्! यह कैसा अनर्थ हुआ जा रहा है? रेणुका जैसी मानवता की देवी पर मैंने ऐसा घृणित दोष आरोपित किया। कुल के मिथ्या दंभ के रक्षक के लिए मुझसे यह कैसा विनाश हुआ जा रहा था। पुत्र, परशु फेंक दे।" फिर वे रेणुका से संबोधित हुए, "मुझे क्षमा करो देवी! मैंने तुम्हारे साथ बड़ा अन्याय किया है। राम ने मुझे इस जघन्य अपराध से बचा लिया।"

"स्वामी, मुझसे क्षमा माँग मुझे पाप में और न डालिए। मैंने आपकी आज्ञा का निरादर किया है, मैं क्षमा देने के तो क्या, आपसे क्षमा माँगने के भी योग्य नहीं हूँ।"

"नहीं, रेणुका, ऐसा कह मुझे लज्जित न करो। मेरा पश्चात्ताप कहीं मेरा प्राणांत न कर दे।"

"स्वामी, ऐसा न कहिए, ऐसा न कहिए।"

परशुराम के हाथ से परशु छूट गया। वे पिता में आए इस परिवर्तन को कृतज्ञ नेत्रों से देखने लगे। मद्धिम स्वर में बोले, "पिताजी, अब आपके प्रण, आपके संकल्प का क्या होगा?"

"राम, मैं अपना संकल्प वापस लेता हूँ। तूने आज मुझे नया जीवन दिया है। तुझ जैसे पुत्र सबको मिलें।" कहकर उन्होंने परशुराम को हृदय से लगा लिया।

आश्रम में ठहरा हुआ मरुत-प्रवाह मंद गति से चलने लगा।

साअ

जीवन विहार अपार्टमेंट्स, द्वितीय तल,
फ्लैट नं. ७, माहेश्वरी स्वीट्स के पीछे,
रीवा रोड, सतना-४८५००१ (म.प्र.)
दूरभाष : ८२६९८९५९५०

श्राद्ध और कवि-सम्मेलन

● सूर्य प्रकाश मिश्र

अपने अवतरण काल से ही वंचितजी नगर के साहित्यकारों में ऐसे छाए, जैसे विकास के दौर में आबोहवा में धूल। दोनों शहर की तसवीर और तकदीर बदलने हेतु कृत-संकल्प तथा पूरी तरह समर्पित। वैसे इनके माता-पिता ने इनका नाम गोरख प्रसाद रखा था, जो इनके द्वारा रखे गए उपनाम 'वंचित' के प्रभा मंडल के मुकाबले आभाहीन हो चला था। समाज ने दो नाम रखने और खुलेआम सबको जाहिर करने की सुविधा सिर्फ दुर्दांत अपराधियों और साहित्यकारों को ही दे रखी है। बाकी लोग इस सुविधा से महरूम हैं। वंचितजी इसके अच्छे उदाहरण थे। एक बार वंचितजी ने बताया कि उनकी पीढ़ियों के साथ जो व्यवहार हुआ है, वह उन्हें पीड़ित, शोषित, वंचित, व्यथित, कुंठित आदि नाम ही रखने की इजाजत देता है। उन्होंने अपना पूरा नाम बताया, डॉक्टर गोरख प्रसाद 'वंचित'। मैंने पूछा, आपने डॉक्टरेट कहाँ से किया है? उन्होंने मुझे घूरकर देखा और बोले—समाज में तरह-तरह के डॉक्टर घूम रहे हैं। पहले उनसे पूछकर आइए कि उन्होंने कहाँ-कहाँ से किया है। आखिर यह सवाल वंचित से ही क्यों? इससे आपकी सामंतवादी मानसिकता का पता चलता है। इससे आगे मैंने चुप रहने में ही अपनी भलाई समझी।

वंचितजी कविताएँ लिखते थे, जो अधिकतर प्रबुद्ध जनों के लिए ही रची जाती थीं और आम आदमी के सिर के ऊपर से गुजर जाया करती थीं। उनके उच्च श्रेणी के कवि होने में कोई संदेह नहीं था। कई लोग तो न समझने के बावजूद समझ जाने का दम भरते थे, जिससे उनके समझदार होने पर प्रश्न-चिह्न न खड़ा किया जा सके। वंचितजी की धारणा थी कि वे अपनी इन रचनाओं के माध्यम से उस समाज से बदला ले रहे हैं, जिसने उन्हें बहुत सताया है। बड़े-बड़े समालोचक भी उनकी इस बात से पूरी तरह सहमत थे कि ये बदला लेने में पूरी तरह सफल हैं। अब जब बड़े-बड़े समालोचक कह रहे हों तो किसकी मजाल है, जो उन्हें दोयम समझे।

वंचितजी ने एक बार बताया कि उनके पिताजी की अपनी बिरादरी में काफी अच्छी पकड़ थी। वह रैलियों में भीड़ जुटाने का काम करते थे। उन्हें भीड़ जुटाने में महारत हासिल थी। कार्यक्रम चाहे किसी भी पार्टी का हो, उनकी पूछ बनी रहती थी। इससे प्रभाव के साथ-साथ अच्छी-खासी आमदनी भी हो जाया करती थी। पहले लोग घूमने और खाने के नाम पर ही इकट्ठे हो जाया करते थे। लेकिन धीरे-धीरे सब बदल गया। लोग होशियार हो गए और एक दिन की मजूरी की माँग करने लगे। कुछ नौजवानों के इस पेशे में कूद पड़ने से प्रतिस्पर्धा काफी बढ़ गई थी। लिहाजा वंचितजी ने इस कौशल को शहर में आजमाने की ठानी। दो-चार कवि-गोष्ठियों में जबरदस्ती घुसे, कुछ कविताएँ सुनाईं। पोस्टर, बैनर लगवाने में मदद की तो संचालकों को लगा कि आदमी काम का है। उन्हें क्या पता था कि यह भविष्य का प्रतिस्पर्धी तैयार हो रहा है।

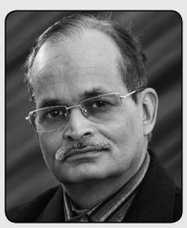

जाने-माने कवि-लेखक। अब तक 'छुई-मुई सी सुबह', 'वफा के फूल मुसकराते हैं', 'भोर का तारा न जाने कब उगेगा', 'दरबान ऊँघते खड़े रहे', 'सुरीले रंग', 'सूख रहा पौधा सुराज का', 'भटकटैया के फूल', 'जाना है समय के पार' (आठ गीत-संग्रह), 'कौवा पुराण' (कुंडली-संग्रह), पत्रिकाओं में गीत, कविता, कहानी, व्यंग्य प्रकाशित। अनेक सम्मान प्राप्त। संप्रति भारतीय स्टेट बैंक में प्रबंधक पद से सेवानिवृत्त हो लेखन में रत।

कुछ दिन बाद वंचितजी ने अपनी संस्था बनाई और उसके बैनर तले पहली कवि-गोष्ठी का ऐलान किया। अध्यक्ष के रूप में उन्होंने एक भभकते हुए दीये जैसे साहित्यकार का चयन किया, जो बस बुझने के कगार पर था। गोष्ठी शहर के बीचोबीच एक नामचीन पार्क में दोपहर दो बजे से आयोजित की गई थी। इस गोष्ठी में मंच, माइक, रोशनी, कुरसी आदि का कोई झंझट नहीं था। प्रकृति के सुरम्य वातावरण में मखमली हरी घास पर गोष्ठी प्रारंभ हुई। इसमें वे कवि बहुत प्रसन्न थे, जिनकी आवाज बुलंद थी। वे शृंगार रस की कविता पढ़ने वालों को हिकारत की निगाह से देख रहे थे। परंतु कुछ कवि, जो शृंगार रस की रचनाओं को भी वीररस की भाँति पढ़ते थे, इससे अविचलित थे। गोष्ठी की पहली कविता चार बजे सायं शुरू हुई। जो कवि पहले पढ़ लेता था, कुछ देर

बाद, दूसरी गोष्ठी में भी आमंत्रित होने की बात कहकर खिसक लेता था। जैसे वह अगर दूसरी गोष्ठी में शामिल नहीं हुआ तो अनर्थ हो जाएगा और उसकी साहित्यिक निष्ठा पर कलंक लग जाएगा। शाम ढलते ही मच्छरों का प्रकोप शुरू हो गया। रोशनी हेतु पार्क की व्यवस्था ही पर्याप्त निकली। हाँ, एक बात जरूर थी कि बल्ब बार-बार जल-बुझ रहा था। लँगड़ाती हुई रोशनी और मच्छरों से मुकाबला चलते रहने के बावजूद कवि-गोष्ठी अध्यक्ष के कविता-पाठ होने तक निरंतर कायम रही। यह बात और है कि बाद में आयोजक, अध्यक्ष और दो-चार वे लोग ही बच गए थे, जो गोष्ठी के नियम पालन हेतु प्रतिबद्ध थे। अंत में चाय आई और धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

कुछ ऐसे रिपोर्टरों के माध्यम से—जो भैंस भाग गई, पतंग कट गई, मच्छरों ने काट लिया आदि समाचार भेजकर अखबार को समृद्ध बनाया करते थे, वंचितजी ने इस साहित्यिक क्रांति की घटना को समाचार-पत्रों में प्रमुखता से छपवाया। अगले दिन अपना-अपना नाम पढ़कर कविगण भी धन्य हो गए। इन नामों में कई प्रसिद्ध कवियों का नाम कार्यक्रम में शामिल न होने के बावजूद छप गया था। हाँ, एक बात खास थी कि जो लोग अंत तक रुके थे, उनमें से आयोजक को छोड़कर शेष सारे नाम नदारद थे। दूसरी बार वंचितजी ने विशाल सम्मान समारोह आयोजित किया। इसमें उन्होंने गुजरते हुए, उभरते हुए, निखरते हुए, बिखरते हुए तमाम कवि-कवयित्रियों को आमंत्रित किया। इसमें बहुतेरे रचनाकारों ने सम्मान पाने हेतु अच्छी-खासी राशि भी देना सहर्ष स्वीकार कर लिया।

आयोजन के दिन सम्मान-पत्र बाँटे गए तथा लोगों को चुकाई गई राशि के सापेक्ष 'साहित्याधिराज' से लेकर 'साहित्य किंकर' तक की उपाधियों से नवाजा गया। इसमें कुछ ऐसे लोग भी लाभान्वित हुए, जिन्होंने भविष्य में राशि चुकाने का आश्वासन दिया तथा कुछ ऐसे लोगों को भी करना पड़ा, जो दमड़ी न देने के बावजूद हर समारोह की शोभा हुआ करते थे।

कई बार सम्मान-समारोहों के सफल आयोजन के बाद वंचितजी का नाम सुर्खियों में आ चुका है। अब वे प्रदेश स्तर पर भी सम्मान वितरण प्रक्रिया में प्रभावी भूमिका निभाने लगे हैं। बहुतों को उन्होंने कृतार्थ करके प्रथम पंक्ति का साहित्यकार बना दिया है। इधर उनके चरण छूने वालों की संख्या में बड़ी तेजी से इजाफा हुआ है। उन्होंने रचनाकारों का अपना एक दल बना लिया है, जिन्हें कुछ जलने वाले लोग गिरोह कहते हैं। इस दल या गिरोह में कुछ सदस्य स्थायी हैं तथा शेष समय-समय पर मौका देखकर जुड़ते या अलग होते रहते हैं।

श्राद्ध के दिन बताया गया कि मरने वाला बड़ा साहित्यिक प्राणी था। जीते-जी कविता न सुन पाने का मलाल उसे आखिरी दम तक था। लिहाजा उसकी अंतिम इच्छा को ध्यान में रखते हुए, उसकी आत्मा की शांति हेतु यह आयोजन रखा गया है। हालाँकि सेठ के मुनीम ने बताया कि चूँकि सेठ के लड़के ने मरने से पहले अपने पिता के साथ बहुत खराब व्यवहार किया था। इसलिए उनकी आत्मा के द्वारा बदला लेने की बात से बहुत डरा हुआ था। सेठजी पूरी जिंदगी कविता सुनने से डरते रहे और कवियों से बहुत घबराते थे। लिहाजा अपने किसी शुभचिंतक की सलाह पर उसने यह कार्यक्रम रखा था। आत्मा मंत्रों से भले न भागे, लेकिन ऐसा विश्वास था कि कवियों के आगमन और कविता पाठ से जरूर भाग जाएगी।

वंचितजी जन्मदिन और कवि-सम्मेलन, शादी की सालगिरह और कवि-सम्मेलन, मुंडन और कवि-सम्मेलन, घरभोज और कवि-सम्मेलन आदि कार्यक्रम आयोजित कराते रहते हैं। इसमें वंचितजी वित्तपोषक को सदा यह बता देते हैं कि भूलकर भी कविता-पाठ मुख्य कार्यक्रम के पहले न कराएँ। अन्यथा कवियों के भाग जाने की स्थिति में उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

एक बार एक सेठ के पिता की मृत्यु हो गई। उनके अच्छे व्यवहार के कारण शंका थी कि शायद कोई कार्यक्रम में आने का कष्ट ही न करे। फौरन वंचितजी से संपर्क किया गया। वंचितजी ने ऊपरी तौर पर व्यस्तता का बहाना किया। लेकिन पान, फूल कि मात्रा बढ़ने पर अहसान लादते हुए तैयार हो गए। 'श्राद्ध और कवि-सम्मेलन' का आयोजन हुआ। श्राद्ध के दिन बताया गया कि मरने वाला बड़ा साहित्यिक प्राणी था। जीते-जी कविता न सुन पाने का मलाल उसे आखिरी दम तक था। लिहाजा उसकी अंतिम इच्छा को ध्यान में रखते हुए, उसकी आत्मा की शांति हेतु यह आयोजन रखा गया है। हालाँकि सेठ के मुनीम ने बताया कि चूँकि सेठ के लड़के ने मरने से पहले अपने पिता के साथ बहुत खराब व्यवहार किया था। इसलिए उनकी आत्मा के द्वारा बदला लेने की बात से बहुत डरा हुआ था। सेठजी पूरी जिंदगी कविता सुनने से डरते रहे और कवियों से बहुत घबराते थे। लिहाजा अपने किसी शुभचिंतक की सलाह पर उसने यह कार्यक्रम रखा था। आत्मा मंत्रों से भले न भागे, लेकिन ऐसा विश्वास था कि कवियों के आगमन और कविता-पाठ से जरूर भाग जाएगी। हाँ, उसने वंचितजी से यह ताकीद कर दिया था कि कविता-पाठ में कोई कवयित्री न आए, वरना आत्मा अपना इरादा बदल सकती थी।

वंचितजी ने इस विधा को स्टार्टअप कौशल के रूप में पंजीकृत कराने हेतु आवेदन भेज दिया है। सुना है, सरकार इस पर गंभीरता से विचार भी कर रही है।

इधर उनकी देखा-देखी छोटे-छोटे कई सार्थक प्रयास भी चल रहे हैं। नगर का यह कालखंड इस साहित्यिक क्रांति का गवाह बना हुआ है।

बी-२३/४२ ए.के., बसंत कटरा (गांधी चौक)
खोजवा निकट, दुर्गाकुंड
वाराणसी-२२१०१०
दूरभाष : ०९८३९८८८७४३

कुंभ–वैचारिक लोकतंत्र का शाश्वत पर्व

• एन.पी. सिंह

कुंभ मेला भारत की संस्कृति का शाश्वत पर्व है। जहाँ इसका धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्त्व है, वहीं इसकी प्रमुख विशिष्टता 'वैचारिक मंथन' की प्रक्रिया को उर्वरा अवसर एवं आधार प्रदान करना है। हम विश्व की सभी संस्कृतियों के उद्‌भव, विकास एवं अवनति की यात्रा का सूक्ष्म एवं विहंगम विश्लेषण करें तो प्रामाणिक निष्कर्ष यह है कि एकमात्र भारतीय संस्कृति ही है, जिसकी निरंतरता एवं शाश्वतता सतत प्रवहमान है। भारतीय संस्कृति के पश्चात् या उसके आसपास की विकसित अन्य संस्कृतियाँ अपने मूल स्वरूप के साथ कहीं भी विद्यमान नहीं हैं। मिस्र, मेसोपोटामिया, बेबीलोन की संस्कृतियाँ मात्र पुरातात्त्विक अवशेषों एवं खँडहरों में ही तलाशी जा सकती हैं। यूनान/रोम की संस्कृतियाँ भी अपना मूल अस्तित्व खो चुकी हैं। अवेस्ता एवं जरथ्रुष्ट से प्रेरित फारस की प्राचीन संस्कृति भी नवीं शताब्दी में पूर्णत: समाप्त हो चुकी है। परंतु भारत की संस्कृति प्राचीनतम होते हुए वर्तमान में भी अपने मूल स्वरूप को विचारों, परंपराओं एवं गतिविधियों में पूर्णत: अभिव्यक्त करती है।

हम इस शाश्वतता के कारक तत्त्वों पर यदि गहन विचार करें तो कुछ ऐसी विशेषताएँ हमारी संस्कृति में हैं, जो अत्यंत विशिष्ट हैं। पहला कारण है—हमारी संस्कृति में परिवर्तन के समायोजन की क्षमता का होना। हजारों वर्षों से अनेक ऐतिहासिक पड़ावों से गुजरने की प्रक्रिया में विविध झंझावातों से जूझते हुए भी भारतीय संस्कृति की सनातनता अक्षुण्ण रही है। यद्यपि युगीन आवश्यकताओं के अनुरूप इसके कलेवर में यथोचित परिवर्तन तो हुए हैं, तथापि इसकी 'नाभि' कभी विस्थापित नहीं हुई। सांस्कृतिक प्लवनशीलता वैचारिक प्रवाह में एक स्वीकार्य तत्त्व रहा, परंतु मूलभूत मूल्यों को संरक्षित रखते हुए हमारी संस्कृति ने नूतन विचारों के उन्मेष, उद्‌भव एवं प्रसार का सदैव अभिनंदन किया तथा अपने मूल सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण के साथ-साथ युगीन दक्षता के अनुरूप नए ज्ञान-सृजन का स्वागत भी किया, जो कि इतिहास के लंबे कालखंड में मानव मस्तिष्क की वैचारिक यात्राओं के विकास की सामूहिक अभिव्यक्ति रही है। हमारी संस्कृति किसी एक पुस्तक, एक व्यक्ति, एक पंथ पर केंद्रित नहीं रही, बल्कि सामूहिक प्रज्ञा के गर्भ से ऊर्जान्वित एवं संपोषित होती रही है। हमारी संस्कृति जो व्यक्तिगत एवं सामाजिक

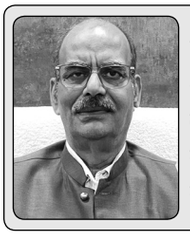

पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी। परास्नातक भौतिक शास्त्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय। संप्रति कार्यकारी अध्यक्ष, भारतीय शिक्षा बोर्ड। (भारत सरकार द्वारा गठित एवं पतंजलि योगपीठ द्वारा संचालित नेशनल स्कूल एजुकेशन बोर्ड)।

परंपराओं एवं गतिविधियों के माध्यम से प्रतिफलित एवं प्रतिध्वनित होती रही है, ने बाह्य विचारों के लिए भी अपने गवाक्ष सदैव खुले रखे हैं। हमारी संस्कृति ने कभी भी इन विचारों का अनादर नहीं किया, बल्कि उनके श्रेष्ठ तत्त्वों को समावेशित करते हुए उनकी आँधियों से स्वयं की संरक्षा भी की है, इसीलिए इसका मूल अस्तित्व सतत प्रवहमान है।

दूसरा एक प्रमुख कारण इसकी विविधताओं में एकत्व की सशक्त अवधारणा है। किसी भी संस्कृति का उद्‌भव किसी दर्शन के प्रभाव से होता है। किसी भी दर्शन के मूलत: तीन पक्ष होते हैं—तात्त्विक पक्ष, नैतिक पक्ष एवं क्रियात्मक गतिविधि पक्ष। यदि हम भारत की समस्त दार्शनिक परंपराओं के प्रवाह को देखें और उसकी मीमांसा करें तो उसके क्रियात्मक अभिव्यक्त स्वरूप में परिवर्तन दिखाई दे सकते हैं, परंतु तात्त्विक एवं नैतिक पक्ष पर पूर्ण एकात्मकता परिलक्षित होती है, क्योंकि हमारी संस्कृति की जड़ एक है और विविध विचारधाराएँ उसकी शाखाओं, टहनियों, पत्तियों एवं पुष्पों की तरह हैं।

स्पष्टत: हमारी संस्कृति का विकास पूर्णत: उद्‌भवकारी प्रक्रिया रही है। युगानुरूप उसमें कतिपय परिवर्तन हुए हैं, पर वह मूल अवधारणा के निषेध के रूप में नहीं, बल्कि अगले पड़ाव के रूप में हुए हैं। उदाहरण के लिए, वैदिक विचार एवं धर्म हमारा सांस्कृतिक संविधान है, परंतु उस युग को भी हम उद्‌भव की दृष्टि से वर्गीकृत करें तो प्रमुखत: चार चरण परिलक्षित होते हैं—संहिता, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक एवं उपनिषद्। संहिता भाग प्रकृति की समस्त शक्तियों में देवत्व का आरोपण करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता भाव से आराधना पक्ष को प्रमुखता से व्यक्त करता है, तो ब्राह्मण ग्रंथ यज्ञ के कर्मकांडीय पक्ष को विस्तार देता है। वहीं आरण्यक गूढ़ दार्शनिक रुझान तथा 'स्व' एवं विराट् प्रकृति के पारस्परिक संबंधों की ओर झुकाव से आप्लावित है तो उपनिषद् प्रमुखता से ब्रह्म-विद्या

एवं आत्म-विद्या पर केंद्रित है। संहिता भाग एवं ब्राह्मण ग्रंथों में खगोल विज्ञान एवं मानव-प्रकृति के मध्य संश्लिष्ट संबंधों की व्याख्या पर्याप्त मात्रा में परिलक्षित होती है। साथ ही व्यक्तिगत, सामाजिक एवं पर्यावरणीय जीवन के अनेक पक्षों को बहुत ही प्रभावी ढंग से उल्लेखित किया गया है, परंतु आरण्यकों और उपनिषदों में बाह्य परिवेश एवं आभ्यंतर के मध्य अंतर्संबंधों की दार्शनिक यात्रा बहुत ही विश्लेषणपरक ढंग से मिलती है। वेदांग और षड्दर्शन वैदिक मूल्यों की मीमांसा, अर्थान्विति एवं दार्शनिक व्याख्या के रूप में विकसित हुए हैं।

बौद्ध दर्शन एवं जैन दर्शन भी वैदिक मूल्यों के विरोध में नहीं, बल्कि रूढ़िवादिता के कारण उत्पन्न सामाजिक विकृतियों के परिष्करण की दिशा में अग्रिम यात्रा है। पाश्चात्य विद्वानों ने त्रुटिपूर्ण एवं पक्षपात युक्त व्याख्याएँ करके यह स्थापित करने की कोशिश की है कि बौद्ध एवं जैन दर्शन वैदिक धारणाओं के प्रबल विरोध पर आधारित हैं। यद्यपि इनमें कर्मकांडीय जटिलताओं का विरोध हो सकता है, तथापि बुद्ध का अष्टांग-सम्यक् संकल्प, सम्यक् विचार, सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति एवं सम्यक् समाधि वेदों में गर्भित मानवीय आचरण के नैतिक मूल्यों से कहाँ भिन्न दिखता है? ठीक वैसे ही जैन दर्शन का पंच महाव्रत भी उपनिषदों की प्रकृति के सभी घटकों से एकात्मकता एवं अभेद की दृष्टि से कहाँ भिन्न है? अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह के मूल्य-बोध क्या उपनिषदों की मूल धारणा के अनुरूप नहीं हैं? क्या ये मूल्य पतंजलि के योगदर्शन के 'यम' से पूर्णत: अनुरूपता नहीं रखते हैं? क्या बौद्ध एवं जैन दर्शन के नैतिक मूल्य समूची भगवद्गीता या उसके सोलहवें अध्याय के दैवीसंपद से भी समानता नहीं रखते? ऐसे बहुत सारे तथ्य हैं, जो इन दर्शनों की गहराई में उतरने पर स्वत: ही स्पष्ट हो जाएँगे कि हमारे सांस्कृतिक सावयव के ढाँचे में युगीन आवश्यकताओं के अनुरूप बदलाव तो हुए हैं, परंतु उसकी 'सांस्कृतिक आत्मा' अपरिवर्तनीय रही है। वैष्णव, शैव, शाक्त, लिंगायत, संगम काल या मध्यकालीन भक्ति-आंदोलन के सभी संतों की वाणी में भी हमारी आदि संस्कृति के निरंतर प्रवहमान मूल्यों की गूँज सुनाई पड़ती है। हमारी संस्कृति की शाश्वतता का एक प्रमुख कारण है—इसकी प्रबल संश्लेषण एवं समावेशिता की प्रवृत्ति। समावेशिता की दृष्टि से यदि हम अपनी संस्कृति को देखें तो हमारी दार्शनिक अवधारणा अभेद पर आधारित है। मात्र मनुष्यों के मध्य ही अभेद नहीं है, बल्कि प्रकृति के सभी घटकों में पशु-पक्षी, पर्वतों-नदियों, ग्रह-नक्षत्रों, सभी खगोलीय पिंडों के साथ भी अभेद की दृष्टि है। यह अभेद ही सभी प्रमुख शाखाओं में तात्त्विक रूप में गुँथा हुआ है—

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥
यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानत:।
तत्र को मोह: क: शोक एकत्वमनुपश्यत: ॥ (ईशावास्योपनिषद्-६/७)

तीसरा मुख्य कारण है—सांस्कृतिक व्यापकता। किसी भी संस्कृति का मूल आधार है—उसका 'विचार'। संस्कृति की निरंतरता तभी संभव है, जब उसके पोषक विचारों में मानव जीवन की सभी जिज्ञासाओं, आवश्यकताओं एवं चुनौतियों के समाधान का सामर्थ्य हो। हमारी संस्कृति जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी प्रश्नों का समर्थ समाधान प्रस्तुत करती है तथा इसमें युगीन आवश्यकताओं के अनुरूप दक्षता-संवर्धन के लिए पाथेय प्रस्तुत करने की भी अद्भुत शक्ति है।

अब मूल जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि इतनी संपोषकीय प्रवृत्तियाँ भारतीय सांस्कृतिक यात्रा में आईं कैसे? इसका सबसे बड़ा कारण है कि हमारी संस्कृति में ज्ञान, कर्म एवं आस्था को समानुपातिक महत्त्व दिया गया है और वह भी एक-दूसरे के विरोधी स्वरूप में नहीं, बल्कि एक-दूसरे के 'पूरक' रूप में। इस पूरकता को स्थापित करने का माध्यम रहा है—निरंतर तर्क एवं विमर्श की प्रक्रिया। पाश्चात्य दर्शन में यह प्रक्रिया जन्म ले पाती है—सुकरात, प्लेटो एवं अरस्तू से, जो कि ईसा के लगभग ४०० वर्ष पूर्व है, जबकी भारतीय संस्कृति में उससे सैकड़ों वर्ष पूर्व इसकी सुदृढ़ परंपरा रही है। हमारी संस्कृति ने कभी व्यक्तिमूलक या ग्रंथमूलक ऐकांतिक विचारों को महत्त्व नहीं दिया है, बल्कि समावेशी संश्लेषित सामूहिक प्रज्ञा को ही वैचारिक प्राण के रूप में स्वीकार किया है। हमारे वेद, उपनिषद् किसी एक ऋषि के विचार नहीं, बल्कि अनेक ऋषि-ऋषिकाओं की दिव्य अनुभूतियों की अभिव्यक्तियों की समग्रता है।

समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि॥
(ऋग्वेद-१०/१९१/३)

समानी व आकूति: समाना हृदयानि व:।
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति॥
(ऋग्वेद-१०/१९१/४)

यह संभव इसलिए हो पाया कि हमारी संस्कृति ने निरंतर तर्क एवं विचार-विमर्शों को प्रामाणिक संचार का माध्यम माना है। तर्क एवं विमर्श से ही विविध वैचारिक प्रवाहों के मध्य एक सर्वस्वीकार्य युगीन दृष्टि उत्पन्न होती है। तर्क एवं विमर्श से ही वैचारिक गतिशीलता बनी रही है, जिससे वह जड़त्व एवं रूढ़िवादिता का शिकार न होकर उपनिषदों में जिज्ञासा एवं विमर्श का माध्यम रही है। महर्षि गौतम का 'न्याय शास्त्र'

बहुत ही विस्तार से तर्क की विभिन्न विधाओं पर विस्तृत पाथेय प्रदान करता है। महर्षि कणाद के वैशेषिक दर्शन ने सुव्यवस्थित रूप से ब्राह्मण ग्रंथ एवं उसके घटकों के उद्‌भव एवं अस्तित्व पर विज्ञानसम्मत पद्धति विकसित की है तथा बौद्ध दर्शन के माध्यम से इस पर पारस्परिक परिचर्चा होने के ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

कुंभ का महापर्व प्राचीन काल से इसी तर्क एवं विमर्श की प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण माध्यम रहा है। यह इसी अवधारणा पर है कि यहाँ भिन्न-भिन्न पगडंडियों एवं मार्गों से आने वाले सभी विचारों का स्वागत है और विमर्श के माध्यम से हम युगानुरूप प्रामाणिक ज्ञान-कौशल के कुंभ को परिपूरित करें। कुंभ का पौराणिक आख्यान भी समुद्र मंथन से निकले अमृत-तत्त्व से जुड़ा है। वह भी इसी तथ्य की ओर दृढ़ता से संकेत करता है कि 'मंथन' ही एकमात्र जीवन-दर्शन का पाथेय है।

भारतीय संस्कृति की विशेषता यह है कि हमारी समस्त परंपराओं, दिन-प्रति-दिन की गतिविधियों एवं त्योहारों का खगोलीय पिंडों से निकट संबंध है। हम मात्र मानव समुदाय तक ही समस्त चिंतन को सीमित नहीं करते, बल्कि पृथ्वी के अन्य सभी घटकों के साथ आत्यंतिक संबंध रखते हैं। इससे भी आगे समूचे सौरमंडल, अंतरिक्ष, आकाशगंगा, नक्षत्रों एवं नीहारिकाओं के साथ हमारा ऐसा रिश्ता है, जो हमारे जीवन का अनिवार्य हिस्सा है। हमारे सभी महत्त्वपूर्ण निर्णयों में सभी खगोलीय अस्तित्वों की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका है। नदियों, पर्वतों एवं वृक्षों में भी दैवीय शक्तियों की अनुभूति करना हमारी सांस्कृतिक प्रज्ञा का महत्त्वपूर्ण अंश है। कुंभ के सभी पर्व भी विशिष्ट खगोलीय स्थिति के अनुसार नियत होते हैं। इस पर्व के समय एवं तिथियाँ सूर्य और बृहस्पति के कुछ विशेष राशियों में होने पर ही निर्धारित होते हैं।

कुंभ पर्व का आयोजन हमारे धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक एवं पर्यावरणीय जीवन से गहन रिश्ता रखता है, जो इसके कतिपय आयामों पर भी चर्चा करते हैं।

आज पारिस्थितिकीय संतुलन, जलवायु परिवर्तन तथा संपोषकीय विकास पूरे विश्व के विमर्श का केंद्र बना हुआ है। पाश्चात्य दर्शन मूलत: इस अवधारणा पर अधिक केंद्रित रहा है कि प्रकृति मानव समुदाय की दासी है। इसलिए मानव प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने की पूर्ण स्वतंत्रता रखता है। परिणामत: सोलहवीं शताब्दी से उद्‌भूत नव-विज्ञान एवं तकनीकि के कारण प्रकृति का अनियंत्रित दोहन हुआ, जिससे समूचे पर्यावरण एवं पारिस्थितिकीय संपोषकीयता पर ही गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है। पूरा वैश्विक समुदाय पृथ्वी ग्रह एवं उसके समस्त जीव-जंतुओं अथवा जंगलों के ही अस्तित्व के पूर्णत: विनष्ट होने की आशंका से भयभीत है। सत्रहवीं एवं अठारहवीं शताब्दी में यूरोप के पुनर्जागरण काल के दौरान प्राकृतिक धर्म की आवाज जरूर उठी, परंतु उसका कोई विशेष प्रभाव प्रकृति के अंधाधुंध दोहन पर नहीं पड़ा। जबकि भारतीय संस्कृति जो प्रारंभ से ही प्रकृतिधर्मा रही है, ने प्रकृति की हमेशा 'माँ' के रूप में आराधना की है। स्वयं को प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसके वृहद् सावयव का एक अंग समझने की धारणा हमारे जीवन-दर्शन का अंग रही है। 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:' का भाव हमारा मार्गदर्शक सिद्धांत रहा है, अर्थात् कृतज्ञ भाव से प्रकृति से उतना ही ग्रहण करो, जितना कि अपनी जिजीविषा के लिए न्यूनतम आवश्यक है। हमें प्रकृति पर स्वामित्व का बोध बिल्कुल नहीं होना चाहिए। यह भारतीय संस्कृति के समस्त त्योहारों, परंपराओं और जीवन-पद्धति में प्रभावी रूप से प्रतिबिंबित होता है। कुंभ भी प्रकृति के प्रति इसी भाव को पूर्णत: अभिव्यक्त करता है। नदियों के संगम स्थल पर भारतवासी कई दिनों तक साधनारत होकर निवास करते हैं, जो प्रकृति के साथ प्रेम, सहअस्तित्व एवं पारस्परिकता का सशक्त प्रमाण है।

'कुंभ' पर्व भारतीय संस्कृति की समावेशी धारणा का भी प्रतिनिधित्व करता है। सभी सामाजिक समुदायों के लोग अत्यंत सौहार्द के साथ इस पर्व के संगमस्थल में निवास करते हैं। यह भारत की अभेद संस्कृति का पर्व है, जिसके सामूहिक आचरण में एकत्व की अवधारणा की पुष्टि होती है, जो भारत के सांस्कृतिक एकीकरण का सनातन उपादान है।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते॥

(ऋग्वेद-१०/१९१/२)

कुंभ आध्यात्मिक साधना का भी महान् केंद्र है। भारत की संस्कृति एवं दर्शन पर आरोप कुछ आलोचक लगाते हैं कि इसमें व्यक्तिगत साधना एवं वैयक्तिक मोक्ष की अवधारणा है। परंतु कुंभ के आयोजन का पूरा प्रारूप एवं स्वरूप हमारे दर्शन की आध्यात्मिक साधना एवं उत्कर्ष के लिए सामूहिक पुरुषार्थ का ज्वलंत प्रमाण है। यहाँ पर प्रकृति के साहचर्य में स्वयं के अस्तित्व को तलाशने की आध्यात्मिक साधना सामूहिक रूप से की जाती है।

यदि हम कुंभ के ऐतिहासिक पक्ष को देखें तो यह इतना सनातन पर्व है कि इसके प्रारंभ की तिथि का सम्यक् निर्धारण संभव नहीं है। इसकी अवधारणा का स्रोत पौराणिक आख्यानों में मिलता है, जो समुद्र-मंथन से निकले अमृत के साथ संबंध स्थापित करता है। यहाँ भी मुझे लगता है कि परस्पर विरोधी धारणाओं के लोगों के मध्य भी मंथन ही विभिन्न वैचारिक समृद्धि के अमृत एवं विष को प्रत्यक्ष करता है। अमृत-तत्त्व पाना ही सभी मानव-प्रजाति का सबसे अधिक प्रभावी लक्ष्य है। आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में परस्पर विरोधी विचारों के मध्य हो रहे युद्ध की समाप्ति का मार्ग भी परस्पर वैचारिक मंथन से ही निकलेगा। कुंभ का यह पर्व पूरे विश्व को संदेश देता है कि वास्तविक रूप से सुख-शांति तभी संभव है, जब वैचारिक लोकतंत्र स्थापित हो और उससे निकले सामूहिक प्रज्ञा रूपी अमृत-तत्त्व से ही वैश्विक चुनौतियों का समाधान संभव है।

साअ

भारतीय शिक्षा बोर्ड,
पतंजलि योगपीठ
हरिद्वार-२४९४०५ (उत्तराखंड)
दूरभाष : ९८९७५९५४०९

प्रकृति-प्रेम के दोहे

● संजय पंकज

साँसों महका मोगरा, होंठों खिला पलाश।
आँखों उतरी मालती, किसकी करे तलाश॥

सरसों की अंगराइयाँ, मौसम हुआ निहाल।
फलियों की सुन बाँसुरी, नाच रहा गोपाल॥

बरसाने की राधिका, गोकुल का वह ग्वाल।
मन में जब-जब नाचते, वृंदावन बेहाल॥

हवा सलोनी नाचती, पल-पल छूती गात।
पोर-पोर चिंगारियाँ, मधुर-मधुर सौगात॥

अंबर मनहर नीलिमा, पलकन पुलकित चाल।
अविचल अनुपम भावना, मुखरित मधुरिम ताल॥

छुअन सुरीली प्रेम की, फूटे गीत हजार।
खुश्बू डूबी रागिनी, उठती मन-झंकार॥

चुभती अलपिन प्यार की, मीठी टीस उभार।
रंग-बिरंगे राग पर, अनगिन बजे सितार॥

दिन से लेकर रात तक, केवल हो संगीत।
बजी प्रेम की बाँसुरी, आया है मनमीत॥

बड़ी रसीली बावरी, चलती अटपट चाल।
प्रीत डगरिया डोलती, छलती घूँघट डाल॥

आ जाते जब कान में, सम्मोहन के घोल।
दो कौड़ी के बोल भी, बोल लगे अनमोल॥

चीख-चीखकर बोलता, खड़ा हुआ बाजार।
प्रीत-गुजरिया हाट में, बिकने को तैयार॥

तितली होंठों बैठती, देती रंग उतार।
आँखों पहुँची फैलती, उसकी मीठी धार॥

मधुर मिलन की प्यास में, आकुल सबकी साँस।
दूर क्षितिज तक भागते, धरती और आकाश॥

फूलों जैसा ही लगे, चुभने वाला शूल।
तय है तब तो मानिए, हुई हृदय की भूल॥

सूरज से ज्यादा गरम, नरम कि जैसे चाँद।
प्यार नहीं तो और क्या, सबकुछ जाता फाँद॥

शिव की अपनी साधना, शिव का अपना ताप।
शैल सुता की चाहना, उनकी गहरी छाप॥

चिड़िया बैठी डाल पर, डाल रही है डोल।
गाकर कब की उड़ गई, अपने मीठे बोल॥

दोहे सुनिए प्रेम के, खुले हृदय के द्वार।
गंग विराजे रंग में, मानस पारावार॥

शिव ने देखा पार्वती, जैसे पर्वत भाल।
सारी गुरुता धूल में, पल में हुई निढाल॥

वाम न होती पार्वती, और न नंदी साथ।
तब भी क्या तुम नाचते, बोलो भोलेनाथ॥

वाणी गूँगी हो गई, अधर हुए फिर बंद।
आँखें तब मुखरित हुईं, फूटे गंधिल छंद॥

दिल के तार सितार पर, ऐसी गहरी चोट।
चाहे जैसे सुर रहे, मगर न कोई खोट॥

किसी नजर की गुदगुदी, लगी जिगर में हाय।
आह-वाह के बीच में, सबकुछ है मुसकाय॥

जिधर-जिधर मैं देखता, दिखे एक ही रूप।
बाहर-भीतर झाँकता, वह तो रूप-अनूप॥

कल तक जो गोपन रहा, आज हुआ विस्तार।
कभी छिपाए क्या छिपा, जिसको कहते प्यार॥

मन-संवेदन तब हुआ, उस पर हुआ प्रहार।
पँखुड़ियों से जब बिंधा, हुआ शूल बेजार॥

चाहत कुछ ऐसी रहे, बचे न कोई चाह।
प्रेम-डगरिया धूप में, रहती केवल छाँह॥

साँस उगलती आग हो, नयनों तैरे राग।
दिल में जलती फाग हो, रही भैरवी जाग॥

रूह लगी जब बोलने, छिपा न अंतर-भाव।
होकर भी तब देह में, बचा न कोई चाव॥

वही उजागर हो गया, जिसे छिपाया खूब।
खुशबू-ही-खुशबू मिली, वाणी बोली डूब॥

सुपरिचित रचनाकार। 'यवनिका उठने तक', 'माँ है शब्दातीत', 'यहाँ तो सब बनजारे', 'मंजर-मंजर आग लगी है' कृतियाँ चर्चित। पत्र-पत्रिकाओं एवं संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारित। 'अर्चना साहित्य पुरस्कार', 'अवंतिका सरस्वती सम्मान', 'कलाश्री सम्मान' सहित दर्जन भर सम्मान।

चलना था जाने कहाँ, चले कहीं फिर और।
दुनियावी सब भूलकर, प्यार हुआ सिरमौर॥

प्यार नहीं है याचना, है संवेदन भाव।
हाथ जोड़ते देवता, और बढ़ाते पाँव॥

खुद को जिसमें पा लिया, पाना यह अनमोल।
प्यार बड़ी है भावना, प्यार अनोखा बोल॥

सीता-राधा-पार्वती, नाम प्रेम-उत्कर्ष।
राम-कृष्ण-शिव में बसे, सत्य सनातन हर्ष॥

अंकित किया वसंत ने, प्यार-प्यार बस प्यार।
प्यार नाम है जिंदगी, प्यार धरा का हार॥

प्यार अनोखा रंग है, प्यार अनोखा छंद।
फागुन ने चिल्ला कहा, इसको दिया अनंत॥

सीमाएँ सब टूटतीं, जुड़ जाते सब कोर।
प्रेम-नदी है जोड़ती, जुड़ते छोर-अछोर॥

प्रेम-खजाना देखकर, भौंचक हुए कुबेर।
मीरा की दीवानगी, इकतारे की टेर॥

पूछो किसी कबीर से, क्या होता है प्रेम।
रस की ऐसी चासनी, समरस सारे नेम॥

'शुभानंदी', नीतीश्वर मार्ग, आमगोला
मुजफ्फरपुर-८४२००२ (बिहार)
दूरभाष : ६२००३६७५०३

विवेकानंद और भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

● सत्यलोक कौशिक

भारत औपनिवेशिक दासता के काल में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक रूप से पूर्णतया छिन्न-भिन्न हो गया था। जिसका सबसे बड़ा कारण था—औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा भारत की सामाजिक स्थिति पर कुठाराघात, भारत की सांस्कृतिक विरासतों की नींव पर प्रहार तथा भारत की राजनीतिक एकता को क्षत-विक्षत कर देना। औपनिवेशिक मानसिकता सदैव शक्ति, स्वार्थ और एकाधिकार को अपना मूल मंत्र मानती थी, वहीं हमारा भारत 'वसुधैव कुटुंबकम्' जैसे ध्येय के साथ अपना आदर्श स्थापित करता रहा है। जहाँ ब्रिटिशों की यथार्थवादी चिंतन शैली भारतीय उपनिवेश में गहरा प्रभाव डालती जा रही थी, वही औपनिवेशिक सत्ता के गैर-यूरोपीय देशों के संस्कृति को अविकसित तथा अवैज्ञानिक की संज्ञा देते हुए 'White man's burden' के रूप में व्याख्यायित कर रही थी। White man's burden (श्वेत जाति का भार) के सिद्धांत पर ही यूरोप अपने साम्राज्यवादी मानसिकता को न्यायोचित ठहरा रहा था। इसका तात्पर्य यह था कि अश्वेत, पिछड़े तथा गैर-यूरोपीय लोग सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक रूप से असभ्य हैं तथा इन्हें सभ्य बनाना यूरोपीय तथा श्वेत जातियों का कर्तव्य है। इसी चिंतन शैली के साथ 'ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी' भारतीयता को निम्न बताते हुए अपनी विशेषता का यश-गान करती थी। और एक तरह से कंपनी का मुख्य केंद्र भी बन गई थी।

स्वामी विवेकानंद का आविर्भाव जिस समय हुआ, उस समय भारत देश में राजनीतिक एकता का अभाव था। छोटे-छोटे नरेश और नवाब जिन भू-भागों पर आधिपत्य जमाए हुए थे, उन्हीं के संवर्धन और संरक्षण में दिन-रात लगे रहते थे। संकुचित राष्ट्रीयता की दृष्टि के परिणाम-स्वरूप जहाँ एक तरफ उनमें अखिल भारतीयता के विचारों का उद्‌भव और संपोषण नहीं हो पाया, वहीं औपनिवेशिक शासकों के लिए भारत थोड़ी-बहुत बाधाओं को छोड़कर एक खुला चरागाह सिद्ध हुआ। जिस प्रकार बारहवीं शताब्दी में भारतवर्ष के हिंदू और बौद्ध प्रचंड इस्लामी शक्ति के समक्ष नतमस्तक हो चुके थे, उसी तरह अठारहवीं शताब्दी में हिंदू और मुसलमान दोनों जातियाँ बिना किसी प्रतिकार के ब्रितानी शासकों के चरणों में झुक गई थीं। वे भारतीयों को असभ्य और जंगली के रूप में देखते थे। विदेशी मंचों पर वे भारत और भारतीय संस्कृति का दुष्प्रचार करते थे। इस सुनियोजित षड्‌यंत्र के पीछे उनका यह प्रयास था कि विश्वमंच पर वे यह प्रतिष्ठित कर सकें कि भारत में ब्रितानी शासन का उद्‌देश्य स्वयं अंग्रेजों का हित और संवर्धन नहीं, बल्कि असभ्य और अपेक्षाकृत पिछड़े भारतीयों को सभ्य और अधिक आधुनिक बनाना है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से राजनीतिक विज्ञान में स्नातकोत्तर तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से हिंदी में स्नातकोत्तर। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शोध-आलेख प्रकाशित।

तत्कालीन भारतीय समस्याओं को देखते हुए स्वामी विवेकानंद ने 'राष्ट्रवाद' को एक नए स्वरूप में प्रस्तुत किया।

उन्होंने भारतीयों को अपनी ही धरती पर अपने ही पैरों पर खड़े होने की प्रेरणा दी। उन्होंने भारतीयों को उन्हीं के इतिहास से पुन: साक्षात्कार कराने का प्रयत्न किया, क्योंकि विवेकानंद का विश्वास था सर्वोच्च 'आध्यात्मिक चेतना' के माध्यम से ही भारत का पुन: निर्माण हो सकता है और उसे प्राचीन गौरवपूर्ण सर्वोच्च स्थिति की पुनर्प्राप्ति हो सकती है। ऋषियों की यह आध्यात्मिक संस्कृति, जिसकी अवनति होने के कारण देश का पतन हुआ है, उसकी पुर्नव्याख्या की जानी चाहिए और इस हेतु प्रथमत: देश से निर्धनता, अशिक्षा और सामाजिक कुरीतियों को दूर किया जाना चाहिए। तभी देश की राष्ट्रीय उन्नति संभव है। उन्होंने स्वतंत्रता को मनुष्य का प्राकृतिक अधिकार माना और समाज के सभी सदस्यों को यह अवसर समान रूप से प्राप्त होना चाहिए। स्वामीजी को देश की तत्कालीन स्थिति को देखकर बड़ा दु:ख हुआ। उन्होंने भारतवासियों की भौतिक और मानसिक अवनति का स्पष्ट, व्यापक और मर्मस्पर्शी चित्रण करते हुए लिखा है कि "इस देश का हाल क्या कहा जाए? शूद्रों की बात तो अलग रही, भारत का ब्रह्मणात्व अभी गोरे अध्यापकों में है और उसका क्षत्रित्व चक्रवर्ती अंग्रेजों में उसका वैश्वत्व भी अंग्रेजों की नस-नस में है। भारतवासियों के लिए तो केवल शूद्रत्व ही रह गया। अभी चेष्टा में दृढ़ता नहीं है, उद्योग में साहस नहीं है, मन में बल नहीं है, अपमान से घृणा नहीं है, दासत्व से अरुचि नहीं है। हृदय में प्रीति नहीं है और प्राण में आशा नहीं है और है क्या, केवल ईर्ष्या, स्वजाति-द्वेष, दुर्बलों का जैसे-तैसे नाश करने और कुत्तों की तरह चरण चाटने की विशेष इच्छा।"

विवेकानंद के अनुसार राष्ट्र व्यक्तियों से बनता है, अत: सब व्यक्तियों को अपने में पुरुषत्व, मानव गरिमा तथा सम्मान की भावना आदि श्रेष्ट गुणों का विकास करना चाहिए। वे चाहते थे कि सभी व्यक्ति और समूह कर्तव्यों और दायित्वों के पालन में ईमानदार हो। स्वामीजी ने स्वयं पर विश्वास करने की प्रेरणा दी।

उस समय में जब भारत उदासीनता, आलस्य और निराशा के घोर वातावरण में डूबा हुआ था, तब स्वामीजी के विचारों ने भारतवासियों में निर्भीकता और कर्मठता का संचार किया। स्वामीजी ने भारतवासियों को जहाँ स्वाधीनता प्राप्ति की आशा जाग्रत् की, वहीं उन्हें त्यागपूर्ण वृत्ति धारण करने की शिक्षा भी दी। सामाजिक व राष्ट्रीय एकता और सार्वजनिक कल्याण की प्राप्ति पर बल दिया। उनका विचार था कि भारत की दयनीय स्थिति का मूल कारण शिक्षा की कमी है। उनका मूल लक्ष्य एक 'विशुद्ध भारतीय शिक्षा पद्धति' का निर्माण करना था। अंग्रेजी के अध्ययन पर भी उन्होंने विशेष जोर दिया, ताकि सभी भारतीय इस संपर्क भाषा का लाभ उठाकर वर्तमान की वैज्ञानिक प्रगति के बारे में जान सकें और अपने विकास की राह को स्वयं के हाथों से बना सकें। इसके पीछे एक मुख्य कारण भी था कि भविष्य में इनको कोई और अपना गुलाम न बना सके।

स्वामी विवेकानंद यह भलीभाँति जानते थे कि संपूर्ण भारत के प्राण धर्म और अध्यात्मवाद में निवास करते हैं। धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त ऐसी बुराइयाँ हैं, जैसे—देवदासी प्रथा, पुजारीवाद और धार्मिक आतंक आदि को दूर करके वे धर्म और अध्यात्मवाद को भारत के पुनर्जागरण का मूल आधार बनाना चाहते थे। उनके शब्दों में—भारत में इधर-उधर फैली हुई आध्यात्मिक शक्तियों को एकत्र करके उसकी राष्ट्रीय एकता स्थापित की जानी चाहिए। समान आध्यात्मिक स्वर जिनके हृदयों में गूँजता है। उनकी एकता में ही भारत राष्ट्र होना चाहिए। इसमें कोई दो राय नहीं कि भारतीय पुनर्जारण के केंद्र में सांस्कृतिक चेतना का काफी योगदान रहा है, इसके पीछे यह कारण रहा है कि इससे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की दिशा निर्धारित होती है। कोई भी संस्कृति तब महान् कही जाती है, जब उसमें मानवता, आत्मा, सत्य, धर्म, परमार्थ, सामाजिक, सेवा-प्रेम-त्याग, संयम और उदारता को वरीयता दी जाए। परतंत्र भारतीयों के प्रसुप्त आत्मविश्वास को पुनर्जागरित करते हुए स्वामीजी कहते हैं—"इस एक बात को अच्छी तरह समझ लो कि जो मनुष्य दिन-रात यह सोचता रहता है कि मैं कुछ भी नहीं हूँ तो हमें उससे कोई आशा नहीं रखनी चाहिए। यदि कोई रात-दिन यह सोचता है कि मुझमें शक्ति है तो वास्तव में उसमें शक्ति आ जाएगी। यह एक महान् सत्य है, जिसे तुम्हें याद रखना चाहिए। हम उस सर्वशक्तिमान प्रभु की संतानें हैं, उस उन्नत ब्राह्म की चिनगारियाँ हैं। हम तुच्छ कैसे हो सकते हैं। हम सबकुछ हैं, हम 'अहं ब्रह्मा स्मि' सबकुछ करने को प्रस्तुत हैं और सबकुछ कर सकते हैं। हमारे पूर्वजों में ऐसा ही दृढ आत्मविश्वास था। इसी आत्मविश्वास की प्रेरणा शक्ति ने उन्हें सभ्यता की ऊँची-से-ऊँची सीढ़ी पर बैठाया था और अब यदि अवनति हुई है, यदि कोई दोष आ गया है तो तुम देखोगे कि इस अवनति का आरंभ उसी दिन से हो गया, जब से हम अपने इस आत्मविश्वास को खो बैठे।" आगे वह राष्ट्र के नौजवानों को स्वातंत्रता संग्राम में आत्माहुति हेतु प्रेरित करते हुए कहते हैं—"कलकत्ता निवासी युवको! उठो, जागो, शुभ मुहूर्त आ गया है। हिम्मत करो और डरो मत। उठो, जागो, संसार तुम्हें पुकार रहा है। भारत के अन्य भागों में बुद्धि है, धन भी है। परंतु उत्साह की आग केवल हमारी ही जन्मभूमि में है। उसे बाहर आना ही होगा। इसलिए कलकत्ते के युवको! अपने रक्त में उत्साह भरकर जागो। मत सोचो कि तुम गरीब हो। मत सोचो कि तुम्हारे मित्र नहीं हैं। अरे! क्या कभी तुमने देखा है कि रुपया मनुष्य का निर्माण करता है, नहीं। मनुष्य ही सदा रुपए का निर्माण करता है। यह संपूर्ण संसार मनुष्य की शक्ति से, उत्साह की शक्ति से, विश्वास की शक्तियों से निर्मित हुआ है, कलकत्ता अभिनंदन के अवसर पर स्वामीजी के निम्न उदगार उनकी राष्ट्रीयता का सबल प्रमाण है। मैं आप लोगों से इतना ही कह सकता हूँ कि मेरी प्रबल और आंतरिक इच्छा यह है कि मैं संसार की और सर्वोपरि अपने देश और देशवासियों की थोड़ी सी भी सेवा कर सकूँ।"

स्वामीजी के अंदर राष्ट्रवादी भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी, उन्हें भारत से बेहद प्रेम था। उन्होंने गर्व के साथ घोषणा की थी कि "यदि इस भूमंडल पर कोई देश ऐसा है, जो पुण्यभूमि कहलाने का अधिकारी है, जो अंतर्दर्शन और आध्यात्मिकता का देश है तो वह भारत है।" स्वामीजी ने लंका से अल्मोड़ा तक और बंगाल से राजस्थान तक भारतवासियों में राष्ट्रप्रेम को उभारने का प्रयत्न किया। स्वामीजी के भाषणों और प्रवचनों के माध्यम से भारत की प्राचीन गौरवगाथा को सुनकर भारतवासी रोमांचित हो गए। उन्हें आभास हुआ कि भारत की संस्कृति कितनी प्राचीन और सशक्त है, भारत के ऋषियों-मुनियों का चिंतन कितना अगाध है, भारत के दर्शन व धर्म की तुलना में पाश्चात्य दर्शन व धर्म कितना हेय है। अपने देश की महानता में विश्वास जाग्रत् होने से भारतवासियों में राष्ट्रीय स्वाभिमान जाग्रत् हुआ। जिसकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया यह हुई कि भारतीयों में शासनकर्ता अंग्रेजों के प्रति आदर व पूजनीयता का भाव समाप्त हुआ और आगे चलकर वे अपने देश की राजनीतिक मुक्ति हेतु संघर्ष करने को कटिबद्ध हो गए। और कभी भी पीछे मुड़कर भी नहीं देखा चाहे कितनी ही परेशानियों का सामना करना पड़ा हो, क्योंकि भारतवासियों के भीतर आत्मविश्वास जाग उठता था।

भारतवासियों में राष्ट्रीय स्वाभिमान का भाव जाग्रत् करने में स्वामी विवेकानंद का महान् योगदान १८९३ में संयुक्त राज्य अमेरिका के शिकागो नगर में आयोजित हुए 'विश्व धर्म सम्मेलन' में भाग लेना था। इस सम्मेलन के पहले तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रधान विचारधारा यह बनी हुई थी कि पश्चिमी राष्ट्र प्रत्येक दृष्टि में पूर्वी राष्ट्रों से बढ़कर है। शिकागो सम्मेलन में अपने ऐतिहासिक भाषण के द्वारा स्वामी विवेकानंद ने पाश्चात्य राष्ट्रों की महानता के व्यापक विचार को जड़ से हिला दिया। जब उन्होंने संपूर्ण विश्व के धर्मों के प्रतिनिधियों के समक्ष भारत के 'वेदांत दर्शन' की सर्वोपरिता को भलीभाँति प्रतिपादित कर प्रतिष्ठित किया। अमेरिका से भारत लौट आने के बाद स्वामी विवेकानंद ने भारतवासियों का इस बात के लिए आह्वान किया कि उनके देश को दुनिया में एक विशेष कार्य करना है और वह है पश्चिम की भौतिक सभ्यता का आध्यात्मीकरण। उनका विश्वास था कि शेष विश्व को भारत से आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करनी है। विवेकानंद ने भारतीयों को विश्वास दिलाया कि राष्ट्रीय जीवन के पुनरुत्थान का प्रथम चिह्न विस्तार है और भारत का विस्तार प्रारंभ हो गया है। जिसका प्रमाण उनके अमेरिका और यूरोप जाने तथा वहाँ हिंदू धर्म को प्रतिष्ठित करने से प्राप्त होता है। स्वामीजी ने राष्ट्रवादियों को अन्यायपूर्ण व्यवस्था का प्रतिकार करने के लिए शक्ति और निर्भयता का संदेश दिया। शक्ति के अभाव में अपने अधिकार एवं अस्तित्व की रक्षा करना असंभव

है। उनकी दृष्टि में शक्ति ही धर्म है। उनकी दृढ़ मान्यता थी कि स्वतंत्रता का प्रकाश विकास की एकमात्र पूर्व शर्त है। इसीलिए स्वामीजी युवकों को पूर्ण और दिव्य बनाने का स्वप्न देखते थे, ताकि वे एक अपूर्व शक्ति का संचार कर सके। विवेकानंद का मानना था कि हमारे युवक पहले स्वयं अपने भीतर अंतरनिहित मानव संभावनाओं तथा दिव्य संभावनाओं को व्यक्त करें और दूसरों को ऐसा करने में सहायता करें। स्वामीजी कहा करते थे—"जब तुम्हारी जीवात्मा प्रबुद्ध होकर सक्रिय हो उठेगी, तब तुम आप ही शक्ति का अनुभव करोगे, महिमा और महत्ता पाओगे, साधुता आएगी, पवित्रता भी आप ही चली आएगी। मतलब यह कि जो कुछ अच्छे गुण हैं, वे सभी तुम्हारे पास पहुँचेंगे। उत्तिष्ठत! जाग्रत्: ! प्राप्यवरन्तिबोधत्। अत: हे युवको! आत्म महिमा से प्रतिष्ठित होकर अदम्य उत्साह, पवित्रता एवं निष्काम भाव से दूसरों को आत्म-महिमा में प्रतिष्ठित कराओ।"

स्वामीजी का कहना था कि तुम्हारे देश को वीरों की आवश्यकता है, अत: वीर बनो। पर्वत की भाँति अडिग रहो। 'सत्यमेव जयते' सत्य की ही सदैव विजय होती है। भारत चाहता है कि एक नई विद्युत् शक्ति, जो राष्ट्र की नस-नस में नया संचार कर दे। साहसी बनो, मनुष्य तो एक बार ही मरता है, मेरे शिष्य कायर न हों, मुझे कायरता से घृणा है। गंभीर-से-गंभीर कठिनाइयों में भी अपना मानसिक संतुलन बनाए रखो, क्षुब्ध अबोध जीव तुम्हारे विरुद्ध क्या कहते हैं, इसकी तनिक भी परवाह न करो। पर्वतकाय विघ्न-बाधाओं से होते हुए भी सारे महान् कार्य संपन्न होते हैं। अपना पुरुषार्थ प्रकट करो। बल ही जीवन है और दुर्बलता मृत्यु। बल ही परम आनंद है, शाश्वत और अमर जीवन है। दुर्बलता निरंतर भारस्वरूप है, दु:खस्वरूप है। दुर्बलता ही मृत्यु है, बचपन से ही तुम्हारे मस्तिष्क में रचनात्मक, बलप्रद और सहायक विचार प्रवेश करें। मनुष्य तभी तक मनुष्य है, जब तक वह प्रकृति से ऊपर उठने के लिए संघर्ष करता रहता है।

स्वामीजी का राष्ट्रवाद केवल राष्ट्र का प्रशस्तिगान ही नहीं है। वे एक तरफ जहाँ भारत की आध्यात्मिक आभा से अभिभूत हैं, वहीं अपनी संस्कृति का आत्मालोचन भी करते हैं। मानो अंधविश्वास तो उन्हें छू भी नहीं सकता था। उनका कहना है कि भारत के पतन और दारिद्र्य दुःख का प्रधान कारण यह है कि घोंघे की तरह अपना सर्वस्व सिमेटकर उसने अपना कार्यक्षेत्र संकुचित कर लिया।

स्वामी विवेकानंद 'स्त्री शिक्षा' के विशेष हिमायती थे, वे स्त्रियों की उन्नति को राष्ट्र की उन्नति में एक महत्त्वपूर्ण भागीदार के रूप में देखते थे। उनके अनुसार स्त्रियों की जो वर्तमान दशा है, उससे उन्हें उन्मुक्त करना होगा, उनका उद्धार करना होगा, ऐसा करने से ही भारत की उन्नति व उसका कल्याण होगा। हमारे देश में स्त्रियों और पुरुषों में पर्याप्त अंतर दिखलाई पड़ता है, जो समझ से परे है। हम स्त्रियों की निंदा करते हैं, उनकी स्वतंत्रता बाधित करते हैं, उन्हें समान अवसर प्रदान नहीं करते हैं, इसलिए यह प्रश्न स्त्रियों की तरफ से संपूर्ण समाज के लिए है कि आप लोगों ने स्त्रियों की उन्नति के लिए क्या किया। जैसा कि सर्वविदित है कि जहाँ भी स्त्रियों का सम्मान व उनका आदर किया जाता है, वहाँ देवता रमण करते हैं और स्त्रियों की पूजा करके ही सभी जातियों ने विकास किया है। जिस देश में नारियों का सम्मान, उनकी पूजा नहीं होती, वह देश, वह जाति कभी उन्नति नहीं कर पाता है। अगर गंभीरता के साथ देखा जाए तो स्त्रियों की बहुसंख्यक समस्याएँ हैं, ये समस्याएँ सामान्य नहीं अपितु गंभीर हैं, जिसे बहुत हद तक शिक्षा के माध्यम से दूर किया जा सकता है। क्योंकि जब स्त्रियाँ शिक्षित होंगी तो निश्चय ही वे अपनी अनेक समस्याओं का समाधान स्वयं कर लेंगी। इसलिए आवश्यक है कि उन्हें शिक्षित करो और फिर उन्हें प्रगति की राह पर छोड़ दो। निश्चय ही उनसे आने वाला भविष्य सुखद होगा, क्योंकि जिस प्रकार एक सुशिक्षित स्त्री अपने परिवार को बहुत ही सुंदर ढंग से आगे बढ़ाती है, उसी प्रकार हजारों-लाखों स्त्रियाँ शिक्षित होकर देश की उन्नति को निश्चय ही आगे ले जाएँगी। शिक्षित स्त्रियाँ अपने संतानों को देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए तैयार कर सकेंगी और देश में विद्या, ज्ञान, शक्ति और भक्ति का भाव जाग्रत् होगा। क्योंकि स्त्रियाँ ही प्रकृति का रूप है और प्रकृति का विकास ही स्वयं के उन्नति की राह है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, 'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम् तथा नायमात्मा वलहीनेनलम्य:' अर्थात् धर्म साधना का आधार उन्होंने राष्ट्रीय जीवन को सर्वश्रेष्ठ माना है। अत: शिक्षा द्वारा लोगों में राष्ट्रीय गुण विकसित करना चाहिए। राष्ट्रीय गुणों से युक्त व्यक्ति ही हँसते-हँसते अपने हृदय का रक्त देश के कल्याणार्थ बहा देने हेतु सदैव उद्यत रहता है। व्यक्ति में राष्ट्रभक्ति तथा देशभक्ति की भावना तब तक प्रबल न होगी, जब तक उसकी अज्ञानता तथा गरीबी मिटाने हेतु शिक्षा की अनिवार्य व्यवस्था न हो। उन्होंने लोगों से राष्ट्रीय भावना के साथ वे लोगों में मानवीय दृष्टिकोण भी विकसित करना चाहते थे। उन्होंने विश्व के लोगों में 'वेदांत दर्शन' के माध्यम से विश्व बंधुत्व, विश्व मैत्री का प्रचार-प्रसार बहुजन सुखाय, बहुजन हिताय किया तथा उसे स्थायी स्वरूप देने हेतु 'वेदांत सोसाइटी' की स्थापना विश्व के कई देशों में की।

स्वामीजी का राष्ट्रवाद केवल राष्ट्र का प्रशस्तिगान ही नहीं है। वे एक तरफ जहाँ भारत की आध्यात्मिक आभा से अभिभूत हैं, वहीं अपनी संस्कृति का आत्मालोचन भी करते हैं। मानो अंधविश्वास तो उन्हें छू भी नहीं सकता था। उनका कहना है कि भारत के पतन और दारिद्र्य दु:ख का प्रधान कारण यह है कि घोंघे की तरह अपना सर्वस्व सिमेटकर उसने अपना कार्यक्षेत्र संकुचित कर लिया। हमारे पतन का एक और प्रधान कारण यह भी है कि हम लोगों ने बाहर जाकर दूसरे राष्ट्रों से अपनी तुलना नहीं की और तुम लोग जानते हो कि जिस दिन से राजा राममोहनराय ने संकीर्णता की यह दीवार तोड़ी, उसी दिन से भारत में थोड़ा सा जीवन दिखाई देने लगा, जिसे आज तुम देख रहे हो। उसी दिन से भारत के इतिहास ने एक नया मोड़ लिया और इस समय वह क्रमश: उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। अतीत काल में यदि छोटी नदियाँ ही यहाँ के लोगों ने देखी हो तो समझना कि अब बहुत बड़ी बाढ़ आ रही है और कोई भी उसकी गति को रोक न सकेगा। अत: तुम्हें विदेश जाना होगा। आदान-प्रदान ही अभ्युदय का रहस्य है। क्या हम

दूसरों से सदा लेते ही रहेंगे? क्या हम लोग सदा ही पश्चिम वासियों के पद प्रांत में बैठकर ही सब बातें यहाँ तक कि धर्म भी सीखेंगे? हाँ, हम उन लोगों से कल-कारखानों के काम सीख सकते हैं और भी दूसरी बहुत सी बातें सीख सकते हैं, परंतु हमें भी उन्हें कुछ सिखाना होगा और वह है हमारा धर्म। हमारी आध्यात्मिकता। संसार सर्वांगीण सभ्यता की अपेक्षा कर रहा है।

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' को अपने जीवन का महामंत्र मानने वाले स्वामीजी की राष्ट्रीय भावना का परिचय उन्हीं के शब्दों पश्चिमी देशों से लौटने के कुछ ही समय पहले एक अंग्रेज मित्र ने मुझसे पूछा था स्वामीजी! चार वर्षों तक विलास की लीलाभूमि गौरवशाली महाशक्तिमान पश्चिमी भूमि पर भ्रमण कर चुकने के बाद आपकी मातृभूमि अब आपको कैसे लगेगी? मैं बस यही कह सका। पश्चिम से आने से पहले भारत को मैं प्यार ही करता था, अब तो भारत की धूलि भी मेरे लिए पवित्र है। भारत की हवा अब मेरे लिए पावन है। भारत अब मेरे लिए तीर्थ है। भारत ही मेरी आत्मा का प्राण है, जो मेरे रोम-रोम में बसा हुआ है, भारत की उन्नति करना ही मेरा ध्येय है।

अत: हम समग्र रूप से कह सकते हैं कि स्वामी विवेकानंदजी का पूर्ण जीवन भारत और भारतवासियों के विकास के लिए समर्पित था। उन्होंने भारतीय संस्कृति को गहराई से समझने की प्रेरणा दी और उसे आधुनिकता के संदर्भ में पुनर्विचार किया। उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति और धार्मिकता में विशेषता है, जो आधुनिक युग में भी विश्व के लिए एक प्रेरणास्रोत हो सकती है। उन्होंने भारतीय धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं को व्यापक फलक पर प्रचारित-प्रसारित किया और उन्हें आधुनिक विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया। साथ ही राष्ट्रीय चेतना को जागरूक करने के लिए भी पूर्ण उत्साह दिखाया। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीयता के उन विभिन्न पहलुओं को समझाया और यहाँ तक कि उन्होंने राष्ट्र के प्रति भारतीय युवा समुदाय को अपने विचारों से प्रेरित भी किया। उनका विचार था कि राष्ट्रीयता और संस्कृति के माध्यम से ही एक राष्ट्र का विकास संभव है।

इस प्रकार स्वामी विवेकानंदजी ने भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का एक नवीन प्रस्तुतीकरण किया।

गली नं. १०, विकास अपार्टमेंट,
राजनगर-२, दिल्ली-११००४५
दूरभाष : ९१२३१८६६०१

प्रायश्चित्त

लघुकथा

● देवेंद्र कुमार मिश्रा

गुनाह हो चुका था उससे, लेकिन किसी ने देखा नहीं था। रात के वक्त तेज गति से आती उसकी गाड़ी से कोई टकरा गया था। जब चीखने की आवाज आई तो उसने गाड़ी के ब्रेक लगाए, वह जैसे नींद से जागा था।

गाड़ी की हेड लाइट में उसे एक घायल पुरुष और रोड के पास गिरी स्त्री दिखाई दी। डर के मारे उसने मदद करने की बजाय अपनी कार को शहर की तरफ दौड़ा दिया था। पहले तो उसे इत्मीनान हुआ कि उसके खिलाफ कोई गवाह, सबूत नहीं है, लेकिन फिर वह अपराध-बोध से ग्रस्त हो गया। अखबार में उसने पढ़ा कि हाइवे पर रात में एक्सीडेंट हो गया है, जिसमें श्रमिक बुरी तरह से घायल है और उसकी पत्नी को मामूली चोट आई है। वह सोचने लगा कि अब इस परिवार का क्या होगा। जितने दिन आदमी घर पर है, मजदूरी नहीं मिलेगी, फिर उसने कुछ सोचा और तलाश करते हुए उनके घर की ओर चल पड़ा। उसने कहा, "मेरे पास अनाज है, आप अपने घर के बाहर बैठकर बेचो, मुनाफा तुम्हारा।" "लेकिन इसमें तुम्हारा क्या फायदा?" वह कुछ देर चुप रहा, फिर सोचते हुए बोला, "कंपनी अपना अनाज बेचने के लिए गाँव-गाँव विक्रेता नियुक्त कर रही है। कंपनी का फायदा बिक्री के बाद, अभी तो अपना बाजार बना रही है।" किंतु इतने सस्ते में?"

खैर, बात तै हो गई, वह यानी एक्सीडेंट करने वाला लड़का बड़े बाप का बेटा श्याम रोज आता, दस किलो चावल देता, शाम तक सब बिक जाता। वह उन्हें कमीशन देता और शेष बिक्री के पैसे जमा कर देता बूढ़ी अम्मो के पास कि जब कंपनी माह में हिसाब करेगी, तब आपको देना होगा। यह क्रम एक माह चला, श्याम ने देख लिया कि अब दोनों पति-पत्नी ठीक हो गए हैं तो उसने आना बंद कर दिया, लेकिन मन पर अभी भी गुनाह का बोझ था। वह पुलिस स्टेशन गया, सारी बात बताई। पुलिस ने वृद्ध दंपत्ती को बुलाया और कहा, "यही आदमी है, जिसने तुम्हें टक्कर मारी थी।" वृद्ध दंपती सारा माजरा समझ गए। उन्होंने कहा, "नहीं यह नहीं है और मुझे कोई केस नहीं करना है, टक्कर मारने वाले को मैंने देखा था, यह वह नहीं है।" वृद्ध दंपती ने थाने के बाहर आकर रोते हुए श्याम से कहा, "बेटा, तुम्हारा प्रायश्चित्त पूरा हो गया, हम ठीक हैं। मैंने तो तुम्हें उसी दिन पहचान लिया था, लेकिन मैं देखना चाहता था, क्या है तुम्हारे मन में, मैंने तुम्हें माफ किया। अब यह बताओ, कमीशन तो मेरा हो गया, लेकिन बिक्री की वह कमाई का क्या करें?" श्याम की आँखों में आँसू आ गए। उसनें कहा, "जब मेरे जैसे किसी व्यक्ति से कोई जख्मी हो जाए तो जब तक वह काम करने लायक न हो, उसके घर भोजन का इंतजाम कर देना, वह धन आपका है।" श्याम की आँखों में अब भी आँसू थे। वृद्ध दंपती आशीष देकर जा चुके थे। वृद्धा ने पूछा, "तुमने उनके आँसू क्यों नहीं पोंछ दिए?" वृद्ध ने कहा, "वे प्रायश्चित्त के आँसू हैं, उनका बह जाना जरूरी है।"

ए-२९, फर्स्ट फ्लोर,
राजुल ड्रीम सिटी, अमखेरा रोड,
जबलपुर-४८२००४ (म.प्र.)

इन ए सेकंड

मूल : **के.वी. तिरुमलेश**

अनुवाद : **डी.एन. श्रीनाथ**

सुप्रसिद्ध कन्नड़ कवि, कहानीकार और समीक्षक श्री के.वी. तिरुमलेश का जन्म १९४० में हुआ। हैदराबाद के.सी.आई.ई.एफ.एल. कॉलेज में प्राध्यापक रहे। कन्नड़ में तिरुमलेश नव्य कवि और कहानीकार के रूप में जाने जाते हैं। मुखवाडगलु, वठारा, अवधा, सम्मुख आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। सरकारी सेवा से निवृत्त होने के बाद अब स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं। यहाँ हम उनकी कन्नड़ की चर्चित दो लघुकथाओं का हिंदी रूपांतर प्रस्तुत कर रहे हैं।

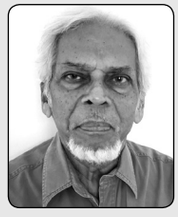

मेरा पुराना दोस्त तानसेन बैंगलोर चला गया और वहाँ एक छोटी सी कपड़े की दुकान खोल ली। जब वह पहली बार गाँव आया तो उसके चेहरे पर खुशी नहीं थी।

"अरे भाई, तुम्हारा बिजिनेस कैसा है?" मैंने उसके हाल-चाल पूछने की कोशिश की।

"चल रहा है।" उसकी आवाज में भारीपन था, "देखो भाई, बैंगलोर जैसे बड़े शहर में छोटे दुकानदारों को कोई पूछता ही नहीं।"

"तो वापस आ जाओ, यहीं दुकान खोल दो।"

"देखता हूँ। और एक साल इंतजार करूँगा। बिजिनेस मंदा रहा तो वापस आ जाऊँगा।"

इधर तानसेन जब गाँव आया तो बड़ा खुश था।

"कैसे हो, भाई? क्या हालचाल है?" मैंने पूछा।

"फिलहाल बिजिनेस अच्छा चल रहा है।"

फिर उसने जो कहानी कही, वह इस प्रकार है—

पहले उसकी दुकान का नाम था, 'कमलम्मा क्लाथ सेंटर'। कमलम्मा उसकी माता थी, जो मर गई थी। उनकी एक तसवीर को उसने दुकान में रखा था। एक कुत्ता भी उधर से गुजरता नहीं था। एक बार उसने शहर में एक नया ट्रेंड देखा। युवा वर्ग पुराने कपड़ों के शौकीन हो रहे थे। फटा पैंट, डेनीम कपड़े, जो धुँधले हो गए थे, गंदे शर्ट्स, छिद्र-छिद्र बनियान—ऐसी चीजों की माँग ज्यादा थी। तानसेन ने सोचा कि मैं क्यों न पुराने कपड़ों का व्यापार करूँ? एक दोस्त के सुझाव के अनुसार दुकान का नाम 'इन ए सेकंड' में बदल दिया। एक युवक की तसवीर, जो फटा-पुराना कपड़ा पहना हुआ था, दुकान के आगे खड़ा किया। पुराने कपड़ों को जमा करने की व्यवस्था कर ली। फटे और पुराने कपड़ों को भिखारियों और दरिद्रों से पैसे देकर ले लिया। देखते-ही-देखते व्यापार में तरक्की होने लगी। भिखारियों के गंदे कपड़ों को अमीर युवक ज्यादा पैसे देकर खरीदते थे; उन्हें पहनकर धन्यता का भाव महसूस करते थे।

तानसेन ने कहा, "यह आश्चर्य की बात है न? अब मैं बिजिनेस के सिलसिले में ही गाँव आया हूँ। गाँवों में पुराने कपड़ों के बारे में उपेक्षा और घृणा होती है। मैं उन्हीं कपड़ों को इकट्ठा करने के लिए आया हूँ। तुम्हारे पास भी पुराने और फटे हुए बनियान, शर्ट, पैंट, चड्डी, अंडरवीयर हों तो…"

"अंडरवीयर?"

"उसके लिए भी डिमांड है; किसी-किसी को इंप्रेस करने के लिए लेकर जाते हैं!"

"मेरे पास एक डेनीम पैंट है, जो पुराना हो गया है। मैं सोच रहा था, किसे दूँ? उसे फेंकने का मन नहीं हो रहा है।"

"मुझे दे दो। मुझे वैसे ही कपड़े चाहिए।"

"कैसे दूँ, उसका पिछला हिस्सा फटा हुआ है।"

"यानी पृष्ठ फटा हुआ है? वंडरफुल! उसके जितने पैसे माँगते हो, दे दूँगा।"

"तुम्हें कुछ भी देना नहीं है, बस उस डेनीम पैंट को लेते जाओ।"

"फटा हुआ बनियान और अंडरवीयर?"

"दो-तीन हैं, डोसा की तरह उनमें भी छेद हैं।"

"उनकी सोने जैसी कीमत है!"

"मगर अभी तक उन्हें साफ नहीं किया गया है, उनसे दुर्गंध आ रही है।"

"देखो, उनसे जितना दुर्गंध आएगा, उतना ज्यादा पैसा मिलेगा; पसीने की दुर्गंध, मिट्टी का गंध अब पहले की तरह नहीं है। वे मुझे चाहिए।"

"दुर्गंध के लिए इतना डिमांड? मुझे समझ में नहीं आया।"

"क्योंकि उस प्रकार के सेकंड हैंड कपड़े ज्यादा ताजा और ज्यादा जिनाइन होते हैं, इसलिए!" तानसेन ने सहजता से कहा।

"बेस्ट ऑफ लक, ले लो सबकुछ!" मैंने उसे सभी पुराने कपड़े दे दिए।

तानसेन इतने से संतुष्ट नहीं हुआ। घर के कोने में चप्पल पड़े थे। उसकी ओर इशारा करते हुए पूछा, "उसे दोगे?"

"एक का अँगूठा फटा हुआ है तो दूसरे का आगे से थोड़ा फटा हुआ है!"

"फटा हुआ है! वही मुझे चाहिए!" तानसेन और ज्यादा खुश हुआ।

वही काम

चित्रगुप्त के ऑफिस के द्वारा ही परलोक के लिए प्रवेश संभव है। पता चला कि स्वर्ग और नरक व्यर्थालाप है। तो सिर्फ परलोक और वह भूलोक के जैसा ही है, मगर कुछ वैपरीत्य के साथ।

जब मेरी बारी आई तो आगे बढ़ा। मेरे पीठ पीछे चलमेशी खड़ा था। उसे आतुरता थी कि मुझे क्या सजा मिलेगी! भूलोक में हम दोनों एक छात्रालय में रसोइए थे। आग की एक दुर्घटना में हम दोनों एक साथ मर गए थे।

"नाम?" एक क्लर्क ने पूछा। मगर चित्रगुप्त मेरी ओर देखा भी नहीं। वह एक मोटे सोफा में अधलेटा था।

क्लर्क को अपना नाम बताया।

"उम्र?"

"चालीस।"

"यहाँ चैन से रहूँगा, यह सोचकर आए हो?"

"नहीं, आग की दुर्घटना से जलकर राख हो गया, तभी आया।"

"एक बहाना है।" क्लर्क ने गुनगुनाया।

"यहाँ काम करना पड़ेगा, यों ही बैठना नहीं चाहिए।"

"ठीक है, मैं काम करने के लिए तैयार हूँ।" मैंने कहा।

"गाँव में क्या काम कर रहे थे?"

"खाना बनाता था।"

"ठीक है, वही काम यहाँ भी करो।" क्लर्क ने एक कागज पर लिखा और चित्रगुप्त का हस्ताक्षर कराया। फिर उस पर मुहर लगाकर मेरे हाथ में देते हुए कहा, "अंदर जाकर इसे दिखाओ, काम तुरंत आरंभ हो जाएगा।"

मैंने कागज ले लिया और चलमेशी की ओर देखते हुए कहा, "अंदर इंतजार करता हूँ।" फिर मैं अंदर गया। कुछ देर बाद चलमेशी आया और मेरे पास खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर मुसकान थी।

"क्या बात है, क्यों हँस रहे हो?" मैंने चलमेशी से पूछा।

"मुझे रसोईघर के सुपरवाइजर का काम मिला है!" उसने कागज दिखाया। उसमें 'चलमेशी, मेस सुपरवाइजर' लिखा गया था। उसपर चित्रगुप्त का हस्ताक्षर और मुहर लगाया गया था। मुझे आश्चर्य हुआ। भूलोक में यह मेरे अधीन काम करता था। काम क्या करता? बड़ा आलसी था। सब काम मैं ही करता था।

"मैंने तुम्हारी बातें सुन ली।" कहते हुए चलमेशी हँसने लगा।

भूलोक में मृत्यु का इंतजार तो था, यहाँ वह भी नहीं है, सोचकर मैं उदास हो गया। मगर किससे कहूँ?

जाने-माने लेखक-अनुवादक। कन्नड़-हिंदी में परस्पर अनुवाद। अब तक १०० पुस्तकें प्रकाशित। साहित्य अकादेमी का अनुवाद पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सौहार्द सम्मान, कर्नाटक साहित्य अनुवाद अकादेमी का पुरस्कार, कमला गोइंका अनुवाद पुरस्कार, गोरूर पुरस्कार, विश्वेश्वरैया साहित्य पुरस्कार आदि पुरस्कारों से पुरस्कृत।

'नवनीत'
दूसरा क्रॉस, अन्नाजी राव लेआउट,
प्रथम स्टेज, विनोबानगर,
शिवमोगा-५७७२०४ (कर्नाटक)
दूरभाष : ०९६११८७३३१०

लेखकों से अनुरोध

- मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
- रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।
- पूर्व स्वीकृति बिना लंबी रचना न भेजें।
- केवल साहित्यिक रचनाएँ ही भेजें।
- प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें; साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
- डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें।
- किसी अवसर विशेष पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम तीन माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।
- रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

हिंदी भाषा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

• नितीन कुंभार

आधुनिक डिजिटल युग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) तकनीकें तेजी से हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में प्रवेश कर रही हैं। इन तकनीकों के उपयोग से न केवल व्यवसाय और विज्ञान में क्रांति आ रही है, बल्कि भाषा और संचार के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण बदलाव हो रहे हैं। हिंदी, जो भारत की एक प्रमुख भाषा है और दुनिया भर में करोड़ों लोगों द्वारा बोली जाती है, इस तकनीकी परिवर्तन का एक केंद्रीय हिस्सा बन गई है।

हिंदी भारत की राजभाषा है और इसके अलावा यह कई देशों में प्रमुख रूप से बोली जाती है। यह न केवल सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि आज के समय में भी इसका एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक प्रभाव है। हिंदी का साहित्य, मीडिया, शिक्षा और सरकारी कामकाज में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

ए.आई. की तकनीकें भाषा की समझ और प्रसंस्करण में क्रांतिकारी बदलाव ला रही हैं। हिंदी भाषा में ए.आई. की तकनीकों का उपयोग विभिन्न तरीकों से किया जा रहा है—

१. भाषाई अनुवाद : ए.आई. आधारित अनुवाद टूल्स, जैसे Google Translate, ने हिंदी में अनुवाद की प्रक्रिया को सहज और सटीक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह वैश्विक संचार को सरल बनाता है और हिंदी भाषी लोगों को अन्य भाषाओं में उपलब्ध सामग्री को समझने में सहायता करता है।

२. संवादात्मक ए.आई. : हिंदी में चैटबॉट्स और वॉयस असिस्टेंट्स का विकास, जैसे कि Google Assistant और Amazon Alexa, ने उपयोगकर्ताओं के लिए नई और सरल संवादात्मक विधियाँ प्रदान की हैं। ये ए.आई. उपकरण हिंदी में स्वाभाविक और प्रभावशाली संवाद को सक्षम बनाते हैं, जिससे तकनीकी इंटरफेस अधिक सुलभ और उपयोगकर्ता मित्रवत् होते हैं।

३. स्वाभाविक भाषा प्रसंस्करण (NLP) : ए.आई. की NLP तकनीकें हिंदी के पाठ को समझने और विश्लेषित करने में सहायक होती हैं। इससे हिंदी में पाठ विश्लेषण, भावना विश्लेषण और सामग्री सारांशण में सुधार हुआ है, जो विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए लाभकारी है।

नवोदित लेखक। अब तक मोबाइल में हिंदी भाषा के अनुप्रयोग, शोक सभा (अनुवाद), हिंदी साहित्य का इतिहास एवं अन्य ग्रंथों में आलेख प्रकाशित। ब्लॉग पर अनेक आलेख प्रकाशित।

महत्त्व और प्रभाव

१. शिक्षा और प्रशिक्षण : ए.आई. के माध्यम से हिंदी में उपलब्ध शिक्षा सामग्री और प्रशिक्षण संसाधनों की गुणवत्ता और पहुँच में सुधार हो रहा है। इ-लर्निंग प्लेटफॉर्म्स और स्मार्ट ट्यूटरिंग सिस्टम्स हिंदी में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, जो शिक्षा की समानता और सुलभता को बढ़ावा देते हैं।

२. सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव : ए.आई. और हिंदी का संगम समाज और संस्कृति में भी बदलाव ला रहा है। यह हिंदी भाषी समुदाय को नए डिजिटल अनुभव प्रदान करता है और सांस्कृतिक सामग्री के प्रसार को बढ़ाता है।

३. व्यापार और सेवाएँ : हिंदी में ए.आई. आधारित सेवाओं का विकास व्यवसायों के लिए नए अवसर उत्पन्न कर रहा है। ग्राहक सेवा, विपणन और डेटा विश्लेषण में ए.आई. के उपयोग से कंपनियाँ हिंदी भाषी बाजार में अपनी उपस्थिति को मजबूत कर सकती हैं।

हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

• **प्रारंभिक विकास :** हिंदी की जड़ें संस्कृत भाषा में पाई जाती हैं और यह भारतीय उपमहाद्वीप की एक प्राचीन भाषा है। हिंदी का विकास प्राकृत भाषाओं, विशेषकर अपभ्रंश, के माध्यम से हुआ।

• **मध्यकालीन काल :** हिंदी का मध्यकालीन विकास भक्ति आंदोलन और सूफी परंपराओं के साथ हुआ। इस दौरान हिंदी साहित्य में कवियों, जैसे कबीर, तुलसीदास और मीराबाई ने महत्त्वपूर्ण योगदान किया। इन कवियों की रचनाएँ आम जनमानस के बीच भाषा और संस्कृति को प्रसारित करने में सहायक रहीं।

• **आधुनिक काल :** ब्रिटिश काल के दौरान हिंदी ने औपनिवेशिक शासन के प्रभाव को झेला, लेकिन इसके साथ ही हिंदी ने स्वतंत्रता आंदोलन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं ने हिंदी को एक प्रमुख भाषाई और सांस्कृतिक पहचान के रूप में स्वीकार किया।

हिंदी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

• **साहित्य और कला :** हिंदी साहित्य का समृद्ध इतिहास है, जिसमें काव्य, उपन्यास, नाटक और कहानी शामिल हैं। हिंदी में रवींद्रनाथ ठाकुर, प्रेमचंद और महादेवी वर्मा जैसे लेखकों ने विश्व साहित्य को अमूल्य योगदान दिया है। हिंदी में बनी फिल्में, संगीत और रंगमंच ने भी सांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया है।

• **त्योहार और परंपराएँ :** हिंदी भाषा का उपयोग भारतीय त्योहारों, जैसे दीपावली, होली और गणेश चतुर्थी की धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में होता है। हिंदी की विविध बोलियाँ और क्षेत्रीय रूप इन त्योहारों और परंपराओं को स्थानीय विशेषताओं के साथ दरशाते हैं।

• **लोककला और साहित्य :** हिंदी की लोककला, जैसे कि कविता, गीत और नृत्य, भारतीय लोक संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। इन सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से हिंदी समाज की सांस्कृतिक विविधता और रंगीनता को दरशाया जाता है।

भाषाई पृष्ठभूमि

• **लिपि और व्याकरण :** हिंदी भाषा देवनागरी लिपि का उपयोग करती है, जो भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न भाषाओं द्वारा साझा की जाती है। हिंदी का व्याकरण संस्कृत के आधार पर विकसित हुआ है और इसमें संज्ञा, क्रिया, विशेषण और वाक्य संरचना की स्पष्ट प्रणाली है।

• **भाषाई विविधता :** हिंदी की कई बोलियाँ और उपभाषाएँ हैं, जैसे कि बृजभाषा, अवधी और खड़ी बोली। इन बोलियों की भिन्नताएँ हिंदी की सांस्कृतिक विविधता और भाषाई समृद्धि को दरशाती हैं।

• **विकास और मानकीकरण :** हिंदी का मानकीकरण और आधिकारिककरण स्वतंत्रता के बाद हुआ। भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३४३ के तहत हिंदी को एक राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई और इसे सरकारी कार्यों और शिक्षा में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

हिंदी एक समृद्ध और विविध भाषा है, जिसकी कई बोलियाँ, लिपियाँ और क्षेत्रीय भिन्नताएँ हैं। यह भाषाई विविधता हिंदी के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विकास का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

१. हिंदी की बोलियाँ : हिंदी की बोलियाँ विभिन्न भौगोलिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में विकसित हुई हैं। इन बोलियों में कुछ प्रमुख हैं :

• **खड़ी बोली :** यह हिंदी का मानक रूप है और इसे मुख्य रूप से उत्तर भारत के शहरों और शहरी क्षेत्रों में बोला जाता है। यह देवनागरी लिपि में लिखी जाती है और आधुनिक हिंदी का आधार है।

• **ब्रजभाषा :** यह हिंदी की एक पुरानी बोली है, जो मुख्यत: उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र में बोली जाती है। यह काव्यात्मक साहित्य के लिए प्रसिद्ध है और इसे भगवान् कृष्ण के भक्ति गीतों में भी देखा जा सकता है।

• **अवधी :** यह उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में बोली जाती है। इसे ऐतिहासिक साहित्य, जैसे कि तुलसीदास की रामचरितमानस में महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है।

• **बुंदेली :** यह बुंदेलखंड क्षेत्र में बोली जाती है और इसे बुंदेलखंड की संस्कृति और लोकगीतों में देखा जा सकता है।

• **राजस्थानी :** इसे राजस्थान के विभिन्न हिस्सों में बोला जाता है और इसमें कई उपभाषाएँ शामिल हैं, जैसे मारवाड़ी, मेवाती और हरियाणी। हालाँकि राजस्थानी का अपना एक अलग साहित्य और परंपरा है, यह हिंदी की उपभाषाओं के अंतर्गत भी आ सकती है।

२. हिंदी की लिपियाँ : हिंदी मुख्यत: देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, लेकिन इसके अलावा भी कई अन्य लिपियों का उपयोग किया गया है—

• **देवनागरी लिपि :** यह हिंदी की प्रमुख लिपि है और इसमें ११ स्वर और ३३ व्यंजन होते हैं। देवनागरी लिपि का उपयोग न केवल हिंदी, बल्कि संस्कृत, मराठी और नेपाली जैसी भाषाओं में भी किया जाता है।

• **उर्दू लिपि :** हिंदी की कुछ बोलियाँ, विशेषकर उर्दू, को अरबी-फारसी लिपि में लिखा जाता है। उर्दू और हिंदी की भाषाई समानताओं के कारण यह लिपि भी हिंदी के साहित्य और संवाद में शामिल होती है।

• **गुरमुखी लिपि :** यह पंजाब में पंजाबी बोलने वालों द्वारा प्रयोग की जाती है। हालाँकि मुख्य रूप से पंजाबी के लिए है, कुछ क्षेत्रों में यह हिंदी लेखन के लिए भी उपयोग की गई है।

३. क्षेत्रीय भिन्नताएँ : हिंदी की क्षेत्रीय भिन्नताएँ उसकी विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि को दरशाती हैं :

• **उत्तर भारत :** उत्तर प्रदेश, बिहार और दिल्ली में हिंदी का मानक रूप और उसकी बोलियाँ प्रमुख हैं। इन क्षेत्रों में खड़ी बोली और अवधी जैसी बोलियाँ प्रमुख हैं।

• **मध्य भारत :** मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में हिंदी की बोली में स्थानीय प्रभाव देखने को मिलता है और यहाँ बुंदेली और अन्य क्षेत्रीय बोलियाँ प्रचलित हैं।

• **राजस्थान :** राजस्थान में हिंदी की कई बोलियाँ हैं, जैसे राजस्थानी, मेवाती और मारवाड़ी। ये बोलियाँ स्थानीय संस्कृति और परंपराओं से प्रभावित हैं।

• **पूर्वी भारत :** बिहार और झारखंड में हिंदी की बोलियाँ और क्षेत्रीय भाषाएँ, जैसे मैथिली और भोजपुरी भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

● **दक्षिण भारत :** दक्षिण भारत के हिंदीभाषी क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग सीमित है, लेकिन यहाँ हिंदी की समझ और उपयोग बढ़ रहा है, विशेषकर शहरी और व्यावसायिक संदर्भों में।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) का परिचय

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) एक उन्नत तकनीकी क्षेत्र है, जो कंप्यूटरों और मशीनों को मानव जैसे बुद्धिमत्ता वाले कार्यों को करने की क्षमता प्रदान करता है। "ए.आई. का उद्देश्य मशीनों को उन क्षमताओं से लैस करना है, जो सामान्यत: मानव मस्तिष्क द्वारा की जाती हैं, जैसे कि समझना, सीखना, निर्णय लेना और समस्याओं को हल करना।"

१. ए.आई. की परिभाषा और मूल बातें

● **परिभाषा :** ए.आई. उन तकनीकों और विधियों का समूह हैं, जो मशीनों को सोचने, समझने और सीखने की क्षमता प्रदान करता है। इसका मुख्य उद्देश्य मशीनों को इस तरह से डिजाइन और विकसित करना है कि वे मानव बुद्धिमत्ता की कुछ विशेषताओं को अनुकरण कर सकें।

● **मूल बातें :** ए.आई. की तकनीकें कंप्यूटर विज्ञान, गणित, सांख्यिकी और न्यूरोसाइंस जैसे विभिन्न क्षेत्रों से प्रेरित हैं। इसका उद्देश्य मशीनों को तर्कशक्ति, आत्म-अध्ययन और स्वायत्तता प्रदान करना है।

२. ए.आई. के प्रकार

ए.आई. को मुख्यत: दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है—

● **संकीर्ण ए.आई. (Narrow AI) :** इसे 'विशेषीकृत ए.आई.' भी कहा जाता है। यह ए.आई. की एक प्रकार की प्रणाली है, जो एक विशिष्ट कार्य या समस्या को हल करने के लिए डिजाइन की जाती है। उदाहरण के लिए, वॉयस असिस्टेंट्स (जैसे Sire और Google Assistant), चैटबॉट्स और सिफारिशी सिस्टम्स।

● **सामान्य ए.आई. (General AI) :** यह एक प्रकार की ए.आई. है, जो मानव जैसी बुद्धिमत्ता को अनुकरण करने का प्रयास करती है, "एक ऐसी मशीन जो किसी भी बौद्धिक कार्य को मानव की तरह समझने और उसे कार्यान्वित करने में सक्षम हो। वर्तमान में सामान्य ए.आई. विकास के प्रारंभिक चरण में है और इसका कोई पूर्ण रूप नहीं है।"

३. ए.आई. की तकनीकें

● **मशीन लर्निंग (Machine Learning) :** यह ए.आई. की एक तकनीक है, जिसमें कंप्यूटरों को डेटा से सीखने और अनुभव के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता दी जाती है। मशीन लर्निंग के प्रमुख उपक्षेत्र हैं :

- सुपरवाइज्ड लर्निंग : इसमें मशीन को पहले से लेबल किए गए डेटा पर प्रशिक्षित किया जाता है।
- अनसुपरवाइज्ड लर्निंग : इसमें मशीन को डेटा में पैटर्न और संरचनाओं को स्वायत्त रूप से पहचानने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।
- रीइन्फोर्समेंट लर्निंग : इसमें मशीन को एक पर्यावरण के साथ इंटरैक्ट करने और अपने अनुभव के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता दी जाती है।

● **डीप लर्निंग (Deep Learning) :** यह मशीन लर्निंग की एक उपशाखा है, जो न्यूरल नेटवर्क्स के उपयोग पर आधारित है। इसमें कई परतों (layers) का उपयोग किया जाता है, जिससे मशीन जटिल पैटर्न और विशेषताओं को समझ और सीख सकती है।

● **नैचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) :** यह ए.आई. की एक तकनीक है, जो मशीनों को मानव भाषा को समझने, विश्लेषित करने और उत्पन्न करने में सक्षम बनाती है। इसका उपयोग वॉयस असिस्टेंट्स, ट्रांसलेशन टूल्स और पाठ विश्लेषण में किया जाता है।

● **कंप्यूटर विजन (Computer Vision) :** यह ए.आई. की तकनीक है, जो मशीनों को चित्रों और वीडियो से डेटा निकालने और समझने की क्षमता प्रदान करती है। इसका उपयोग चेहरा पहचानने, वस्त्र पहचानने और स्वायत्त वाहनों में किया जाता है।

४. ए.आई. के उपयोग और अनुप्रयोग

● **स्वास्थ्य देखभाल :** ए.आई. का उपयोग मेडिकल इमेजिंग, रोग पहचान और इलाज योजनाओं के विकास में किया जाता है।

● **वित्तीय क्षेत्र :** ए.आई. का उपयोग ट्रेडिंग, क्रेडिट स्कोरिंग और धोखाधड़ी की पहचान में किया जाता है।

● **विपणन और बिक्री :** ए.आई. का उपयोग ग्राहक व्यवहार की भविष्यवाणी, विज्ञापन लक्ष्यीकरण और ग्राहक सेवा में किया जाता है।

● **स्वायत्त वाहन :** ए.आई. तकनीकों का उपयोग ड्राइवरलेस कारों और स्वायत्त ड्रोन में किया जाता है।

५. ए.आई. की चुनौतियाँ और भविष्य

● **नैतिकता और सुरक्षा :** ए.आई. के विकास के साथ नैतिकता, गोपनीयता और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ उठ रही हैं। इन चिंताओं का समाधान करने के लिए मानक और नीतियाँ विकसित की जा रही हैं।

● **आर्थिक और सामाजिक प्रभाव :** ए.आई. के परिणामस्वरूप कार्यबल में बदलाव और सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन हो सकते हैं। यह रोजगार, शिक्षा और सामाजिक समावेशन पर प्रभाव डाल सकता है।

● **भविष्य के रुझान :** ए.आई. के विकास की दिशा में स्वायत्तता, एथिकल ए.आई. और मानव-मशीन सहयोग जैसे क्षेत्र महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं।

ए.आई. का हिंदी भाषा में उपयोग

ए.आई. की तकनीकें हिंदी भाषा में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इन तकनीकों का उपयोग हिंदी में विभिन्न अनुप्रयोगों और सेवाओं में किया जा रहा है, जो भाषा की सुलभता, पहुँच और उपयोगकर्ता अनुभव को सुधारते हैं। यहाँ ए.आई. के हिंदी भाषा में उपयोग के कुछ प्रमुख क्षेत्र और उदाहरण दिए गए हैं—

१. भाषा अनुवाद और ट्रांसलेशन

● **ऑनलाइन ट्रांसलेशन टूल्स :** Google Translate, Microsoft Translator और अन्य प्लेटफॉर्म्स ने हिंदी और अन्य भाषाओं के बीच अनुवाद को आसान और सटीक बनाया है। "टूल्स टेक्स्ट, वेब पेज और दस्तावेजों का त्वरित अनुवाद प्रदान करते हैं, जिससे भाषा की बाधाएँ कम होती हैं और वैश्विक संचार आसान होता है।"

● **संबंधित भाषाओं में अनुवाद :** ए.आई. आधारित अनुवाद प्रणालियाँ हिंदी के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद की सुविधा प्रदान करती हैं, जैसे कि भोजपुरी, मैथिली और मराठी। यह स्थानीय भाषाओं और सांस्कृतिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए अनुवाद को अधिक सटीक बनाता है।

२. स्वाभाविक भाषा प्रसंस्करण (NLP)

● **भाषा समझ और विश्लेषण :** ए.आई. की NLP तकनीकें हिंदी में पाठ की समझ, विश्लेषण और प्रसंस्करण में सहायक हैं। उदाहरण के लिए, भावनात्मक विश्लेषण (Sentiment Analysis) में सोशल मीडिया पोस्ट और ग्राहक समीक्षाओं में सकारात्मक और नकारात्मक भावनाओं की पहचान की जाती है।

● **पाठ (Text Generation) :** ए.आई. आधारित सिस्टम्स, जैसे GPT-३ और उसके समकक्ष मॉडल्स, हिंदी में स्वाभाविक और सुसंगत पाठ उत्पन्न करने में सक्षम हैं। "NLP प्रणाली लेख, कहानियाँ और अन्य सामग्री को स्वचालित रूप से उत्पन्न कर सकती है।"

३. संवादात्मक ए.आई.

● **चैटबॉट्स :** हिंदी में चैटबॉट्स ग्राहकों के सवालों का उत्तर देने, सहायता प्रदान करने और सेवाओं के बारे में जानकारी देने के लिए उपयोग किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, ग्राहक सेवा में हिंदी में चैटबॉट्स का उपयोग ग्राहकों की समस्याओं का समाधान करने में मदद करता है।

● **वॉयस असिस्टेंट्स :** ए.आई. आधारित वॉयस असिस्टेंट्स, जैसे Google Assistant और Amazon Alexa हिंदी में वॉयस कमांड्स को समझते हैं और उनका उत्तर देते हैं। ये वॉयस असिस्टेंट्स दैनिक कार्यों, जानकारी प्राप्त करने और स्मार्ट होम डिवाइसेस को नियंत्रित करने में सहायक होते हैं।

४. शिक्षा और प्रशिक्षण

● **इ-लर्निंग प्लेटफॉर्म्स :** ए.आई. आधारित इ-लर्निंग टूल्स और प्लेटफॉर्म्स हिंदी में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा सामग्री और प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। ये प्लेटफॉर्म्स छात्रों को व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव और स्वचालित ग्रेडिंग जैसी सुविधाएँ प्रदान करते हैं।

● **स्मार्ट ट्यूटरिंग सिस्टम्स :** ए.आई. तकनीकें हिंदी में स्मार्ट ट्यूटरिंग सिस्टम्स को विकसित करने में मदद करती हैं, जो छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के आधार पर अनुकूलित पाठ्यक्रम और अभ्यास सामग्री प्रदान करते हैं।

५. सामग्री निर्माण और विश्लेषण

● **ऑटोमेटेड कंटेंट जनरेशन :** ए.आई. की तकनीकें हिंदी में स्वचालित रूप से समाचार लेख, ब्लॉग पोस्ट और अन्य प्रकार की सामग्री उत्पन्न करने में सक्षम हैं। ये सिस्टम्स उच्च गुणवत्ता की सामग्री को त्वरित और प्रभावी रूप से तैयार कर सकते हैं।

● **विवरणात्मक विश्लेषण :** ए.आई. आधारित विश्लेषणात्मक उपकरण हिंदी में बड़ी मात्रा में डेटा को संसाधित करने और महत्त्वपूर्ण जानकारी को निकालने में सहायक होते हैं। यह व्यापार, विपणन और शोध में मूल्यवान अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करता है।

६. स्वायत्त वाहन और स्मार्ट सिटी

● **स्वायत्त वाहन :** ए.आई. तकनीकें हिंदी भाषी क्षेत्रों में स्वायत्त वाहनों को डिजाइन और विकसित करने में सहायता कर रही हैं, जिससे यातायात प्रबंधन और सुरक्षा में सुधार हो सकता है।

● **स्मार्ट सिटी समाधान :** ए.आई. आधारित स्मार्ट सिटी समाधानों में हिंदी में सूचना और सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित करने के लिए शहरों में विभिन्न सार्वजनिक सेवाओं का डिजिटलीकरण और स्वचालन शामिल है।

७. स्वास्थ्य देखभाल

● **मेडिकल इमेजिंग और डायग्नोसिस :** ए.आई. तकनीकें हिंदी में मेडिकल इमेजिंग और डायग्नोसिस के लिए उपयोग की जाती हैं, जिससे चिकित्सक को रोगों की पहचान और इलाज में सहायता मिलती है।

● **स्वास्थ्य संबंधित चैटबॉट्स :** ए.आई. आधारित स्वास्थ्य चैटबॉट्स हिंदी में स्वास्थ्य संबंधी सवालों का उत्तर देते हैं और प्राथमिक चिकित्सा जानकारी प्रदान करते हैं।

हिंदी भाषा में ए.आई. के लाभ

ए.आई. की तकनीकें हिंदी भाषा में कई महत्त्वपूर्ण लाभ प्रदान कर रही हैं। ये लाभ न केवल भाषा की सुलभता और उपयोगकर्ता अनुभव

को बेहतर बनाते हैं, बल्कि व्यापक सामाजिक और आर्थिक प्रभाव भी उत्पन्न करते हैं। यहाँ हिंदी भाषा में ए.आई. के प्रमुख लाभों का वर्णन किया गया है—

१. भाषा की सुलभता और पहुँच में सुधार

• **ग्लोबल कनेक्टिविटी :** ए.आई. आधारित अनुवाद टूल्स और वॉयस असिस्टेंट्स हिंदी में उपलब्ध सामग्री को अन्य भाषाओं में अनुवादित करने में सक्षम हैं। इससे हिंदी भाषी लोगों को विश्वभर की जानकारी और संसाधनों तक पहुँच प्राप्त होती है।

• **शिक्षा और ज्ञान की पहुँच :** ए.आई. आधारित शिक्षा प्लेटफॉर्म्स और डिजिटल सामग्री हिंदी में उपलब्ध होती हैं, जिससे हिंदी भाषी छात्रों और पेशेवरों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा और प्रशिक्षण मिलते हैं।

२. ग्राहक सेवा और उपयोगकर्ता अनुभव

• **चैटबॉट्स और वॉयस असिस्टेंट्स :** हिंदी में ए.आई. आधारित चैटबॉट्स और वॉयस असिस्टेंट्स ग्राहक सेवा को स्वचालित और बेहतर बनाते हैं। "टूल्स ग्राहकों के सवालों का त्वरित और सटीक उत्तर प्रदान करते हैं, जिससे ग्राहक अनुभव में सुधार होता है।"

• **स्वाभाविक संवाद :** ए.आई. के माध्यम से हिंदी में स्वाभाविक और संवादात्मक इंटरफेस बनाना संभव होता है, जिससे उपयोगकर्ताओं को सहज और सुगम अनुभव मिलता है।

३. स्वचालन और कार्यक्षमता में वृद्धि

• **ऑटोमेटेड कंटेंट जनरेशन :** ए.आई. की तकनीकें हिंदी में लेख, ब्लॉग और समाचार लेख जैसे कंटेंट को स्वचालित रूप से उत्पन्न करती हैं। इससे सामग्री निर्माण की प्रक्रिया को तेजी से और कम लागत पर पूरा किया जा सकता है।

• **डेटा विश्लेषण और रिपोर्टिंग :** ए.आई. के माध्यम से बड़ी मात्रा में डेटा को संसाधित और विश्लेषित किया जा सकता है। यह व्यापारों और संगठनों को महत्त्वपूर्ण अंतर्दृष्टियाँ प्राप्त करने में सहायता करता है, जो निर्णय लेने की प्रक्रिया को बेहतर बनाती हैं।

४. स्वास्थ्य देखभाल और चिकित्सा

• **डायग्नोसिस और उपचार :** ए.आई. तकनीकें हिंदी में चिकित्सा इमेजिंग, रोग पहचान और उपचार की सटीकता को बढ़ाती है। इससे चिकित्सकों को रोगों की सही पहचान और उपचार में सहायता मिलती है।

• **स्वास्थ्य संबंधी जानकारी :** ए.आई. आधारित स्वास्थ्य चैटबॉट्स हिंदी में प्राथमिक चिकित्सा जानकारी और सलाह प्रदान करते हैं, जिससे लोगों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समाधान में मदद मिलती है।

५. शिक्षा और प्रशिक्षण में सुधार

• **पर्सनलाइज्ड लर्निंग :** ए.आई. आधारित इ-लर्निंग प्लेटफॉर्म्स और स्मार्ट ट्यूटरिंग सिस्टम्स हिंदी में व्यक्तिगत शिक्षा अनुभव प्रदान करते हैं। ये प्लेटफॉर्म्स छात्रों की सीखने की शैली और गति के आधार पर अनुकूलित पाठ्यक्रम और अभ्यास सामग्री प्रदान करते हैं।

• **स्वचालित ग्रेडिंग :** ए.आई. तकनीकें हिंदी में शिक्षण सामग्री और परीक्षणों की स्वचालित ग्रेडिंग में सहायक होती हैं, जिससे शिक्षकों का समय बचता है और मूल्यांकन की प्रक्रिया में सुधार होता है।

६. सामाजिक और सांस्कृतिक संरक्षण

• **भाषाई संरक्षण :** ए.आई. का उपयोग हिंदी में भाषा के संरक्षण और संवर्धन के लिए किया जा सकता है। ए.आई. आधारित उपकरणों से भाषा की नई शब्दावली और प्रयोग को सहेजा और प्रसारित किया जा सकता है।

• **सांस्कृतिक सामग्री का प्रचार :** ए.आई. तकनीकें हिंदी में सांस्कृतिक सामग्री, जैसे लोककथाएँ, गीत और शिल्प को डिजिटली संरक्षित और प्रचारित करने में सहायक होती हैं, जिससे सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा मिलता है।

७. स्वायत्त वाहन और स्मार्ट सिटी समाधान

• **स्वायत्त वाहन :** ए.आई. की तकनीकें हिंदी भाषी क्षेत्रों में स्वायत्त वाहनों के विकास में योगदान करती हैं, जिससे यातायात प्रबंधन और सुरक्षा में सुधार होता है।

• **स्मार्ट सिटी :** ए.आई. आधारित स्मार्ट सिटी समाधान हिंदी में सूचना और सेवाओं की पहुँच को बेहतर बनाते हैं, जैसे स्मार्ट ट्रैफिक मैनेजमेंट, स्वचालित सुरक्षा निगरानी और सार्वजनिक सेवाओं का डिजिटलीकरण।

हिंदी भाषा और ए.आई. के एकीकरण की दिशा में आगे बढ़ने के लिए उपरोक्त सुझाव और अनुसंधान की दिशा पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। इन उपायों के साथ हिंदी में ए.आई. की तकनीकें अधिक प्रभावी, सटीक और सांस्कृतिक रूप से अनुकूल हो सकती हैं, जो हिंदी भाषी समाज के लिए कई नई संभावनाएँ और अवसर प्रस्तुत कर सकती हैं। इन प्रयासों से ए.आई. के लाभों को व्यापक रूप से फैलाया जा सकता है और हिंदी भाषा की समृद्धि और उपयोगिता को बढ़ावा दिया जा सकता है।

सा.अ.

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
राजमाता जिजाऊ महाविद्यालय, किल्ले धारुर
जि. बीड-४३११२४ (महाराष्ट्र)
दूरभाष :९४२१३४४८९६

दिशा संकेत

• प्रीति कच्छल

मेरे भारत की नारीशक्ति,
तू है ओजस्विता माता।
मेरे भारत की नारीशक्ति,
तू है तेजस्विता माता॥

मेरे भारत की नारीशक्ति,
तू है प्रकाश-दीप माता।
मेरे भारत की नारीशक्ति,
तू है वीर-शौर्य माता॥

मेरे भारत की पुत्री जागो,
तू ही है जीवन आधार।
मेरे भारत की पुत्री जागो,
तुझसे ये निखिल संसार॥

मेरे भारत की पुत्री जागो,
तू है समरसता द्योतक।
मेरे भारत की पुत्री जागो,
तू है राष्ट्र-अस्मिता दीपक॥

बिटिया स्नेहिल भारत माँ की,
जीवन निर्मात्री तू ही है।
बिटिया स्नेहिल भारत माँ की,
संस्कृति विस्तारिणी तू ही है॥

बिटिया स्नेहिल भारत माँ की,
परम शक्ति देश की तू।
बिटिया स्नेहिल भारत माँ की,
बढ़ चल राष्ट्र प्रवाह में तू॥

शिक्षा संस्कार दुशाला पहनकर,
अंतर द्वार खोलना है।
अध्यात्म की ऊँचाई पे पहुँचकर,
आधुनिक मनस्वीपन छोड़ना है॥

वीर सपूता भारत माँ की,
सावधान तुम हो जाओ।
भव्य कल्याणकारी परंपराओं हेतु,
स्वागत बिगुल बजा जाओ॥

भारत देश में जन्म लिया और
भारत देश में खेले हैं।
भारत देश में पले बढ़े हम,
भारत देश में सब अपने हैं॥

भरोसा ब्रह्म पर रखकर हमको,
जगना और जगाना है।
प्रतिक्रिया छोड़ कदम आगे रख,
आत्म मूल्यांकन करना है॥

मदालसा विदुला सी माता,
प्रेरक हमारे जीवन की।
अभया, हे शक्ति स्वरूपा!
याद है, वाक्पुष्पा बरसात की?

व्यवसाय से सनदी लेखाकार। टैक्स गुरु पोर्टल पर कविताएँ व लेख तथा इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट की पत्रिका में कविताएँ प्रकाशित। आकाशवाणी दिल्ली में कविता-वाचन, सतमौला कवियों की चौपाल की मानद निदेशक, गीता परिवार में प्रचारक।

लक्ष्मीबाई हमारी प्रेरणा,
मैत्रेयी और गार्गी भी।
जीजाबाई पद्मिनी सी लाखों,
अनोखी-रत्न हमारे देश की॥
सावधान स्नेहिल बहिनो,
आत्मविश्वास से उठ जाओ।
लक्ष्मीबाई सी खन खनन करके,
क्रांतिकारिणी बन जाओ॥

खड्ग भाला चलाना सीखो,
क्षत्राणी-रुद्राणी कहलाओ।
कृपाण त्रिशूल में पारंगत हो,
गीता-नाद शंख बजा जाओ॥

२१२ विज्ञापन लोक सोसाइटी,
मयूर विहार एक्सटेंशन
दिल्ली-११००९१
दूरभाष : ९३५००४०००

अनकहा त्याग

● रिंकल शर्मा

आज पूरी हवेली किसी नई-नवेली दुलहन की तरह सजी हुई थी। कहीं रंग-बिरंगी झालरें और फानूस टँगे हुए थे तो कहीं से गेंदे और गुलाब के फूलों की महक मन को महका रही थी। रसोईघर से भी तरह-तरह के व्यंजनों की खुशबू आ रही थी। घर के सदस्यों से लेकर नौकर-चाकर तक हर कोई अपने-अपने काम में व्यस्त था, लेकिन फिर भी तैयारियाँ थीं कि पूरी होने का नाम ही नहीं ले रही थीं। नाते-रिश्तेदारों और पड़ोसियों का जमावाड़ा लगा हुआ था, जिसके कारण सुबह से सारे घर में चहल-पहल मची हुई थी। चौधरी रामचरण के पोते का नामकरण और धूमधाम से न हो, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। हालाँकि चौधरी साहब का अपना तो कोई बेटा नहीं था, लेकिन उन्होंने अपने भाई के बेटे कृष्णा को सदा अपना बेटा ही माना। अब कृष्णा का बेटा चौधरी साहब का पोता ही तो हुआ। पोते की खुशी और हवेली की जगमगाहट चौधरी साहब की आँखों और चेहरे पर साफ दिखाई पड़ रही थी। कहीं किसी चीज की कोई कमी न रह जाए, इसीलिए जश्न की एक-एक तैयारी उनकी देख-रेख में ही हो रही थी।

हवेली के आँगन में पंडितजी हवन की तैयारी में लगे हुए थे। आँगन के दाहिनी ओर बनी बैठक में पुरुषों की महफिल जमी हुई थी, जहाँ राजनीति से लेकर समाज की फैली कुरीतियों पर चर्चा की जा रही थी। कोई नेताओं को कोस रहा था तो कोई देश के विकास के तरीके बता रहा था। इतना ही नहीं, बातचीत के बीच कभी-कभी शायरी उछाल मार जाती, तो कभी गजलें अपना रंग बिखेर जातीं। शराब के दौर चल रहे थे, जो माहौल को और भी रंगीन बना रहे थे।

ऐसा ही कुछ नजारा आँगन के बाएँ ओर बनी महिलाओं की बैठक का था। नीली-पीली, रंग-बिरंगी पोशाकें और तरह-तरह के इत्तर की खुशबुएँ पूरी बैठक को महका रही थीं। हर कोई अपने रूप-शृंगार पर इतरा रही थी, मगर इन सारी औरतों के बीच, दो औरतों के चेहरे की रंगत आज कुछ अलग ही निखार लिये हुए थी। उन दोनों में से एक तो बच्चे की माँ चंद्रा थी, जो लाल रंग की साड़ी, माथे पर टीका, बिंदी, होंठों पर सुर्ख लाली, बालों में गजरा सजाए हुए अपनी गोदी में अपने सुकुमार को लिये बैठी थी। चंद्रा का रूप आज सभी को मंत्रमुग्ध कर रहा था। बैठक में दूसरी महिला, जो उमंग-तरंग से परिपूर्ण, हरी-पीली रंग की बाँधनी की साड़ी, हाथों में मोटे-मोटे कंगन और चेहरे पर अभिमान से सजी मुसकान लिये थी, वह थी बालक की दादी सुशीला। दादी बनने के अभिमान में भरी सुशीला ६० वर्ष की आयु में भी आज बहुत ही चहक रही थी। आज उसके कदमों में १६ साल की सुकुमारी जैसी धमक सुनाई दे रही थी।

सुपरिचित लेखिका। अब तक तीन कहानी-संग्रह, चार नाटक, दो काव्य-संग्रह, तीन बाल-साहित्य, पाँच बाल-कॉमिक्स, दो पत्रकारिता पुस्तकें, दो सेल्फ-हेल्प इत्यादि 25 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। 'प्रबल प्रहरी' पत्रिका में इनका स्तंभ 'देख तमाशा दुनिया का' प्रकाशित होता है। 'महिला लेखन राष्ट्रीय पुरस्कार', 'से रा यात्री कथा गौरव सम्मान', 'सुभद्राकुमारी चौहान सम्मान', 'डॉ. सरोजिनी नायडू सम्मान', 'सहादत हसन मंटो साहित्य सम्मान', 'महादेवी वर्मा सम्मान', 'उत्कृष्ट अभिनय सम्मान' इत्यादि से सम्मानित।

बैठक में औरतें ढोलक और बाजे लिये हुए बधाइयाँ गा रही थीं— 'बधाया आज रिम-झिम बरसे, ननदिया आज छम-छम नाचे'। मगर औरतों के गीत सुशीला को कुछ रास नहीं आ रहे थे।

"अरी बहनाओ, क्या धीमे-धीमे गा रही हो, सवेरे से रोटी नहीं खाई है क्या? बड़ी मिन्नतों के बाद तो आज पोते की खुशी मना रही हूँ। कोई चटकदार गीत गाओ।" कहते हुए सुशीला ने अपने पोते की बलाएँ लीं।

"ऐ मझली भाभी, गाए तो रही हैं, अब का गाए-गाए के अपनो गलो फाड़ लें। तुम तो ऐसे कर रही हो, जैसे तुम्हारे ही घर में अनोखो लल्ला भयो है।" भीड़ में से बूढ़ी नाईन की कर्कश सी आवाज सुनाई दी।

"अरे चुपकर मनहूस, खबरदार! जो मेरे लल्ला के लिए कुछ बोला तो, तेरी जबान खींचकर तेरे हाथ में दे दूँगी।" बूढ़ी नाईन की बात सुनकर सुशीला गुस्से में बोली। सुशीला की फटकार से नाईन अपना सा मुँह लेकर रह गई। गाने की आवाज और तेज हो गई।

मगर इस रौनक के बीच सावित्री ताई हवेली की पहली मंजिल पर बने अपने कमरे में अकेली बैठी थीं। उनकी आँखों में एक अजीब सा दर्द था, जो आँसुओं के रूप में छलककर कभी-कभी उनके झुर्रीदार गालों पर लुढ़क जाता। भला क्यों न छलके आँसू, अपनी पूरी जिंदगी इस हवेली और परिवार की सेवा में लगा दी, लेकिन फिर भी, आज कोई यह तक पूछने वाला नहीं कि आखिर सावित्री ताई को किस बात का दुःख है? सब अपने-अपने रंग में मस्त हैं। किसी को उनकी कोई सुध ही नहीं। पतला-दुबला सा शरीर, बालों में सफेदी, चेहरे पर झुर्रियाँ, सूती साड़ी में

लिपटी हुई सावित्री ताई खिड़की से सटी हुई बैठी, अपने ही किन्हीं विचारों में खोई हुई थीं, शायद वह उस दिन को याद कर रही थीं, जब वे इस हवेली में नई-नवेली दुलहन बनकर आई थीं।

उन दिनों हवेली की हालत बड़ी ही जर्जर थी। हवेली का सिर्फ एक कोना ही था, जिसे घर जैसा कहा जा सकता था। इतनी बड़ी हवेली, लेकिन उसमें रहने वाले केवल चार जन, सावित्री ताई के पति यानी चौधरी साहब, दो छोटे देवर और एक बुआ सास, जोकि अपने आखिरी क्षणों का इंतजार कर रही थीं। विवाह के समय करीब १६ वर्ष की आयु रही होगी ताई की। चौधरी साहब एक तो उम्र में सावित्री ताई से १० वर्ष बड़े थे और दूसरा उनका मिजाज भी बड़ा सख्त था। उन्हें हर काम को सही समय और सही ढंग से करने की आदत थी। यदि किसी भी काम में जरा सी भी ढिलाई हो जाती, तो चौधरी साहब पूरा घर सिर पर उठा लेते। लेकिन अपने दोनों भाइयों पर जान छिड़कते थे। मजाल है कि दोनों की आँखों में एक आँसू भी आ जाए। शादी की रात ही चौधरी साहब ने सावित्री ताई को उनका, अपने भाइयों के प्रति जो प्रेम था, वह स्पष्ट कर दिया था। सजी-सँवरी सावित्री ताई शादी की रात सुहाग-सेज पर बैठी अपने पति का इंतजार करते हुए भावी जीवन के सपने बुन रही थीं, तभी चौधरी साहब कमरे में आए और उनके पास आकर उनका हाथ थामकर बोले, "सावित्री, अब तुम मेरी अर्धांगिनी हो। यह घर और परिवार जितना मेरा है, आज से उतना ही तुम्हारा भी है। माता-पिता के जाने के बाद मेरे दोनों भाई ही मेरे लिए सबकुछ हैं, इसीलिए वचन दो कि तुम हमेशा मेरे भाइयों को अपने बेटों की तरह समझोगी। उन दोनों को कभी भी माँ की कमी महसूस नहीं होने दोगी और हाँ, एक बात और है, आज से मेरे दोनों भाई ही तुम्हारी संतान हैं।"

"सावित्री, अब तुम मेरी अर्धांगिनी हो। ये घर और परिवार जितना मेरा है, आज से उतना ही तुम्हारा भी है। माता-पिता के जाने के बाद मेरे दोनों भाई ही मेरे लिए सबकुछ है, इसीलिए वचन दो कि तुम हमेशा मेरे भाइयों को अपने बेटों की तरह समझोगी। उन दोनों को कभी भी माँ की कमी महसूस नहीं होने दोगी और हाँ, एक बात और है, आज से मेरे दोनों भाई ही तुम्हारी संतान है।"

सावित्री ताई मूक गुड़िया की तरह चौधरी साहब की बातें सुन रही थीं। बेचारी समझ ही नहीं पाईं कि यह नव-जीवन की शुरुआत है या उनकी खुशियों का अंत? लेकिन एक भारतीय पत्नी की तरह उन्होंने पति की इच्छा को स्वीकार किया और नम आँखों के साथ हल्की सी मुसकराहट को चेहरे पर सजा कर 'हाँ' में उत्तर दिया।

सावित्री ताई की शादी को मुश्किल से एक हफ्ता ही हुआ होगा कि बुआजी के प्राण-पखेरू उड़ गए। ताई के हाथों की मेहँदी का रंग भी नहीं उतर पाया था कि परिवार की पूरी जिम्मेदारी उनके कोमल कंधों पर आ पड़ी। लेकिन सावित्री ताई ने भी बखूबी अपनी हर जिम्मेदारी को निभाया। कुछ ही दिनों में जर्जर हवेली शानदार महल जैसी नजर आने लगी। चौधरी साहब के दोनों भाई भी अपनी भाभी माँ के साथ ऐसे लिपटे रहते थे, जैसे वही उनकी असली माँ हो। सावित्री ताई के सरल और मीठे स्वभाव के कारण सभी परिवारजन और नौकर-चाकर, उनका बहुत आदर करने लगे। चौधरी साहब भी सावित्री ताई जैसी सुंदर-सुशील, सुगढ़ पत्नी को पाकर मन-ही-मन फूले नहीं समाते थे। भले ही सख्त मिजाज के चौधरी साहब ने कभी ऐसा जाहिर नहीं होने दिया हो, लेकिन सच तो यही था कि घर के साथ-साथ सावित्री ताई चौधरी साहब के दिल पर भी राज करने लगी थीं।

कुछ महीने ही बीते थे कि सावित्री ताई के ऊपर मुसीबत आन खड़ी हुई। शादी के बाद, जिस दिन का इंतजार हर लड़की को बेसब्री से होता है, सावित्री ताई के लिए वह दिन मुसीबत बना हुआ था। सावित्री ताई समझ ही नहीं पा रही थी कि आखिर कैसे पति को बताएँ कि वह माँ बनने वाली है? कैसे कहे कि पति को दिया हुआ वचन वह निभा नहीं पाई? उनका कलेजा मुँह को आ रहा था। सावित्री ताई अपने पति के सख्त मिजाज और स्वभाव से भलीभाँति परिचित थीं। वह जानती थीं कि चौधरी साहब के लिए भाइयों के प्रेम के आगे पत्नी का प्रेम तुच्छ है। डर के मारे सावित्री ताई पूरे दिन अपने कमरे में ही रहीं। शाम को चौधरी साहब जैसे ही कमरे में दाखिल हुए सावित्री ताई के दिल की धड़कन और तेज हो गई।

"सावित्री, क्या बात है? तुम्हारी तबीयत खराब है क्या? मालती बता रही थी कि आज सारा दिन तुमने एक निवाला तक नहीं तोड़ा।" चौधरी साहब ने सावित्री ताई के पास आकर पूछा।

सावित्री ताई का हलक सूखा जा रहा था। समझ नहीं पा रही थी कि कैसे बताएँ? उनकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी।

"बताओ सावित्री, आखिर क्या बात है?" चौधरी साहब ने फिर पूछा।

"मुझे माफ कर दीजिए, मैं अपना वचन नहीं निभा पाई।"

चौधरी साहब समझ नहीं पा रहे थे कि आखिर बात क्या है?

"साफ-साफ बताओ सावित्री, पहेलियाँ मत बुझाओ।" चौधरी साहब ने इस बार थोड़े गरम लहजे में पूछा।

"मैं, मैं माँ बनने वाली हूँ।" सावित्री ताई घबराते हुए बोलीं।

सावित्री ताई के शब्द सुनते ही चौधरी साहब की आँखों में अंगारे जलने लगे, लेकिन तुरंत ही उन्होंने अपने गुस्से को काबू में किया। पत्नी के मासूम चेहरे को देखकर चौधरी साहब का दिल पसीजने लगा। फिर वे यह भी जानते थे कि इस बात के लिए सिर्फ उनकी पत्नी तो दोषी नहीं है, संतान तो पति और पत्नी के प्रेम की निशानी होती है।

"कोई बात नहीं सावित्री, इसमें डरने वाली क्या बात है।" चौधरी साहब ने सावित्री ताई से कहा।

पतिदेव के मुँह से यह शब्द सुनकर सावित्री ताई को थोड़ी ठंडक मिली। ऐसा लगा, मानो मन के अंदर चल रहा तूफान शांत हो गया। लेकिन तभी चौधरी साहब ने सावित्री ताई पर एक मीठा प्रहार किया।

"देखो सावित्री, इस बार तो जो हुआ सो हुआ, लेकिन आगे से हम

दोनों ध्यान रखेंगे कि फिर से ऐसी भूल न होने पाए। हमारा सिर्फ और सिर्फ एक ही बच्चा रहेगा।"

सावित्री ताई ने एक बार फिर अच्छी पत्नी की तरह चौधरी साहब को अपनी मौन आँखों से विश्वास दिला दिया कि वह एक ही संतान पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देंगी। समय बीता और नौ महीने बाद सावित्री ताई ने एक बेटी को जन्म दिया। बेटी की खबर सुनते ही सावित्री ताई का मन थोड़ा मायूस हुआ। वह जानती थीं कि अब वह अपने बेटे का सुख कभी नहीं भोग पाएँगी, क्योंकि चौधरी साहब ने तो दूसरे बच्चे के लिए साफ मना कर रखा है। लेकिन जैसे ही ताई ने अपनी नन्ही सी बेटी को गोद में उठाया, उनकी सारी मायूसी उड़नछू हो गई। चौधरी साहब ने अपनी बेटी का नाम 'गौरी' रखा। घर में सभी गौरी पर जान छिड़कते थे।

धीरे-धीरे समय बीतता गया, अब नन्ही गौरी अपने पैरों पर चलने लगी और चौधरी साहब के दोनों छोटे भाई भी अपनी यौवन अवस्था में आ गए। मझले भाई ने बी.ए. पास करके रेलवे में नौकरी प्राप्त की और छोटे भाई ने वकालत पास कर ली। चौधरी साहब ने दोनों भाइयों की शादियाँ बड़े ही संपन्न घरों में कर दीं। मझले भाई राम किशोर को उसकी पत्नी सुशीला से दो बच्चे हुए—एक बेटा कृष्णा और एक बेटी सुभद्रा। छोटे भाई नंदकिशोर को भी उसकी पत्नी लता से दो बच्चे हुए—एक बेटा संजय और एक बेटी सुकन्या। परिवार के सभी सदस्यों में आपसी मेल-जोल था। उम्रदराज हो जाने पर भी दोनों भाइयों की हिम्मत नहीं होती थी कि चौधरी साहब के किसी भी हुक्म को अनदेखा कर दें। चौधरी साहब का सारा दिन तो बाहर के कामों में बीतता, लेकिन शाम के समय में वे गौरी और मझले भाई के बेटे कृष्णा के साथ उलझे रहते। कृष्णा में तो मानो उनके प्राण ही बसते थे। शायद यही वजह थी कि मझली बहू सुशीला थोड़ा ज्यादा ही इतराती थी। उसकी जबान कभी-कभी लोगों को कैंची से भी गहरा काट जाती थी, लेकिन फिर भी उसे कोई कुछ न कहता था। दरअसल सुशीला जानती थी कि सावित्री ताई को तो कोई बेटा है ही नहीं। वंश को आगे बढ़ाने वाला चिराग कृष्णा तो छोटी से पहले उसने ही तो जना है। इसीलिए चौधरी साहब का वारिस और अगली पीढ़ी का मुखिया तो उसका बेटा कृष्णा ही हुआ। छोटी बहू लता इस बात से मन-ही-मन जलती तो थी, लेकिन मजाल है कि सुशीला की तरह उसने मुँह से कभी कोई तीर छोड़ा हो। हाँ, इधर-उधर थोड़ी-बहुत मिर्ची लगाने में वह भी माहिर थी। सावित्री ताई का मन कभी-कभी उदास हो जाता था। न जाने क्यों, कभी-कभी उन्हें ऐसा लगता था कि गौरी की जगह अगर उनके एक बेटा हुआ होता, तो मझली बहू के गाहे-बगाहे जो शब्दों के बाण छूटते हैं, उससे उन्हें छुटकारा मिल जाता। लेकिन सावित्री ताई, पति और परिवार के प्रति अपने समर्पण को लेकर बहुत सजग थीं। उन्होंने कभी भी अपना दर्द किसी और के ऊपर जाहिर नहीं होने दिया।

इसी तरह दिन बीतते गए और देखते-ही-देखते सावित्री ताई के बालों पर सफेदी छा गई। घर के बच्चे अब बड़े हो गए। गौरी की शादी कर दी गई और वह अपने ससुराल चली गई। गौरी के जाने के बाद ताई को उसकी कमी बहुत खलती थी। लेकिन कुछ ही दिनों बाद कृष्णा की भी शादी हो गई और एक सुंदर सुशील बहू 'चंद्रा' दुलहन बनकर घर में आ गई। कृष्णा को सावित्री ताई से खास लगाव था। इसी कारण चंद्रा को भी ताई से जल्द ही खासा लगाव हो गया। वह अपना सारा दिन सावित्री ताई के साथ ही बिताती। सावित्री ताई को भी अब गौरी की कमी खलती न थी। अपने सुख-दु:ख की सारी बातें सावित्री ताई चंद्रा के साथ ही बतियाती थीं। चंद्रा भी अपनी सास से ज्यादा सावित्री ताई को आदर देती थी। लेकिन यह बात मझली बहू के गले नहीं उतरती थी। उन्हें सावित्री ताई और चंद्रा का इतना घुलना-मिलना कम ही भाता। लेकिन करती भी तो क्या, मन मसोसकर रह जाती, क्योंकि चंद्रा उनकी एक न सुनती। वह बस सावित्री ताई की सेवा में ही लगी रहती। छोटी बहू कभी-कभी आदतानुसार मझली बहू के कान जरूर भरती।

"देख लो जीजी, बहू तो तुम्हारी है, पर सारा दिन जेठानीजी की ललोचप्पो में लगी रहती है। मैं तो ऐसा हरगिज नहीं होने दूँगी। मैं तो पहले ही दिन अपनी बहू पर लगाम कसकर रखूँगी।"

मझली बहू मन-ही-मन छोटी की बातों से सहमत होती थी। लेकिन फिर भी कहती—"रहने दे छोटी, वह तो मैंने ही चंद्रा से कह रखा है कि जेठानीजी का खयाल रखा करे। वरना मजाल है कि मेरी इजाजत के बगैर एक कदम भी आगे बढ़ा जाए।"

दिन यों ही बीत रहे थे कि कुछ समय बाद चंद्रा गर्भवती हो गई। अब तो सावित्री ताई का सारा ध्यान और समय चंद्रा की देखरेख में ही बीतने लगा। नौ महीने पूरे हुए और उसने एक चाँद से बेटे को जन्म दिया। जैसे ही अस्पताल से खबर आई, सारे घर में खुशी की लहर दौड़ गई। चौधरी साहब और सावित्री ताई भी झटपट अस्पताल की ओर दौड़ पड़े। दोनों जैसे ही अस्पताल पहुँचे, मझली बहू ने पोते को चौधरी साहब की गोद में दे दिया। सावित्री ताई ने चंद्रा के माथे को चूमा और उसके सिर पर हाथ फेरा। नन्ही-सी जान को अपनी बाँहों में लिये चौधरी साहब उसे एकटक निहार रहे थे। उनकी दोनों आँखों से अश्रुधाराएँ बह रही थीं। चौधरी साहब ने कुछ देर बाद पोते को दोबारा मझली बहू को दे दिया और कमरे से बाहर निकल गए। चौधरी साहब के तो जैसे कदम जमीन पर ही नहीं पड़ रहे थे। बाहर निकलते ही उन्होंने नौकर को कुछ रुपए दिए और सारे अस्पताल में लड्डू बाँटने का हुक्म दिया।

इधर सावित्री ताई भी उस नन्ही-सी जान को अपने हाथों में लेकर चूमने को तड़प रही थीं। लेकिन जैसे ही सावित्री ताई ने मुन्ने को गोद में उठाना चाहा, तो मझली बहू ने उनका हाथ रोक दिया। सावित्री ताई ने चौंककर मझली बहू की तरफ देखा।

"वो क्या है न जीजी, अभी थोड़ी देर पहले पड़ोस वाली मिश्राइन आई थी। उन्होंने कहा कि जब तक मुन्ने का नामकरण न हो जाए, तब

तक उसे हर अशुभ छाया से दूर रखना। बस पूजा-पाठ हो जाए, फिर जितना मर्जी चाहे आप मुन्ने को खिलाना। आखिर आपका ही तो पोता है।" मझली बहू ने बड़े ही नाटकीय अंदाज में कहा।

यह सुनते ही सावित्री ताई के पैरों से जमीन खिसक गई। उनके तो जैसे काटो तो खून नहीं।

"ये कैसी बातें कर रही हो आप? ताईजी और अशुभ, कैसे?" तभी चंद्रा बीच में बोल पड़ी।

"अरे, इतने बरस हो गए जीजी की शादी को! गौरी के अलावा उनकी गोद में और कोई बच्चा आया भला? एक लड़का जनकर दिया क्या इन्होंने? जब तक औरत एक लड़के को जन्म न दे, तब तक वह सौभाग्यवती नहीं कहलाती। वह कहीं-न-कहीं अशुभ ही मानी जाती है।" मझली बहू ने अब थोड़ा इठलाते हुए कहा।

मझली बहू की बातें सावित्री ताई के सीने को छलनी किए जा रही थीं, लेकिन वर्षों से चुप सावित्री ताई की जुबान ने तो जैसे कुछ बोलना ही छोड़ दिया था। आँखों में आँसू भरकर सावित्री ताई घर वापस लौट आईं। इस घटना के बाद सावित्री ताई अपने कमरे में जैसे कैद ही हो गईं। किसी से कुछ नहीं बोलतीं। चौधरी साहब ने भी लाख पूछा, लेकिन सावित्री ताई के मुँह से एक शब्द नहीं निकला। धीरे-धीरे करीब दस दिन बीत गए, लेकिन सावित्री ताई अपने कमरे से बाहर नहीं निकलीं।

आज मुन्ने का नामकरण है, लेकिन सावित्री ताई को अपनी कोई भी सुध-बुध नहीं। वह बुत बनी खिड़की के पास उदास बैठी थीं कि किसी ने उनके कंधे पर हाथ रखा। सावित्री ताई ने पीछे मुड़कर देखा तो सामने चौधरी साहब को खड़ा पाकर वह सहम गईं। चौधरी साहब ने सावित्री ताई के चेहरे को देखा तो उनकी आँखें सूजी हुई थीं और चेहरा मुरझाया हुआ था।

"सावित्री, क्या हुआ? मुझे नहीं बताओगी?" चौधरी साहब ने सावित्री ताई के हाथों को अपने हाथों में थामकर बड़े ही प्यार से पूछा।

लेकिन सावित्री ताई खामोश रहीं और कुछ न बोलीं। कुछ देर कमरे में मौन छाया रहा, लेकिन चौधरी साहब ने ताई से फिर पूछा, "सावित्री, अगर मुझसे कोई भूल हुई है तो मैं हाथ जोड़कर तुमसे क्षमा माँगता हूँ। तुम जो चाहे मुझे सजा दे दो, मगर यों चुप न रहो। दस दिन से तुम्हारी ये चुप्पी, ये उदासी मुझे अंदर-ही-अंदर खाए जा रही है।"

चौधरी साहब के प्यार भरे शब्दों को सुनकर और बदले हुए व्यवहार को देखकर पत्थर बनी सावित्री ताई जैसे टूट गईं और फूट-फूटकर रोने लगीं। फिर थोड़ा सँभलकर उन्होंने चौधरी साहब को सारी बात बताई। उनकी बातें सुनकर चौधरी साहब की आँखें भी नम हो गईं। लेकिन उन्होंने अपने आप को किसी तरह सँभालते हुए कहा, "सावित्री, तुम्हारे साथ हुए दुर्व्यवहार का असली दोषी तो मैं हूँ। मैंने तुम्हें तुम्हारे हर सुख और अधिकार से वंचित रखा। अपने भाइयों की ममता में मैं ये भूल ही गया कि तुम्हारे भी कुछ अरमान होंगे। तुम्हारी भी कुछ ख्वाहिशें होंगी। लेकिन आज मैं अपने किए पर बहुत शर्मिंदा हूँ, सावित्री। मुझे माफ कर दो। यदि माफ न कर सको तो तुम मुझे जो चाहे वह सजा दो, लेकिन मेरे गुनाह की सजा इन बच्चों को मत दो। अगर तुम ऐसे रूठ जाओगी तो यह घर पूरी तरह बिखर जाएगा।"

"ताऊजी ठीक कह रहे हैं, ताईजी। यदि आप ऐसे रहोगी तो हम बच्चों का क्या होगा? आप जैसी महान् औरत के मुख पर ऐसी उदासी शोभा नहीं देती, यदि आप नीचे नहीं आएँगी तो मैं भी नहीं जाऊँगा।" कमरे के दरवाजे पर खड़े कृष्णा ने रोते हुए कहा।

चंद्रा भी उसके साथ ही खड़ी थी। दोनों ताई के पास आ गए, उन दोनों को देखकर पहले तो चौधरी साहब के चेहरे पर संतुष्टि के भाव आ गए।

"ताईजी, हम दोनों ने आपकी और ताऊजी की सारी बातें सुन लीं। आप तो इस घर की पालनहार हो, देवी हो। जैसे एक माँ अपने बच्चों के लिए अपनी बहुत सी खुशियों का त्याग कर देती है और बदले में उनसे कुछ भी नहीं चाहती, वैसे ही आपने भी तो अपने बच्चों के लिए, अपने इस परिवार के लिए इतना बड़ा त्याग किया है। एक ऐसा अनकहा त्याग, जिसकी आज तक किसी को कानोकान खबर भी नहीं होने दी।" चंद्रा ने कहा।

"सावित्री, देखो, ये दोनों बच्चे भी तुम्हारा आशीर्वाद चाहते हैं, अब तो मान जाओ, नीचे चलो।" चौधरी साहब ने कहा।

सावित्री ताई उन तीनों की बातों को सुनती जा रही थीं। अपने पति के मुँह से पहली बार सावित्री ताई ऐसे मीठे शब्दों को सुन रही थीं। पति का प्रेम और बहू-बेटे की बातों ने सावित्री ताई के जख्मों पर मरहम का काम किया। धीरे-धीरे उनका मन थोड़ा-बहुत हल्का होने लगा। लेकिन फिर भी वह अपने मन को नीचे चलने के लिए मना नहीं पा रही थीं। उन्हें डर था कि कहीं फिर से सुशीला उन्हें अपमानित न कर दे। वह अब भी असमंजस में मौन साधे खड़ी थीं।

"जीजी, आप तो हम सबकी माँ हो और माँ कभी अपने बच्चों से नाराज नहीं होती। वह तो अपने बच्चों की बड़ी-से-बड़ी गलती भी माफ कर देती है। क्या आप हमें माफ नहीं करोगी?" सुशीला आँखों में आँसू और गोद में मुन्ने को लिये खड़ी थी। सुशीला के साथ लता और दोनों देवर भी थे।

सुशीला की आवाज सुनकर सावित्री ताई चौंक गईं। उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह वही सुशीला है, जो शब्दों के बाण से उनको घायल कर देती थी। लेकिन आज उसके व्यवहार और पूरे परिवार का अपने प्रति प्रेम देखकर वह पिघल गईं और उनकी आँखों से आँसुओं की लड़ी बहने लगी। सुशीला ने मुन्ने को सावित्री ताई की गोद में रख दिया। मुन्ने को गोद में लेते ही ताई के मुख पर अश्रुओं के साथ एक हल्की सी मुसकराहट आने लगी। सावित्री ताई ने मुन्ने के माथे को चूमा और उसे अपने सीने से लगा लिया।

साअ

१०१ प्रथम तल, सी-१८
होटल रेडिशन के पीछे
कौशांबी, गाजियाबाद-२०१०१० (उ.प्र.)
दूरभाष : ९८१०४६४०४८

तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर

• श्याम किशोर पांडेय

प्राचीन भारतीय दार्शनिक एवं विद्वान् आचार्य चाणक्य ने लिखा है—"जिस देश के लोग अपने इतिहास को नहीं जानते और उस पर गर्व नहीं करते, उस देश का अस्तित्व धीरे-धीरे मिट जाता है। भारतीय लोगों को अपने इतिहास के बारे में अधिक जानना चाहिए। "

दक्षिण भारत में ईसा पूर्व से लेकर सोलहवीं शताब्दी तक राष्ट्रकूट, पल्लव, पांड्य, चेर, नायक, चोल और विजयनगर आदि जैसे महान् साम्राज्यों का शासन रहा। अपने शासन काल के दौरान इन राजवंशों ने अपने क्षेत्रों के विकास, समृद्धि तथा आम जन के कल्याण पर बहुत अधिक ध्यान दिया तथा अपनी राजधानियों में और स्व-शासित क्षेत्रों में विशाल मंदिरों का निर्माण भी कराया। 'धान का कटोरा' के रूप में विख्यात तमिलनाडु की उपजाऊ भूमि और राजराजा चोल की राजधानी तंजौर में स्थित बृहदेश्वर मंदिर भारतवर्ष के उत्कृष्ट मंदिरों में से एक है। यह मंदिर भगवान् शिव का मंदिर है, जिसकी स्थापना ग्यारहवीं शताब्दी में चोल वंश के महान् शासक एवं शिवभक्त राजराजा ने की थी। इस मंदिर को बृहदेश्वर मंदिर के साथ-साथ राजराजेश्वर मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। सन् २०१० में तमिलनाडु सरकार ने इस मंदिर के निर्माण के एक हजार वर्ष पूरे होने पर एक भव्य समारोह का आयोजन किया था। चोल महाराज राजराजेश्वर (राजराजा) के समय में तंजौर नगर अपनी समृद्धि और कला-कौशल की उत्कृष्टता की दृष्टि से दुनिया के सर्वश्रेष्ठ नगरों में से एक था।

मेरे तथा मेरी पत्नी और बेटी के मन में बृहदेश्वर मंदिर को देखने की अभिलाषा बहुत वर्षों से थी और यह इच्छा तब से और बलवती हो गई, जब से यह जानकारी हुई कि इस मंदिर का गुंबद अस्सी टन ग्रेनाइट पत्थर का है। सच ही कहा है, 'जहाँ चाह वहाँ राह' और अंततोगत्वा वह दिन आ ही गया, जिस दिन मैंने परिवार सहित बृहदेश्वर मंदिर जाने का कार्यक्रम बनाया। बेंगलुरु से तंजौर तक जाने के लिए कई ट्रेनें हैं, जो दस-बारह घंटे का समय लेती हैं। सड़क मार्ग से दूरी लगभग चार सौ कि.मी. है, परंतु हमने भाड़े की टैक्सी से तंजौर के बजाय तिरुचिरापल्ली संक्षिप्त नाम त्रीची जाने का निर्णय लिया, जो बेंगलुरु से लगभग साढ़े तीन सौ कि.मी. है और वहाँ से तंजौर तक की दूरी मात्र पचपन कि.मी. है। तिरुचिरापल्ली तमिलनाडु का एक बड़ा शहर है, जिसमें काफी बड़े-बड़े मंदिर हैं, इसलिए इसे 'छोटी काशी' भी कहा जाता है। १४ जून, २०२४

सुपरिचित लेखक। एम.ए., पीएच.डी., आचार्य; सी.ए.आई.आई.बी.। कन्नड़ डिप्लोमा; पूर्व सहायक महाप्रबंधक (केनरा बैंक)। लेखक, फैकल्टी, अनुवादक एवं यात्री।

को मैंने सपरिवार रात के नौ बजे टैक्सी से अपनी यात्रा प्रारंभ की और सुबह के साढ़े तीन बजे हम त्रीची के होटल ब्लॉसम पहुँच गए। बेंगलुरु से त्रीची तक सड़क बढ़िया है और मार्ग में कई होटल भी हैं, जहाँ पर भोजन आदि की अच्छी व्यवस्था है। होटल ब्लॉसम त्रीची के बढ़िया होटलों में से एक है, यह एक फोर स्टार प्रॉपर्टी है। इस होटल में ड्राइवरों के ठहरने की भी समुचित व्यवस्था है। हमें इस बात की जानकारी थी कि बृहदेश्वर मंदिर सुबह के छह से दोपहर के बारह बजे तक खुला रहता है, फिर शाम को चार बजे से रात के आठ बजे तक खुला रहता है। अत: दूसरे दिन हम होटल में नाश्ता आदि करके सुबह के ग्यारह बजे निकले और बारह बजे तक तंजौर पहुँच गए। हमने तंजौर स्थित मराठा पैलेस, सरस्वती महल लाइब्रेरी आदि को देखा। दोपहर में यहाँ के सुप्रसिद्ध होटल आर्य भवन प्योर वेज रेस्टोरेंट में भोजन किया। इस रेस्टोरेंट की थाली बड़ी प्रसिद्ध है, जिसमें भाँति-भाँति के सुस्वादु तमिल व्यंजन होते हैं। यह रेस्टोरेंट सौ वर्ष से भी अधिक पुराना है तथा किसी पुराने हवेलीनुमा मकान को ही रेस्टोरेंट का रूप दे दिया गया है, जिससे इसकी रौनक काफी बढ़ गई है। इस रेस्टोरेंट से बृहदेश्वर मंदिर की दूरी लगभग छह कि.मी. है। मंदिर के लिए रास्ते में चलते हुए हमें दूर से ही एक जगह से मंदिर का गुंबद दिखाई दिया, हमने शिखर दर्शन कर लिये। हम लोग सायं चार बजे बृहदेश्वर मंदिर पहुँच गए। सड़क के एक तरफ बहुत बड़ा पार्किंग स्पेस है, वहाँ पर कार पार्किंग करके सड़क की दूसरी तरफ स्थित मंदिर के पहले गोपुरम के पास आ गए। गोपुरम से पहले ही दाएँ तरफ ऊँची चहारदीवारी दिखी और उसके आगे राजराजा चोल द्वारा ग्यारहवीं शताब्दी में बनवाई गई खाई दिखाई पड़ रही थी। दूसरे गोपुरम में प्रवेश करते ही दाईं ओर जूता स्टैंड था, वहाँ पर जूता आदि निकालकर नंगे पाव मंदिर जाने के लिए आ गए। बाएँ तरफ भारतीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा लगाया हुआ सूचना-पट्ट है, साथ ही यह सूचना भी है कि यह मंदिर यूनेस्को द्वारा संरक्षित इमारत है। इस सूचना-पट्ट में इस बात का उल्लेख

है कि सन् १००३ से १०१० ई. की अवधि में इस मंदिर का निर्माण चोल वंश के महाप्रतापी राजा राजराजेश्वर (राजराजा) ने कराया। इस मंदिर की ऊँचाई २१६ फीट है तथा इसमें लगभग पचास हजार घन मीटर ग्रेनाइट की चिनाई हुई है और आश्चर्य है कि इन पत्थरों को जोड़ने में मिट्टी, सीमेंट आदि जैसे किसी पदार्थ का प्रयोग नहीं हुआ है। इन पत्थरों को इंटरलॉकिंग पद्धति से जोड़ा गया है, जो उस समय की उन्नत इंजीनियरिंग एवं उत्तम वास्तुकला का अन्यतम उदाहरण है। तंजौर के पास कोई पहाड़ी क्षेत्र न होने के कारण ये ग्रेनाइट के पत्थर तंजौर से लगभग साठ कि.मी. दूर तिरुचिरापल्ली (त्रीची) के मम्मालई नामक जगह से खोदकर हाथियों, कैदियों, नौकरों, सेवकों आदि के द्वारा ढोकर लाए गए थे। इस मंदिर में प्रवेश नि:शुल्क है। सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि इतना बड़ा मंदिर होने के बावजूद इसके शिखर की परछाईं जमीन पर नहीं पड़ती।

मंदिर की भव्यता और इससे जुड़े अन्य ऐतिहासिक तथ्यों को विस्तार से जानने की दृष्टि से हमने भारतीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा प्रमाणित एक गाइड ले लिया। अगले प्रवेश द्वार से बाहर निकलने के बाद एक विशाल प्रांगण मिलता है। सामने मंदिर की विशाल संरचना दिखाई पड़ती है और नंदीजी के दर्शन होते हैं, नंदी का मुँह शिव लिंग की तरफ है। प्रांगण में घुसने के बाद बाएँ तरफ राहु देवता का मंदिर दिखाई पड़ा। राहु देव की मूर्ति का बढ़िया दर्शन दूरबीन से किया जा सकता है। दूरबीन न होने कारण हमने आँखों को ही बायनाकुलर आकृति में बनाकर दर्शन किया। सामने मंदिर है और बाएँ तरफ वाराही अम्मा का मंदिर है। वाराही अम्मा के इस मंदिर की बड़ी मान्यता है, पहले इनका दर्शन करने के बाद ही भगवान् शिव का दर्शन करते हैं। यह भगवान् विष्णु के द्वादश अवतारों में से एक वाराह अवतार की शक्तियों से युक्त हैं। वाराही माँ की अद्‌भुत मूर्ति चोलकाल की उत्कृष्ट मूर्तिकला का श्रेष्ठ उदाहरण है। गर्भगृह के दर्शन के लिए हमारे गाइड ने वी.आई.पी. व्यवस्था की थी, जिससे हमें दूसरे मार्ग से सीधे गर्भगृह तक जाने का अवसर प्राप्त हो गया। इस विशेष मार्ग से बीस-पच्चीस सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर जाना होता है। दो सीढ़ियों के बीच काफी अंतराल है, जो इस बात का द्योतक है कि जिन लोगों को ध्यान में रखते हुए ये सीढ़ियाँ बनाई गई होंगी, उनकी लंबाई कम-से-कम छह फीट या उससे अधिक ही रही होगी। इन सीढ़ियों के रास्ते हम गर्भगृह से पहले वाले प्रांगण में पहुँचे और वहाँ से थोड़ा आगे बढ़कर गर्भगृह वाले स्थान में पहुँचे। यह गर्भगृह प्रकोष्ठ अत्यंत भव्य है तथा अठारह फीट ऊँचा शिवलिंग है। वी.आई.पी. दर्शनार्थी होने के कारण पुजारीजी ने बहुत विधि-विधान से भगवान् शिवजी का पूजन-अर्चन करवाया, प्रसाद भी दिया और मस्तक पर भस्म भी लगाया। शिवलिंग नर्मदाजी से निकला है, जो पत्थर का एक ही टुकड़ा है, जिसका वजन २० टन है और ऊँचाई के मामले में यह भारत का सबसे बड़ा शिवलिंग है। इस शिवलिंग की स्थापना के बारे में बताया जाता है कि इस मंदिर में शिवलिंग की स्थापना पहले हुई और मंदिर का निर्माण कार्य बाद में पूर्ण हुआ, जबकि सामान्यतया मंदिर निर्माण के बाद ही मूर्ति की स्थापना की जाती है। इसकी एक और विशेषता यह है कि पिछले हजार वर्षों से अविच्छिन्न एवं निर्बाध रूप से शिवलिंग की पूजा-अर्चना हो रही है। हमें प्राप्त जानकारी के अनुसार सन् १००६ तक मंदिर के भवन के निर्माण का कार्य लगभग पूर्ण हो गया था, अत: चोल महाराजा राजराजा ने स्वयं शिवलिंग पर स्वर्ण पुष्प अर्पित किए थे। मंदिर के अंतिम चरण का कार्य पूर्ण हो जाने पर राजराजा ने सन् १०१० में विमान (शिखर) के ऊपर कलश स्थापित किया। गर्भगृह के बाहर की दीवारों पर भरत नाट्यम के शास्त्रीय संगीत की बहुत सारी मुद्राओं को उत्कीर्ण किया गया है। भगवान् शिवजी का दर्शन करके सीढ़ियों से नीचे उतर गए। आगे चलने पर दाहिनी तरफ ऊँचाई पर ही स्थित दक्षिणामूर्तिजी की मूर्ति का दर्शन किया। दक्षिणामूर्तिजी को दक्षिण भारत में एक प्रसिद्ध देवता के रूप में मान्यता प्राप्त है। आगे चलते हुए गणेशजी की सुंदर मूर्ति मिली, उसका दर्शन करने के बाद थोड़ा आगे बढ़ने पर एक प्रसन्न मुखमुद्रा में विराजमान ऋषितुल्य मूर्ति के दर्शन किए। कहा जाता है कि यह मूर्ति राजराजा महाराज के गुरुजी की है। इसके आगे बढ़ने पर कार्तिकेयजी की मूर्ति है और वहीं पर महिष पर खड़ी दुर्गा माता की भी मूर्ति है। वहाँ से आगे चलने पर भगवान् शिवजी की तरफ निहारती नंदी की विशाल प्रतिमा का दर्शन किया। नंदीजी की मूर्ति भव्य होने के साथ-साथ आकृति में भी काफी विशाल है। दक्षिण भारत में नंदी की चार विशाल मूर्तियाँ हैं, एक लेपाक्षी, जो आंध्र प्रदेश के कर्नूल जिले में है, दूसरा बेंगलुरु के बुल टेंपल में स्थित नंदी, तीसरा मैसूर में चामुंडेश्वरी हिल्स पर स्थित नंदी और चौथा यहाँ का विशाल नंदी है। इस नंदी की ऊँचाई के बारे में बताया जाता है कि इसकी ऊँचाई हाथी पर सवार व्यक्ति की हाथी सहित जो ऊँचाई होगी, उससे भी अधिक है। आगे बढ़ने पर पार्वती माता की दिव्य मूर्ति के दर्शन किए। देवी माँ की आँखों का सौंदर्य और उसकी चमक ठीक वैसी ही है, जैसी कि मदुरै स्थित मीनाक्षी देवी की है। इस संबंध में गाइड ने बताया कि पांड्य राजाओं द्वारा निर्मित मीनाक्षी मंदिर के समय जो धातु शिल्प कौशल विकसित हुआ था, उसका योगदान इस मूर्ति के निर्माण में भी है। इस संबंध में और जानकारी यह मिली कि इस मंदिर के सौंदर्यीकरण तथा सुधार आदि में समय-समय पर चोल राजाओं के अतिरिक्त पांड्य और विजयनगर साम्राज्य का भी योगदान रहा है, जो दीवारों पर लगे पत्थरों के प्रकार एवं चिनाई की भिन्नताओं के आधार पर मालूम पड़ता है। गाइड ने एक-दो जगह दीवारों पर लगे पत्थरों एवं चिनाई के ढंग को दिखाकर इस वैभिन्न्य से अवगत भी कराया। अंत में भगवान्

शिव की नृत्य मुद्रा में स्थापित नटराज की कांस्य प्रतिमा के दर्शन किए। यह मूर्ति चोल साम्राज्य के कुशल शिल्पियों दारा कांस्य धातु पर की जाने वाली अद्‌भुत शिल्पकला का अप्रतिम नमूना है। इस मूर्ति के बाएँ हाथ में आग है और एक दाएँ हाथ अभय मुद्रा में है। यह विशिष्ट नृत्य मुद्रा ब्रह्मांड में निरंतर होते रहने वाले परिवर्तनों को भी अभिव्यक्त करती है। इस मूर्ति की ऊँचाई मनुष्य की उस ऊँचाई जितनी ही है, जितनी कि उस समय के शिल्पकार कांस्य की मूर्तियों के निर्माण के समय किया करते थे।

मंदिर में दर्शन के पश्चात् एक बार परिक्रमा करने की दृष्टि से जब पुन: दीवारों को देखने लगे तो उनपर विस्तार से तमिल भाषा में खुदवाए गए सुविस्तृत संदेशों को देखकर हम हतप्रभ रह गए। पता नहीं, ये अक्षर ग्रेनाइट के इन पत्थरों पर किस कुशलता से खुदवाए गए हैं कि आज हजार वर्ष से धूप और पानी की मार सहते हुए भी पठनीय स्थिति में हैं। हमारे गाइड ने बताया कि ये तमिल भाषा की पुरानी लिपि 'ग्रंथम' में लिखे हुए हैं। चोल नरेश महाराज राजराजा पहले ऐसे शासक हुए हैं, जिन्होंने कविता के स्थान पर आम जनता में प्रचलित भाषा में अपने राज्य की आर्थिक स्थिति, प्रशासनिक ढाँचे, विभिन्न युद्धों में प्राप्त विजयों, प्रशस्तियों, व्यापारिक गतिविधियों, तत्कालीन सामाजिक ताने-बाने, प्रशासनिक स्वरूप आदि तमाम बातों का उल्लेख इनमें किया है। चोल सम्राट् राजराजा ब्राह्मणों, गायकों, शिल्पकारों, मूर्तिकारों, मिस्त्रियों, कलाकारों आदि को नियमित रूप से जो दान, अनुदान, उपहार आदि दिया करते थे, उनका भी विस्तार से उल्लेख किया गया है। प्रदक्षिणा पथ के बगल में चारों तरफ बरामदानुमा गलियारा है, जिनके बारे में बताया जाता है कि वे यात्रियों के ठहरने के लिए बनाए गए थे, पर मुझे लगता है कि इनका और भी कई तरह से उपयोग होता होगा, जैसे—विद्यार्थियों के अध्ययन-अध्यापन के लिए, विचार-विमर्श के लिए भी इसका उपयोग किया जाता रहा होगा। गर्भगृह के बगल वाले खंड की दीवारों पर गुंबद से लेकर नीचे तक तमाम तरह के पौराणिक दृश्यों को अत्यंत खूबसूरती के साथ उत्कीर्ण किया गया है। इनमें ब्रह्माजी के एक सिर को काटने का दृश्य, असुरों एवं शिवजी के गणों का युद्ध, दुर्गा देवी द्वारा असुर वध, राजसी विवाह समारोहों से जुड़े कई प्रसंगों के चित्र हैं तथा एक आकृति चीनी नागरिकों की भी है, जो बताती है कि चोल सम्राट् राजराजा के चीन के साथ भी व्यापारिक संबंध थे। ये सभी चित्र उत्कृष्ट शिल्प कला के नमूने एवं मनमोहक हैं।

लगभग ढाई घंटे तक मंदिर देखने के बाद भी लगता था कि और देखना चाहिए, पर अब रात हो गई थी। रात में बिजली की रोशनी में जगमगाते मंदिर की छटा देखते ही बनती थी। मंदिर के गुंबद से थोड़ा नीचे शिव, पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, नंदी, मयूर, सिंह सहित शिवजी के पूरे परिवार का चित्र उत्कीर्ण किया गया है। गाइड ने बताया कि इसे 'कैलाश शिखर' कहा जाता है। आज से हजार साल पहले तंजौर से कैलाश पर्वत की यात्रा करना अत्यंत दुर्गम था, संभवत: इसे ही ध्यान में रखते हुए परम शिवभक्त चोल सम्राट् राजराजा ने कैलाश शिखर का निर्माण करवाया होगा, ताकि बृहदेश्वर मंदिर का दर्शन करने हेतु आने वाले श्रद्धालु यहीं पर कैलाश शिखर का दर्शन करके स्वयं को कैलाश दर्शन का पुण्यभागी मान लें।

यह मंदिर परम प्रतापी चोल शासक राजराजा द्वारा अत्यंत सावधानीपूर्वक बनाई गई योजना, विपुल संसाधनों का एकत्रीकरण, पूर्ण प्रशिक्षित वास्तुशिल्पियों एवं सुदक्ष मिस्त्रियों की अद्‌भुत कुशलता एवं उत्कृष्ट कारीगरी का जीवंत प्रतीक है। इस मंदिर में विराजमान शिवलिंग का दिव्य दर्शन और पुन: दर्शन की कामना लिये हमने मंदिर से तिरुचिरापल्ली के लिए प्रस्थान किया और रास्ते में एक रेस्टोरेंट में रात्रि का भोजन करके अपने होटल आ गए।

दिल्ली से तंजौर तक जाने के लिए चेन्नई सबसे सुविधाजनक एयरपोर्ट है, वैसे तिरुचिरापल्ली में भी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है। कोयंबटूर और सेलम से भी तंजौर नजदीक है। दिल्ली से तंजौर तक सीधे जाने वाली कुछ ट्रेनें भी हैं, जो लगभग बीस घंटे का समय लेती हैं। तंजौर में बृहदेश्वर मंदिर के अलावा सरस्वती महल लाइब्रेरी, धारासुरम ऐरावतेश्वर मंदिर, तंजावुर पैलेस, स्वार्ट्ज चर्च, पेरुवुडियार कोविल आदि कई दर्शनीय स्थान हैं। यदि कोई तिरुचिरापल्ली (त्रीची) ठहरना चाहता है तो वहाँ वह तंजौर देखने के साथ-साथ वहाँ के सुप्रसिद्ध एवं भव्य मंदिरों तथा रमणीय स्थलों, जैसे रंगनाथ स्वामी मंदिर, जंबुकेश्वर मंदिर, रॉक फोर्ट टेंपल, पचामलाई हिल्स ईरुंबेश्वरा टेंपल, कल्लानई डैम, रेलवे म्यूजियम आदि देख सकता है। तंजौर में महँगे एवं बजट वाले कई होटल हैं। तिरुचिरापल्ली एक बड़ा शहर है, अत: यहाँ पर हर तरह के होटल उपलब्ध हैं।

मैं समझता हूँ कि अपनी समृद्ध विरासत एवं संस्कृति को जानने-समझने तथा उसमें निष्ठा रखने वाले हर भारतीय को इस मंदिर का दर्शन जीवन में कम-से-कम एक बार अवश्य करना चाहिए। जिस कुशलता से इस मंदिर की दीवारों, प्रकोष्ठों, अंतर्भित्तियों आदि पर विभिन्न पौराणिक आख्यानों, भरत नाट्यम की विशिष्ट भंगिमाओं, सैन्य यात्राओं, वैवाहिक समारोहों इत्यादि की सजीव मूर्तियों को उत्कीर्ण किया गया है, वे हमारे देश की समृद्धि, उच्च तकनीक का ज्ञान तथा शिल्प/धातु शिल्प कौशल आदि में महारत का परिचायक होने के साथ-साथ वर्तमान पीढ़ी और भविष्य की पीढ़ियों के लिए ललक, उत्साह और प्रेरणा का स्रोत भी है।

सा.अ.

फ्लैट नं. ए ५१०, ए ब्लॉक,
नंदी वुड्स अपार्टमेंट,
येल्लनहल्ली ऑफ बीजी रोड,
बेंगलुरु-५६००७६
दूरभाष : ९६११००३५२४

केवल झाग, बस वही

मूल : **हर्नांडो टेलेज**

अनुवाद : **सुशांत सुप्रिय**

अमरीका के ख्यातिप्राप्त लेखक हरनांदो टैलेज का जन्म २२ मार्च, १९०८ को बोगोटा में हुआ था। उन्होंने वहीं से शिक्षा प्राप्त की। वे बड़ी कम उम्र में ही पत्रकारिता की दुनिया में आ गए थे। वे कोलंबिया के कुछ सबसे लोकप्रिय समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के कर्मियों में रहे। वह एक पत्रकार और लेखक दोनों रहे। १९५० में उनके लघुकथा-संग्रह 'सेनिजास पैरा विएंतो' के प्रकाशन के बाद ही उनका नाम अधिक व्यापक रूप से जाना जाने लगा। उन्होंने पत्रकारिता व लेखन में बहुत नाम कमाया। उनकी मृत्यु १९६६ में हुई। यह उनकी एक चर्चित कहानी का हिंदी रूपांतर दे रहे हैं।

दुकान में घुसते हुए उसने कुछ नहीं कहा। मैं अपने सबसे अच्छे उस्तरे चमोटे पर घिस रहा था। उसे पहचानते ही मैं काँपने लगा। लेकिन उसने इस ओर गौर नहीं किया। अपनी भावनाओं को छिपाने की उम्मीद में मैं उस्तरों को धार देता रहा। मैंने अपने अँगूठे के मांस पर उनका परीक्षण किया और फिर उन्हें रोशनी में देखने लगा।

उसी पल उसने गोलियों से जड़ा अपना कमरबंद निकाल लिया, जिससे उसकी पिस्तौल की खोल लटकी हुई थी। उसने उसे दीवार में लगी एक कील पर टाँग दिया और अपनी फौजी टोपी भी वहीं लटका दी। फिर वह मेरी ओर मुड़ा और अपनी टाई की गाँठ ढीली करता हुआ बोला, "भयानक गरमी है। जरा मेरी दाढ़ी बना दो।" यह कहकर वह कुरसी पर बैठ गया।

मैंने अंदाजा लगाया कि उसकी दाढ़ी चार दिन पुरानी थी—हाल ही के वे चार दिन, जब वे लोग हमारे सैनिकों के विरुद्ध अभियान चला रहे थे। उसका चेहरा धूप में ज्यादा देर तक रहने की वजह से जला हुआ-सा लग रहा था। मैं ध्यान से साबुन से झाग तैयार करने लगा। मैंने साबुन के कुछ टुकड़े काटकर उन्हें एक कप में डाला और उसमें गरम पानी डालकर उसे ब्रश से हिलाने लगा। तत्काल झाग उठने लगा।

"समूह के अन्य लड़कों की दाढ़ी भी इतनी ही बढ़ गई होगी।" उसने कहा। मैं झाग को फेंटता रहा।

"लेकिन हम सफल हुए, समझे? हमने उनके प्रमुख लोगों को पकड़ लिया। कुछ को हम मुर्दा लाए, कुछ अन्य को जिंदा पकड़ लाए। लेकिन जल्दी ही वे सब मारे जाएँगे।"

"आप कितने लोगों को पकड़ पाए?" मैंने पूछा।

"चौदह। हमें उन्हें पकड़ने के लिए घने जंगल में जाना पड़ा। पर हम सारा हिसाब-किताब चुका लेंगे। उनमें से कोई भी जीवित नहीं बचेगा।"

जब उसने झाग से भरा ब्रश मेरे हाथ में देखा तो उसने कुरसी पर पीछे टेक लगा ली। मुझे अब भी उसके चारों ओर एक बड़ा कपड़ा डालना था। इसमें कोई शक नहीं था कि मैं घबराया हुआ था। मैंने एक दराज में से एक बड़ा कपड़ा निकाला और उसके गले के चारों ओर गाँठ बाँधकर वह कपड़ा उस पर डाल दिया। उसने बात करना जारी रखा। शायद उसने सोचा कि मैं उसके दल से सहानुभूति रखता हूँ।

"हमने जो किया उससे शहर के निवासियों को सबक मिला होगा।" उसने कहा।

"हाँ," मैंने उसके गरदन पर बँधी कपड़े की गाँठ को कसते हुए कहा।

"हमने अच्छे ढंग से वह काम किया, नहीं?"

"बहुत बढ़िया," ब्रश के लिए मुड़ते हुए मैंने जवाब दिया।

उस आदमी ने थकान का प्रदर्शन करते हुए अपनी आँखें बंद कर लीं और झाग के ठंडे स्पर्श की प्रतीक्षा करते हुए बैठा रहा। इससे पहले मैंने कभी उसे अपने इतने करीब नहीं पाया था। जिस दिन उसने शहर के सभी निवासियों को स्कूल के आँगन में उन चार विद्रोहियों की लाशों को देखने के लिए इकट्ठा किया था, उस दिन मैंने कुछ पल के लिए खुद को उसके सामने पाया था। पर विद्रोहियों की क्षत-विक्षत देहों के दृश्य की वजह से मैं उसके चेहरे को गौर से नहीं देख सका था। वही इस पूरे कांड का संचालक था। उसी का चेहरा अब मैं अपने हाथों में लेने वाला था।

वाकई वह कोई अप्रिय चेहरा नहीं था और वह दाढ़ी भी अशोभनीय नहीं थी, जो उसे थोड़ी बड़ी उम्र का बना रही थी। उसका नाम टौरेस था, कप्तान टौरेस।

मैं उसके चेहरे पर झाग की पहली परत लगाने लगा। उसने अपनी आँखें बंद रखीं।

मुझे झपकी लेने में मजा आएगा, "वह बोला। लेकिन आज शाम के लिए बहुत सारा काम किया जाना बाकी है।"

मैंने ब्रश उठाकर बनावटी उदासीनता से कहा, "क्या वह काम विद्रोहियों को गोली मारने का है?"

"हाँ, उसी तरह का काम है", उसने उत्तर दिया, "लेकिन थोड़ा धीमा।"

"सबको मारना है?"

"नहीं, केवल कुछ को।"

मैं उसके गालों पर झाग लगाता रहा। मेरे हाथ फिर से काँपने लगे। वह आदमी इससे अनभिज्ञ था। मेरी किस्मत अच्छी थी। लेकिन मैंने चाहा कि काश, वह यहाँ नहीं आया होता। शायद हमारे कई लोगों ने उसे मेरी दुकान में दाखिल होते हुए देख लिया होगा। दुश्मन मेरे घर में आया था। मैंने जिम्मेदारी महसूस की।

मुझे किसी आम नाई की तरह ही बहुत सावधानी और सफाई से उसकी दाढ़ी बनानी थी, जैसे कि वह कोई अच्छा ग्राहक हो। उसके एक भी रोम छिद्र से खून की बूँद नहीं निकलनी चाहिए। मुझे यह भी सुनिश्चित करना था कि मेरे उस्तरे की ब्लेड उसकी त्वचा के किसी भी छोटे से गड्ढे में न फिसले। मुझे यह भी देखना था कि उसकी त्वचा मुलायम और चमकदार बनी रहे, ताकि जब मैं अपने हाथ का पिछला हिस्सा उस के गाल पर फेरूँ, तो वहाँ कोई भी बचा हुआ बाल महसूस न हो। हाँ, गुप्त रूप से मैं भी एक क्रांतिकारी था, लेकिन इसके साथ ही मैं एक कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदार नाई भी था। मुझे अपने पेशे और अपने काम करने के तरीके पर गर्व था और चार दिनों की बढ़ी वह दाढ़ी एक चुनौती थी।

मैंने उस्तरा लिया, उसके ब्लेड वाले फाँक को बाहर निकाला और फिर एक ओर की कलम के नीचे अपने काम में लग गया। उस्तरा आराम से त्वचा पर चलने लगा। उसकी दाढ़ी मुलायम नहीं थी बल्कि कड़ी थी। वह ज्यादा लंबी नहीं थी, पर घनी थी। धीरे-धीरे साफ त्वचा उभरने लगी। उस्तरा किरकिराते हुए त्वचा पर आगे बढ़ता रहा। वह वैसी ही साधारण आवाज निकालता रहा, जबकि उसके दूसरे सिरे पर झाग और बालों के गुच्छे जमा होते चले गए।

मैं उस्तरे को साफ करने के लिए एक पल रुका। फिर उस्तरे को धार देने के लिए मैंने दोबारा चमोटा उठा लिया, क्योंकि मैं सही ढंग से काम करने वाला नाई हूँ। उस आदमी ने अपनी बंद आँखें अब खोल लीं। उसने अपना एक हाथ बँधे हुए कपड़े के भीतर से बाहर निकाला और उसने उस जगह अपने गाल की त्वचा को अपने हाथ से महसूस किया, जहाँ से झाग अब साफ कर दिया गया था। फिर वह बोला, "आज शाम छह बजे स्कूल के अहाते में आना।"

"क्या जो उस दिन देखा था, वही देखने के लिए?" मैंने भयभीत होते हुए पूछा।

टौरेस यह नहीं जानता था कि मैं उसका शत्रु हूँ। न उसे इस बात का पता था, न ही उसके अन्य साथी यह बात जानते थे। इस गुप्त बात के बारे में बहुत कम लोग जानते थे। इसी वजह से हर बार जब टौरेस शहर में कुछ करता था, विद्रोहियों का शिकार करने का अभियान चलाता था तो मैं उसके बारे में अपने लोगों को खुफिया जानकारी दे सकता था। इसलिए मेरे लिए विद्रोहियों को यह बताना बेहद मुश्किल होने वाला था कि टौरेस मेरे चंगुल में था और मैंने उसे शांति से बचकर निकल जाने दिया– जीवित और बनी हुई दाढ़ी के साथ।

सुपरिचित कथाकार एवं अनुवादक। अब तक नौ कथा-संग्रह, पाँच काव्य-संग्रह तथा विश्व की अनूदित कहानियों के नौ संग्रह प्रकाशित। कहानियाँ और कविताएँ पुरस्कृत और कई राज्यों के स्कूल-कॉलेजों व विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती हैं। अंग्रेजी व पंजाबी में भी लेखन व रचनाओं का प्रकाशन।

"आज का तमाशा पिछली बार से बेहतर हो सकता है।" उसने कहा।

"आपकी योजना क्या करने की है?"

"मैं अभी नहीं जानता। लेकिन हम सब वहाँ अपना मनोरंजन करेंगे।"

एक बार फिर उसने पीछे कुरसी पर टेक लगाकर अपनी आँखें मूँद लीं। मैं उस्तरा लेकर उसकी ओर बढ़ा।

"क्या आप उन सभी को सजा देना चाहते हैं?" जोखिम उठाते हुए मैंने सहमकर पूछा।

"हाँ, सभी को।"

साबुन का झाग उसके चेहरे पर सूख रहा था। मुझे जल्दी करनी पड़ी। आईने में मैंने गली की ओर देखा। वह पहले जैसी ही नजर आई, पंसारी की दुकान में दो या तीन ग्राहक मौजूद थे। फिर मैंने दीवार घड़ी पर नजर दौड़ाई, दोपहर के दो बजकर बीस मिनट हो रहे थे। उस्तरा त्वचा पर नीचे की ओर चलता रहा। अब मैं दूसरी कलम के नीचे की ओर दाढ़ी बना रहा था। घनी, नीली दाढ़ी। उसे कुछ कवियों या पुजारियों की दाढ़ी की तरह इस दाढ़ी को बढ़ने का अवसर देना चाहिए था। वह दाढ़ी उस पर फबती। बहुत सारे लोग उसे पहचान नहीं पाते। इसमें उसका फायदा ही था—मैंने गले के पास की जगह को मुलायम बनाने का प्रयास करते हुए सोचा। इस जगह पर उस्तरे को बड़ी प्रवीणता से चलाना था। हालाँकि यहाँ मुलायम बाल थे, पर वे छोटे-छोटे घुँघराले गुच्छों में बदल गए थे। घने, घुँघराले बालों वाला कोई भी रोम छिद्र खुल सकता था और उससे खून की बूँद बाहर टपक सकती थी। मेरे जैसा अच्छा नाई अपने किसी भी ग्राहक के साथ ऐसा नहीं होने देता और यह तो विशिष्ट ग्राहक था। हममें से कितनों को इसने गोली मार देने का आदेश देकर मरवा दिया था? हममें से कितनों की मृत देह को इसने क्षत-विक्षत करने का आदेश दे दिया था? बेहतर होता कि मैं यह सब नहीं सोचता। टौरेस यह नहीं जानता था कि मैं उसका शत्रु हूँ। न उसे इस बात का पता था, न ही उसके अन्य साथी यह बात जानते थे। इस गुप्त बात के बारे में बहुत कम लोग जानते थे। इसी वजह से हर बार जब टौरेस शहर में कुछ करता था, विद्रोहियों का शिकार करने का अभियान चलाता था तो मैं उसके बारे में अपने लोगों को खुफिया जानकारी दे

सकता था। इसलिए मेरे लिए विद्रोहियों को यह बताना बेहद मुश्किल होने वाला था कि टौरेस मेरे चंगुल में था और मैंने उसे शांति से बचकर निकल जाने दिया—जीवित और बनी हुई दाढ़ी के साथ।

दाढ़ी अब लगभग पूरी बन गई थी। वह अपनी उम्र से कम आयु का लग रहा था, जैसे जब वह दुकान में आया था, उसकी तुलना में अब उसके कंधों पर बरसों का भार नहीं रहा था। शायद उन लोगों के साथ यह हमेशा होता है, जो नाई की दुकान पर जाते हैं। मेरे उस्तरे की करामात की वजह से टौरेस जैसे तरुण बन गया था। ऐसा इसलिए हुआ था, क्योंकि मैं एक होशियार नाई हूँ, कम-से-कम इस शहर का सर्वश्रेष्ठ नाई हूँ। बस उसकी ठोड़ी के नीचे, गले के पास थोड़ा सा झाग और लगाने की जरूरत थी। दिन कितना गरम हो गया था। टौरेस को भी मेरी ही तरह काफी पसीना आ रहा होगा। लेकिन वह बिल्कुल भयभीत नहीं था। वह एक शांत व्यक्ति था, जिसने यह भी नहीं सोचा था कि उसे आज दोपहर बाद बंदियों के साथ क्या करना है। दूसरी ओर मैं हूँ। मेरे हाथ में उस्तरा है और मैं उसके गाल और गले की त्वचा पर अपने हाथ फेर रहा हूँ। मैं कोशिश कर रहा हूँ कि इन रोम छिद्रों से खून की बूँद नहीं निकले। लेकिन इन सबके बीच मैं ठीक से सोच नहीं पा रहा हूँ। धिक्कार है उसे यहाँ आने पर, क्योंकि मैं एक क्रांतिकारी हूँ, हत्यारा नहीं और उसे मार डालना कितना आसान होगा। उसका मर जाना न्यायोचित होगा। क्या वाकई? नहीं! उफ, शैतान कहीं का। किसी और के लिए कोई अपना बलिदान देकर हत्यारा क्यों बने? इससे क्या फायदा होगा? कुछ नहीं। यह मरेगा तो कोई और आ जाएगा। वह मरेगा तो दूसरा कोई और आ जाएगा। और इस तरह हत्याओं का यह सिलसिला तब तक जारी रहेगा, जब तक खून का समुद्र नहीं बन जाता।

मुझे पूरा यकीन है कि एक तगड़ा झटका, एक गहरा चीरा सारे दर्द दूर कर देगा। इसे तड़पना नहीं पड़ेगा। लेकिन मैं इसकी लाश का क्या करूँगा? मैं इसकी मृत देह को कहाँ छिपाऊँगा? मुझे अपना सबकुछ यहीं छोड़कर भागना पड़ेगा और कहीं दूर, बहुत दूर जाकर शरण लेनी होगी। लेकिन वे तब तक मेरा पीछा करेंगे, जब तक वे मुझे ढूँढ़ नहीं लेते। 'कप्तान टौरेस का हत्यारा! इस नाई ने दाढ़ी बनाते हुए कप्तान का गला काट दिया। कायर कहीं का।'

मैं इसका गला पल भर में रेत सकता हूँ। खचा-खचाक्। मैं इसे शिकायत करने का मौका ही नहीं दूँगा। वैसे भी इसने अपनी आँखें बंद की हुई हैं। इसलिए यह न तो उस्तरे की चमकदार धार, न ही मेरी चमकीली आँखें देख सकेगा। लेकिन मैं तो असली हत्यारे की तरह पहले ही काँप रहा हूँ। इसके गले से खून का फव्वारा निकलेगा और चादर, कुरसी, मेरे हाथों और फर्श को भिगो देगा। मुझे दुकान का दरवाजा बंद करना पड़ेगा। और खून तब तक फर्श पर फैलता चला जाएगा, जब तक वह गरम, अनुन्मूलनीय, अनियंत्रित लहू बाहर गली तक नहीं पहुँच जाता—छोटी सी एक लाल धारा के रूप में। मुझे पूरा यकीन है कि एक तगड़ा झटका, एक गहरा चीरा सारे दर्द दूर कर देगा। इसे तड़पना नहीं पड़ेगा। लेकिन मैं इसकी लाश का क्या करूँगा? मैं इसकी मृत देह को कहाँ छिपाऊँगा? मुझे अपना सबकुछ यहीं छोड़कर भागना पड़ेगा और कहीं दूर, बहुत दूर जाकर शरण लेनी होगी। लेकिन वे तब तक मेरा पीछा करेंगे, जब तक वे मुझे ढूँढ़ नहीं लेते। 'कप्तान टौरेस का हत्यारा! इस नाई ने दाढ़ी बनाते हुए कप्तान का गला काट दिया। कायर कहीं का।'

और दूसरी ओर के लोग क्या कहेंगे? "उसने हम सबका बदला ले लिया। उसका नाम याद रखा जाना चाहिए। (और यहाँ वे मेरे नाम का जिक्र करेंगे।) वह शहर का नाई था। कोई नहीं जानता था कि वह हमारा समर्थक था।"

और इन सबसे क्या होगा? या तो मैं हत्यारा कहलाऊँगा या नायक। मेरी नियति इस उस्तरे की धार पर निर्भर करेगी। मैं अपना हाथ थोड़ा और मोड़ सकता हूँ। उस्तरे को त्वचा पर जोर से दबाकर मैं गले को गहराई तक काट सकता हूँ। त्वचा रेशम की तरह, रबड़ की तरह कट जाएगी। मनुष्य की त्वचा से अधिक मुलायम और कुछ नहीं होता तथा उसके ठीक नीचे तेजी से बाहर निकल आने के लिए खून मौजूद होता है। ऐसा धारदार ब्लेड कभी विफल नहीं होता। यह मेरा बेहतरीन उस्तरा है, लेकिन मैं हत्यारा नहीं कहलाना चाहता। बिल्कुल नहीं। आप मेरे पास दाढ़ी बनवाने के लिए आए हैं और मैं ईमानदारी से अपना काम करता हूँ···मुझे खून से सने हाथ नहीं चाहिए। केवल झाग, बस वही। आप हत्यारे हो सकते हैं, लेकिन मैं केवल एक नाई हूँ। समाज में हर व्यक्ति की एक जगह होती है। हाँ, हर व्यक्ति की अपनी एक जगह होती है।

अब उसकी ठोड़ी साफ-सुथरी और मुलायम हो गई थी। वह कुरसी पर आगे की ओर होकर बैठ गया और उसने आईने में गौर से अपना चेहरा देखा। फिर उसने अपने गालों पर अपने हाथ फेरे और उसे अपनी त्वचा बिल्कुल नई और ताजा लगी।

"शुक्रिया", उसने कहा। वह उठकर दीवार की खूँटी पर टँगी अपनी बेल्ट, पिस्तौल और टोपी की ओर बढ़ा। मेरे चेहरे का रंग उड़ गया होगा। मेरी कमीज पसीने से भीगी हुई महसूस हो रही थी। टौरेस ने अपनी बेल्ट पहनी, खोल में मौजूद अपनी पिस्तौल को ठीक किया और अपने बालों पर करीने से हाथ फेरने के बाद उसने अपनी फौजी टोपी पहन ली। अपनी पतलून की जेब में से उसने कई सिक्के निकाल लिए, ताकि वह अपनी दाढ़ी बनाने के एवज में मुझे पैसे दे सके। फिर वह दरवाजे की ओर बढ़ा। दरवाजे के पास पहुँचकर वह एक पल के लिए रुका और मेरी ओर मुड़कर उसने कहा, "उन्होंने मुझे बताया कि तुम मेरी हत्या कर दोगे। मैं केवल यही जानने के लिए यहाँ आया था, पर किसी को मारना इतना आसान नहीं होता। तुम मेरा यकीन मानो।" इतना कहकर वह बाहर गली में निकलकर आगे बढ़ गया।

साअ

ए-५००१, गौड़ ग्रीन सिटी,
वैभवखंड, इंदिरापुरम्,
गाजियाबाद-२०१०१४ (उ.प्र.)
दूरभाष : ८५१२०७००८६

नागरिक सम्मान से नरसेवा तक

● दर्शनी प्रिया

मनुष्य किस्मत के हाथ का खिलौना नहीं है, जिसके किए गए श्रम का उपयोग कोई दूसरा करे। व्यक्ति के चुनाव का क्षेत्र भले ही संकुचित हो, किंतु चुनाव की आजादी उसे सदैव होनी चाहिए। जब तक मनुष्य के अंदर स्वतंत्र आत्मा का वास है, तब तक वह अपनी मुक्ति का मार्ग खोजने में समर्थ रहेगा। फिर वह मुक्ति चाहे समाज के बनाए नियमों की हो या फिर अपने जीवन को रोगों से मुक्त रखने की। जिस तरह प्रकृति के तीन प्रमुख तत्त्व हैं—जल, जंगल और जमीन—जिनके बिना प्रकृति अधूरी है और तीनों ही तत्त्वों के असंतुलन से प्रकृति का संतुलन बिगड़ने लगा है, ठीक उसी तरह हमारे जीवन में भी स्वास्थ्य का एक अनिर्वचनीय स्थान है। यह वह अमूल्य वस्तु है, जो विकास की अंधी दौड़ और भौतिक सुविधाओं की जद में लगातार खराब हो रही है। हम स्वयं उसका दोहन करने पर तुले हैं। अपनी सेहत के प्रति उदासीनता के चलते हम अपने खुद के भविष्य को खतरे में डाल रहे हैं। इससे हमें उबरना होगा।

मनुष्य जब-जब अपनी राह से पथभ्रष्ट हुआ है, समाज में कुछ ऐसे दत्तचित्त किरदारों का आगमन हुआ है, जिन्होंने अपनी प्रेरणा और पुनीत कार्यों से मनुष्य को सँभाला है। ऐसे में परमार्थ सेवा में रत कुछ ऐसे चिकित्सकों को निश्चित ही विस्मृत नहीं किया जा सकता, जिनकी कोशिशों ने समाज में नई चेतना फैलाई और स्वास्थ्य की पूँजी लोगों को लौटाने में सहायता की। पिछले कुछ वर्षों में लगातार ऐसे पद्मश्री हमारे समक्ष आ रहे हैं, जिनके कार्यों की किंचित् भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। जमीन से जुड़े इन नागरिक सम्मान प्राप्तकर्ताओं ने समय, साधना और तप से लोगों में उम्मीद की एक नई रोशनी भरी है।

कहते हैं, समग्र संसार का कल्याण करने वाले कुछ मनुष्य नीति और मर्यादा में तत्पर रहकर अपने मनुष्योचित धर्म का पालन करते हैं। जैसे नदियाँ श्रेष्ठ, शीतल और निर्मल जल बहाती है तो धरती सदा खेती से भरी रहती है। शीतल मंद पवन बेफिक्र होकर चलता है, ठीक उसी तरह हमें पीड़ा से बचाने और हमें जीवनदान देने के लिए समाज की ये विभूतियाँ सकारात्मक परिवर्तन लाने की बात कर रही हैं। ये लोग 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' की राह पर चल रहे हैं। दूसरों की सेवा और परपीड़ा की पुकार से प्रेरित होकर वे सेवा को अपना धर्म बना रहे हैं। ऐसे ही दूरदर्शी, सत्यदर्शी और संदर्शी लोगों में शामिल हैं : लखनऊ के किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज के पेडियाट्रिक सर्जन डॉ. एस.एन. कुरील, देहरादून के ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. भूपेंद्र सिंह संजय और दिल्ली डॉ. नीरू कुमार। जो पूरी प्रतिबद्धता से लोगों की सेहत का खयाल रखते हैं।

एडिटर राज्यसभा सचिवालय। भारतीय संसद् की लेखिका एक चिर-परिचित स्तंभकार और कथाकार हैं। वे गद्य और पद्य दोनों में समान रूप से अधिकार रखती हैं। इनकी अब तक तीन पुस्तकें प्रकाशित। कई वर्षों से अनुवाद कर्म में सक्रिय। राष्ट्रीय समाचार-पत्रों में महिला अधिकारों और समसामयिक विषयों पर लगातार लेखन।

इसमें महत्त्वपूर्ण नाम आता है, पद्मश्री डॉ. संजय सिंह भूपेंद्र और दिल्ली की डॉ. नीरू कुमार, जो न केवल अपने मेडिकल प्रैक्टिस के जरिए, बल्कि सामाजिक सेवा के जरिए समाज में नजीर बन रहे हैं। इनके उत्कृष्ट कार्यों को देखते हुए सरकार ने इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया है। स्वहित और अर्थलोलुपता को दरकिनार कर जन स्वास्थ्य के मुद्दे को सर्वोच्चता देना इनकी प्राथमिकता रही है। जागरूक और मूल्यपरक नागरिकों का भी राष्ट्र के उन्नयन में महत्त्व है। क्योंकि उनकी रुचि मानवमात्र का कल्याण करने में है। डॉ. संजय ऑर्थोपेडिक सर्जन हैं और एक गोल्ड मेडलिस्ट के तौर पर उन्होंने लंबे समय तक अपनी सेवाएँ दी हैं। तीन दशक पहले शुरू हुआ उनका कॅरियर आज भी बदस्तूर जारी है। इस दौरान उन्होंने अनेक मील के पत्थर स्थापित किया है। निरंतरता, अखंडता और परस्पर संबद्धता सदैव उनमें प्राणवान रही।

वर्तमान में वे देहरादून के अपने संजय ऑर्थोपेडिक सेंटर के जरिए मरीजों का इलाज कर रहे हैं। उनके नाम दुनिया के सबसे बड़े फीमर ट्यूमर को निकालने का भी रिकॉर्ड दर्ज है। न केवल अपने चिकित्सा पेशे में अपितु सड़क सुरक्षा जैसे गंभीर मुद्दे पर भी वे लगातार अपनी बात रखते हैं। उन्होंने चिकित्सा की अपनी उपलब्धियों के दम पर इस समाज में विशेष स्थान बनाया है।

ठीक इसी तरह डॉ. नीरू महिला सशक्तीकरण की पैरोकार,

ने अपने चिकित्सीय पेशे से समाज के लोगों की खूब सेवा की है। प्रशासनिक सेवा के जरिए मेडिकल पेशे को अपना कॅरियर बनाने वाली डॉ. नीरू ने दो दशक से भी ज्यादा तक सरकारी डॉक्टर के रूप में अपनी सेवाएँ दी हैं। बाद में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने विभिन्न संगठनों में महिला लीडर्स का न केवल सफल नेतृत्व किया, बल्कि अस्तित्व स्थापना की समस्या से जूझ रही युवा महत्त्वाकांक्षी महिला इंजीनियरों की प्रवक्ता भी बनीं। अपनी असाधारण विशेषज्ञता और रचनात्मकता के द्वारा संगठन में समानता और समता से लाखों महिलाओं को अपने प्रेरक संवाद के जरिए जागरूक किया। अपने प्रेरक वक्तव्य के जरिए उन्होंने हिंडालको, वेदांता ग्रुप, डिजाजियो और पेरिसको जैसे संगठनों को लैंगिक भेदभाव से इतर समानता की तुला पर कस दिया। उन्होंने 'महिलाएँ मैनुफैक्चरिंग इकाइयों में काम नहीं कर सकतीं', जैसी पुरातन सोच को अपने प्रेरक वक्तव्यों से जड़ से उखाड़ फेंका। डॉ. नीरू की कार्यकुशलता ने उन्हें दुनिया के बड़े विविधतापूर्ण और समावेशी सम्मेलनों में से एक 'दि फोरम ऑफ वर्करलेस इंक्लूजन', मिनीपोलिस जैसे बड़े मंच पर स्थान दिलाया।

ये अकेली ऐसी भारतीय महिला हैं, जिन्हें 'सेंटर फॉर ग्लोबल इंक्लूजन', अमेरिका के नेतृत्व वाली एक वैश्विक परियोजना 'डी.ई.आई. फ्यूचर्स' में एक विशेषज्ञ के तौर पर आमंत्रित किया गया। लखनऊ के किंगजॉर्ज मेडिकल कॉलेज के विश्व प्रतिष्ठित डॉक्टर एस.एन. कुरील भी इसी कड़ी में अगला नाम है, जिन्हें बच्चों की सर्जरी के क्षेत्र में स्वर्ण पदक भी हासिल है। लखनऊ के चिकित्सा संस्थान देश-विदेश के मरीजों को बेहतर इलाज देकर दुनिया भर में अपना नाम बुलंदियों पर पहुँचा रहे हैं। शिव नारायण कुरील ने एक भारतीय बाल रोग सर्जन, मेडिकल अकादमिक और लेखक के तौर पर दुनिया भर में महशूर रहे हैं। किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ (यू.पी.) में बाल चिकित्सा सर्जरी विभाग के प्रोफेसर और प्रमुख के पद पर रहते हुए उन्होंने कई जटिल सर्जरी को अंजाम दिया है। भारत सरकार ने उन्हें चिकित्सा में उनके योगदान के लिए २०१६ में चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया। उन्हें भारत में पहली बाल चिकित्सा योनि पुनर्निर्माण सर्जरी के प्रदर्शन का श्रेय दिया जाता है, जो ११ साल की लड़की पर की गई थी और मूत्राशय की एक्सस्ट्रोफी, एक दुर्लभ जन्मजात असामान्यता मानी जाती है। इसे सफलतापूर्वक अंजाम देकर उन्होंने इतिहास रच दिया।

भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में अब वैसी विभूतियाँ स्थान पा रही हैं, जिन्होंने समाज और राष्ट्र के लिए अद्‌भुत कार्य किया है। देश के ये वास्तविक नायक समाज को एक नई दिशा दे रहे हैं। देश के स्वास्थ्य के ये प्रहरी निस्स्वार्थ भाव से जन-कल्याण का कार्य कर रहे हैं। स्वास्थ्य हमारी सबसे बड़ी पूँजी है। देश स्वस्थ रहेगा तो आर्थिक प्रगति की राह पर तेज दौड़ेगा। इसलिए इन विभूतियों की प्रेरणा पाकर हमें अपनी इस अमूल्य संपदा को संरक्षित करने का प्रण लेना चाहिए।

साअ
दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली
दूरभाष : ८९२०४५८२४१

गलत फैसलों की जिम्मेवारी?

लघुकथा

● मुकेश शर्मा

अद्वितीय सुंदरी द्रुति के रूप से मोहित होकर पाँचों भाई—युद्धवीर, भीम सिंह, अर्जुन सिंह, रकुल और रहदेव ने निर्णय लिया कि वे पाँचों आपसी सहमति के साथ द्रुति के सामने विवाह का प्रस्ताव रखेंगे, यानी एक स्त्री के पाँच पति। उचित अवसर बनते ही उन पाँचों भाइयों ने द्रुति के सामने विवाह का प्रस्ताव रख दिया। किंतु अमीर पिता की बेटी द्रुति इस प्रस्ताव से चौंक गई, उसने संयम का परिचय दिया और उन पाँचों भाइयों से पूछा, "बुरा मत मानना, मैं जानना चाहूँगी कि यदि तुम्हारी मम्मी के पाँच पति होते तो तुम्हें कैसा लगता?"

"लड़की, जुबान सँभालकर बात कर।" भीम सिंह गुस्से से काँपने लगा।

"अच्छा, मम्मी की बात छोड़ो। चलो, यह बताओ कि इस विवाह से यदि मुझे संतान के रूप में पुत्री प्राप्त हुई और मैं उसका विवाह एक की बजाय पाँच युवकों से करना चाहूँ तो तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं होगी?"

"गुस्सा मत दिला, नहीं तो तेरी जुबान खींच लूँगा।" रकुल आपे से बाहर होने लगा। लेकिन युद्धवीर ने उसे शांत होने का इशारा दिया।

"ठीक···मम्मी भी नहीं, बेटी भी नहीं। लेकिन तुम पाँचों भाई एक स्त्री से विवाह करने को व्याकुल हो। क्या इससे रिश्ते, नातों की मर्यादा, गरिमा बनी रह सकेगी? क्या तुम्हारे अंदर इतना बोध नहीं है कि यह सही फैसला नहीं है? या तुम्हारे गलत फैसलों की जिम्मेवारी तुम्हारी नहीं?"

साअ
म. नं. १४२, सेक्टर पाँच, पार्ट छह,
निकट कम्युनिटी सेंटर,
गुरुग्राम-१२२००१ (हरियाणा)
दूरभाष : ९८१००२२३१२

मोहभंग

● राजेंद्र परदेसी

मंगरुवा और समय चाहे जहाँ रहे, लेकिन रात को खाने के समय थाली लेकर जरूर पहुँच जाता। कौशल्या भी जानती थी, इस कारण उसके लिए दो-चार रोटियाँ जरूर सिंकवा देती। मंगरुवा जिस दिन ताड़ी पीकर दिन भर गायब रहता, उन्हें बहुत गुस्सा आता। वह जब खाना माँगने पहुँचता तो अंदर से ही कह देती, "आज खाना नहीं बनाया है?"

कौशल्या को अधिक गुस्सा न आता तो खाना लाकर दे जाती, अन्यथा गुस्से का पुन: प्रदर्शन करती हुई कहती—"एक बार कह तो दिया, आज खाना नहीं बना।"

इन सब बातों को सुनने का अभ्यस्त मंगरुवा पूछता, "तबीयत तो ठीक न है भौजी, शकुंतला कहाँ है?"

कौशल्या क्या जवाब देती, वह जानती थी कि खाना तो उसकी बेटी शकुंतला ही बनाती है। उसका काम तो मात्र व्यवस्था तक ही सीमित है। पहले प्रकाश की बहू बनाती थी, वह जब से प्रकाश के साथ चली गई, शकुंतला ही बना रही है। मंगरुवा यह सब जानता है। जानता भी क्यों नहीं, घर से बाहर तक कोई भी काम होता, वही करता था। एक बाल्टी पानी की भी जरूरत होती तो शकुंतला बाल्टी और डोर मंगरुवा के सामने लाकर रख देती और कहती, 'मंगरू काका, एक बाल्टी पानी ला दो, थाल धोकर मैं अभी तुम्हारे लिए भोजन लाती हूँ।'

मंगरुवा समझता था कि शकुंतला को पानी की जरूरत किसी और कार्य के लिए होगी, लेकिन बहाना बना रही है थाली धोने का। इसीलिए बाल्टी-डोर उठाते हुए उलाहना देता, भाई, इतना बड़ा अफसर बन गया है। यह नहीं होता कि उससे कहकर घर में एक चापाकल (हैंडपाइप) लगवा लें, सोचती हैं, मंगरुवा तो है ही, फिर क्यों भाई का पैसा खर्च कराएँ।

शकुंतला चुपचाप उसकी बातें सुनकर अपने काम में लग जाती और मंगरुवा बुदबुदाते हुए आत्माराम के कुएँ से पानी लाकर दे जाता। बोलती, "ले, पिछले जनम में तेरा भी कर्ज खाई थी, सो उसे ही भर रही हूँ।"

कौशल्या की तीखी बातें मंगरुवा को सालती थीं कि नहीं, यह तो वही जानता, लेकिन यह जरूर था कि अगर उसकी जगह कोई दूसरा होता तो शायद ही दशरथ सिंह के यहाँ रुकता। मंगरुवा की सेहत पर उसका असर न पड़ता। उल्टा वह कहता, 'भौजी, अगले जनम में हमने कोई बहुत बड़ा पुण्य किया था, जो आज आप लोगों की कृपा हो गई। नहीं तो···भौजी।'

यह सुब सुनते ही कौशल्या का गुस्सा काफूर हो जाता और बोलती, 'अच्छा जा, चुपचाप खा।'

सुपरिचित रचनाकार एवं चित्रकार। साहित्य की लगभग सभी विधाओं में रचना-कर्म। 'हताश होने से पहले' (कविता-संग्रह), 'भोजपुरी लोककथाएँ', 'दूर होता गाँव' (लघुकथा-संग्रह), 'शब्दों के संधान' (हाइकु-संग्रह), 'शब्द शिल्पियों के सान्निध्य में' (साक्षात्कार-संग्रह) तथा रेखांकन विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लगातार प्रकाशित।

खाना लेकर मंगरुवा दुआर पर बैठकर खाने लगता। अगर दुआर की चौकी पर दशरथ सिंह बैठे मिलते तो खाने के साथ-साथ मंगरुवा कहता, "भइया! लगता है, भौजी आज मुझसे बहुत नाराज है।"

दशरथ सिंह ऐसी बातों का क्या जवाब देते। चुप रहते। दशरथ सिंह को चुप देखकर मंगरुवा फिर बोलता, "लगता है, आप भी मुझसे नाराज हैं।"

दशरथ सिंह को आखिर बोलना ही पड़ता, "नहीं रे! हम क्यों नाराज होंगे?"

"तो फिर बोलते क्यों नहीं?"

"क्या बोलूँ।"

"चातरवाले खेत में इस साल अगर आर.आर. २१ बोया जाए तो खूब होगा।"

"लेकिन बिना खाद-पानी का प्रबंध किए यह कैसे होगा?"

"तो प्रकाश को लिख क्यों नहीं देते कि वह खेत में पंप सेट लगवा दे। उसके लिए तो यह कोई बड़ी बात नहीं है।"

"उसके लिए तो नहीं है, लेकिन मेरे लिए तो है न।" दशरथ सिंह एक उच्छ्वास छोड़कर बोले, "चुपचाप खा। तुझे कितनी बार समझाया कि खाना खाते समय बोला नहीं जाता।"

ऐसे मौके पर मंगरुवा समझ जाता कि दशरथ सिंह की कोई दु:खती नस दब गई है। तभी ऐसी बातें बोल रहे हैं। वह बात के रुख को मोड़ देता, "शकुंतला का ब्याह तो इस साल करेंगे न?"

"सोचता तो यही हूँ।" वार्त्ता में भाग लेते हुए दशरथ सिंह उत्तर देते।

"तो कहीं निकलते क्यों नहीं? अब तो दशहरा दशों दुआर खुल जाते हैं, जिधर जाएँ कोई हरज नहीं रहता।"

"वह तो ठीक।"

दशरथ ने उसकी बातों का समर्थन किया तो मंगरुवा का उत्साह बढ़ गया। बोला, "शिवपुर वाले लड़के का क्या हुआ? आप कह रहे थे कि लड़का तथा परिवार सब ठीक है···न हो तो आप जाकर उसी को

क्यों नहीं ठीक कर लेते?" अपनी जिम्मेदारी को जताते हुए मंगरुवा बोला, "यहाँ की चिंता आप न करें··हम तो हैं ही जानवरों को देखने के लिए।"

"सो तो ठीक है, लेकिन पहले एक बैल खरीदना जरूरी है, उसके बिना चार दिन बाद जुताई-बुआई कैसे होगी!"

दबी आवाज में दशरथ ने अपनी समस्या रखी तो मंगरुवा ने तुरंत समाधान प्रस्तुत कर दिया—"प्रकाश को लिख क्यों नहीं देते।"

जहाँ मंगरुवा हर समस्या का समाधान प्रकाश के पास ढूँढ़ता था, वहीं दशरथ हर समस्या के मूल में प्रकाश को ही पाते थे। इसीलिए प्रकाश का नाम आते ही खीझकर चुप हो जाते थे, लेकिन इतना सब होने पर भी उनका दिल यह मानने को तैयार न था कि प्रकाश इतना बदल जाएगा, विश्वास करने का वह जब-जब प्रयास करते, तब-तब उनके मानस-पटल पर वह दृश्य उभर आता, जब प्रकाश छोटा था और उन्हें कभी उदास देखता तो कितने भोलेपन से कहता, 'बापू! क्यों उदास हो? समझ गया, बहुत काम करना पड़ता है न, इसीलिए थक जाते होगे, घबराओ नहीं, मैं जब बड़ा हो जाऊँगा तो तुम्हें कोई भी काम करने नहीं दूँगा और देखना, इतनी बड़ी कोठी बनाऊँगा कि लोग दूर से ही देखकर कहेंगे, वह देखो दशरथ सिंह की भव्य कोठी।'

बेटे की भोली बातों को सुनकर दशरथ सिंह अपनी पीड़ा भूल जाते। 'जब मैं आपके लिए सोनपुर के मेले से एक घोड़ी ला दूँगा। फिर उसी से आया-जाया करना, पैर भी नहीं थकेंगे।'

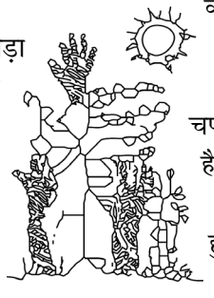

बेटे को पिता की पीड़ा कितनी सालती थी, वह कहता था, 'बापू, ऐसा करना—सबसे पहले एक बैल और जरूर खरीद लेना, अच्छा नहीं लगता, जो तुम चौधरी से बैल माँगते हो। पता नहीं चौधरी अपने आप को क्या समझते हैं, जो इतना नखरा दिखाते हैं।'

वह पिता की समस्याओं को हल करने का विचार ही नहीं रखता था, बल्कि सलाह देते हुए चेतावनी भी देता था—'देखो बापू! बैल लाना तो चौधरी को कभी मत देना, कितना भी माँगे।'

बेटे की बातों को सुनकर कभी-कभी हँसी आ जाती तो प्रकाश टोकते हुए कहता, 'बापू, तुम हँस रहे हो। देखना मैं पढ़-लिखकर कितना बड़ा आदमी बनता हूँ।' कौन पिता नहीं चाहता कि उसका पुत्र बड़ा होकर नाम कमाए! दशरथ सिंह ने कभी विद्यालय का मुँह नहीं देखा था तो भी उन्होंने प्रकाश को पढ़ाने के लिए कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी थी।

शायद पिता की निष्ठा और पुत्र का फर्ज का फल था कि प्रकाश सदैव प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता चला गया। जब उच्च शिक्षा हेतु विदेश जाने की बात आई तो दशरथ ने अपने पूर्वजों की धरोहर को भी दाव पर लगा दिया था। लोगों ने सलाह भी दी थी, 'पागल हो गए हो क्या? बेटे को विदेश भेजने के लिए अपने परिवार के सभी सदस्यों के पेट पर लात मार रहे हो। पढ़-लिखकर प्रकाश कहीं वहीं रह गया और तुम्हें नहीं पूछा तो तुम्हें जीवन काटना मुश्किल हो जाएगा।'

बेटे के भविष्य को सँवारने के लिए दशरथ इतना आतुर थे कि उन्हें किसी की भी सलाह रत्ती भर नहीं भाती थी। ऐसे में भूला सिंह, की यह बात उन्हें और विह्वल बना देती कि दशरथ सिंह, अगर प्रकाश लिख-पढ़कर लायक हो जाएगा तो कितनी ही जमीन खरीद देगा? मान लो, तुम्हारे लिए कुछ नहीं करेगा तो लोग यह कहेंगे ही कि देखो, दशरथ सिंह का लड़का कितना बड़ा आदमी बन गया है।

यह सोचकर दशरथ ने पूर्वजों से प्राप्त जमीन में से मात्र दो बीघा छोड़कर शेष सब जमीन बेच दी थी। भविष्य की उज्ज्वल आशा में समय बीत गया। प्रकाश विदेश से पढ़कर आया तो शहर में ही एक बड़ा अधिकारी बन गया।

नवीनता की चमक में कुछ दिनों तक सभी मौन रहे थे, लेकिन धीरे-धीरे गाँव के लोग यह चर्चा करने लगे कि प्रकाश तो एकदम नालायक निकला। भूल ही गया कि गाँव में उसके माँ-बाप भी मौजूद हैं। दशरथ भी अपने मन को समझाने का प्रयास कर रहे थे। उनका मन इस बात को स्वीकार करने को तैयार नहीं था कि प्रकाश इतना बदल जाएगा। वे अगर ऐसा जानते तो शायद भूलकर भी शहर नहीं जाते।

वे जाना भी नहीं चाहते थे। उनकी पत्नी कौशल्या जब जिद करती तो कहते, जीवन भर तो गाँव में रहे, अब शहर जाकर क्या होगा? परंतु पति की पीड़ा और बेटे की मानसिकता से अनभिज्ञ कौशल्या ने जिद की तो दशरथ पत्नी को साथ लेकर शहर चल दिए।

मकान ढूँढ़ने में अधिक परेशानी नहीं हुई। गेट पर ही चपरासी मिल गया। उसी से पूछा, 'प्रकाश चंदर का मकान यही है?'

एक अजनबी देहाती को साहब का नाम इस तरह से लेते हुए देख चपरासी रोब से बोला, 'किसको ढूँढ़ रहे हो?'

'प्रकाश चंदर की कोठी यही है?'

'हाँ, कहो क्या है?' चपरासी लापरवाही से बोला।

दशरथ सिंह बिना किसी औपचारिकता के बोले, 'हम उनके पिता हैं। गाँव से मिलने आए हैं।'

दशरथ और उनकी पत्नी कौशल्या की दीन-हीन दशा को देखकर चपरासी को उनकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ, लेकिन फिर सोचा, अगर सच्चाई यही हो तो उसकी स्थिति दयनीय हो जाएगी। इसीलिए उनको बरामदे में रखी कुरसियों की ओर इशारा करके बैठने को कहा और स्वयं अंदर चला गया।

समाचार मिलते ही प्रकाश बाहर आया, माता-पिता की स्थिति देखकर उसे चपरासी के सम्मुख बहुत ग्लानि हुई, लेकिन सच्चाई को ही निगल जाए, इतना साहस उसमें नहीं था। वह चुपचाप खड़ा हो गया।

अब तक यही होता था कि प्रकाश जब भी गाँव जाता, अपने माँ-बाप के पैर अवश्य छूता, चाहे वे लोग जहाँ भी मिलें। लेकिन आज उसी काम को चपरासी के सम्मुख दोहराने में उसे लज्जा की अनुभूति हो रही थी। दशरथ भी बेटे की मानसिकता को परख रहे थे, लेकिन मौन थे। अब और अधिक मौन रहना जब प्रकाश को असह्य हो गया तो स्वयं ही बोला, "बिना चिट्ठी-पत्री दिए आप लोग कैसे आ गए? गाँव में सब ठीक तो है न?"

बेटे के अंदर आए परिवर्तन को देखकर दशरथ यह अंदाजा लगा

चुके थे कि प्रकाश के सम्मुख उनके अस्तित्व का कोई महत्त्व नहीं है, फिर भी अपनी पीड़ा को छुपाते हुए बोले, 'क्या बताऊँ, रात में तुम्हारी माँ ने सपने में तुम्हें देखा, सुबह होते ही शहर चलने की रट लगाने लगी। मैंने बहुत समझाया कि प्रकाश कोई बच्चा है, जो इतना परेशान हो रही हो? अगर कुछ होता तो खबर न भेजता? लेकिन जब तुम्हारी माँ को कुछ समझ में न आया तो यहाँ आना पड़ा।' वह कुछ देर मौन स्थिति का विश्लेषण करते रहे, फिर बोले, 'अब तो तुम लोगों को देख ही लिया, सोचता हूँ—दोपहर वाली गाड़ी से ही वापस लौट जाऊँ, किरण डूबते-डूबते पहुँच जाऊँगा। वहाँ शाम होते ही जानवर राह जोहने लगते हैं।'

अपने मंतव्य को पूरा होते देखकर प्रकाश बीच में ही बोल पड़ा, 'आप लोग अभी तो गाँव से आ रहे हैं, थक गए होंगे, मेरी राय है कि आज आप लोग आराम करें। कल लौट जाइएगा। वहाँ तो मंगरुवा है ही।'

'मंगरुवा का क्या भरोसा, कहीं ताड़ी पीकर सो गया तो जानवर रात भर भूखे रह जाएँगे।'

प्रकाश कुछ बोले, इसके पहले ही दशरथ पत्नी की ओर मुखातिब होकर बोले, 'आओ चलें, अभी गाड़ी मिल जाएगी। शाम तक गाँव पहुँच जाएँगे।'

पति को लौटते देख कौशल्या भी उनका अनुकरण करते हुए लौट पड़ी, उसी तरह, जिस तरह दिन भर भटकने के पश्चात् शाम होते ही पंछी अपने नीड़ की ओर लौट पड़ते हैं।

१३६ मयूर रेजीडेंसी, फरीदी नगर, लखनऊ-२२६०१५
दूरभाष : ९४१५०४५५८४

लघुकथा

अवरोह

• कमल चोपड़ा

उनका अड़सठ साल का शरीर दिल्ली से बेंगलुरु तक के सफर में एकदम चरमरा गया था। उन्हें चलने में दिक्कत आ रही थी। उनकी बेटी यहाँ बेंगलुरु में तीन-चार साल से जॉब कर रही थी। वे पहली बार बेंगलुरु आए थे और बेटी का घर ढूँढ़ रहे थे। दो दिन पहले यू.एस. में रह रहे उनके अपने बेटे विनय से फोन पर बात हुई थी। उनकी बातों को अमित ने मजाक में ही उड़ा दिया था। "मैं अड़सठ साल का हो गया हूँ, पर अभी तक दोनों बच्चों की शादी नहीं कर पाया हूँ। तुम सैंतीस के और तुम्हारी बहन एकतीस साल की हो गई है। तुम्हारी और तुम्हारी बहन की शादी करके अपना फर्ज पूरा कर लूँ तो गंगा नहाऊँ?"

हँसते-हँसते दोहरा हुआ जा रहा था विनय, "मेरी शादी और आपका फर्ज··· ? गंगा नहाना है तो आज ही हरिद्वार चले जाइए और गंगा नहा लीजिए। कौन रोकता है। आप ही तो कहते थे, तुम्हें बहुत ऊँचा उठना है। ऊँचाइयों को पाँवों के नीचे लाना है। मैं पाँच करोड़ के पैकेज पर पहुँचा हूँ। अब मेरा लक्ष्य दस करोड़ के पैकेज का है।"

"ठीक है, पर शादी भी जरूरी है। शादी करके सैटल हो जाओ, फिर जो चाहो करो?"

"पापा, मेरी लाइफ में एक लड़की है। अभी हम एक-दूसरे को जाँच-परख रहे हैं। जब मन होगा तब शादी कर लेंगे। आप हमारी शादी क्या करेंगे? लाइफ हमारी है। माँ-बाप का फर्ज-वर्ज यह सब बेकार पुरानी सोच है।" फोन कट गया था।

बेटे के शब्दों ने उन्हें काट-छीलकर ऊँचाइयों और गहराइयों के बीच लटका दिया था। अपने जीते जी वे बेटे की न सही, कम-से-कम बेटी की शादी तो कर ही जाएँ, यह सोचकर वे बेंगलुरु में रहीं अपनी बेटी के घर चले आए थे। उन्हें आया देखकर बेटी हैरान हुई। उन्होंने अपने आने का मकसद उसे बताया तो वह खिलखिलाने लगी, "क्या पापा, आप मेरा कन्यादान करेंगे? मैं कोई चीज हूँ, जो मेरा दान करोगे। मुझे किसी ऐरे-गैरे को दान में दे दोगे। शादी करके अपना फर्ज पूरा करके खुद स्वर्ग जाना चाहते हो और मुझे शादी के नर्क में धकेलना चाहते हो।

"आपने ही तो हमें ऊँचाइयों से भी ऊँचा उठने के लिए प्रेरित किया और अब आप ही मुझे शादी करके सैटल हो जाने के लिए कह रहे हैं। सैटल मतलब नीचे बैठ जाना और बँध जाना? अभी तो मुझे बड़ी-बड़ी कंपनियों के ऑफर आने शुरू हुए हैं और अब आप··· ?"

उन्होंने समझाना चाहा, "शादी की भी एक उम्र होती है।"

"नहीं पापा, यह बेकार और पुरानी सोच है। शादी की कोई उम्र नहीं होती। कभी भी कर सकते हैं?"

"उन्होंने इधर-उधर नजर दौड़ाई और कहा, "अकेली ही तो हो? इतना बड़ा फ्लैट लेने की क्या जरूरत थी?"

"अकेली कहाँ? मैं तो पिछले तीन साल से अपने एक फ्रेंड के साथ लिव इन में रह रही हूँ।" एकाएक मर्यादाओं, मूल्यों, परंपराओं और संस्कारों के मजबूत शिखर टूटकर पिता के ऊपर आ गिरे। बेटी ने आगे कहा, "एक हफ्ता पहले मेरा उस फ्रेंड से ब्रेकअप हो गया है। लेकिन डोंट वरी पापा। मैंनें 'मूव ऑन' कर लिया है। मेरा एक नया फ्रेंड दो-तीन दिन में मेरे साथ रहने आ जाएगा। आप अपनी पुरानी सोच छोड़ दीजिए।''

"बेटी, हमारी पुरानी शादी-ब्याह, रीति-रिवाजों के पीछे बहुत पुख्ता वैज्ञानिक सोच थी। हमारी सोच पुरानी सही, पर तुम्हारी तो कोई सोच ही नहीं है। उसी वैज्ञानिक दृष्टि से ही पता चलता है कि कहाँ, कब कितने पंख फैलाने हैं और कब कहाँ समेटने हैं। पहले देख तो लो ऊँचाइयों की तरफ उठ रहे हो या गहराइयों में गिर रहे हो?"

१६००/११४ त्रिनगर, दिल्ली-११००३५
दूरभाष : ९९९९९४५६७९

बढ़ जाती है उम्र

● योगेंद्र पांडेय

पेड़ ढोते लोग

कल मैंने देखा रास्ते में
कुछ लोगों की भीड़,
जो घेरे हुए खड़े थे
पीपल के पेड़ को
चारो ओर से।

कुछ मजदूर हाथ में कुदाल लिए
खड़े थे
शायद रास्ता बना रहे थे
अस्पताल के लिए।

एक पीपल का पेड़, जो
रास्ते में आ रहा था
पेड़ को हटाना जरूरी था
हाथ में कुदाल लिए मजदूर
अनपढ़ थे मगर,
उनके भीतर जाग रही थी इनसानियत।

मजदूरों ने पीपल को नहीं काटा
बल्कि पीपल को वहाँ से निकालकर
ठेले पर ढोते हुए ले गए
पास के मंदिर तक
और वहीं उस पीपल को
पुनः लगा दिया।

मैंने देखा ठेले पर
पीपल को ढोते लोग
और सोचता रहा
अभी भी जिंदा है इनसानियत
मशीन बने हुए लोगों के भीतर।

तुम सृजन हो

तुम सृजन हो
कवि के अंतर्मन का
शब्दों की दीपशिखा और
छंदों के तार पर कसी
अलंकार से विभूषित
तुम सृजन हो
कवि के अंतर्मन का।

तुझमें बहती हैं भावनाएँ
नित कलकल
नदी सी निरंतर
तुम हो वसंत ऋतु की
सुरभित उच्छ्वास
तुम सृजन हो
कवि के अंतर्मन का।

खूँटी पर टँगे लोग

मैंने देखा है
खूँटी पर टँगे हुए
लोगों को
जैसे देह से उतारकर
टाँग देते हैं
पुराने कपड़े को।

पुराने कपड़े भी काम आते हैं
किसी गरीब लाचार की
देह ढकने के लिए,
वैसे ही
पुराने लोग भी काम आते हैं
अभाव और दुःख की घड़ी में
उम्मीद की एक नई
ज्योति जलाते हुए।

हमारे समय की
यह कैसी विडंबना है
कि लोग नहीं समझते हैं
पुराने कपड़े का महत्त्व
आधुनिकता की इस
अर्धनग्न भाग-दौड़ में।

सुपरिचित लेखक एवं रचनाकार। छंद, कविता, गीत, गजल, मुक्तक में रचनाएँ राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर काव्यपाठ। साहित्य केतु सम्मान तथा चंद्रशेखर सम्मान प्राप्त।

आँगन

घर चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो
आँगन के बिना घर
घर नहीं होता!
आँगन में खेलते हुए
बच्चों की किलकारियों से
बढ़ जाती है उम्र
घर की!

आँगन में लगा तुलसी का पौधा
दूर करता है
वास्तु दोष!

आँगन में बैठकर दादी-अम्मा
गाती हैं विवाह के गीत
आँगन में होता है विचार-विमर्श
घर को घर बनाने के लिए!
आँगन के बिना घर
घर नहीं होता।

गाँव-सलेमपुर,
जिला-देवरिया-२७४५०९ (उ.प्र.)
दूरभाष : ६३९४८९३७५३

सावधानी हटी, दुर्घटना घटी

● घमंडीलाल अग्रवाल

पात्र-परिचय

अक्षय : एक लड़का, उम्र १५ वर्ष
मोहित : एक लड़का, उम्र १४ वर्ष
पवन : एक लड़का, उम्र १४ वर्ष
गुंजन : एक लड़की, उम्र १३ वर्ष
दीपाली : एक लड़की, उम्र १२ वर्ष

[परदा खुलता है। मंच पर बस स्टैंड का दृश्य। सीमेंट की बनी एक बेंच पर पाँच बच्चे—अक्षय, मोहित, गुंजन, दीपाली व पवन बैठे हुए हैं। वार्त्तालाप हो रहा है।]

अक्षय : *(अखबार में पढ़ते हुए)* सड़क-दुर्घटना में एक दर्जन लोग घायल। दो की मौत। नियंत्रण खोने पर बस पेड़ से जा टकराई। चालक बस से कूदकर भाग गया।

मोहित : *(दुःखी स्वर में)* ओह, बहुत दर्दनाक घटना है।

पवन : आखिर ये दुर्घटनाएँ क्यों होती हैं और इनका जिम्मेदार कौन है?

गुंजन : मैं बोलू?

अक्षय : हाँ, बोलो।

गुंजन : दरअसल, इन दुर्घटनाओं के कई कारण हैं।

दीपाली : *(हैरानी से)* कई कारण?

गुंजन : हाँ, दीपाली! पहले मैं कुछ अन्य जानकारियाँ देना चाहूँगी।

मोहित : तो, देर किस बात की?

गुंजन : आज हमारे देश में सड़क, दुर्घटना के कारण मौत का आँकड़ा दिन-प्रति-दिन बढ़ता जा रहा है। एक सर्वे के अनुसार अपने देश में प्रतिवर्ष करीब डेढ़ लाख लोगों की जान सड़क-दुर्घटना में चली जाती है। दुर्घटना चाहे बड़े वाहनों की हो अथवा टू व्हीलर्स की।

दीपाली : *(आश्चर्य प्रकट करते हुए)* यह तो बड़ी चिंता की बात है।

गुंजन : बिल्कुल। हमें इस दिशा में गहराई से मंथन करना चाहिए।

पवन : तब तो हमें दुर्घटना के कारणों का गहन विश्लेषण करना निहायत जरूरी है।

गुंजन : सबसे प्रमुख कारण है—यातायात के नियमों की अनदेखी। वाहन चलाते समय चालक इन नियमों का पालन नहीं करता है, तब वह अपनी तथा दूसरों की जान भी खतरे में डाल देता है।

पवन : बिल्कुल ठीक बताया तुमने गुंजन!

सुपरिचित बाल-साहित्यकार। कई विधाओं की ९५७ पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रतिष्ठित 'भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार', चिल्ड्रंस बुक ट्रस्ट पुरस्कार', उ.प्र. हिंदी संस्थान के 'बाल-साहित्य भारती सम्मान' सहित अब तक २१० पुरस्कार/सम्मान प्राप्त।

गुंजन : दूसरा बड़ा कारण होता है—तेज गति से वाहन को सड़क पर दौड़ाना, जबकि सड़क के किनारे यह चेतावनी भी लिखी होती है—'गाड़ी धीरे चलाएँ' अथवा 'गति सीमा ५० किलोमीटर।' जब वाहन की गति सीमित होती है तो वाहन का नियंत्रित सरल हो जाता है।

अक्षय : और?

गुंजन : गाड़ी चलाते समय सीर बेल्ट जरूर बाँधें। न बाँधने पर चालान भी कर दिया जाता है। लेकिन इतना होने पर भी लोग हैं कि परवाह ही नहीं करते प्राणों की।

दीपाली : शराब पीकर भी गाड़ी नहीं चलानी चाहिए। है, न?

गुंजन : ठीक कहा दीपाली! इनके अलावा कुछ और भी सावधानियाँ हैं, जिन्हें ड्राइविंग के दौरान पालन करना अक्लमंदी होगा।

अक्षय : कौन सी?

गुंजन : ड्राइविंग करते समय मोबाइल फोन पर बातचीत तो कतई नहीं करनी चाहिए। जरा-सा ध्यान हटा और दुर्घटना हो जाती है, क्योंकि आजकल सड़कों पर वाहनों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है।

अक्षय : वाह, वाह! क्या खूब कहा गुंजन ने। यदि सभी चालक ऐसा करें तो दुर्घटनाओं में कमी आते अधिक वक्त नहीं लगेगा।

गुंजन : आगे सुनो। वाहनों की गति सीमित रखने के उद्देश्य से सड़कों पर स्पीड ब्रेकर बनाए गए हैं, ताकि तीव्र गति की वजह से सड़क-दुर्घटनाएँ कम हों अथवा न हों। परंतु वाहन चालक इन स्पीड ब्रेकरों की परवाह नहीं करते हैं, जिससे दुर्घटनाएँ हो जाती हैं।

मोहित : ठीक बात है। 'ओवर टेकिंग' भी कई बार दुर्घटनाओं को जन्म दे देती है। यदि ओवर टेकिंग अत्यंत आवश्यक

हो तो अपने वाहन की गति सीमा का ध्यान जरूर रखना चाहिए वाहन चालक को।

अक्षय : भई वाह! क्या बारीक बात बताई है मोहित ने। *(तालियाँ)*

गुंजन : *(बोलने की मुद्रा में)* वाहन चालक को चौराहे पर लगी लाल, हरी व पीली बत्तियों का भी पूरा-पूरा ध्यान रखना जरूरी होता है। भूलकर भी इन बत्तियों को गलत ढंग से पार नहीं करना चाहिए। सुरक्षित ड्राइविंग ही सुखद यात्रा की जननी है।

दीपाली : *(खुश होकर)* बहुत खूब, गुंजन! एक जानकारी यानी ध्यान रखने योग्य बात यह भी है कि बिना फाटक के रेलवे क्रॉसिंग को पार करते समय यह सुनिश्चित कर लेना आवश्यक है कि रेलगाड़ी न आ रही हो। अकसर ऐसे फाटकों पर भी दुर्घटनाओं के होने की खबरें कई बार हमें पढ़ने को मिल जाती हैं।

पवन : खराब मौसम, जैसे तेज वर्षा या आँधी-तूफान भी सड़क-दुर्घटनाओं का कारण बनता देखा गया है। ऐसे मौसम में वाहन के आगे की लाइट जलाकर धीमी गति से वाहन चलाने में ही समझदारी होती है।

गुंजन : बहुत अच्छा सुझाव है। और हाँ, कभी-कभी सड़कों पर घूमने वाले आवारा पशु भी दुर्घटनाएँ करवाने में भूमिका निभाते हैं। इसीलिए भीड़भाड़ वाले इलाकों या मोड़ से गुजरते समय हॉर्न का इस्तेमाल आवश्यक है।

दीपाली : दुपहिया वाहन चालकों को हेलमेट का प्रयोग अवश्य करना चाहिए, ताकि दुर्घटना होने की स्थिति में सिर सुरक्षित रहे।

गुंजन : अंत में एक बड़ा कारण और भी है इन सड़क-दुर्घटनाओं का! वह है—हमारी सड़कों का खराब होना। हमारी लापरवाही से हमारी सड़कें अकसर टूट जाती हैं। कई बार मेन होल भी जर्जर अवस्था में अथवा खुले पड़े होते हैं। हमें सड़कों पर न तो पानी डालना चाहिए और न कूड़ा-कर्कट फेंकना चाहिए। निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए सड़कों को खोदना भी नहीं चाहिए।

दीपाली : आने-जाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति 'सड़क' का प्रयोग करता है—पैदल यात्री, साइकिल या स्कूटर/मोटर साइकिल सवार अथवा चार पहिया वाहन वाले। सड़क की सुरक्षा करना हमारी जिम्मेदारी है, क्योंकि सड़कें हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। इनका रख-रखाव करने में ही समझदारी है।

अक्षय : सड़क-यातायात सुरक्षा एक प्रकार का उपाय है, जिससे सड़क-दुर्घटना में लोगों को चोट लगने और उससे मृत्यु होने आदि घटनाओं को कम करने का प्रयास किया जाता है। यदि सड़क के दोनों ओर फुटपाथ है तो पैदल यात्रियों को बाईं दिशा में फुटपाथ पर ही चलना चाहिए। यदि किसी सड़क के साथ फुटपाथ नहीं है तो जहाँ सामने से ट्रैफिक आ रहा है, वहाँ से दाहिने तरफ चलना चाहिए।

(तालियाँ बज उठती हैं।)

मोहित : सड़क-दुर्घटना रोकने में कौन-कौन से उपाय मददगार हो सकते हैं?

गुंजन : *(बोलती है)* पूरा ध्यान ड्राइविंग पर ही रखें। ट्रैफिक-नियमों का पालन करें तथा मोबाइल फोन का उपयोग भी न करें। शराब पीकर गाड़ी न चलाएँ। गति-सीमा नियंत्रित रखें। लंबी यात्रा करते समय थकान होने की स्थिति में थोड़ी देर विश्राम करें। दूसरे वाहनों से उचित दूरी बनाए रखें।

दीपाली : एक प्रश्न मेरे दिमाग में काफी देर से घूम रहा है। कहो तो पूछूँ?

गुंजन : हाँ-हाँ, पूछो!

दीपाली : 'सड़क-सुरक्षा सप्ताह' क्या होता है?

गुंजन : गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, हिंदी दिवस, शिक्षक दिवस, बाल दिवस, महिला दिवस आदि की तरह ही 'सड़क-सुरक्षा सप्ताह' समारोह भी प्रतिवर्ष जनवरी माह में मनाया जाता है। यह एक राष्ट्रीय कार्यक्रम है।

दीपाली : तो उधर देखो, दीवार पर लगे बैनर में क्या लिखा हुआ है?

गुंजन : सड़क-सुरक्षा सप्ताह (७-१३ जनवरी)। आपका सहयोग अपेक्षित है।

अक्षय : आज भी तो ७ जनवरी का दिन है।

मोहित : फिर तो 'सड़क-सुरक्षा सप्ताह' आज से ही मनाया जाने वाला है।

पवन : साथियो, हमें भी इसमें सहयोग करना चाहिए।

(अन्य दोस्त भी हामी भरते हैं।)

गुंजन : चलो, मैं कुछ स्लोगन लिखवाती हूँ—

सदा सड़क पर बाएँ चलना, दुर्घटनाओं से तुम बचना।

× × ×

सड़क हमें देती सुविधाएँ, हानि नहीं इसको पहुँचाएँ।

× × ×

सड़क सुरक्षा नियम काम के, ये तो फल हैं बिना दाम के।

दीपाली : हाँ, चलो अब इन्हें बड़ी सी पट्टिकाओं पर लिखकर बाजार में निकलते हैं।

(कुछ ही देर में पट्टिकाएँ तैयार हो जाती हैं।)

अक्षय : चलो साथियो, अब बाजार की मुख्य सड़क की ओर कूच करते हैं।

(पाँचों चल देते हैं।)

मोहित : *(हाथ हिलाकर)* सावधानी हटी, दुर्घटना घटी।

पवन : *(नारा लगाता है)* हम अपना कर्तव्य निभाएँ, सड़कें सुंदर-स्वच्छ बनाएँ।

(अक्षय, गुंजन व दीपाली अपने-अपने हाथ में पट्टिकाएँ लिये हुए चल रहे हैं। जागरूकता का संदेश नागरिकों को सोचने पर विवश करता है।)

(परदा गिरता है।)

७८५/८, अशोक विहार, फेज-१
गुरुग्राम-१२२००६ (हरियाणा)
दूरभाष : ९२१०४५६६६६

उत्तर प्रदेश के लोकगीत : संस्कृति के संवाहक

● उपमा शर्मा

ढोलक की मधुर थाप, स्त्रियों का समूह और कानों में माधुर्य घोलते इस समूह के कर्णप्रिय मधुर गीत। बहुत पुराने समय से लोक की संवेदनाओं को प्रखरता से उभारते ये गीत भले ही छंद की कसौटी पर खरे न उतरते हों, लेकिन आज भी वैवाहिक कार्य हों या पुत्र-पुत्री प्राप्ति पर होने वाले रीति-रिवाज, इन गीतों के बिना कार्यक्रम की मधुरता खोई सी रहती है। अपनी परंपराओं के वाहक अपनी संस्कृति की मिठास को सहेजते ये गीत लोकरंजन एवं लोकमंगल के महत्त्वपूर्ण उपादान हैं। लोकगीत का इतिहास संभवतया उतना ही पुराना है जितना कि मानव। लोकसंगीत लोकसाहित्य की तरह भारत के विभिन्न राज्यों में है और यह वहाँ की शैली के अनुसार ही दिखता है। उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिले में अद्वितीय संगीत परंपराएँ हैं। यहाँ के लोकगीत सामूहिक जीवन और सामूहिक श्रम को और अधिक आनंदमय बना देते हैं। ये पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित होते रहते हैं। इन लोकगीतों में अमराई की खुशबू भी है। चूल्हे पर पकते सोंधे पकवानों की मिठास भी है, हरे-भरे खेत भी हैं, कुएँ, बाबड़ी, पनघट भी हैं। सास-बहू की मीठी नोक-झोंक भी है। ननद-भाभी के खट्टे-मीठे संबंध भी हैं। परदेसी पिया के विरह भी इनमें गुँथे हैं तो सावन के झूलों की पींग भी इनमें रची-बसी है।

उत्तर प्रदेश के लोकगीत हर मूड और हर अवसर के लिए हैं। पारंपरिक लोकसंगीत को कई तरीकों से परिभाषित किया गया है। इनकी तुलना व्यावसायिक और शास्त्रीय शैलियों से की गई है। उत्तर प्रदेश को हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के 'पुबैया आंग' का गढ़ माना जाता है। भोजपुरी क्षेत्र के लोकगीतों को लोकप्रिय बनाने का श्रेय आमतौर पर भिखारी ठाकुर को जाता है।

उत्तर प्रदेश के प्रमुख लोकगीत

१. सोहर : यह उत्तर प्रदेश का सबसे प्रसिद्ध लोकगीत है। किसी के घर सोहर के गीत से ही पता चल जाता है, इस घर में नव जीवन ने आँखें खोली हैं। यह जीवन का स्वागत करता है और नई शुरुआत का जश्न मनाता है। यह आंतरिक रूप से पारिवारिक जीवन से जुड़ा हुआ है। यह गीत क्षेत्रों में प्रचलित धार्मिक संस्कृति से संबंधित है।

दैया रे दैया मुन्ने को नजर लागी/ मैं डिबिया काजल की लेकर भागी
जच्चा मेरी सीधी-सादी, लड़ना न जाने रे/दो कनस्तर घी के खा गई/
चार कनस्तर लड्डू/जच्चा मेरी खाना न जाने रे!

सुपरिचित लेखिका एवं रचनाकार। पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ एवं 'कैक्टस' लघुकथा-संग्रह प्रभात प्रकाशन से तथा 'अनहद' उपन्यास शुभदा प्रकाशन से प्रकाशित।

२. कहरवा : इस गायन शैली की उत्पत्ति ही उत्तर प्रदेश में हुई है। यह जाति आधारित लोकगीत है, जिसे कहार जाति द्वारा विवाह के समय गाया जाता है। कहरवा ताल कव्वाली और धुमाली जैसी विविधताओं वाली ताल है, इसे आठ ताल के साथ दो भागों में विभाजित किया गया है। यह कहार या पालकी ढोने वाले की चाल से प्रेरित एक ताल है। कई फिल्मी गाने भी इस ताल पर आधारित हैं। प्रसिद्ध गीत 'तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो' इसी ताल पर है।

३. चनयनी : यह उत्तर प्रदेश के कई क्षेत्रों में प्रसिद्ध लोकनृत्य संगीत है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष क्षण का जश्न मनाने के लिए किया जाता है। ग्रामीण जीवन के कुछ लोकगीत के उद्धरण—

सास मेरी दुबली हो गई बहुओं के आने से/सास तुमने क्या तो खाया जेठा के होने में/हमरो गुलाबी दुपट्टा हमें तो लग जाएगी नजरिया रे।

कोठे ऊपर कोठरी मैं उस पर रेल चला दूँगी/जो मेरी ननदी प्यार करेगी सोने से तुलवा दूँगी/जो मेरी ननदी रार करेगी जल्दी ब्याह रचा दूँगी।

४. नौका झक्कड़ : यह नाई समुदाय के प्रमुख लोकगीत हैं और नाई के गीत माने जाते हैं। इन गीतों के माध्यम से नाई समुदाय को अलग पहचान मिलती है।

५. बंजारा और नजावा : उत्तर प्रदेश के लोकगीतों में इसे काफी ऊपर स्थान दिया गया है। संगीत की इस विधा को तेली समुदाय के लोग रात के समय गाते हैं और खूब मस्ती करते हुए इसे प्रस्तुत किया जाता है।

६. कजली या कजरी : सावन के महीने में जब चारों ओर हरियाली छा जाती है, गाँवों में झूले पड़ जाते हैं और इस खास मौके पर सुनाई देने लगती है कजरी लोकगीत की धुन। सावन के महीने में जब बेटियाँ अपने मायके आती हैं, अपनी सखियों के साथ झूला झूलती हैं, तब इसे गाती हैं।

सावन के गीत काफी पुराने समय से प्रचलित हैं, अमीर खुसरो की मशहूर रचना है—'अम्मा मेरे बाबा को भेजो जी कि सावन आया'। इस रचना में एक बेटी अपने अम्मा से सावन के महीने में मायके बुलाने की बात कह रही है। वहीं भारत के आखिरी मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर की भी एक रचना है—'झूल किन डारो रे अमरैया'।

ऐसा नहीं है कि लोकगीत की यह विधा एक क्षेत्र तक सिमटकर रह गई हो, बहुत सारे प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक भी कजरी गाते हैं। लोकगायिका और संगीत गुरु कामिनी मिश्रा बताती हैं, 'कजरी को गाने में एक अलग ही माहौल बन जाता है, जब चारों तरफ हरियाली दिखाई देती है। कजरी में श्रृंगार और वियोग दोनों तरह के रस पाए जाते हैं।'

वे आगे कहती हैं, 'ननद-भाभी की नोक-झोंक के साथ कृष्ण की लीला भी इसमें गाई जाती है। ननद-भाभी पर एक ऐसी ही कजरी है—'कैसे खेलय जइबू सावन में कजरिया, बदरिया घेरे आए ननदी', इसमें एक भाभी अपनी ननद से कह रही है कि इतने बादल घिरे हैं, कैसे सावन में कजरी खेलने जाओगी।

एक बेटी अपनी माँ से पूछ रही है। मुझे ससुराल लेने कौन जाएगा—

झूला तो पड़ गया अंबुआ की डाल पे जी
ऐजी कोई हरो ही हंबे कोई हरो ही है भैया को रूमाल
हरियल-हरियल अम्मा मेरी चूनरी जी

को रंगवावे बेटी मेरी चूनरी जी
एजी कोई कौन गढ़वावे गलहार
कौन मिलवाए संग की सहेलियाँ जी

बाबुल गढ़वावे अम्मा मेरी चूनरी जी
ऐजी कोई अम्मा गढ़वावे गलहार
भैया तो मिलवाए संग की सहेलियाँ जी

कब रंगवावो अम्मा मेरी चूनरी जी
ऐजी कोई कब गढ़वावो गलहार
कब मिल जाएँ मुझ संग की सहेलियाँ जी

सावन रंगवाऊँ बेटी तेरी चूनरी जी
ऐजी कोई ब्याह पे गढ़वाऊँ गलहार
झूला पे मिल जाएँ संग की सहेलियाँ जी।

७. कीर्तन : वैदिक कीर्तन परंपरा के अनुसार होता है। कीर्तन के समय वाद्य यंत्र के साथ कई गायक पौराणिक कथा का पाठ या वर्णन करते हैं। ये देवी-देवताओं के प्रति भक्ति और अध्यात्म का पाठ भी करते हैं।

८. रागिनी या ढोला : यह पश्चिमी उत्तर प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र का लोकगीत है। यह रूहेलखंड क्षेत्र का प्रमुख लोकगीत है।

९. बिरहा : बिरहा को विशेष रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोकसंगीत शैलियों में लोकप्रिय माना जाता है। बिरहा उन महिलाओं की मनोदशा को दरशाता है, जिनके पति आजीविका की तलाश में परदेस जाते हैं। इन गीतों में विरह का वर्णन बड़ी मार्मिकता से किया है। पति कमाने के लिए परदेस गया है, अब झूला किसके साथ झूलूँ। तुम परदेस चले जाओगे तो मैं किसके सहारे रहूँगी और समझाकर कहती है, मैं तुम्हारे साथ ही रहूँगी।

पीहर मैं न जाऊँगी जी राजाजी/
भाई-भौजियों का राज जी¨¨/तुम्हारे साथ जाऊँगी राजाजी/तुम तो हो मेरे भरतारजी¨¨।

१०. चैती : चैती विशेष रूप से हिंदू कलेंडर के चैत्र माह के दौरान गाया जाता है। इसके विषय प्रेम, प्रकृति और होली रहते हैं। चैत्र श्रीराम के जन्म का मास भी है, इसलिए इस गीत की हर पंक्ति के बाद रामा शब्द लगाते हैं। चैती, ठुमरी, दादरा, कजरी आदि का गढ़ उत्तर प्रदेश में मुख्य रूप से वाराणसी है। बारह मास में चैत का महीना गीत-संगीत के मास के रूप में चित्रित किया गया है।

चढ़े चैत चित लगे न रामा। बाबा के भवनवा/बीर बमनवा/सगुन विचारो/कब होये पिया से मिलना हो रामा।

११. जरेवा और सदावजरा सारंगा : संगीत का यह रूप लोक-पत्थरों के लिए गाया जाता है।

गजल और ठुमरी (अर्धशास्त्रीय संगीत का एक रूप, जो कभी शाही दरबार तक ही सीमित था) अवध क्षेत्र में काफी लोकप्रिय रहे हैं। आज के समय में गजल राजसी दरबारों की सीमाओं से निकल चुकी है। यह गायन की एक मधुर शैली है और उत्तर प्रदेश में काफी प्रसिद्ध है।

१२. कव्वाली : सूफी कविता का एक रूप, जो भजनों से विकसित हुई काफी लोकप्रिय रही है। इसे आमतौर पर दो या अधिक लोग एक साथ गाते हैं।

इसके अलावा ब्रज क्षेत्र के प्रमुख लोकगीत झूला, होरी, फाग, लंगुरिया और रसिया, बुंदेलखंड के प्रमुख लोकगीत हरदौल, पंवारा, ईसुरी फाग, आल्हा, पूर्वांचल के प्रमुख लोकगीत कजरी, झूमर आदि हैं।

लोकगीतों की बात हो और राधा-कृष्ण की मीठी मधुर नोक-झोंक न हो, कैसे संभव है? इन लोकगीतों में ब्रज की मिट्टी की सोंधी महक आती है। मस्तिष्क पटल पर कृष्ण की लीलाओं का वर्णन कौंध जाता है।

ब्रज के इस लोकगीत में कृष्ण मनिहार का वेश बनाकर आते हैं,

लेकिन राधाजी भला कान्हा को कैसे न पहचानती ? खड़ी बोली की मिठास से परिपूर्ण इन लोकगीतों का प्रवाह देखते ही बनता है।

मनिहारे का वेश बनाया/श्याम चूड़ी बेचने आया/छलिया का वेश बनाया/श्याम चूड़ी बेचने आया

एक दूसरा लोकगीत—

चूड़ी लाल नहीं पहनूँ चूड़ी हरी नहीं पहनूँ/ मुझे श्याम रंग है भाया

ब्रज की गोपियाँ श्याम के मथुरा जाने पर

ऐसे कपटी श्याम विकट वन छोड़ चले ऊधो
सुंदर वन छोड़ चले ऊधो
जो मैं होती सीप का मोती
श्याम करत शृंगार मुकुट विच रहती रे ऊधो!

जो मैं होती वैजंती माला
श्याम करत शृंगार हृदय विच रहती रे ऊधो!

जो मैं होती जल की मछरिया
श्याम करत स्नान चरण रज लेती रे ऊधो!

जो मैं होती बाँस मुरलिया
श्याम बजाते मोहे अधर विच रहती रे ऊधो!

जो मैं होती पंख मोर का
श्याम पहनते मोय, मुकुट विच रहती रे ऊधो!

जो मैं होती गाय बछड़िया
श्याम चराते मोहे, साथ में रहती रे ऊधो!

लोक का तात्पर्य उस वर्ग से है, जो एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है। 'गीत' शब्द का अर्थ प्राय: उस कृति से है, जो गेय हो। लोकगीत में संगीत एवं लय इसका प्राण है, इसी कारण लोकगीत को स्वत:स्फूर्त संगीत कहा गया है। ये गीत सरल, स्वच्छंद एवं मधुर इसलिए होते हैं कि इनका निर्माण लोकमानव द्वारा शांत स्वच्छंद वातावरण में प्रकृति के सान्निध्य में स्वाभाविकता के साथ होता है।

सावन की ऋतु आते ही हरियाली तीज के अवसर पर रिवाज के अनुसार नई विवाहित स्त्रियाँ मायके आती हैं। तीज पर हर लड़की और स्त्री एक अलग ही उल्लास में होती है। झूले की पींगें बढ़ाते हुए मधुर सम्मिलित स्वरों में गाए गए ये झूला गीत बरबस ही मन को मोह लेते हैं। इन गीतों में लोक-व्यवहार का पूरा चित्र खिंच जाता है। इन गीतों में अकसर चुहल और वाक्पटुता का तीखा मिश्रण होता है।

लोकगीत के रचियता अज्ञात ही हैं, लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि इनकी रचना किसी ने की ही नहीं या इनकी उत्पत्ति किसी देवयोग से हुई है।

लोकगीत मौलिक परंपरा में जीवित रहते हैं। लोककवि साधारण एवं जनसमूह का प्रतिनिधि होता है। गीत का सृजन करते समय वह लेखनी से अधिक अपने कंठ तथा जिह्वा का उपयुक्त प्रयोग करता है। यह गीत लुप्त होती परंपराओं और दृश्यों को जीवित रखते हैं। आज की पीढ़ी के लिए पनघट और बंटा टोकणी नितांत अपरिचित से शब्द हैं। पहले पानी के लिए कुएँ पर ही जाते थे। गगरी में रस्सी बाँध कुएँ में लटकाई जाती थी, फिर गगरी भरने पर रस्सी से उसे ऊपर खींच लेते थे। उसी काम को हँसी-खुशी करने को स्त्रियाँ लोकगीत रचकर गाते-बजाते मनोरंजन कर लेती थीं। पनघट दूर होते थे। नई बहू अकेले कैसे जाए, इसीलिए सास ननद को साथ भेज देती थी। इसी दृश्य को इस लोकगीत में कितनी अच्छी तरह दरशाया है। कौन कहेगा यह गाँव की अनपढ़ स्त्रियों के लिखे गीत हैं। ऐसे सरस, मधुर गीत लिखने वाली यह छंद शास्त्र को जानती भी नहीं।

सासुल पनिया कैसे जाऊँ रसीले दोऊ नैना/बहू ओढ़ो चटक चुनरिया/ और सिर पर धरो गगरिया/छोटी ननदी ले लेयो साथ, रसीले दोई नैना।

मेरे सिर पर बंटा टोकरी और हाथ में बंटा डोर/मैं नन्ही सी कामिनी

वैवाहिक मांगलिक कार्यक्रम के शुरू होते ही विवाह गीत, फेरे गीत, हल्दी गीत आदि-आदि कानों में गूँजने लगते हैं। ढोलक की मधुर थाप और गाने वाले गीतों से सहज ही समझ आ जाता है कि इस घर में विवाह के मांगलिक कार्यक्रम हो रहे हैं। बन्ना-बन्नी के गीतों से घर ही नहीं, पूरा मोहल्ला गुंजायमान रहता है।

१. *लगुन आई हरे हरे, लगुन आई मेरे अँगना*
अम्मा सज गईं, बाबा सज गए, सज गए सारे बाराती
बन्ना मेरा ऐसे सज गया जैसे श्री रघुनाथ

२. *बन्ना बुलाए, वन्नी न आए आजा मेरी वरनी री, अटरिया सूनी पड़ी*
कैसे मैं आऊँ पापाजी खड़े हैं, पायल मेरी बजनी री, अटरिया सूनी पड़ी
लंबा घूँघट काढ़ कर, पायल उतार कर आजा मेरी वरनी री

विदाई गीत की मार्मिकता पड़ोसियों की आँखों से आँसू की अविरल धारा बहा देती है। ऐसे हैं हमारी संस्कृति के द्योतक लोकगीत।

लोकगीतों का कई दृष्टि से बड़ा महत्त्व है। हमारी इन अमूल्य निधियों को आधुनिकता नाश करने पर लगी है। विवाह कार्यों में बजते पश्चिमी संगीत और फिल्मी गानों ने हमारी नवपीढ़ी को भ्रमित किया है। जब चक्की, चूल्हे ही नहीं रहेंगे और हमारी नवपीढ़ी खेत-खलिहान, बाग, पनघट जानेगी ही नहीं तो गाएगी क्या और क्या हमारी संस्कृति को समझेगी ? लोकगीत हमारी लोकसंस्कृति को जीवित रखे हुए हैं। इसलिए लोकगीतों की इस संक्रमण कालीन अवस्था में ही हमें इनकी रक्षा में सतत प्रयत्नशील होना चाहिए।

साअ
बी-१/२४८, यमुना विहार
दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ८८२६२७०५९७

वर्ग पहेली (२२५)

अगस्त २००५ अंक से हमने '**वर्ग पहेली**' प्रारंभ की, जिसे ज्ञान-विज्ञान की अनेक पुस्तकों के लेखक **श्री विजय खंडूरी** तैयार कर रहे थे; उनके देहावसान के उपरांत अब **श्री ब्रह्मानंद खिच्ची** इसे तैयार कर रहे हैं। हमें विश्वास है, यह पाठकों को रुचिकर लगेगी; इससे उनका हिंदी ज्ञान बढ़ेगा और पूर्व की भाँति वे इसमें भाग लेकर अपना ज्ञान परखेंगे तथा पुरस्कार में रोचक पुस्तकें प्राप्त कर सकेंगे। भाग लेनेवालों को निम्नलिखित नियमों का पालन करना होगा—

१. प्रविष्टियाँ छपे कूपन पर ही स्वीकार्य होंगी।
२. कितनी भी प्रविष्टियाँ भेजी जा सकती हैं।
३. प्रविष्टियाँ ३० जनवरी, २०२५ तक हमें मिल जानी चाहिए।
४. पूर्णतया शुद्ध उत्तर वाले पत्रों में से ड्रॉ द्वारा दो विजेताओं का चयन करके उन्हें तीन सौ रुपए मूल्य की पुस्तकें पुरस्कारस्वरूप भेजी जाएँगी।
५. पुरस्कार विजेताओं के नाम-पते मार्च २०२५ के अंक में छापे जाएँगे।
६. निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम तथा सर्वमान्य होगा।
७. अपने उत्तर '**वर्ग पहेली**', **साहित्य अमृत, ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२** के पते पर भेजें।

वर्ग पहेली (२२३) का शुद्ध हल

शु	भ	दी	पा	व	ली	■	शि	शु
द्ध	■	वा	स	■	च	■	व	क्र
ता	सी	र	■	स	ड़	क	■	गु
■	ट	■	उ	ह	■	न	ती	जा
हि	■	ख	च्च	र	■	की	■	र
त	म	स	■	गा	भा	■	खो	■
चिं	■	म	हि	मा	■	स	ह	ज
त	ना	■	मा	■	आ	न	■	ला
क	ल	■	शुं	भ	का	म	ना	एँ

★ पुरस्कार विजेता ★

१. **श्रीमती रुक्मणी संगल**
२८ बी, प्रेमनगर, भादसों रोड
थापर इंजीनियरिंग वि.वि. के पास
पटियाला (पंजाब)
दूरभाष : ९४१७०८८४६६

२. **डॉ. प्रदीप कुमार यादव**
आर.जेड. १०, द्वितीय तल,
गली नं. २, सिंडिकेट एन्क्लेव,
डाबरी विस्तार, नई दिल्ली-११००४५
दूरभाष : ९४१६८२६९८१

पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई।

वर्ग-पहेली २२३ के अन्य शुद्ध उत्तरदाता हैं—सर्वश्री रामजनम शाह (सिंगरौली), राम किशन पंवार (हनुमानगढ़), विपिन सिन्हा (रायपुर), फकीरचंद ढुल (कैथल), अमरदेव आंगिरस (दड़लाघाट), विश्वंभर मोदी (जयपुर), सुरेश कश्यप (लखनऊ), प्रवीण सुथार (अजमेर), जयदेव उप्रेती (हरिद्वार), बबीता शर्मा (गुरुग्राम), मनमोहन सिंह (अलवर), सुभाष शर्मा, दिनकर सहल, राजेंद्र कुमार (दिल्ली)।

बाएँ से दाएँ—

१. ···वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ (३)
३. स्वामी विवेकानंद जयंती का दिन (२, ३)
६. कसैलापन, खिंचाव (३)
७. रसीला मधुर, आम (३)
९. बड़ा, बुजुर्ग, एक प्रसिद्ध संत कवि (३)
११. रुई धुनने की क्रिया, धुनकी (३)
१३. कमल, तालाब में होने वाला (४)
१४. कान का एक आभूषण (४)
१५. रँगा जाना, गाना, अलापना (३)
१७. दही मथने का डंडा (३)
१९. पाप, अपराध (३)
२१. दूसरों को रुलाने वाला; लंकेश (३)
२२. कामदेव, हनुमानजी का पुत्र (५)
२३. कोई नई बात सोचना, मन की उपज (३)

ऊपर से नीचे—

१. पैर का एक गहना, घुँघरू (३)
२. प्रतिरूप, अनुकृति (३)
३. राजकुमार, राजपुत्र (४)
४. तिथि, तारीख (३)
५. हवा, प्राणवायु, पवन (३)
८. माउंट एवरेस्ट का नेपाली नाम (५)
१०. अंकुरित होना, शुरुआत होना, पनपना (मुहा.) (२,३)
११. धातु आदि की तीलियों का बना बक्सा जैसा घेरा (३)
१२. लाँघना, उल्लंघन करना, परेशान करना (३)
१६. बड़ा हाथी (४)
१७. सात स्वरों में चौथा, बीच का (३)
१८. कोहरा, तुषार, पाला (३)
१९. वह अंक, जिससे गुणा करें (३)
२०. दूर करना, छीन लेना (३)

वर्ग पहेली (२२४) का हल अगले अंक में।

वर्ग पहेली (२२५)

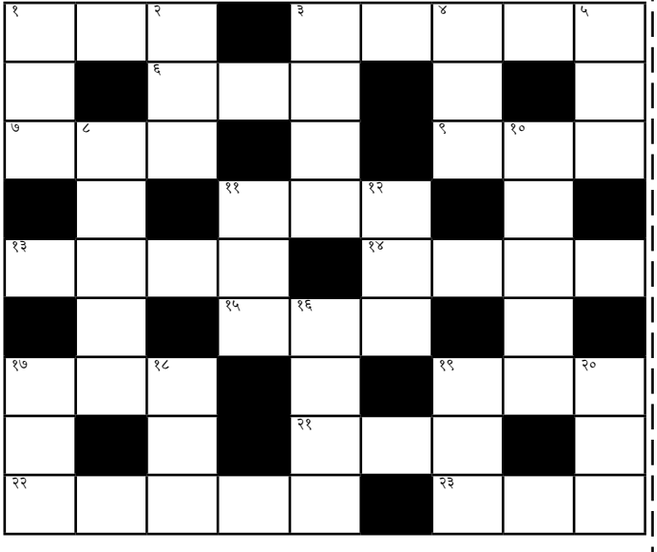

प्रेषक का नाम : .....

पता : .....

.....

.....

दूरभाष : .....

पाठकों की प्रतिक्रियाएँ

यह सर्वविदित है कि हर बारह साल की अवधि के अंतराल में प्रयागराज में होने वाले महाकुंभ का आयोजन २०२५ में होने जा रहा है, जो हमारी सनातनी परंपरा और मान्यता का प्रतीक है और हमें राष्ट्रीय गर्वबोध कराता है। आपने 'साहित्य अमृत' का 'महाकुंभ विशेषांक' निकालकर प्रबुद्ध पाठकों और श्रद्धालुओं को सही दिशानिर्देश ही नहीं दिए हैं, बल्कि तैयारी के लिए स्वच्छ मार्गदर्शन भी कराया है। प्रकाशित आलेखों में महाकुंभ के उद्‌भव से लेकर ऐतिहासिकता और प्राचीनता के महत्त्व की विस्तृत जानकारियाँ दी हैं, जिससे निश्चय ही श्रद्धालु पाठकों को मार्गदर्शन मिलेगा। इस अंक में हिंदी के राष्ट्रवादी देशप्रेमी कवि नीरज और पं. प्रदीप के योगदान से परिचय कराया गया है। संजय द्विवेदी के आलेख ने बहुत ही सांदर्भिक भाषा में कवियों के समाज और देश के प्रति किए योगदान की महिमा कविताओं और गीतों में बताई है। कवि पं. प्रदीप और गोपाल दास नीरज ने हिंदी फिल्मों और काव्य-संसार को समृद्ध किया और देशप्रेम की लहरें देश भर में तरंगित कीं। इस अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंक हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

—बिर्ख खडका डुवर्सेली, दार्जलिंग (प.बं.)

'साहित्य अमृत' के नवंबर अंक की जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम ही होगी। इस अंक की रोचकता का आभास तो संपादकीय से हो गया था। कथेतर गद्य की विभिन्न विधाओं की मूर्धन्य लेखकों की रचनाओं को पढ़कर अवर्णननीय आनंद आया। डॉ. नगेंद्र जैसे विद्वान् और आदरणीय व्यक्ति को अंत समय में क्यों उपेक्षित व असम्मानजनक जीवन जीना पड़ा, कारण न जानते हुए भी मन व्यथित हुआ। प्रकाश मनुजी की लेखन शैली बहुत सरल, सहज व रोचक है। इस अंक के प्रकाशन के लिए आप सभी को हार्दिक धन्यवाद व शुभकामनाएँ।

—माला श्रीवास्तव, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)

'साहित्य अमृत' का दिसंबर अंक 'महाकुंभ विशेषांक' के रूप में मिला। हाल ही में साहित्य अमृत का भारी-भरकम 'गद्य-मंजूषा' विशेषांक भी आया था, जिसकी साहित्य और पत्रकारिता जगत् में खूब चर्चा हुई। इस विशेषांक में महान् गजलकार दुष्यंत कुमार पर भी अच्छी सामग्री है; हरेराम समीप, चंद्रपाल मिश्र 'गगन' की गजलें दिल में गहरे उतरती हैं। कुंभ पर स्वामी अवधेशानंद गिरि, दीदी माँ साध्वी ऋतंभरा, सूर्यप्रसाद दीक्षित, मालिनी अवस्थी, आशीष गौतम, जयवीर सिंह, राजेंद्र कुमार पेंशिया, वीरेंद्र याज्ञिक के आलेख बेहद जानकारीपरक, पठनीय एवं स्मरणीय बन पड़े हैं। कर्नल (प्रो.) शिव सिंह सरंगदेवोत, शीलवंत सिंह एवं वीरेंद्र कुमार के आलेख भी नई और सम्यक् जानकारी देने वाले अपने में परिपूर्ण हैं। सुभाष चंदर, सुरेश बाबू मिश्रा एवं मंजरी शुक्ला की कहानियाँ बेहद पसंद आईं। बी.एल. आच्छा का व्यंग्य मारक एवं उद्वेलित करने वाला है। अन्य रचनाएँ भी पठनीय हैं। 'साहित्य अमृत' बहुत अच्छा काम कर रही है, सच ही हम ज्ञान-पिपासु पाठकों को अमृत पान करा रही है।

—आनंद शर्मा, दिल्ली

'साहित्य अमृत' का दिसंबर अंक मिला, जो महाकुंभ विशेषांक है। प्रतिस्मृति में दुष्यंत कुमार की गजलें लाजवाब हैं। मालिनी अवस्थी ने अपने आलेख में लोक-आस्था के महापर्व महाकुंभ का तत्त्वपूर्ण वर्णन किया है। इस अंक को पढ़कर महाकुंभ के बारे में संपूर्ण और महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। यह महापर्व हम भारतीयों को गर्व की अनुभूति कराता है, साथ ही यह ज्ञात कराता है कि इसकी महिमा अपरंपार है। पवन सिन्हा 'गुरुजी' ने कुंभ को समरसता का प्रतीक बताया है। कर्नल शिव सिंह सारंगदेवोत ने महाकुंभ के पौराणिक, सामाजिक और सांस्कृतिक के महत्त्व को बताया है, साथ ही इसको विश्व के लिए प्रेरणादायक भी बताया है। ब्रज किशोर बक्सी की कविता 'भारत की माटी' भारतमाता का प्रशस्तिगान है, जिसमें भारतभूमि की महानता का दर्शन होता है। सुभाष चंदर की हास्य कहानी 'गाँव में नौटंकी' बहुत रोचक और मन को गुदगुदाने वाली है। दुर्गादत्त ओझा का आलेख 'मंत्र-शक्ति का वैज्ञानिक विवेचन' सारगर्भित है, प्रभावित करने वाला है। इस अंक में प्रख्यात विद्वानों के आलेख पढ़ने को मिले, इसके लिए 'साहित्य अमृत' परिवार का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

—प्रशांत कुमार, गोरखपुर (उ.प्र.)

'साहित्य अमृत' का दिसंबर अंक (महाकुंभ विशेषांक) मिला। अंक महाकुंभ का धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व बताने वाला संपूर्ण दस्तावेज है। स्वामी अवधेशानंद गिरि ने अपने आलेख में बताया है कि कुंभ पर्व में गिरि-कंदराओं, मठ-मंदिरों और आश्रमों में रहने वाले लाखों तप:पूत संतों व संन्यासियों का दर्शन-सान्निध्य मानव जीवन को सफल बनाने वाला है। साथ ही कुंभ पर्व में जाने वाले श्रद्धालुओं को सत्संगरूपी अमृत प्राप्त होता है, जो जीवन-सिद्धि का मूल है। संजय सिंह चौहान की लघुकथा 'मेहनत एवं ईमानदारी' संदेश देती है कि हमें ईमानदारी और मेहनत से काम करना चाहिए, साथ ही असहायों की मदद करनी चाहिए। दीदी माँ साध्वी ऋतंभरा ने कुंभ मेले की महत्ता तो बताई ही है, साथ ही नारीशक्ति के विभिन्न रूपों को दरशाया है। सूर्य प्रसाद दीक्षित ने अपने आलेख 'महाकुंभ का महाभाव' में कुंभ मेले की पूरी कहानी का उल्लेख विद्वत्तापूर्वक किया है। जयवीर सिंह ने महाकुंभ के माहात्म्य का संपूर्ण चित्रण किया है। मैं इस 'महाकुंभ विशेषांक' को पढ़कर धन्य हुआ। सभी रचनाकारों का बहुत-बहुत आभार।

—रंजन, पटना (बिहार)

महाकुंभ को समर्पित 'साहित्य अमृत' मार्गशीर्ष-पौष संवत् २०८१ (दिसंबर २०२५) अंक प्राप्त हुआ। संपादकीय में 'हाँ तो तय था चरागाँ, हरेक घर के लिए। कहाँ चिराग मयस्सर नहीं, शहर के लिए।' वर्तमान स्थिति पर सटीक टिप्पणी है। साध्वी ऋतंभरा ने वर्तमान संन्यासियों पर व्यंग्य 'मूंड मुंडाए तीन गुण, सिर की मिट गई खाज। पकी-पकाई रोटी मिले और लोग कहें महाराज' रोचक लगा। कुंभ महापर्व पर कई विद्वानों के ज्ञानवर्धक लेखों के साथ अंजू केशव की गजलें अच्छी लगीं। अंत में 'समझ गई मुनिया' के लिए मंजू लता श्रीवास्तव को साधुवाद।

—डॉ. वीरेंद्र मिश्र, मुंबई (महा.)

लोकार्पण समारोह संपन्न

२५ नवंबर को नई दिल्ली के कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में प्रसिद्ध संस्कृतकर्मी एवं कलाधर्मी डॉ. यास्मीन सिंह की प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकों 'राजा चक्रधर सिंह' एवं 'रायगढ़ घराने की कथक रचनाओं का सौंदर्यबोध' का लोकार्पण केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री मान. श्री गजेंद्र सिंह शेखावत के करकमलों से छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह की अध्यक्षता तथा बिहार सरकार के मंत्री श्री नितिन नवीन, छत्तीसगढ़ के नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरण दास महंत, मध्य प्रदेश के भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री वी.डी. शर्मा एवं अदाणी फाउंडेशन की अध्यक्ष डॉ. प्रीति अदाणी के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुआ। संचालन 'हरिभूमि' समूह के प्रधान संपादक डॉ. हिमांशु द्विवेदी ने किया। □

'विद्यार्थियों हेतु भारत का संविधान' कृति लोकार्पित

२५ नवंबर को नई दिल्ली के कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में 'संविधान दिवस' के उपलक्ष्य में प्रसिद्ध लेखक तथा राष्ट्रीय अनुसूचित आयोग के अध्यक्ष श्री किशोर मकवाणा की प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'विद्यार्थियों हेतु भारत का संविधान' का लोकार्पण केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) व संसदीय कार्य राज्य मंत्री मान. श्री अर्जुन राम मेघवाल के करकमलों से सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश मान. न्यायमूर्ति हेमंत गुप्ता के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस पुस्तक की भूमिका मान. श्री अर्जुन राम मेघवाल ने लिखी है। □

'खाकी इन एक्शन' कृति लोकार्पित

१९ नवंबर को लखनऊ के होटल हिल्टन गार्डन में उत्तर प्रदेश के पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री ओ.पी. सिंह की प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'खाकी इन एक्शन' का लोकार्पण उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक के करकमलों से संपन्न हुआ। □

'मोदी ३.० और आगे पटरी पर साख' कृति लोकार्पित

०९ दिसंबर को नई दिल्ली के कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में वरिष्ठ पत्रकार श्री अकु श्रीवास्तव की प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'मोदी ३.० और आगे पटरी पर साख' का लोकार्पण भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं राज्यसभा सांसद मान. डॉ. सुधांशु त्रिवेदी जी के करकमलों से वरिष्ठ पत्रकार एवं सीवोटर के संस्थापक श्री यशवंत देशमुख तथा वरिष्ठ टी.वी. पत्रकार एवं लेखक श्री अशोक श्रीवास्तव के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुआ। □

'आरोग्य पथ पर बिहार' कृति लोकार्पित

१७ दिसंबर को पटना के विधानसभा विस्तारित भवन सभागार में बिहार सरकार के स्वास्थ्य मंत्री श्री मंगल पांडेय की प्रभात प्रकाशन द्वारा सद्य:प्रकाशित पुस्तक 'आरोग्य पथ पर बिहार : जन स्वास्थ्य का 'मंगल' काल' का लोकार्पण बिहार के राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर के करकमलों से बिहार के उप मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी एवं श्री विजय कुमार सिन्हा, बिहार विधानसभा के अध्यक्ष श्री नंदकिशोर यादव, बिहार सरकार के मंत्री सर्वश्री विजय चौधरी, संतोष सुमन एवं श्रवण कुमार, जदयू के सांसद एवं राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री संजय झा, जदयू के प्रदेश अध्यक्ष श्री उमेश कुशवाहा, बी.एम.जी.एफ. के कंट्री हेड श्री हरि मेनन, बिहार विधान परिषद् के सभापति श्री अवधेश नारायण सिंह, बिहार सरकार एवं प्रदेश अध्यक्ष भाजपा मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल, लोजपा (रा.) के प्रदेश अध्यक्ष श्री राजू तिवारी तथा स्वास्थ्य विभाग के विकास आयुक्त सह अपर मुख्य सचिव श्री प्रत्यय अमृत के विशिष्ट आतिथ्य में किया गया। □

'शिक्षा की भारतीय अवधारणा' कृति लोकार्पित

१० दिसंबर को गोरखपुर के महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के ९२वें संस्थापक सप्ताह के समापन समारोह में महाविद्यालय के शिक्षा विभाग की अध्यक्ष श्रीमती शिप्रा सिंह की प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'शिक्षा की भारतीय अवधारणा' का लोकार्पण उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के करकमलों से नोबेल शांति पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी की उपस्थिति में किया गया। पुस्तक की भूमिका महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव ने लिखी है। □

'समर गाथा' कृति लोकार्पित

१९ दिसंबर को नई दिल्ली में केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान के निवास पर अत्यंत आत्मीय आयोजन में ज्येष्ठ पत्रकार स्व. श्री नरेंद्र जैन (नंदाजी) के स्वातंत्र्य समर पर केंद्रित लेखों की प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'समर गाथा' का लोकार्पण केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान के करकमलों से संपन्न हुआ। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्री धन्य कुमार जिनाप्पा गुंडे तथा प्रसिद्ध लेखक एवं पूर्व प्रशासनिक अधिकारी श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव ने विचार व्यक्त किए। श्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा हमारे देश का कोई ऐसा जिला, कोई गाँव नहीं होगा, जहाँ स्वतंत्रता संग्रामियों की वीर गाथाएँ न हों। ओड़िशा के महान् सपूत वीर सुरेंद्र साय से हम सब परिचित हैं। उनके संगठित प्रयासों और संघर्ष ने ब्रिटिश शासन की नींव हिलाने के साथ संबलपुर, बारगढ़, झारसुगुड़ा के आसपास स्वतंत्रता की अलख जगाई। वीर सुरेंद्र साय के भाई वीर छबीला साय भी स्वतंत्रता संग्राम के एक ऐसे महानायक थे, जिनके बारे में लोग कम जानते हैं। १८५७ की क्रांति का नेतृत्व करते हुए वह कुडोपाली मे वीरगति को प्राप्त हुए। संबलपुर, ओडिशा सहित देश के हर अंचल में ऐसी अनकही कहानियाँ हैं। प्रधानमंत्री मोदीजी के प्रयासों से ऐसे अनगिनत गुमनाम नायकों को राष्ट्रीय स्तर पर सामने लाया जा रहा है। □

राष्ट्रसेविका माँ अहिल्याबाई होल्कर' कृति विमोचित

१५ दिसंबर को भोपाल में रवींद्र भवन के गौरांजनी सभागार में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचारक श्री अशोक पांडेय की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में विद्याभारती के मध्य भारत प्रांत के प्रांत संगठन मंत्री श्री निखिलेश महेश्वरी की प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'राष्ट्रसेविका माँ अहिल्याबाई होल्कर' का विमोचन नई दिल्ली के विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के सह संगठन मंत्री श्री श्रीराम अरावकर के मुख्य आतिथ्य, म.प्र. के स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री राव उदय प्रताप सिंह तथा राज्य सूचना आयुक्त डॉ. वंदना गांधी के विशिष्ट आतिथ्य में किया गया। मंचस्थ अतिथियों सहित श्री चंद्रहंस पाठक ने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. शिरोमणि दुबे ने तथा आभार श्री हरीश शर्मा ने व्यक्त किया। □

उद्घाटन एवं लोकार्पण समारोह संपन्न

२४ नवंबर को पटना के बिस्कुट फैक्टरी रोड दीघा में चर्चित कवि-साहित्यकार डॉ. शशि भूषण सिंह के आवास पर शशि कमल पुस्तकालय एवं संग्रहालय की स्थापना तथा उनकी दो नवीन कृतियों 'बरकत' एवं 'जरा मुसकराइए' का लोकार्पण भारत सरकार के पूर्व केंद्रीय मंत्री पद्मविभूषण डॉ. सी.पी. ठाकुर, विशिष्ट अतिथि सर्वश्री राम उपदेश सिंह 'विदेह', धर्मेंद्र कुमार सिंह, अनिल सुलभ, भगवती प्रसाद द्विवेदी, सिद्धेश्वर, मधुरेश नारायण की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन में सर्वश्री भगवती प्रसाद द्विवेदी, अनिल सुलभ, आराधना प्रसाद, रूबी भूषण, कमल किशोर वर्मा, शहंशाह आलम, ब्रह्मानंद पांडेय, सुनील कुमार उपाध्याय, सुनील कुमार ने काव्य-पाठ किया। संचालन श्री ब्रह्मानंद पांडेय ने किया। □

विमोचन समारोह संपन्न

विगत दिनों लखनऊ के गोमती नगर विस्तार स्थित सी.एम.एस. सभागार में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री आलोक कुमार की अध्यक्षता में अहिल्याबाई होल्कर त्रिशताब्दी समारोह आयोजित किया गया, जिसमें श्रीमती गरिमा मिश्रा की पुस्तक 'समरसता पाथेय और अहिल्याबाई होल्कर' का विमोचन उत्तर प्रदेश के उप-मुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक एवं अहिल्याबाई होल्कर के वंशज श्री उदय राजे होल्कर की उपस्थिति में किया गया। अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य श्री अशोक बेरी, उत्तर प्रदेश के पूर्व क्षेत्र प्रचारक श्री अनिल, अवध प्रांत के प्रचारक श्री कौशल भी उपस्थित रहे। □

लोकार्पण एवं सम्मान समारोह संपन्न

३० नवंबर को नई दिल्ली के गांधी स्मृति प्रतिष्ठान के सभागार में जापान में पंजीकृत हिंदी की त्रैमासिक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका 'हिंदी की गूँज', टोक्यो जापान के तत्त्वावधान में 'हिंदी की गूँज' पत्रिका के दो अंक (अक्तूबर-दिसंबर २०२३ एवं जनवरी-मार्च २०२४) तथा संस्थापिका श्रीमती रमा पूर्णिमा शर्मा की नवीनतम कृतियों 'माँ जैसा कोई नहीं', 'प्रवासी हिंदी गूँज उठी', 'मात्सुओ बाशो और मेरे हाइकू', 'मन का आईना (संपादित)', 'जज्बात का सफर' (संपादित) एवं 'हिंदी की गूँज—सृजन एवं सफर' (वार्षिकी-१) का लोकार्पण वरिष्ठ साहित्यकार श्री बी.एल. गौड़ की अध्यक्षता, वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल वर्मा 'जोशी' के मुख्य आतिथ्य तथा वातायन यू.के. की संस्थापिका एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. दिव्या माथुर, इंग्लैंड के नॉर्टिंघम शहर से 'काव्य-रंग' अंतरराष्ट्रीय संस्था की संस्थापिका, वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती जय वर्मा, ज्योतिषाचार्य एवं वरिष्ठ कवयित्री डॉ. अनीता कपूर, अंतरराष्ट्रीय समाजसेवी श्री इंद्रजीत शर्मा तथा हॉलैंड की विधायिका एवं हिंदू धर्म की ध्वजवाहक श्रीमती नीना शर्मा के विशिष्ट आतिथ्य में किया गया।

इस अवसर पर मंचासीन गण्यमान्य विभूतियों को माल्यार्पण, अंगवस्त्र व शॉल ओढ़ाकर एवं स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न लेखकों की नवीनतम कृतियों का लोकार्पण किया गया। संचालन सुश्री कविता गुप्ता एवं श्री कुलदीप बरतरिया ने किया। द्वितीय सत्र में कवि पं. सुरेश नीरव की अध्यक्षता, श्री प्रेम भारद्वाज 'ज्ञानभिक्षु' के मुख्य आतिथ्य, सर्वश्री सुनीता श्रीवास्तव, बी. निर्मला, सारिका जैथलिया, संजय शुक्ला तथा विदुषी शर्मा के विशिष्ट आतिथ्य में सर्वश्री उपासना पांडेय, खुशबू सागर, नीरजा मेहता, पूनम गौतम, अजमल तैश, मनीषा जोशी 'मणि', संदीप सोनी, रजनी शर्मा 'चंदा', सुनीता अग्रवाल को अंगवस्त्र ओढ़ाकर, स्मृति-चिह्न एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। संचालन सुश्री मोनिका सलूजा, मेधा सक्सेना एवं श्री विनोद पांडेय ने किया। धन्यवाद श्री अजय शर्मा ने ज्ञापित किया। □

'विष्णुकांत शास्त्री रचना-संचयन' लोकार्पित

१० दिसंबर को नई दिल्ली के प्रधानमंत्री संग्रहालय में केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान के मुख्य आतिथ्य में डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी द्वारा संपादित एवं साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'विष्णुकांत शास्त्री रचना-संचयन' का लोकार्पण साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक, संस्कृति सचिव श्री अरुणीश चावला की उपस्थिति में किया गया। आभार अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने ज्ञापित किया व स्वागत वक्तव्य अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवास ने किया। □

'बनाएँ जीवन प्राणवान' कृति विमोचित

२६ नवंबर को नई दिल्ली में दिल्ली विश्वविद्यालय के उत्तरी परिसर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत के करकमलों से पंजदशनाम जूना अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरिजी महाराज के विशिष्ट आतिथ्य तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह की उपस्थिति में आई. व्यू इंटरप्राइजेज द्वारा प्रकाशित श्री मुकुल कानिटकर की हिंदू जीवन मूल्यों पर आधारित पुस्तक 'बनाएँ जीवन प्राणवान' का विमोचन किया गया। □

लोकार्पण एवं संगोष्ठी संपन्न

०२ दिसंबर को नई दिल्ली के त्रिवेणी सभागार में हिंदी अकादमी के तत्त्वावधान में श्री ठाकुर प्रसाद सिंह जन्मशती के अवसर पर 'ठाकुर प्रसाद सिंह का साहित्य संसार' विषयक संगोष्ठी तथा श्री वृंदावनलाल वर्मा कृत 'झाँसी की रानी' के नाट्य-रूपांतरण का लोकार्पण वरिष्ठ पत्रकार श्री विजय किशोर 'मानव' की अध्यक्षता, श्री उमेश प्रसाद सिंह के विशिष्ट आतिथ्य तथा हिंदी अकादमी के उपाध्यक्ष पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा के सान्निध्य में किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री राजेंद्र गौतम, अरविंद त्रिपाठी, राधेश्याम बंधु, सुशील द्विवेदी, संजय कुमार गर्ग ने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री ऋषि कुमार शर्मा ने किया। □

लोकार्पण एवं परिचर्चा संपन्न

१३ नंवबर को हिमाचल के गेयटी थियेटर के सम्मेलन कक्ष में सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. हरिसुमन बिष्ट की अध्यक्षता एवं वरिष्ठ साहित्यकार श्रीनिवास जोशी के मुख्य आतिथ्य में हिमाचल के भाषा एवं संस्कृति विभाग और अभिषेक मैमोरियल वेल्फेयर ट्रस्ट की ओर से प्रसिद्ध आलोचक डॉ. हेमराज कौशिक की सद्यःप्रकाशित पुस्तक 'हिमाचल की हिंदी कहानी' का विमोचन संपन्न हुआ, जिसमें सर्वश्री राजेंद्र राजन, ऊषा बंदे व मीनाक्षी पॉल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस अवसर पर आयोजित परिचर्चा में सर्वश्री सुदर्शन वशिष्ठ, दिनेश शर्मा, गुप्तेश्वर उपाध्याय, जगदीश बाली, देवकन्या ठाकुर, के.आर. भारती ने विचार व्यक्त किए। □

काव्य-गोष्ठी संपन्न

२ नवंबर को देहरादून में डॉ. सुदेश ब्याला के आवास पर आयोजित नवोदित प्रवाह काव्य-गोष्ठी में सर्वश्री बुद्धिनाथ मिश्र, असीम शुक्ल, सुधा

पांडे, रामविनय सिंह, राकेश बलूनी, डॉली डबराल, नीता कुकरेती, रामप्रताप मिश्र साकेती, शिवमोहन सिंह, कवि चंदन सिंह नेगी, इंदु अग्रवाल ने काव्य-पाठ किया। संचालन श्री रजनीश त्रिवेदी ने किया। ☐

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

१४ नवंबर को नई दिल्ली में दिल्ली विश्वविद्यालय के खालसा कॉलेज में हिंदी अकादमी और श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज के संयुक्त तत्त्वावधान में 'साहित्य की शती उपस्थिति : रामदरश मिश्र' पर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में अध्यक्षता कर रहे पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', मुख्य अतिथि पद्मश्री सुरेंद्र वर्मा, कॉलेज चेयरमैन पद्मभूषण सरदार तरलोचन सिंह, राजकमल प्रकाशन के उप निदेशक श्री आमोद माहेश्वरी, इग्नू के अंतरराष्ट्रीय प्रभाग के निदेशक प्रो. जितेंद्र श्रीवास्तव के साथ सर्वश्री सुरेश ऋतुपर्ण, प्रेम जनमेजय, अनिल जोशी, रामदेव शुक्ल, रामनारायण पटेल ने विचार व्यक्त किए। संचालन श्रीमती अलका सिन्हा ने तथा धन्यवाद प्रो. स्मिता मिश्र ने ज्ञापित किया। द्वितीय दिवस में सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रो. एन.पी. सिंह, मुख्य अतिथि प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण, विशिष्ट अतिथि प्रो. मंजु मुकुल ने अपने विचार व्यक्त किए। समापन सत्र में मंचस्थ अतिथियों को प्रतीक-चिह्न एवं शॉल द्वारा सम्मानित किया गया। संचालन डॉ. ओम निश्चल ने तथा धन्यवाद प्रो. पी. अरुण ने ज्ञापित किया। ☐

श्री विजय कुमार सम्मानित

विगत दिनों कैथल में साहित्य सभा, कैथल द्वारा आर.के.एस.डी. कॉलेज में अंबाला छावनी 'कहानी लेखन महाविद्यालय' के प्रबंधक एवं मासिक पत्रिका 'शुभ तारिका' के सह-संपादक श्री विजय कुमार को हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी उर्दू प्रकोष्ठ के निदेशक डॉ. चंद्र त्रिखा की अध्यक्षता, हरियाणा संस्कृत साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. चितरंजन दयाल कौशल के विशिष्ट आतिथ्य, कैथल की साहित्य सभा के संरक्षक डॉ. संजय गोयल, प्रधान श्री अमृतलाल मदान तथा महासचिव डॉ. प्रद्युम्न भल्ला द्वारा 'श्री रोहित सरदाना स्मृति कृति पुरस्कार' से शॉल, स्मृति चिह्न एवं नकद राशि भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मासिक पत्रिका 'शुभ तारिका' के 'हरियाणा विशेषांक' का विमोचन किया गया। साथ ही २२ साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में बहुभाषाई काव्य-गोष्ठी भी आयोजित की गई। ☐

डॉ. सूर्यबाला को 'व्यास सम्मान'

११ दिसंबर को के.के. बिरला फाउंडेशन में प्रो. रामजी तिवारी की अध्यक्षता में सर्वश्री श्यामसुंदर पांडेय, अरुणा गुप्ता, विजया सती, विनोद खेतान व सुरेश ऋतुपर्ण द्वारा वर्ष २०२४ के 'व्यास सम्मान' हेतु प्रख्यात लेखिका डॉ. सूर्यबाला के उपन्यास 'कौन देस को वासी : वेणु की डायरी' को चयनित किया गया है। सम्मानस्वरूप उन्हें चार लाख रुपए की राशि, प्रशस्ति-पत्र एवं प्रतीक चिह्न इत्यादि भेंट किए जाएँगे। ☐

डॉ. प्रदीप शर्मा को 'कैलाश गौतम अवार्ड'

१७ दिसंबर को रायपुर के बाल भारती स्कूल में प्रयागराज की साहित्यिक संस्था 'गुफ्तगू' की ओर से डॉ. प्रदीप शर्मा को उत्कृष्ट साहित्य लेखन हेतु प्रख्यात फिल्म निर्माता-निर्देशक श्री तिग्मांशु धूलिया एवं प्रसिद्ध साहित्यकार श्री यश मालवीय द्वारा 'कैलाश गौतम अवार्ड' से सम्मानित किया गया। ☐

डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी 'चाणक्य' सम्मानित

१५ दिसंबर को कोलकाता के श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा आशुतोष जन्म शताब्दी हॉल में केरल के राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खाँ की अध्यक्षता में आयोजित ३५वें डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान समारोह में संवाद लेखन एवं राष्ट्रवादी चिंतक डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी को 'डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान' से एक लाख रुपए की राशि एवं मान-पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रधान अतिथि श्री सज्जन कुमार तुल्स्यान, विशिष्ट अतिथि श्री हितेश शंकर, श्री सुनील आंबेकर एवं श्री महावीर बजाज ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. तारा दूगड़ ने तथा धन्यवाद श्री बंशीधर शर्मा ने ज्ञापित किया। ☐

प्रो. रामदरश मिश्र को सम्मान

१२ दिसंबर को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के रवींद्र भवन सभागार में पतंजलि योगपीठ 'ट्रस्ट' तथा भारतीय शिक्षा बोर्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित समारोह में सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. रामदरश मिश्र को 'पतंजलि शिक्षा गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया, जिसमें बोर्ड के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. एन.पी. सिंह एवं सर्वश्री प्रमोद कुमार दुबे, ओम निश्चल, साध्वी देवप्रिया ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर भारतीय शिक्षा बोर्ड की हिंदी की कक्षा १ से ८ तक की पाठ्यपुस्तकों की शृंखला का विमोचन सम्मानित सलाहकार मंडल एवं पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के करकमलों से संपन्न हुआ। ☐

श्री राजेंद्र राजन को 'सर्वश्रेष्ठ कहानीकार' पुरस्कार

२८ अक्तूबर को हिमाचल के टांडा मेडिकल कॉलेज में अग्रणी मीडिया हाउस 'दिव्य हिमाचल' ग्रुप की ओर से हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री राजेंद्र राजन को हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुखविंदर सिंह सुक्खू द्वारा 'सर्वश्रेष्ठ कहानीकार' पुरस्कार से शॉल, प्रशस्ति-पत्र एवं टोपी भेंट कर सम्मानित किया गया। ☐

सम्मान समारोह संपन्न

१६ नवंबर को दिल्ली की साहित्य अकादेमी सभागार में बुलंदशहर की आर.जे. इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन संस्था के तत्त्वावधान में हिंदी के सुप्रसिद्ध आलोचक-कवि डॉ. राहुल के भाषा, साहित्य, संस्कृति एवं राष्ट्र के भावात्मक और सृजनात्मक अतुलनीय योगदान तथा आलोचन-कार्य में उनकी विशिष्ट उपलब्धि के लिए 'साहित्य शिरोमणि राष्ट्रीय सम्मान' से सम्मानित किया गया। साथ ही सर्वश्री हरीलाल मिलन, सुशील कुमार पांडेय, लोहारो बानियो, दयाराम मौर्य को 'साहित्य शिरोमणि सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्रीमती रजनी सिंह की छह खंडों में प्रकाशित 'रजनी सिंह रचनावली' का लोकार्पण भी किया गया। संचालन प्रो. रेशमी पांडा ने किया। ☐

सम्मान समारोह संपन्न

८ दिसंबर को पश्चिम बंगाल में आसनसोल के उषाग्राम स्थित अग्निकन्या भवन में सर्वश्री मनोहर पटेल, दिनेश कुमार, नीतु निशा और शिव कुमार यादव द्वारा प्रो. विजय कुमार भारती को 'बजरंग स्मृति साहित्य सम्मान २०२४' एवं श्री रोहित प्रसाद पथिक को 'सुरेंद्र स्मृति युवा साहित्य सम्मान २०२४' से शॉल ओढ़ाकर, पुष्प-पौध, सम्मान-पत्र एवं सम्मान-

राशि भेंट कर सम्मानित किया गया। सर्वश्री ज्योति पासवान व पिनाकी सिंह ने विचार व्यक्त किए। सर्वश्री संजीव पांडेय, संजय सुमति, मार्टिन जॉन, अनवर शमीम, लालदीप, आनंद कुमार आनंद ने काव्य-पाठ किया। संचालन श्री निशांत ने तथा धन्यवाद श्री शिव कुमार यादव ने ज्ञापित किया। □

हिंदी भवन, भोपाल के राष्ट्रीय सम्मान घोषित

विगत दिनों भोपाल के हिंदी भवन में मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा शरद व्याख्यानमाला के अवसर पर राष्ट्रीय सम्मानों की घोषणा की गई। श्री प्रमोद भार्गव को इक्यावन हजार रुपए के 'श्री नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा। श्री शिशिर कुमार चौधरी को 'श्री वीरेंद्र तिवारी रचनात्मक सम्मान', श्रीमती शीला मिश्रा को 'श्री शैलेश मटियानी कथा सम्मान', श्री जयंत शंकर देशमुख को 'श्री सुरेश चंद्र शुक्ल 'चंद्र' नाट्य सम्मान, डॉ. के. वनजा को 'डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय स्मृति आलोचना सम्मान' एवं सुश्री प्रभा पंत को 'सुश्री संतोष श्रीवास्तव कथा सम्मान' के अंतर्गत इक्कीस हजार रुपए की राशि, प्रशस्ति-पत्र, शॉल तथा श्रीफल भेंट किया जाएगा। श्री मोहन तिवारी आनंद को 'श्री शंकरशरण लाल बत्ता पौराणिक सम्मान' एवं श्रीमती इंदिरा दांगी को 'स्व. श्रीमती संतोष बत्ता स्मृति सम्मान' स्वरूप ग्यारह हजार रुपए की राशि, प्रशस्ति-पत्र, शॉल तथा श्रीफल भेंट किया जाएगा। □

'हेमंत स्मृति कविता सम्मान' घोषित

विगत दिनों भोपाल में हेमंत फाउंडेशन (पंजीकृत) द्वारा युवा कवि श्री अरुणाभ सौरभ के कविता संग्रह 'मेरी दुनिया के ईश्वर' को वर्ष २०२४ के 'हेमंत स्मृति कविता सम्मान' से सम्मानित करने की घोषणा की गई। सम्मान समारोह फरवरी २०२५ में भोपाल में आयोजित किया जाएगा। □

लघुकथा सम्मेलन संपन्न

विगत दिनों इंदौर की साहित्यिक संस्था 'क्षितिज' द्वारा आयोजित सप्तम अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन २०२४ में सर्वश्री विकास दवे, बलराम अग्रवाल, शोभा जैन ने रचना पाठ किया। इस अवसर पर सर्वश्री सूर्यकांत नागर को लघुकथा का 'शिखर सम्मान', शील कौशिक को 'समालोचना सम्मान', रश्मि स्थापक को 'नवलेखन सम्मान' एवं अंतरा करवड़े को 'समग्र सम्मान' से सम्मानित किया गया। श्री सतीश राठी एवं श्री दीपक गिरकर द्वारा लघुकथा पत्रिका का लोकार्पण किया गया। द्वितीय सत्र में सर्वश्री सतीश राठी, अदिति सिंह भदोरिया, ज्योति जैन, कांता राय ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन सुश्री प्रीति दुबे ने किया। तृतीय सत्र में सर्वश्री पुरुषोत्तम दुबे एवं वर्षा ढोबले ने विचार व्यक्त किए। संचालन श्रीमती सुषमा व्यास राजनिधि ने किया। चतुर्थ सत्र में श्री नंदकिशोर बर्वे ने लघुकथा पाठ किया। आभार श्री सुरेश रायकवार ने व्यक्त किया। □

साहित्य अकादेमी पुरस्कार-२०२४ घोषित

१८ दिसंबर को साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में असमिया के लिए सर्वश्री समीर तांती की कविता 'फरिंगबोर बटोर कथा जने', बोडो के लिए अरन राजा के उपन्यास 'सोराने थखाय', अंग्रेजी के लिए ईस्टरिन किरे के उपन्यास 'स्पिरिट नाइट्स', गुजराती के लिए दिलीप झावेरी की कविता 'भगवान-नी वातो', हिंदी के लिए गगन गिल की कविता 'मैं जब तक आई बाहर', कन्नड़ के लिए के.वी. नारायण की आलोचना 'नुडिगाला अलिवु', कश्मीरी के लिए सोहन कौल के उपन्यास 'साइकेट्रिक वार्ड', कोंकणी के लिए मुकेश थली के निबंध 'रंगतरंग', मैथिली के लिए महेंद्र मलंगिया के निबंध 'प्रबंध संग्रह', मलयालम के लिए के. जयकुमार की कविता 'पिंगलकेशिनी', मणिपुरी के लिए हाओबम सत्यबती देवी की कविता 'मैनू बोरा नुंग्शी शिरोल', मराठी के लिए सुधीर रसाल की आलोचना 'विंदांचे गद्यरूप', नेपाली के लिए युवा बराल की कहानी 'छिचिमिरा', ओड़िया के लिए बैष्णब चरण सामल के निबंध 'भूति भक्ति बिभूति', पंजाबी के लिए पॉल कौर की कविता 'सुन गुणवंता सुन बुद्धिवंता : इतिहासनामा पंजाब', राजस्थानी के लिए मुकुट मणिराज की कविता 'गाँव अर अम्मा', संस्कृत के लिए दीपक कुमार शर्मा की कविता 'भास्करचरितम्', संताली के लिए महेश्वर सोरेन के नाटक 'सेचड सावंता रेन अंधा मनमी', सिंधी के लिए हूंदराज बलवाणी की कहानी 'पूर्जो', तमिल के लिए ए.आर. वेंकटचलपति के शोध 'तिरुनेलवेली एजुकियम वा.वू.सी.यम १९०८', तेलुगु के लिए पेनुगोंडा लक्ष्मीनारायण की साहित्यिक आलोचना 'दीपिका' को 'साहित्य अकादेमी २०२४ पुरस्कार' से पुरस्कृत करने की घोषणा की गई। पुरस्कारस्वरूप प्रत्येक लेखक को एक उत्कीर्ण ताम्रफलक, शॉल तथा एक लाख रुपए की सम्मान राशि ८ मार्च, २०२५ को आयोजित होने वाले एक विशेष समारोह में प्रदान की जाएगी। बांग्ला, डोगरी एवं उर्दू भाषाओं के पुरस्कारों की घोषणा शीघ्र की जाएगी। □

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

कोलकाता का सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक चेतना जागरण केंद्र 'परिवार मिलन' वर्ष २०१३ से प्रतिवर्ष हिंदी काव्य कृति को 'काव्य-वीणा सम्मान' से सम्मानित कर रही है। इस वर्ष त्रयोदश सम्मान हेतु इच्छुक रचनाकार वर्ष २०१५ के बाद प्रकाशित अपनी छंदबद्ध कृति की चार प्रतियाँ पासपोर्ट आकार के दो रंगीन चित्र एवं अपने संक्षिप्त परिचय के साथ २८ फरवरी, २०२५ तक 'परिवार मिलन', ४, एस.एन. चटर्जी रोड, बेहाला, कोलकाता-७०००३८ पर भेज सकते हैं। साथ ही मो. ९१२३३८१८६५ एवं इ-मेल : pariwarmilansevasadan@gmail.com पर भी संपर्क कर सकते हैं। □

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

'किस्सा' पत्रिका द्वारा वर्ष २०२५ के 'शिवकुमार 'शिव' सम्मान' हेतु कोई भी लेखक, संपादक, पाठक एवं प्रकाशक वर्ष २०२४ में प्रकाशित अपनी रचना (उपन्यास और कहानी-संग्रह) दो-दो प्रतियाँ ३१ जनवरी, २०२५ तक 'किस्सा' के पते सुधा स्मृति ट्रस्ट, मंजु विला, मारवाड़ी व्यायामशाला के बगल वाली गली, खरमनचक रोड, भागलपुर-८१२००१ पर भेज सकते हैं। □

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

हिंदी के सुप्रसिद्ध कथाकार स्मृतिशेष शशिभूषण द्विवेदी की स्मृति में जानकीपुल ट्रस्ट द्वारा दिए जाने वाले 'जानकीपुल शशिभूषण द्विवेदी स्मृति सम्मान' हेतु ४० वर्ष से कम आयु के लेखक-संपादक ०१ जनवरी, २०२१ से ३१ दिसंबर, २०२३ के बीच प्रकाशित अपनी कृति (उपन्यास और कहानी-संग्रह) विचारार्थ भेज सकते हैं। आवेदन फॉर्म हेतु लिंक https://forms.gle/EoS2ELndqMDdBAKR6 एवं जानकीपुल ट्रस्ट, मो. ९६५४८३७६३४, इ-मेल jankipulawards@gmail.com पर संपर्क कर सकते हैं। □